ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' ९६ म अंक १५ दिसम्बर २०११ (वर्ष ४ मास ४८ अंक ९६)

वि दे ह *विदेह Videha*

***বিদেহ* http://www.videha.co.in** *विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine* *नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू।* Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA. Read in your own script **Roman(Eng)Gujarati Bangla Oriya Gurmukhi Telugu Tamil Kannada Malayalam Hindi**

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

२. गद्य



२.१.*मैथिली गजलपर परिचर्चा - मुन्नाजी* मैथिली गजल: उत्पत्ति आ विकास (स्वरूप आ सम्भावना)

२.२.१. राम भरोस कापरी भ्रमर, नेपाल- बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व/ २. नवेंदु कुमार झा-बिहार सरकार जानकी नवमीकेँ अवकाशक घोषणा केलक/ उद्यमी सभके सवयं कज देत सरकार जीवित होयत वित्त निगम/ 15 जनवरी के कोसी महासेतूक उद्घाटनक संभावना एक होयत मिथिलांचल, मजगूत होयत संबंध/ 20-21 दिसम्बर के होयत शिक्षक पात्रता परीक्षा, बढ़ि रहल प्रवेश पत्र/ विधानमंडलक शीतकालीन सत्र समाप्त, पास भेल

कतेको विधेयक मधुबनी मे खुजत मिथिला चित्रकला संस्थान सह संग्रहालय ३उमेश मण्डल-75म कथा गोष्ठीमे 39 टा कथापाठ



२.३. डॉ.अरुण कुमार सिंह- मैथिलेत्तर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कँप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका



२.४. **जगदीश प्रसाद मण्डल- कथा- परिवारक प्रतिष्ठा**

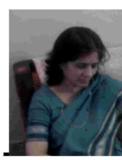
२.५.गजेन्द्र ठाकुर- **उल्कामुख** (आगाँ)

२.६.***१.******डॉ. शम्भु कुमार सिंहमैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला सम्पन्न***२.अतुलेश्वर- **विद्यापति समारोह, बिहार गीत आ मैथिल/ पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने**/ विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ

२.७.१.ओमप्रकाश झा -**बुढिया मैंया**दुर्गानंद मण्डल-२ टा विहनि कथा

२.८.डॉ॰ शशिधर कुमर, पोथी समीक्षा : गामक जिनगी

३. पद्य

३.१.१.**कामिनी कामायनी- द्रौपदी** २.**भावना** नवीन- गजल

३.२.१.ओमप्रकाश झा- सातटा गजल २.
जगदीश प्रसाद मण्डल- कविता- संघर्ष

*३.३.*१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' २.
मिहिर झा ३.जगदानंद झा 'मनु'

३.४.**१.****शान्तिलक्ष्मी चौधरी** २रवि
मिश्रा'भारद्वाज'

*३.५.*१. अनिल मल्लिक २. झा हेमन्त बापी

३.६.**निशांत झा**

*३.७.*१.डॉ॰ शशिधर कुमर २ नवीन कुमार "आशा"

३.८.१  **जवाहर लाल कश्यप-** काटि लिय कोना दुनू पाँखि २.  नवीन ठाकुर

४. मिथिला कला-संगीत-१.  ज्योति सुनीत चौधरी 

२.  श्वेता झा (सिंगापुर) ३.गुंजन कर्ण

४.  राजनाथ मिश्र (चित्रमय मिथिला) ५.  उमेश मण्डल (मिथिलाक वनस्पति/ मिथिलाक जीव-जन्तु/ मिथिलाक जिनगी)

-

५. गद्य-पद्य भारती: कर्णभारम्-महाकवि भास (मैथिली अनुवाद बिपिन कुमार झा)

६.बालानां कृते-१. अनिल मल्लिक २. डॉ॰ शशिधर कुमर "विदेह"

–

७. भाषापाक रचना-लेखन -[मानक मैथिली], [विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (इंटरनेटपर पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.]

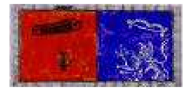
8.VIDEHA FOR NON RESIDENTS

*8.2.**1.Episodes Of The Life - ("Kist-Kist Jeevan"***

by  ***Smt. shefalika Varma translated into English by***  ***Smt. Jyoti Jha Chaudhary)***

2.*Original Poem in Maithili by*  *Kalikant Jha "Buch" Translated into English by*  *Jyoti Jha Chaudhary*





विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक (ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेल नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि। All the old issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari versions) are available for pdf download at the following link.

विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी रूपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

विदेह ई-पत्रिकाक पहिल ५० अंक

विदेह ई-पत्रिकाक ५०म सँ आगाँक अंक

विदेह आर.एस.एस.फीड।

"विदेह" ई-पत्रिका ई-पत्रसँ प्राप्त करू।

अपन मित्रकेँ विदेहक विषयमे सूचित करू।

↑ विदेह आर.एस.एस.फीड एनीमेटरकेँ अपन साइट/ ब्लॉगपर लगाऊ।

ब्लॉग "लेआउट" पर "एड गाडजेट" मे "फीड" सेलेक्ट कए "फीड यू.आर.एल." मे http://www.videha.co.in/index.xml टाइप केलासँ सेहो विदेह फीड प्राप्त कए सकैत छी। गूगल रीडरमे पढ़बा लेल http://reader.google.com/ पर जा कऽ Add a Subscription बटन क्लिक करू आ खाली स्थानमे http://www.videha.co.in/index.xml पेस्ट करू आ Add बटन दबाउ।

Join official Videha facebook group.

Join Videha googlegroups

विदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पोडकास्ट साइट

http://videha123radio.wordpress.com/

Videha Radio

मैथिली देवनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि रहल छी, (cannot see/write Maithili in Devanagari/ Mithilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पर जाऊ। संगहि विदेहक स्तंभ मैथिली भाषापाक/ रचना लेखनक नव-पुरान अंक पढ़ू।
http://devanaagarii.net/

http://kaulonline.com/uninagari/ (एतए बॉक्समे ऑनलाइन देवनागरी टाइप करू, बॉक्ससँ कॉपी करू आ वर्ड डॉक्युमेन्टमे पेस्ट कए वर्ड फाइलकेँ सेव करू। विशेष जानकारीक लेल ggajendra@videha.com पर सम्पर्क करू।)(Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM)/ Opera/ Safari/ Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/ Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at http://www.videha.co.in/ .)

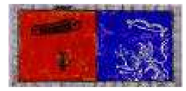
Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ (उच्चारण, बड़ सुख सार आ दूर्वाक्षत मंत्र सहित) डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाऊ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव



भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी कवि, नाटककार आ धर्मशास्त्री विद्यापतिक स्टाम्प। भारत आ नेपालक माटिमे पसरल मिथिलाक धरती प्राचीन कालहिसँ महान पुरुष ओ महिला लोकनिक कर्मभमि रहल अछि। मिथिलाक महान पुरुष ओ महिला लोकनिक चित्र **'मिथिला रत्न'** मे देखू।



गौरी-शंकरक पालवंश कालक मूर्त्ति, एहिमे मिथिलाक्षरमे (१२०० वर्ष पूर्वक) अभिलेख अंकित अछि। मिथिलाक भारत आ नेपालक माटिमे पसरल एहि तरहक अन्यान्य प्राचीन आ नव स्थापत्य, चित्र, अभिलेख आ मूर्त्तिकलाक़ हेतु देखू **'मिथिलाक खोज'**

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अन्वेषण संगहि विदेहक सर्च-इंजन आ न्यूज सर्विस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित वेबसाइट सभक समग्र संकलनक लेल देखू **"विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण"**

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाऊ।

"मैथिल आर मिथिला" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जालवृत्त) पर जाऊ।

१. संपादकीय

११ दिसम्बर २०११ केँ विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान पं. गोविन्द झा जीकेँ पटनामे आ श्री रामलोचन ठाकुरजी केँ रिसरा (कोलकाता)मे देल गेलन्हि। पटनामे श्री मुन्नाजी आ रिसरामे श्री नबो नारायण मिश्र देलन्हि सम्मान।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, ले.क. मायानाथ झा आ श्री आनन्द कुमार झाकेँ ऐ मासक अन्त/ अगिला मासक प्रारम्भमे निर्मली (जिला सुपौल)मे होमएबला द्वितीय समानान्तर साहित्य अकादेमी कवि/ कथा/ साहित्य सम्मेलनमे विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान देल जाएत।

श्री रमानन्द रेणु (आब स्वर्गीय)क उत्तराधिकारीकेँ विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान देल जाएत।









ISSN 2229-547X VIDEHA



(विदेह ई पत्रिकाकेँ ५ जुलाइ २००४ सँ अखन धरि ११६ देशक १,४९९ ठामसँ ७१,६०२ गोटे द्वारा ३५,१९८ विभिन्न आइ.एस.पी. सँ ३,३५,३०५ बेर देखल गेल अछि; धन्यवाद पाठकगण। - गूगल एनेलेटिक्स डेटा।)

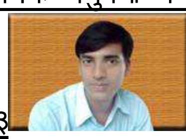
गजेन्द्र ठाकुर

ggajendra@videha.com

http://www.maithililekhaksangh.com/2010/07/blog-post_3709.html

२. गद्य

२.१.***मैथिली गजलपर परिचर्चा - मुन्नाजी*** **मैथिली गजल: उत्पत्ति आ विकास (स्वरूप आ सम्भावना)**

२.२.१.  राम भरोस कापरी भ्रमर, नेपाल- बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व/ २.  नवेंदु कुमार झा-बिहार सरकार जानकी नवमीकेँ अवकाशक घोषणा केलक/ उद्यमी सभके सवयं कज देत सरकार जीवित होयत वित्त निगम/ 15 जनवरी के कोसी महासेतूक उद्घाटनक संभावना एक होयत मिथिलांचल, मजगूत होयत संबंध/ 20-21 दिसम्बर के होयत शिक्षक पात्रता परीक्षा, बढ़ि रहल प्रवेश पत्र/ विधानमंडलक शीतकालीन सत्र समाप्त, पास भेल कतेको विधेयक मधुबनी मे खुजत मिथिला चित्रकला संस्थान सह संग्रहालय ३  उमेश मण्डल-75म कथा गोष्ठीमे 39 टा कथापाठ

२.३.डॉ.अरुण कुमार सिंह- मैथिलेत्तर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कँप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका

२.४.**जगदीश प्रसाद मण्डल- कथा- परिवारक प्रतिष्ठा**

२.५.गजेन्द्र ठाकुर- **उल्कामुख** (आगाँ)

ISSN 2229-547X VIDEHA

२.६.**१.*****डॉ. शम्भु कुमार सिंहमैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला सम्पन्न***२.अतुलेश्वर- **विद्यापति समारोह, बिहार गीत आ मैथिल/ पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने**/ विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ

२.७.१.ओमप्रकाश झा -**बुढिया मैया**दुर्गानंद मण्डल-२ टा विहनि कथा



२.८. डॉ॰ शशिधर कुमर, पोथी समीक्षा : गामक जिनगी



मैथिली गजलपर परिचर्चा - मुन्नाजी

मैथिली गजल: उत्पत्ति आ विकास (स्वरूप आ सम्भावना)

मैथिली गजलकेँ लोकप्रिय होइत देखि बेगरता बुझाएल एकरा पूर्ण रूपेँ फरिछेबाक। तेँ विदेह www.videha.co.in ISSN 2229-547X द्वारा "मैथिली गजल: उत्पत्ति आ विकास (स्वरूप आ सम्भावना)" विषयपर परिचर्चाक आयोजनक भार हमरा देल गेल। ऐ

विषयपर लेखक लोकनिक विचार संक्षिप्तमे नीचाँ देल जा रहल अछि।- मुन्नाजी

१



सियाराम झा "सरस"

मुन्नाजी, मैथिली गजलपर परिचर्चाक आयोजन नीक लागल।

बन्धुवर, मैथिली गजल सम्बन्धी हमर मान्यता एना अछि:-

१)उत्पत्ति: पण्डित जीवन झा नाटक "सुन्दर संयोग" (१९०५-०६) मे सर्वप्रथम मैथिली गजलक आगमन पबैत छी।तइसँ पूर्वक कोनो सूचना नै देखा पड़ैछ। तँए उत्पत्ति हम एतैसँ मानैत छी।

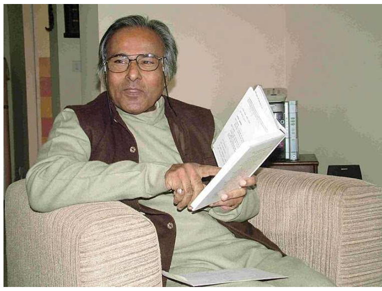
२) विकास: विगत १०६ बर्खक इतिहासमे गुणात्मक नै जँ संख्यात्मके चर्चा करी तँ अमरजी, माया बाबू (गीतल कहि कऽ), केदार नाथ लाभ, सोमदेव, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, स्व. मार्कण्डेय

प्रवासी, स्व. इन्दुजी, राजेन्द्र बिमल, गंगेश गुंजन, बुद्धिनाथ मिश्र, सियाराम सरस, स्व. कलानन्द भट्ट, डॉ. देवशंकर नवीन, डॉ. तारानन्द वियोगी, रमेश, भ्रमर, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, जगदीश चन्द्र ठाकुर “अनिल”, अरविन्द ठाकुर, अशोक दत्त, रोशन जनकपुरी, अजित आजाद, कु. मनीष अरविन्द, डॉ. कृष्णमोहन झा “मोहन”(राँची), आशीष अनचिन्हार समेत दर्जनो रचनाकार एकरा पुष्ट-बलिष्ट केलन्हि अछि। कथन आ भंगिमामे सेहो विविधता आएल अछि। दर्जनसँ बेशी संकलन नोटिस लेबा योग्य उपलब्ध अछि। विकास अखनहुँ भऽ रहल अछि।

३) स्वरूप आ संरचनामे यथास्थान अछि। बहरक विकास गजलकारक अपन क्षमतापर निर्भर होइछ, किछु अध्ययन-मननपर सेहो। मैथिलीमे शेर तँ कहैत छी, मुदा मिसरा वा मतला-मकता आदिक प्रयोग नै कएल जाइछ। लोक बात-बातमे शेर नै कहैछ।

४) सम्भावना- नव-नव लोक सभ जुड़ि रहल छथि, संकलनो आबि रहल अछि, परिचर्चो शुरू भेल अछि, से चलैत रहए। आशीष अनचिन्हार जे योजना आरम्भ केलनि अछि, सेहो महत्वपूर्ण बिन्दु थिक। “खरा-खरी कहबाक नाम छी गजल..गाम-घरमे दिवा रातिमे; हवा जकाँ बहबाक नाम छी गजल।“-सरस।

२


गंगेश गुंजन

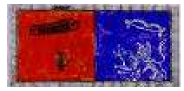
धन्यवाद जे एहि मैथिली-गजल परिचर्चामे अहाँ हमरो शामिल कएलौंहैं। ओना तँ अहाँ लोकनिक मैथिली गजलक परिभाषा-मान्यताक आन्दोलनमे स्वयंकेँ हम मैथिलीक गजल रचनाकारक श्रेणीसँ बाहर मानि लेने रही। किछु अर्थमे एखनो सएह अनुभव होइत अछि। तथापि -

१.मैथिली गजलक प्रारम्भ अपने पं जीवन झासँ मानी बा विद्यमान रवीन्द्रनाथ ठाकुर सँ (अप्रिय-अनसोहाँत लगनु भने किनको, तथापि) ओइ 'खास' प्रवर्तन-गजलक मूल पाठ सेहो पाठकक सोझाँ देब उचित। नव भावबोधकेँ, नवतुरिया कवि-पीढ़ीकेँ से देखलाक बादे तकर मीमांसाक आधार भेटतैक।

हमर लाचारी अछि जे साहित्येतिहासक ने हम ओतेक आग्रहीए रहलहुँ , आ तँ ने अन्वेषके। मुदा तकर 'उत्स' आभास,निजी हमरा -एही दुनूमे सँ कतहु बुझाइछ। यद्यपि कोनो प्रयोग, विशेषतः साहित्य बा कला- विधामे, मात्र एतबे बात लेल ओइ रचनाकार बा

ओहि विधाक 'प्रारम्भ' नहि मानि लेल जएबाक चाही जे 'ओ' पहिल बेर 'लीखल' गेल। से पहिल बेर लीखल गेल विधा-रचना, अपन साहित्यिक प्रवृत्तिक स्वरूपमे निरन्तरतासँ कहाँ धरि सृजन- सक्रिय रहल? आगाँ रहबो कएल कि नहि ? असल मूल्य मानक सएह थिक। कोनो साहित्यक आयु ओकर जीवन्त आ प्रवहमान प्रयोगक काल मात्रहिमे देखल-बूझल जाइछ। हिन्दीमे छायावादी महाप्राण 'निराला' तथा 'प्रसाद', संयोगसँ एतऽ हमर एहि दुनू सिद्धान्तक युगीन आ मूर्त्त उदाहरण छथि। ई दुनू 'छायावाद'क स्तम्भ छथि आ 'गजल' सेहो लिखलनि। मुदा 'गजल' मे तँ आइ दुनूक आयु इतिहास मात्र अछि। तँ मैथिली गजलपर विचारैत काल से महत्वपूर्ण बिन्दु। रचनाकारो कए काल लेखनक अपन मौलिक रुचि-प्रवृत्ति तथा अभ्याससँ फराक जा, तात्क्षणिक आवेषँ 'अन्यो विधा'मे टहलि-बूलि अबैए। परन्तु से आवेश निरन्तरतामे ओकर सर्जनाक स्वाभाविक प्रवृत्ति नहि बनि पबैत छैक, यावत ओहि नव विधामे सृजन करबामे ओकर मोन रमि नहि जाइक। हिन्दीक दुष्यन्त कुमार कविताक प्रारम्भ 'गजल' सँ नहि कएने रहथि जे कि आगां आबि कऽ अपन उत्तर पीढ़ीक प्रेरणा भेलाह। से दुष्यन्ते जी भेलाह, जखन कि शमसेर बहादुर जी सन प्रशस्त पैघ कवि 'गजल' लीखि रहल छलाह। आनो कए टा नाम अछि, जे हिन्दीमे महत्वपूर्ण। मुदा गजल विधा-लेखनमे एहि सघन निरन्तरताक श्रेय, हम तँ दुष्यन्ते जीक मानैत छी।





ISSN 2229-547X VIDEHA

अपने विचारियौ जे मधुप जी चाहितथि तँ गजल सेहो उत्कृष्ट नहि लीखि सकैत छलाह? नै लिखलनि। किएक? बा यात्री जी ? कविक अनुभव -आनुभूतिक विकलता ओकरासँ प्राथमिकता तय करबैत छैक-जे ओ की आ कोना कहय-लिखय। सएह प्राथमिकता रचना प्रक्रियामे रचनाकारकें अपन स्वभावक फ्रेममे उद्वेलित करैत छैक ंआ कवि से शैलीक बाट धरबा लेल सृजन विवश भऽ होइत अछि। सभ कविक तँ अपन-अपन रुचिक खास विधा सेहो भऽ जाइत छैक। सएह ओकर अभिव्यक्तिक सहज स्वाभाविक तागति बनि जाइत छैक। कालांतरमे समाज मध्य ताही रूपमे ओकर परिचिति बनि जाइत छैक। सएह मोटा-मोटी सुमन-मधुप-मणिपद्म-अमर तथा यात्रीक रूपमे चीन्हल जाइ योग्य होइछ।

एखन मैथिली-गजलक प्रवाह 'बाढ़ि' वला अछि, यद्यपि स्नेह आ स्वागत करबा योग्य। किएक तँ मुख्यतः प्रवृत्तिक ई सृजन-प्रवाह एकछोहा 'युवापीढ़ी'क थिक आ यदि मैथिली गजलक कोनो भविष्य छैक तँ एही पीढ़ीक सृजन-सम्पदामे। एक बएग जे ई सघन आ कए तरहें संगठित सेहो, एहि विधाक प्रति उत्कट आग्रह आ ताही कारणें सक्रिय निरन्तरता आएल छैक, से अगिला दशक धरि उल्लेख करबा योग्य स्वरूप लऽ लेत, एहि बातमे हमरा कोनो संदेह नहि। अवश्ये एहि परिवेष-निर्माण मे 'ब्लॉग/ फेसबुक/ अर्थात ' इन्टरनेट महाशक्तिक अपूर्व योगदान अछि, जे हमरा युगक नव

रचनाकारकेँ नहि छलैक। अभिव्यक्ति सम्प्रेषण-माध्यम अत्यन्त सीमित छलैक।

तेँ मैथिली-गजलक वास्तविक 'प्रस्थान' हम एकदम टटका पीढ़ीमे पबैत छी। नव गछुली अछि एखन। बताह भऽ कऽ मजरल अछि। एकर कतेक मज्जर टिकुला भऽ पाओत आ कतेक 'गोपी' धरि परिणत हएत से देखबा योग्य हएत।

आशा-अभिलाषा तँ 'नव गछुलीए' सँ। निश्छल तथा उदार बुद्धिये एकर अभिसिंचन-संरक्षण होएबाक चाही। से दायित्व पूर्व खाढ़ीक बचलाहा जीवित रचनाकारक। यदि नवतुरियाकेँ से स्वीकार होइक। जे कि अधिकांश नव रचना आ रचनाकारक 'तेवर'मे परिलक्षित नहि बुझाइछ। जाहि गजलक ई गहन विमर्श कऽ रहल छी, तकर 'जन्मभूमिक भाषा' मे आइयो 'इस्लाह'क परम्परा कायम छैक। मान्य, श्रेय-प्रेय।ओना यथावत ताइ दिन वला गुरु-शिष्य परम्पराकेँ हमहूँ नै मानैत छी। आजुक युग आ वातावरण मे आब उचितो नहि हएत से। मुदा कोनो विद्याक सरिता धार, जेँ कि एखनो प्रवाहित भइए रहल छैक, तँ किछु दूर धरि, पुरना 'घटबारोक' जरूरति बाँचले छैक। तै अर्थमे कहलौं।

सम्प्रति गजल-रूप मे लिखल गेल समस्त मैथिली-गजलकेँ चालल जाय तँ साबुत गजल दू गाहीसँ बेसी भरिसक्के निकलत। चनकल, टूटल-भांगल-रचनाक गनती नहि हो। से तँ कहबे कएलौं 'बाढ़ि'

ISSN 2229-547X VIDEHA

आएल अछि। अप्रिय परन्तु हमर जानकारीक यथार्थ यएह कहैए जे मैथिलीमे गजलक नामे लिखल जाइत रचनाक अधिकांश 'खखरी' अछि। उत्सुकतामे हम फेसबुकपर विशेष कऽ नव हस्ताक्षर सभकेँ पढ़बे करैत छी। मुदा फालतू..सँ आगाँ बुझाय लगैत अछि। एक-दू टा रचना पढैत काल तँ जीह ओकियाय लागल। हमर बात उत्कट लगैत हो भने मुदा एकटा पाठकक रूपमे हमरा एहनो अनुभव भेलय।

दोसर जे, आजुक पीढीक रचनाकार हमरा बेसी काल 'बहर-मैनिया' सँ ग्रस्त बुझाइछ, से माफी देब। दोसर रूपे कही तँ 'बहर'क 'ऑबसेसन' सीमा तक आग्रही बुझाइत छथि। बहर अंततः साँच मात्र थिक। फ्रेम । 'रूह' नहि।

हम जखन रेडियोमे रही तँ हमरे कोठलीमे नारी जगत आ नाटक विभाग सेहो रहैक। नारी जगतमे एक टा परम सुन्दरि स्त्री आबथिन। नख शिख सुन्दरि। कतहु सँ कोनो कमी नहि। तथापि कोनो आकर्षण नहि। ई हमर सोचब छल। कए टा हमरा सँ भेंट कएन्हारो देखथिन। ओहि सुन्दरी दऽ चर्चा करथि मुदा यएह प्रश्न सेहो जे आखिर की छैक जे ई एहन सुन्दरी होइतहुँ प्रशंसा योग्य नहि। एकदिन अंततः हमर दू टा महिला संगी जे रेडियोक रहथि, हमरा लोकनि संगे चाह पीबी, अयली संग करऽ। ओ सुन्दरी कोनो रिकार्डिंमे आयलि रहथि। फेर देखलखिन तँ ओहि दिन चाह दोकान

दिस जाइते काल अचानक पुछलनि-'यह इतनी सुन्दर महिला कौन हैं ! जो दिल मे नहीं उतर पाती । विचित्र असुंन्दर सुन्दरता है गुंजन जी।' हम किछु जवाब नहि दऽ यएह सोचैत रहलौं जे ओहि सुन्दरिक विषय मे हमर अपनो यएह जिज्ञासा रहय।

अर्थात हमरा सोकनिक बुद्धियें शरीर तँ सर्वगुण सुन्दर, मुदा 'सौन्दर्य' सँ आत्मा गायब रहनि सुन्दरीक।

यदि अहाँक सूचीमे बाँचल छी तँ हम एखनो यएह मानैत छी आ वएह कहब -

''इश्क को दिल में जगह दे नासिक...'' छुच्छे 'इल्म' सँ कविता जेकाँ किछु लिखि देल गेल, 'गजल' नहि भऽ जाइत छैक।

लीखू किछु आसान गजल

सबहक मोनक जान गजल

एक एक हृदयक छाँह लगय

ISSN 2229-547X VIDEHA

गाबय सबहक प्राण गजल

सब कानय अपने अपनी

बनय सभक मुस्कान गजल

लोकक दुःखक बनय पुकार

बौआय नै सुनसान गजल

झलझल जल मोनक सपना

से अछि गंगास्नान गजल

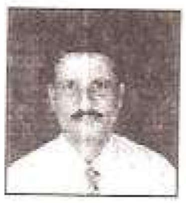
जइ क्षण पीड़ा मे कानल

धो दय सकल जहान गजल

आकांक्षा हो जन-जन के

से गीतक अभिमान गजल

३



प्रेमचन्द्र पंकज

मैथिली गजल : एक नजरिमे

गजल एकटा एहन सशक्त विधाक नाम थिक, जकरा माध्यमसँ अनेक सामाजिक प्रक्रियाक जटिलताकें थोड़ शब्दमे सहजतासँ अभिव्यक्ति प्रदान कएल जाइत अछि। सहजता एवं भाव-चमत्कार एकर मुख्य लक्षण थिक। अपन सहजता एवं भाव-चमत्कारक कारण एकरामे एकटा अद्भुत आकर्षण छैक। एही आकर्षणक कारणें फारसीसँ उर्दू एकरा हपसिक' अपन कोरामे लेलक। हिन्दी सेहो ओकर नजरि अपना दिस घिचबाक प्रयास कएलक। सफलता सेहो भेटलैक। मुदा उर्दूक कोरामे जेहन छलैक, तेहने प्राप्त भेलैक। कहबाक तात्पर्य जे उर्दू मे गजल एक खासे मानसिकताबला

ISSN 2229-547X VIDEHA

लोकक बीच अपन आकर्षणक भाभट पसारने छल आ हिन्दीमे सेहो ओहने स्थिति रहलैक -- बहुत दिन धरि। ओना सम्प्रति ओतहु (हिन्दीमे सेहो) इतिहास-दृष्टि आ सामाजिक द्वन्द्वबोधक ज्ञानसँ परिपूर्ण गजलकारलोकनि सार्वभौमिक अनुभूतिकें अभिव्यक्ति देबाक माध्यम नीक जकाँ बनओने छथि।

गजलक एहि सहजता एवं भाव-चमत्कारक आकर्षणक कारणें आइ प्राय: सभ भारतीय भाषामे एकरा दुलरुआ बनाक' राखल गेल छैक। ई दुलरुआ सुकुमार छैक, मुदा कमजोर नहि। कखनो किछु क' सकैए। केहनो विस्फोट।

मैथिलीमे सेहो गजल आएल -- ओहिना -- सुकुमार, मुदा कमजोर नहि। कखनो किछु क' सकैबला। कोनो विस्फोट। तें सुरेन्द्र नाथ कहैत छथि -- 'गजल हमर हथियार थिक'। तारानन्द वियोगी एकरा 'अपन युद्धक साक्ष्य' मानैत आगि जनमा रहल छथि ---

दर्द जँ हदसँ टपल जाए तँ आगि जनमै अछि

बर्फ अंगार बनल जाए तँ आगि जनमै अछि

प्रेमचन्द्र पंकज गजलक प्रसंग कहैत छथि ---

ढोढ़िया नञि असली नाग छी गजल

मस्तीमे गरजैत बाघ छी गजल

प्रेमिकाक आँचर नहि, प्रीतमक बोल नहि

चेतनामे बरकल मिजाज छी गजल

गजलकें पारिभाषिक रूपसँ बुझबाक लेल एकर स्रोत-भाषा अरबी-फारसीक परम्पराक सूत्रकें पकड़ब आवश्यक भ' जाइत अछि। ओतए एकर परिभाषा देल गेल छैक -- 'सुखन अज जनान (अथवा अज माशूक) गुफ्तन' तथा 'बाजनान गुफ्तन करदैन'। एकर अर्थ थिक स्त्रीगणक विषयमे वार्तालाप किंवा प्रेमी-प्रेमिकाक संवाद। आइ ई परिभाषा विस्तार पाबि सभ प्रकारक संवाद-प्रेषण-स्थापन करबामे सक्षम अछि -- जँ एहि परिभाषाकें संकुचित रूपसँ नहि देखल जाए। प्रेम सार्वभौमिक अछि, सार्वस्थानिक अछि, सार्वकालिक अछि। जँ प्रेमक अर्थ विस्तृत अछि, प्रेम स्वयं एतेक विस्तारमे पसरल अछि तँ ने प्रेमी-प्रेमिका संकुचित भए सकैत अछि आ ने प्रेमी-प्रमिकाक वार्तालाप विषय विशेष पर सीमित रहि सकैत अछि। तें आइओ सभ भाषाक गजलमे उक्त परिभाषाकें घटित देखल जा सकैत अछि।

गजलक अपन भिन्न व्याकरण छैक आ ई व्याकरण देखबामे जतबा सरल छैक, वस्तुत: ओहिसँ कइएक गुना जटिल छैक। ओना ऊपरसँ लगैत अछि जे ई मतला, शेर आ मक्ताक चौकठिमे ठोकल

एकटा काव्य-विधा थिक। मुदा एकर बहरक निर्बाह करबामे मगज दुहा जाइत छैक। ध्यान देबाक बात थिक जे गजल लिखल नहि जाइत छैक, कहल जाइत छैक। स्पष्ट अछि, जे एकर बहर (छन्द)क संरचनामे वज्न (मात्रा)क गणना शब्दक उच्चारणक अनुसार कएल जाइत अछि, जाहिमे अनेक गजलकार (तथाकथित) हरदा बाजि जाइत छथि। गजल किछु शेरक माला थिक। पारम्परिक रूपसँ गजलक प्रत्येक शेरक विषय भिन्न-भिन्न होइत छैक, परन्तु एक गजलक प्रत्येक शेरमे रदीफ आ काफिया एके रहैत छैक। गजलक पहिल शेर मतला कहबैत अछि, जकर दुनू पाँतू (मिसरा) सानुप्रासिक होइत अछि, अर्थात् रदीफ आ काफियासँ सामन रूपें युक्त रहैत अछि। एकर अन्तिम शेर मक्ता कहबैत अछि तखन, जखन ओहिमे रचनाकारक नाम अथवा उपनामक प्रयोग होइत अछि, अन्यथा सामान्य शेर भ' क' रहि जाइत अछि। बीचबला शेरक उपरका पाँती, जकरा मिरुाउला कहल जाइछ, केर रदीफसँ मेल रहब आवश्यक नहि। किन्तु निचला पाँती, जे मिरुासानी कहबैत अछि, कें रदीफसँ मेल अर्थात् सानुप्रासिक होएब अनिवार्य छैक। शेरक लेल आवश्यक छैक जे ओ कोनो छन्द विशेषमे रहए, जे निश्चित कएल गेल छैक। ई छन्द विशेष बहर कहबैत अछि।

अस्तु, मैथिली गजलक इतिहास पर एक नजरि फेकबाक प्रयास कएल जाए तँ मैथिलीक पहिल गजल बीसम शताब्दीक प्रारम्भमे

लिखल गेल आ मैथिलीक पहिल गजलकार भेलाह प. जीवन झा। जीवन झाक गजलमे एकर मुख्य गुण -- सहजता एवं भाव-चमत्कार स्पष्ट देखबामे अबैत अछि, जे एहि बातकें द्योतित करैत अछि जे ओ गजलकें कतेक लगीचसँ बुझबाक चेष्टा कएने छलाह, बुझने छलाह। हुनक एक गजलक मतला देखल जाए --

पड़ैए बूझि किछु ने ध्यानमे हम भेल पागल छी

चलै छी ठाढ़ छी बैसल छी सूतल छी कि जागल छी

जीवन झा द्वारा रोपल गजलक एहि पिपहीकें समय-समय पर भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', यात्री, आरसी प्रसाद सिंह, डॉ. वृजशोर वर्मा 'मणिपद्म' आदि खाद-पानि दैत रहलाह आ ई वर्तमान रहल। बादमे केदारनाथ लाभ, सुधांशु 'शेखर' चौधरी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विभूति आनन्द, कलानन्द भट्ट, सियाराम झा 'सरस', मार्कण्डेय प्रवासी, बुद्धिनाथ मिश्र, राजेन्द्र प्रसाद विमल, तारानन्द वियोगी, नरेन्द्र, देवशंकर नवीन आदिक सेवासँ ई एकटा झमटगर गाछक रूप धारण कए लेने अछि। मैथिलीक गजलकारक जँ सूची बनाओल जाए तँ आस्वस्त करत।किन्तु मैथिलीमे गजल-संग्रहक सर्वथा अछि -- जकरा अंगुरी पर गानल जा सकैत अछि। मैथिली गजलक पहिल संग्रह थिक विभूति आनन्दक 'उठा रहल घोघ तिमिर'। एकर प्रकाशन जून, 81 मे भेल। फेर कलानन्द भट्टक 'कान्ह पर लहास हमर' , सियाराम झा 'सरस'क 'शोणिताएल पैरक निशान', तारानन्द

ISSN 2229-547X VIDEHA

वियोगीक 'अपन युद्धक साक्ष्य', रमेशक 'नागफेनी' आएल। सियाराम झा 'सरस' क सम्पादनमे बारह गोटेक कुल चौरासीटा गजलक संकलन 'लोकवेद आ लालकिला' प्रकाशित भेल। 'थोड़े आगि थोड़े पानि' ससरजीक एहन गजल संग्रह थिक जे एहि विधाकें आओर मजगूती प्रदान करैत अछि। सुरेन्द्र नाथक 'गजल हमर हथियार थिक' निश्चित रूपसँ स्वागत योग्य अछि।

गजल-संग्रहक एहन अभाव थोड़ेक निरास अवश्य करैत अछि, मुदा सम्प्रति मैथिलीमे धुड़झाड़ गजलक रचना भए रहल अछि अनेक बाधाक अछैतो। मैथिली गजल बहुत दिन धरि गजल बनाम गीतलक ओझराहटिमे पड़ल रहल। किन्तु कोनो भ्रममे नहि पड़ल। सब तर्कक जवाब दैत रहल। आगाँ बढ़ैत रहल। आइ मैथिली गजलक स्थिति ई अछि जे अनेक नव-पुरान रचनाकार अपन अभिव्क्तिक माध्यम एकरा बनओने छथि, अपन स्वर गजलकें द' रहल छथि। डॉ. गंगेश गुंजन, डॉ. अरविन्द अक्कू, अरविन्द ठाकुर, डॉ. नरेश कुमार विकल, अजित आजाद, फूलचन्द्र झा 'प्रवीण' आदि अपन अभिव्यक्तिक माध्यम गजलकें बनाए एकरा एकटा सशक्त विधाक सरूपमे प्रतिष्ठित क' रहल छथि। प्रसन्नताक विषय ईहो अछि जे आशीष अनचिन्हार 'अनचिन्हार आखर' नामसँ गजलक लेल एकटा फराकसँ वेवसाइट तैयार कएने छथि जकरा माध्यमसँ अनेक नव-पुरान गजलकारलोकनिक गजल -रचना लगातार सोझाँ आबि रहल अछि।

कतिपय व्यक्ति एकटा राग अलापि रहल छथि जे मैथिलीमे गजलक सुदीर्घ परम्परा रहितहु एकरा मान्यता नहि भेटि रहल छैक। एहन बात प्राय: एहि कारणे उठैत अछि जे मैथिली गजलकें कोनो मान्य समीक्षक-समालोचक एखन धरि अछूत मानिक' एम्हर ताकब सेहो अपन मर्यादाक प्रतिकूल बुझैत छथि। एहि सम्बन्धमे हमर व्यक्तिगत विचार ई अछि, जे एकरा ओहने समालोचक-समीक्षक अछूत बुझैत छथि जनिकामे गजलक सूक्ष्मताकें बुझबाक अवगतिक सर्वथा अभाव छनि। गजलक संरचना, मिजाज आदिकें बुझबाक लेल हुनकालोकनिकें स्वयं प्रयास कर' पड़तनि, कोनो गजलकार बैसिक' भट्ठा नहि धरओतनि। हँ, एतबा निश्चय, जे गजल धुड़झाड़ लिखल जा रहल अछि आ पसरि रहल अछि आ अपन सामर्थ्यक बल पर समीक्षक-समालोचकलोकनिकें अपना दिस आकर्षित कइए क' छोड़त। हमरासभकें मन पाड़बाक चाही जे एकटा एहनो समय छलैक जहिआ नव-कविताक प्रति समीक्षक-समालोचकलोकनिक रबैया एहने छलनि। मुदा आइ ? आइ की स्थिति छैक ? सएह होएतैक गजलोक संग। निश्चय होएतैक।

वस्तुत: मैथिली गजल आइ ओहि ठाम ठाढ़ अछि जतएसँ ओकरा एकसूत्रताधारी विचार, दर्शन, समाज-संहिताक अतिरिक्त राजनैतिक, सास्कृतिक, सामाजिक आ राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय संवेदनाकें अभिव्यक्त करबाक स्रोत सहजहिं भेटि जाइत छैक। सम्भावनासँ परिपूर्ण एहि विधाक क्रमिक विकासक लेल आवश्यक अछि

ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रतिबद्धतापूर्वक गजलक निरन्तर रचना होएब। से भए रहल अछि -- एहि रूपमे भए रहल अछि जे एकर भविष्य लेल आश्वस्त करैत अछि, निश्चित रूपसँ।

४



राजेन्द्र बिमल

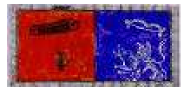
मुन्नाजी:मैथिली साहित्य मध्य वर्तमान समयमे गजलक की दशा अछि, एकर भविष्यक की दिशा देखाइछ?

राजेन्द्र बिमल: गजल अत्यन्त लोकप्रिय विधा थिक । मैथिलीमे से हो खूब लीखल जा रहल अछि आ पढलो जा रहल अछि । बहुत गजलकार एकर व्याकरणसँ कम परिचित छथि । मुदा भविष्य उज्जवल छैक । मैथिली गजलमे अपन निजात्मकताक विकास शुभ संकेत थिक ।

मुन्नाजी:मैथिलीक प्रकाशित गजलक संगोर (कतेको गजल संग्रह) आ मायानन्द मिश्रक गजलकेँ गीतल कहि प्रकाश्यक मादेँ गजेन्द्र ठाकुर एकरा अस्तित्वहीन कहि अपन सम्पादकीय आलेख माध्यमे अवधारणा स्पष्ट केलनि।अहाँक ऐपर अपन स्वतंत्र विचार की अछि?

राजेन्द्र बिमल: संगोर सभ नहि देखल अछि । आदरणीय मायाबाबूक गीतल (गीत-गजल) एक गोट प्रयोग थिक । हम कोनो सृजनकेँ निरर्थक नहि बूझैत छी आ लेखन स्वतंत्रतामे विश्वास रखैत छी ।

५

ISSN 2229-547X VIDEHA



मंजर सुलेमान

जखन एहि मिथिलामे अमीर खुशरो (१२२५-१३२५) सन विद्वान एलाह तऽ ओहो एहि भाषाक मधुरता सँ मुग्ध भऽ फारसी, मैथिली आ उर्दूक समिश्रण सँ कहलनि-

हिन्दु बच्चा है कि अजब हुस्न रै छै।

बर बक्ते सुखन गुफ्तम मुख फूल झरै छै॥

गुफ्तम ज लबे लालें तऽ यक बोसा बगीरम।

गुफ्ता के अरे राम तुर्क का ई करै छै।

(मंजर सुलेमान - त्याग-बलिदानक पवित्र पर्व मुहर्रम (मिथिला दर्शन नवम्बर-दिसम्बर २०१०)

६

**शेफालिका वर्मा**

आदरणीय मुन्नाजी,

अपनेक विषय 'गजल' पर बड नीक लागल.. मुदा, मैथिलीक प्रोफेसर हम नै छी, तैं एकर जानकारी देनाय हमरा लेल सुरुज के दीपक देखेनाइ अछि...

हँ हम एतवे जनैत छी जे पहिने छिटपुट गजल लिखल जाइत छल , हमहूँ पढैत रही, कखनो हमरो नीक लागल छल... मुदा आशीष अनचिन्हारक कारण विदेहक पन्ना पर गजलक जेना बाढ़ि आबि गेल अछि...

गजल हमर सब सँ प्रिये विधा हमरा लेल अछि, प्यार ,रोमांस सँ भरल भावातीत भ' हृदयक उन्मेष मे जिवैत उर्दू गजल , शेरो शायरी सब...

ISSN 2229-547X VIDEHA

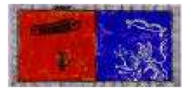
हम तँ गजलमाने प्यार मुहब्बते टा बूझैत छलौं जे शुद्ध प्रेम भाव पर आधारित छल...एखनो हमर पुरना डायरीमे गजल सबक अंश लिखल अछि, कोमलकान्त पदावलीसँ परिपूर्ण... .., मुदा मैथिलीमे एकर नाना अर्थे प्रयोग होइत देखलौं..., कखनो नीक लगैत छल तँ कखनो कचोटी...मुदा, जमाना कतऽ सँ कतऽ चलि गेल.. सब ठाम विकास भऽ रहल छैक तँ मैथिली गजल केर सेहो नव परिभाषा उल्लेखनीय रहत..साँच पुछू तँ प्रायः सब टा गजल हम अवश्य पढैत छी, एहि लेल आशीष जी कँ अशेष बधाइ....मैथिली साहित्यमे गजलविधा नूतन मुस्की लऽ सबहक ह्रदयकँ अलोक लोक सँ भरि देत, संगहि विदेह परिवारकँ जे नाना रुपे माँ मैथिलीक श्री वृद्धि कऽ रहल छथि....

७

**मिहिर झा**

गजल मूलतः अरबी भाषा केर काव्य विधा छैक | गजल शब्दक अरबी मे माने छैक स्त्रीसँ वा स्त्रीक बारेमे बात केनाइ | गजल जेखन अरबी सँ फारसी मे आयल तँ एकर शिल्प विधाक तँ पालन भेल लेकिन एकर विषय वस्तु भौतिक वा दैहिक रखैत एकर मर्म मे अध्यात्मिक प्रेमक अनुभूति आनि देलक| एहि मर्मकेँ रखैत फारसी सूफी कवि सभ गजलक प्रसारमे महत्वपूर्ण योगदान केलन्हि| सूफी साधनामे विरहक बेशी महत्व छैक, ताहि कारणे, फारसी गजलमे विरह प्रेम केर बेशी उल्लेख अछि |

गजल जखन फारसी सँ उर्दू मे प्रवेश केलक तँ एकर शिल्प विधा तँ ओहिना रहलैक लेकिन कथ्य एकदम भारतीय भऽ गेल| मध्य काल मे उर्दू फारसीसँ बहुत प्रभावित छलैक आ एकर व्याकरण ओ शब्द जटिल फारसी होइत छलैक| भारत केँ स्वतंत्र भेलाक बाद उर्दू धीरे धीरे फारसीक प्रभावसँ निकलल आ गजलमे बोल चालक शब्द प्रयोगमे आबय लागल| संगहि एकर मर्म अपन परंपरागत मर्म "स्त्रीसँ वा स्त्री संबंधित" केँ कात छोडैत नव नव आयाम अपनामे सम्मिलित केलक | ध्यान देबाक गप ई अछि जे गजल केर शिल्प विधामे कोनो बदलाओ नहि आयल , केवल एकर मर्ममे परिवर्तन आयल | जे गजल अरबीमे मात्र प्रेम तक सीमित छल से आब अपना मे सभ टा विषय वस्तु समेट लेलक|

ISSN 2229-547X VIDEHA

हिन्दीक बाद गजल मराठी, अँग्रेजी होइत आब मैथिली मे प्रवेश केलक आ धीरे धीरे मैथिली साहित्य मे अपन स्थान बना लेलक | मैथिली मे सेहो गजलक शिल्प विधा मे परिवर्तन नहि भेलैक, हँ एकर मर्म आ शब्दकोष पूर्ण मैथिल भऽ गेल | भाव भक्ति, प्रेम, वीर, विरहक होइक वा सामाजिक, राजनीतिक वा व्यक्तिक कटाक्ष पर, सभ विधा मे मैथिली मे गजल देखबा मे आबि रहल अछि | संगहि मिथिलाक संस्कार ओ परिवेशक छाप लैत मैथिली गजल आब पूर्णतः मैथिल भऽ चुकल अछि| गजलक मैथिली शिल्प विधाक लेखन विस्तारमे "अन्चिन्हार आखर" मे आलेखित अछि| बहुत रास मैथिली गजलकारक मैथिली गजलकारी मे प्रवेश एहि बातक द्योतक अछि जे ई मैथिलीक पोर पोर मे समा चुकल अछि आ कोनो एक विशेष स्तरक लोकक बदला मे ई जन काव्य बनि चुकल अछि |

"मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास (स्वरूप एवं संभावना सहित)" विषय पर अपन भावना हम गजलक रूप मे देबाक प्रयास कऽ रहल छी ---

बैसलहुँ आइ करै ले मैथिली गजलक बखान हम
डूबि गेलहुँ उदगार मे केलहुँ नहि किछु ध्यान हम

गजल होइत छैक प्रेम, महिमा एकर महान छैक

दू पाँति मे समेटा देलहुँ ई प्रेम गाथा क बखान हम

बहर रफीद और काफिया शेरक होइ छैक प्राण यौ
मतला मकता जोड़ि एहि मे बढेलौ शेरक शान हम

फारसी उर्दू अंग्रेजी सँ होइत ई आयल मिथिला धाम
तघज्जुल अपन बनाबी, लऽ माछ, मखान ओ पान हम

शास्त्रीय कहू वा आधुनिक वा पकड़ू अ-गजलक कान
समय संग बदलबै आब एहि गजलक प्राण हम

प्रेम विरह सूफी आ भक्तिमे कऽ चुकल ई नाम अमिट
जन जीवन सँ जोड़बै, लऽ आधुनिकताक नाम हम

मुरद्दफ होइक वा गैर मुरद्दफ पबै छै एके शान
"शौकीन" क ई कथा अमोल राखब सदिखन ध्यान हम

८

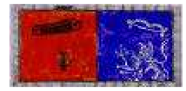
ISSN 2229-547X VIDEHA



ओमप्रकाश झा

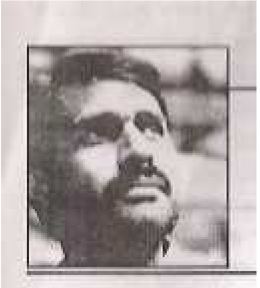
मैथिली गजल पर परिचर्चा

मैथिली गजलक उद्भव आ विकास विषय पर कोनो विचार प्रकट करबाक बहुत योग्य तँ हम अपनाकेँ नै मानै छी, मुदा ई विषय देखि किछु कहै सँ अपना केँ रोकि नै पाबि रहल छी। मैथिली गजलक इतिहास ओना तँ बड़ड पुरान नै अछि। मुदा गीत आ कविता लेखनक कार्य बहुत दिन सँ मैथिली मे चलि रहल अछि। गीत आ कविता मे मैथिलीक बड़ड धनिक इतिहास छै। भारतवर्षक आर्य भाषा सभमे यदि देखल जाय, तँ ई अपने बुझा जाइत छै जे उत्पत्तिक बादे सँ मैथिली मे नीक गीत आ कविता लिखेनाइ शुरू भऽ गेल छल। गजल लिखबाक कोनो परम्परा मैथिली मे नै छल। २० म शताब्दी मे गजल लिखबाक शुरूआत भेल आ २०म शताब्दीक उतरार्द्ध मे एहि मे तेजी आयल। हम अपने किछु दिन

पूर्व धरि गजलसँ अनजान छलौं। आशीष अनचिन्हार जी आ गजेन्द्र जीक सम्पर्क मे आबि मैथिली गजलक विषय मे किछु ज्ञान प्राप्त भेल। अनचिन्हार आखर ब्लाग पूर्ण रूप सँ गजलक लेल समर्पित अछि आ गजलक शास्त्रीयताकेँ नीक जकाँ एहि ब्लाग पर बुझाओल गेल अछि। यएह ब्लाग पढि कऽ हम थोड़ बहुत सरल वार्णिक बहरक गजल लिखबाक प्रयास करैत रहै छी। एखन मैथिली मे गजल बहुत तँ नै लिखल गेल अछि, मुदा गजलक अकालो नै बुझाइत अछि। एकटा नीक गप जे हमरा नोटिस मे आयल जे आब मैथिली पत्र पत्रिका मे सेहो मैथिली गजल नियमित रूपेँ छपि रहल अछि। उत्कृष्टता पर हम किछु बाजबा योग्य नै छी। मुदा एतबा कहब जे जेना जेना नव नव गजलकार सभ एता आ गजल पढबाक रूचि बढल जेतै, तेना तेना नव प्रयोगक संग नीक नीक रचना केर बाढि आबि जेतै। हमरा बूझने मैथिली गजल एखन जवान भऽ रहल अछि आ समयक संग एकर जवानी मैथिली गजल केँ बहुत ऊँच स्थान पर लऽ जएत।

१



धीरेन्द्र प्रेमर्षि

मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना (पूर्वमे विदेहक अंक २१ मे प्रकाशित)

रूप-रङ्ग एवं चालि-प्रकृति देखलापर गीत आ गजल दुनू सहोदरे बुझाइत छैक। मुदा मैथिलीमे गीत अति प्राचीन काव्यशैलीक रूपमे चलैत आएल अछि, जखन कि गजल अपेक्षाकृत अत्यन्त नवीन रूपमे। एखन दुनूकेँ एकठाम देखलापर एना लगैत छैक जेना गीत-गजल कोनो कुम्भक मेलामे एक-दोसरासँ बिछुड़ि गेल छल। मेलामे भोतिआइत-भासैत गजल अरब दिस पहुँचि गेल। गजल ओम्हरे पलल-बढ़ल आ जखन बेस जुआन भऽ गेल तँ अपन बिछुड़ल

सहोदरकेँ तकैत गीतक गाम मिथिला धरि सेहो पहुँचि गेल। जखन दुनूक भेट भेलैक तँ किछु समय दुनूमे अपरिचयक अवस्था बनल रहलैक। मिथिलाक माटिमे पोसाएल गीत एकरा अपन जगह कब्जा करऽ आएल प्रतिद्वन्दीक रूपमे सेहो देखलक। मुदा जखन दुनू एक-दोसराकेँ लगसँ हिया कऽ देखलक तखन बुझबामे अएलैक-आहि रे बा, हमरा सभमे एना बैर किएक, हम दुनू तँ सहोदरे छी! तकरा बाद मिथिलाक धरतीपर डेगसँ डेग मिला दुनू पूर्ण भ्रातृत्व भावेँ निरन्तर आगाँ बढ़ैत रहल अछि।

गीत आ गजलक स्वरूप देखलापर दुनूक स्वभावमे अपन पोसुआ जगहक स्थानीयताक असरि पूरापूर देखबामे अबैत अछि। गीत एना लगैत छैक जेना रङ्गबिरङ्गी फूलकेँ सैँति कऽ सजाओल सेजौट हो। मिथिलाक गीतमे काँटोसन बात जँ कहल जाइछ तँ फूलेसन मोलायम भावमे। एकरा हम एहू तरहेँ कहि सकैत छी जे गीत फूलक लतमारापर चलबैत लोककेँ भावक ऊँचाइ धरि पहुँचबैत अछि। एहिमे मिथिलाक लोकव्यवहार एवं मानवीय भाव प्रमुख भूमिका निर्वाह करैत आएल अछि। जाहि भाषाक गारियोमे रिदम आ मधुरता होइत छैक, ओहि भूमिपर पोसाएल गीतक स्वरूप कटाह-धराह भइए नहि सकैत अछि। कही जे गीतमे तँ लालीगुराँसक फूल जकाँ ओ ताकत विद्यमान छैक जे माछ खाइत काल जँ गऽरमे काँट अटकि गेल तँ तकरो गलाकऽ समाप्त कऽ दैत छैक।

गजलक बगय-बानि देखबामे भलहि गीते जकाँ सुरेबगर लगैक, एहिमे गीतसन नरमाहटि नहि होइत छैक। उसराह मरुभूमिमे पोसाएल भेलाक कारणे गजलक स्वभाव किछु उस्सठ होइत छैक। ई कट्टर इस्लामी सभक सङ्गतिमे बेसी रहल अछि, तेँ एकर स्वभावमे "जब कुछ न चलेगी तो ये तलवार चलेगा" सन तेज तेवर बेसी देखबामे अबैत छैक। यद्यपि गजलकेँ प्रेमक अभिव्यक्तिक सशक्त माध्यम मानल जाइत छैक। गजल कहि तेँ हिँदेरी लोकक मन-मस्तिष्कमे प्रेममय माहौल नाचि उठैत छैक, एहि बातसँ हम कतहु असहमत नहि छी। मुदा गजलमे प्रेमक बात सेहो बेस धरगर अन्दाजमे कहल जाइत छैक। कहबाक तात्पर्य जे गजल तरुआरि जकाँ सीधे बेध दैत छैक लक्ष्यकेँ। लाइ-लपटमे बेसी नहि रहैत छैक गजल। मिथिलाक सन्दर्भमे गीत आ गजलक एक्कहि तरहेँ जँ अन्तर देखबऽ चाही तँ ई कहल जा सकैत अछि जे गजल फूलक प्रक्षेपण पर्यन्त तरुआरि जकाँ करैत अछि, जखन कि गीत तरुआरि सेहो फूल जकाँ भँजैत अछि।

मैथिलीमे संख्यात्मक रूपेँ गजल आनहि विधा जकाँ भलहि कम लिखल जाइत रहल हो, मुदा गुणवत्ताक दृष्टिएँ ई हिन्दी वा नेपाली गजलसँ कतहु कनेको झूस नहि देखबामे अबैत अछि। एकर कारण इहो भऽ सकैत छैक जे हिन्दी, नेपाली आ मैथिली तीनू भाषामे गजलक प्रवेश एक्कहि मुहूर्त्तमे भेल छैक। गजलक श्रीगणेश

करौनिहार हिन्दीक भारतेन्दु, नेपालीक मोतीराम भट्ट आ मैथिलीक पं. जीवन झा एक्कहि कालखण्डक स्त्रष्टा सभ छथि।

मैथिलीयोमे गजल आब एतबा लिखल जा चुकल अछि जे एकर संरचनाक मादे किछु कहनाइ दिनहिमे डिबिया बारब जकाँ लगैत अछि। एहनोमे यदाकदा गजलक नामपर किछु एहनो पाँति सभ पत्र-पत्रिकामे अभरि जाइत अछि, जकरा देखलापर मोन किछु झुझुआन भइए जाइत छैक। कतेको गोटेक रचना देखलापर एहनो बुझाइत अछि, जेना ओ लोकनि दू-दू पाँतिबला तुकबन्दीक एकटा समूहकेँ गजल बूझैत छथि। हमरा जनैत ओ लोकनि गजलकेँ दूरेसँ देखिकऽ ओहिमे अपन पाण्डित्य छाँटब शुरू कऽ दैत छथि। जँ मैथिली साहित्यक गुणधर्मकेँ आत्मसात कऽ चलैत कोनो व्यक्ति एक बेर दू-चारिटा गजल ढङ्गसँ देखि लिअए, तँ हमरा जनैत ओकरामे गजलक संरचना प्रति कोनो तरहक द्विविधा नहि रहि जएतैक।

तेँ सामान्यतः गजलक सम्बन्धमे नव जिज्ञासुक लेल जँ किछु कहल जाए तँ बिना कोनो पारिभाषिक शब्दक प्रयोग कएने हम एहि तरहेँ अपन विचार राखऽ चाहैत छी- गजलक पहिल दू पाँतिक अन्त्यानुप्रास मिलल रहैत छैक। अन्तिम एक, दू वा अधिक शब्द सभ पाँतिमे सझिया रहलहुपर साझी शब्दसँ पहिनुक शब्दमे अनुप्रास वा कही तुकबन्दी मिलल रहबाक चाही। अन्य दू-दू पाँतिमे पहिल

पाँति अनुप्रासक दृष्टिएँ स्वच्छन्द रहैत अछि। मुदा दोसर पाँति वा कही जे पछिला पाँति स्थायीबला अनुप्रासकेँ पछुअबैत चलैत छैक।

ई तँ भेल गजलक मुँह-कानक संरचना सम्बन्धी बात। मुदा खाली मुहे-कानपर ध्यान देल जाए आ ओकर कथ्य जँ गोड़िआइत वा बौआइत रहि जाए तँ देखबामे गजल लगितो यथार्थमे ओ गीजल भऽ जाइत अछि। तेँ प्रस्तुतिकरणमे किछु रहस्य, किछु रोमाञ्चक सङ्ग समधानल चोट जकाँ गजलक शब्द सभ ताल-मात्राक प्रवाहमय साँचमे खचाखच बैसैत चलि जएबाक चाही। गजलक पाँतिकेँ अर्थवत्ताक हिसाबेँ जँ देखल जाए तँ कहि सकैत छी जे हऽरक सिराउर जकाँ ई चलैत चलि जाइत छैक। हऽरक पहिल सिराउर जाहि तरहेँ धरतीक छाती चीरिकऽ ओहिमे कोनो चीज जनमाओल जा सकबाक आधार प्रदान करैत छैक, तहिना गजलक पहिल पाँति कल्पना वा विषय वस्तुक उठान करैत अछि, दोसर पाँति हऽरक दोसर सिराउरक कार्यशैलीक अनुकरण करैत पहिलमे खसाओल बीजकेँ आवश्यक मात्रमे तोपन दऽ कऽ पुनः आगू बढ़बाक मार्ग प्रशस्त करैत अछि। गजलक प्रत्येक दू-पाँति अपनहुमे स्वतन्त्र रहैत अछि आ एक-दोसराक सङ्ग तादात्म्य स्थापित करैत समग्रमे सेहो एकटा विशिष्ट अर्थ दैत अछि। एकरा दोसर तरहेँ एहुना कहल जा सकैत अछि जे गजलक पहिल पाँति कनसारसँ निकालल लालोलाल लोह रहैत अछि, दोसर पाँति ओकरा निर्दिष्ट

आकार दिस बढ़एबाक लेल पड़ऽबला घनक समधानल चोट भेल करैत अछि।

गीतक सृजनमे सिद्धहस्त मैथिल सभ थोड़े बगय-बानि बुझितहिँ आसानीसँ गजलक सृजन करऽ लगैत छथि। सम्भवतः तेँ आरसी प्रसाद सिंह, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, डॉ महेन्द्र, मार्कण्डेय प्रवासी, डॉ. गङ्गेश गुञ्जन, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र आदि मूलतः गीत क्षेत्रक व्यक्तित्व रहितहु गजलमे सेहो कलम चलौलनि। ओहन सिद्धहस्त व्यक्ति सभक लेल हमर ई गजल लिखबाक तौर-तरीकाक मादे किछु कहब हास्यास्पद भऽ सकैत अछि, मुदा नवसिखुआ सभकेँ भरिसक ई किछु सहज बुझाइक।

मैथिलीमे कलम चलौनिहार सभ मध्य प्रायः सभ एक-आध हाथ गजलोमे अजमबैत पाओल गेलाह अछि। जनकवि वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” सेहो “भगवान हमर ई मिथिला” शीर्षक कविता पूर्णतः गजलक संरचनामे लिखने छथि। मुदा सियाराम झा “सरस”, स्व. कलानन्द भट्ट, डॉ.राजेन्द्र विमल सन किछु साहित्यकार खाँटी गजलकारक रूपमे चिन्हल जाइत छथि। ओना सोमदेव, डॉ.केदारनाथ लाभ, डॉ.तारानन्द वियोगी, डॉ.रामचैतन्य धीरज, बाबा वैद्यनाथ, डॉ. विभूति आनन्द, डा.धीरेन्द्र धीर, फजलुर्रहमान हाशमी, रमेश, बैकुण्ठ विदेह, डा.रामदेव झा, रोशन जनकपुरी, पं. नित्यानन्द मिश्र, देवशङ्कर नवीन, श्यामसुन्दर शशि, जनार्दन ललन,

जियाउर्ररहमान जाफरी, अजित कुमार आजाद, अशोक दत्त आदि समेत कतेको स्त्रष्टाक गजल मैथिली गजल-संसारकेँ विस्तृति दैत आएल अछि।

गजलमे महिला हस्ताक्षर बहुत कम देखल जाइत अछि। मैथिली विकास मञ्च द्वारा बहराइत पल्लवक पूर्णाङ्क १५, २०५१ चैतक अङ्क गजल अङ्कक रूपमे बहराएल अछि। सम्भवतः ३४ गोट अलग-अलग गजलकारक एकठाम भेल समायोजनक ई पहिल वानगी हएत। एहि अङ्कमे डा. शेफालिका वर्मा एक मात्र महिला हस्ताक्षरक रूपमे गजलक सङ्ग प्रस्तुत भेलीह अछि। एही अङ्कक आधारपर नेपालीमे मैथिली गजल सम्बन्धी दू गोट समालोचनात्मक आलेख सेहो लिखाएल अछि। पहिल मनु ब्राजाकी द्वारा कान्तिपुर २०५२ जेठ २७ गतेक अङ्कमे आ दोसर डा. रामदयाल राकेश द्वारा गोरखापत्र २०५२ फागुन २६ गतेक अङ्कमे। छिटफुट आन्हु गजल सङ्कलन बहराएल होएत, मुदा तकर जानकारी एहि लेखककेँ नहि छैक। हँ, सियाराम झा ‘‘सरस’’क सम्पादनमे बहराएल ‘‘लोकवेद आ लालकिला’’ मैथिली गजलक गन्तव्य आ स्वरूप दऽ बहुत किछु फरिछा कऽ कहैत पाओल गेल अछि। एहिमे सरस सहित तारानन्द वियोगी आ देवशङ्कर नवीन द्वारा प्रस्तुत गजल सम्बन्धी आलेख सेहो मैथिली गजलक तत्कालीन अवस्था धरिक साङ्गोपाङ्ग चित्र प्रस्तुत करबामे सफल भेल अछि।

समग्रमे मैथिली गजलक विषयमे ई कहि सकैत छी जे मैथिली गीतक खेतसँ प्राप्त हलगर माटिमे गुणवत्ताक दृष्टिएँ मैथिली गजल निरन्तर बढ़ि रहल अछि, बढ़िए रहल अछि।

१०


आशीष अनचिन्हार

मैथिली गजलक वर्तनमान

अनचिन्हार आखरक जन्मसँ पहिने (इंटरनेट पर) किछु गजलकार, समालोचक सभपर आरोप लगबैत छथि जे ओ गजलकेँ बुझि नै सकलाह। मुदा हमरा बुझने आलोचक सही छथि आ गजलकार गलत। कारण मैथिलीक किछु तथाकथित गजलकार सभ अपने गजलकेँ नै बूझि सकलाह। जकर परिणति अबूझ शेर सबहक रूपमे भेल। आ स्वाभाविक छै जे एहन-एहन गजलकेँ आलोचक नकारबे करतथि।

ISSN 2229-547X VIDEHA

वर्तमान गजल-- अ.आ. (अनचिन्हार आखर) क बाद गजल अबूझ नै रहल। से हम किछु शेरक उदाहरणसँ देब।

1)

चाहे अन्ना हो की राजनीतिक पार्टी दूनूक स्थितिकेँ परखैत मिहिर झा कहैत छथि---

छोड़ि दिऔ हाथ देखिऔ केम्हर जाइ छै

जेतै तँ ओ उम्हरे सब जेम्हर खाइ छै

2)

तँ जगदानंद झा "मनु" विस्थापित लोकक वेदना देखार करैत कहैत छथि---

सोन सनक घर-आँगन, स्वर्ग सन हमर परिवार

छोड़ि एलहुँ देस अपन दू-चारि टकाक बेपार पर

3) गप्प जँ आधुनिक शिक्षा पर होइ आ ताहू मे कपिल सिब्बलकेँ धेआन रखैत तँ ताहूमे गजल पाछाँ नै रहल। अभय दीपराज जी कहैत छथि---

परीक्षाक जखन हम नाम सुनैत छी तँ कँपैत छी,
लगैत अछि- सबटा बिसरल रहैत छी, जे की पढल अछि

4) संसार बदलि गेल मुदा नै बदलल तँ मिथिला एकरे लक्ष्य करैत दीप नारायण "विद्यार्थी" कहैत छथि---

जाति-पातिक भेद नहि बदलल समाजक आधार नहि बदलल
कोसीक धार बदलि गेल मित! जीवन धार नहि बदलल

5) एही मिथिलाक सभसँ लज्जाजनक पहलू दहेज पर सुनील कुमार झा एना टिप्पणी करैत छथि-----

बेटीक बियाहमे बिकल अंगा-नुआ

लड़काक सूट तँ कहले नै जाइ-ए

6) एही समाजक एकटा आर पहलू पर उमेश मंडल कहैत छथि---

कियो ककरो नहि देखैए ऐ समाजमे

मोने मन झगड़ाइए चलू घुरि चली

7) आधुनिक मीडिआपर क्रूरतम प्रहार करैत मैथिलीक दोसर मुदा सक्षम महिला गजलकार श्रीमती शांतिलक्ष्मी चौधरी कहैत छथि---

पापक पराकाष्ठामे जन्मै श्रीकृष्ण

मीडिआ छथि जागल कंसक भेषमे

आ एतबहि पर नै रुकैत छथि। आ फेरो कहैत छथि---

सोसल साइट पर करैत छै सेंसर के दाबी रे भाय

अभिव्यक्तिक स्वच्छंद साँढ़ मुँह बन्हबै की जाबी रे भाय

8) मुदा एहन परिस्थिति बेसी दिन बरदास्त नै कएल जा सकैए आ तँए ओम प्रकाश जी कहैत छथि---

मान-अपमान दुनू भेटै छै, ई मायाक थीक लीला,

अन्याय कँे सदिखन दी मोचाड़ि, यैह थीक जिनगी।

9) प्रेम आ प्रेम जनित वेदना गजलक प्रमुख अंग थिक। बिना एकरा गजल झुझुआन लागत। वर्तमान गजलमे इहो भेटत। रवि मिश्रा "भारद्वाज" कहैत छथि----

मोन हमर बहुत चंचल ताहि पर ई यौवन

एना जे नैना चलेबै तँ हमर ईमान झुकि जेतै

आ इएह प्रेम जँ परिपक्व भऽ जाए तखन त्रिपुरारी कुमार शर्मा जीक शेर जन्मैए---

आँखि मिला कऽ हमरा सँ राह पकड़ लेलि अहाँ

कोना कटै अछि दिन आब रचना गवाह अछि

हमर मिहिर झा जीकेँ बूझल छन्हि जे ई वेदना किएक छै तँए ओ कहैत छथि---

हमरा अहाँ तोड़लहुँ सपना बुझि कऽ

हमरा अहाँ छोडलहुँ अपन**ा** बुझि कऽ

मुदा एतबो भेलाक बादो मैथिली ओ भाषा थिक जाहिमे विद्यापति सन कवि भेलाह। विद्यापति आशावादक सभसँ बड़का कवि छथि। आ हमर ओम प्रकाश जी एही आशाकेँ पकड़ि कहैत छथि---

झाँपै लेल भसियैल जिनगीक टूटल धरातल,

ISSN 2229-547X VIDEHA

सपनाक नबका टाट भरि दिन बुनैत रहै छी।

कुल मिला मैथिली गजल एखन विकासक दोसर चरणमे चलि रहल अछि जकर बानगी उपरक उदाहरण सभमे देखल जा सकैए।

मैथिली गजलक भविष्य पर हमर कोनो टिप्पणी नै रहत कारण हम कोनो ज्योतिषी नै छी।

आ अतीतो पर नै कहब कारण ई सभकेँ बूझल छैक। ओना मंजर सुलेमानक आलेखक बाद मैथिली गजल निश्चित रूपे पाछाँ गेल (जीवन झासँ पाछाँ) जे स्वागत योग्य अछि।

११


गजेन्द्र ठाकुर

गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबून, कुण्डलिया, दोहा, रोला ई सभ एकटा स्थापित विधा अछि। स्थापित विधा माने जकर लिखबाक विधि जइ भाषा सभक ई मूल खोज अछि, ओइ भाषामे स्थापित भऽ गेल अछि। जँ हाइकू लिखबा काल कोनो निअम पालन नै करी तँ ओकर नाम क्षणिका पड़ि गेलासँ ओ हाइकू

दोषविहीन नै भऽ जाएत। जँ कोनो भाषासँ हम गजल/ रुबाइ/ कता मैथिलीमे प्रयोग लेल सोचै छी तँ ऐ कारणसँ जे ओ ओइ भाषाक चमत्कारिक चीज अछि, मैथिलीक छौंक लगलासँ कोनो आर चमत्कारक हम आशा राखै छी। सएह हाइकू, शेनर्यू, टनका आ हैबून लेल सेहो लागू अछि। आब एतऽ ई देखबाक अछि जे कोनो विधाक आयात सतर्कतासँ हुअए, ओइ विधाक सैद्धान्तिक पक्ष सुदृढ़ छै। से जेना तेना आयात कऽ हाथपर हाथ धरि सए बर्ख आर इन्तजार करी ई सोचि जे तकर बाद एकर मैथिली छौंकबला अलग सिद्धान्त बनत, तँ तइ लेल स्थापित विधाक आयातक कोन बेगरता? एतेक समएमे तँ एकटा आर नव विधा बनि जाएत!

हँ, मात्र लिप्यांतरण कऽ देलासँ उर्दूक सभ गजल निअम हिन्दीक भऽ जाइत अछि, मुदा ओतहु वर्तनीक भिन्नता मारते रास काफियाक उपनिअमक निर्माणक बाध्यता उत्पन्न करैत अछि। मैथिली तँ साफे अलग भाषा अछि तँ एकर काफियाक निअम सोझे आयातित नै भऽ सकैए। बहरमे वर्ण/ मात्राक गणना पद्धति सेहो हिन्दी-उर्दूमे मात्र कोनो खास शब्दक वर्तनीक भिन्नताक कारण कखनो काल उपनिअम बनेबाक खगता अनुभूत करबैए, मुदा से मैथिलीमे सोझे आयातित नै भऽ सकैए कारण ई साफे अलग भाषा थिक। तँ की काफिया आ बहरक वर्ण/ मात्रा गणना पद्धति मैथिलीमे साफे छोड़ि देल जाए? आकि ओइ मे ततेक ढील दऽ देल जाए जे ओकर

कोनो मतलबे नै रहए? आ तखन जे बहरमे लिखथि वा काफियाक शुद्ध प्रयोग करथि से भेलथि कट्टर आकि जे एकर विरोध करथि से भेला कट्टर? आ जँ बिन काफिया आ बहरक गजलकेँ गजल नै कहल जाए तँ ओ रचना महत्वहीन भऽ गेल? ओ गजल नै भेल, वा जीवन युगक मैथिली गजल भेल, मुदा गीत/ कविता तँ भेबे कएल। कोनो गजल मात्र काफिया आ बहरक शुद्धता मात्र रहने उत्कृष्ट तँ नहिए हएत, मुदा उत्कृष्ट हेबाक सम्भावनाक प्रतिशतता कएक गुणा बढ़त। तहिना कोनो गजल सन रचना जँ अशुद्ध काफियामे आ बे-बहर अछि तँ सएह मात्र ओकर उत्कृष्टताक प्रमाण भऽ जाएत? एकर विपरीत हम ई कहए चाहब जे ओहनो रचना उत्कृष्ट भऽ सकैए, मुदा तकर सम्भावनाक प्रतिशतता भयंकर रूपेँ घटि जाएत।

गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबून, कुण्डलिया, दोहा आ रोला निअमबद्ध रचना अछि। एकरा अकविता, गद्य-कविता आ गीतक स्वरूप देलासँ अहाँ भाषाक कोन उपकार कऽ सकब, कारण अकविता, गद्य-कविता आ गीत तँ स्वयं स्थापित विधाक स्वरूप लऽ लेने अछि। छोट कविता क्षणिका भऽ सकत, हाइकू नै। कुण्डलिया, दोहा आ रोलाक निअम मैथिलीमे बनेबामे कोनो असोकर्ज नै भेल कारण ई सोझे आयातित भऽ गेल मुदा गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबूनमे वर्ण/ मात्रा गणना पद्धति जापानी आ उर्दू-फारसीसँ अहाँ लइए नै सकै छी। जापानक लेखन

पद्धति अल्फाबेट (वर्ण) आधारित अछिये नै, तखन अहाँ ओकर गणना पद्धति कोना आयात कऽ सकब। ओकर तरीका छै, पाश्चात्य तरीका आ सिलेबल आधारित लेखन पद्धति सेहो जापानी भाषामे होइ छै, से तकर प्रयोग कऽ ओइ चित्रात्मक लेखनक सिलेबल आधारित शैलीक मिलान संस्कृतक वार्णिक छन्द गणना पद्धतिसँ कएल गेल आ ओकरा हाइकू, शेनर्यू आ टनका लेल प्रयोग कएल गेल। तहिना गजल, कता आ रुबाइमे वैज्ञानिक आधारपर मैथिली भाषाक सापेक्ष निअम बनाओल गेल जइसँ गजल, कता आ रुबाइ मैथिलीमे दोसर भाषासँ एलाक उपरान्तो अपन मूल विशेषता बना कऽ राखि सकल। आ तकर बाद जे मैथिली गजल आ गजलकारक संख्यामे परिणामात्क आ गुणात्मक वृद्धि भेल अछि, से दुनियाँक सोझाँ अछि।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१. राम भरोस कापरी भ्रमर, नेपाल- बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व/ २.  नवेंदु कुमार झा-बिहार सरकार जानकी नवमीकेँ अवकाशक घोषणा केलक/ उद्यमी सभके सवयं कज देत सरकार जीवित होयत वित्त निगम/ 15 जनवरी के कोसी महासेतूक उद्घाटनक संभावना एक होयत मिथिलांचल, मजगूत होयत संबंध/ 20-21 दिसम्बर के होयत शिक्षक पात्रता परीक्षा, बढ़ि रहल प्रवेश पत्र/ विधानमंडलक शीतकालीन सत्र समाप्त, पास भेल कतेको विधेयक मधुबनी मे खुजत मिथिला चित्रकला संस्थान सह संग्रहालय ३उमेश मण्डल-75म कथा गोष्ठीमे 39 टा कथापाठ



१. राम भरोस कापरी भ्रमर, नेपाल- बि**राटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व/**

२०११ दिसम्बर ९-१० केँ बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व मनोल गेल। उद्घाटन उपराष्ट्रपति परमानन्द झा केलैन। समारोहमे प्राज्ञ राम भरोस कापरी भ्रमर , डॉ. देवेन्द्र झा , गीतकार सियाराम झा सरस बिशेष रुपें आमंत्रित छलाह।९ ता. केँ प्रभात फेरी भेलै जइमे उप राष्ट्रपति सेहो भाग लेलैन। कार्यक्रममे कवि गोष्ठी ,विचार गोष्ठी आ भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम छल। जनकपुरसँ गेल प्रतिबिम्ब टोली राम भरोस कापरी भ्रमर लिखित लोक नाट्य जट-जटिनक सुंदर प्रस्तुति केलक।-




विद्यापति स्मृति पर्व समारोह
२०६८
विराटनगर
कार्यक्रम





२



नवेंदु कुमार झा

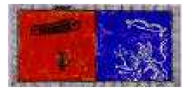
१

बिहार सरकार जानकी नवमीकेँ अवकाशक घोषणा केलक।

बिहार गीतमे मिथिलाक अवहेलनक लेल आलोचनाक ई एकटा क्षतिपूर्तिक प्रयासक रूपमे देखल जा रहल अछि। बिहारक कैबिनेट २०१२ क कैलेण्डरकेँ मंजूरी देल अछि। अगिला साल ३० अप्रैल २०१२ केँ सोम दिन मिथिला पंचागक हिसाबेँ जानकी नवमी अछि, ३० अप्रैल २०१२ केँ रहत छुट्टी ।

२

उद्यमी सभकेँ स्वयं कर्ज देत सरकार - जीवित होयत वित्त निगम

ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रदेशक उद्यमी सभके कर्ज देबाक प्रति बैंक सभक उदासीनताकेँ देखैत बिहार सरकार स्वयं कर्ज देबाक निर्णय लेलक अछि। एहि वास्ते सरकार बिहार राज्य वित्त निगमकेँ मजगूत कऽ अपन क्षमता बढ़ाओत। वित्त निगम अगिला वर्षसँ काज करय लागत। उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी जनतब देलनि अछि जे अव्यवस्थाक कारण पछिला 25 वर्ष सँ निगम मरन्नासन हाल मे छल। एकरा फेर सँ सक्रिय करबाक प्रयास प्रारम्भ कऽ देल गेल अछि। सरकार एकर सभ कर्जक भुगतान कऽ देत। श्री मोदीक आ अगिला वित्तीय वर्ष सँ ई निगम उद्यमी सभकेँ कर्ज देब प्रारंभ कऽ देत। श्री मोदीक मोताबिक पछिला किछु वर्षसँ बैंक सभ प्रदेश मे कर्ज देबाक गति बढ़ौल अछि मुदा एखनो ई संतोषजनक नहि अछि। तें सरकार स्वयं अपन क्षमता बढ़ैबाक निर्णय लैत वित्त निगमकेँ फेर सँ चालू करय जा रहल अछि। उपमुख्यमंत्रीक अनुसार सरकारक मुख्य जोर प्रदेश मे मध्यम आ छोट उद्योगक विकास पर अछि। जतेक तेजी सँ एहि श्रेणीक उद्योगक विकास होयत ओतबा तेजी सँ प्रदेशक विकास होयत आ रोजगारक अवसर सेहो बढ़त। असल मे एहि तरहक उद्योग मे श्रमक बेसी सँ बेसी उपयोग होइत अछि तें रोजगार सेहो बेसी लोककेँ भेटबाक संभावना रहैत अछि। उद्योग विभाग सचिव सी.के. मिश्रा जनौलनि अछि जे प्रदेश मे वर्तमान मे 19 लाख मध्यम आ छोट उद्योग अछि जाहि मे सँ आधा बन्द अछि। बंद आ बिमार उद्योगक सोझा सभ सँ पैघ समस्या कर्जक अछि। बैंक एहि मामिला मे सरकारक बेसी मदति

नहि कऽ रहल अछि तें सरकारकेँ स्वयं अपन क्षमता बढ़ाएब आवश्यक अछि।

३

15 जनवरी केँ कोसी महासेतूक उद्घाटनक संभावना - एक होयत मिथिलांचल, मजगूत होयत संबंध

कतेको वर्ष सॅं दू भाग मे बॅटल मिथिलांचल आब जल्दीए एक भऽ जायत। अगिला वर्ष मे दूनू भाग केँ एक होयबाक समाद सॅं सम्पूर्ण मिथिलांचल मे खुशीक लहरि पसरल अछि। सूत्र सॅं भेटल जनतबक अनुसार कोसी नदी पर निर्मली आ भपटियाहीक मध्य कोसी महासेतू बनि कऽ तैयार भऽ गेल अछि आ एकर उद्घाटन 15 जनवरी 2012 केँ होयबाक संभावना अछि। एहि महासेतूक उद्घाटन प्रधान मंत्रीक हाथे करैबाक प्रयास कयल जा रहल अछि। कोसी नदी पर बनल रेल पूल वर्ष 1934 मे आयल भूकम्प सँ ध्वस्त भऽ गेल छल आ मिथिलांचल दू भाग मे बटि गेल छल। दरभंगा आ मधुबनी सॅं कोसी क्षेत्र जायब दुरूह भऽ गेल छल। वर्ष 2000 मे केन्द्र मे अटल बिहारी वाजपेयीक नेतृत्व वाला राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार नीतीश कुमारक रेलमंत्रीत्व काल मे एहि ठाम रेल सह सड़क पूल बनैबाक काजक शिलान्यास अटल

बिहारी वाजपेयीक हाथे भेल छल। नीतीश कुमारक मुख्यमंत्रीत्व मे ई साकार रूप लऽ लेलक अछि जल्दीए एहि महासेतू पर आवाजाही प्रारम्भ भऽ जायत। एहि महासेतूक चालू भेलाक निर्मली सँ सुपौलक दूरी मात्र आधा घंटा मे तय कयल जा सकत। दरभंगा आ मधुबनी सँ पूर्णिया पहूँचब सेहो आसान भऽ जायत आ एकर दूरी वर्तमान मे गोटेक 237 किलोमीटर सँ घटि कऽ 142 किलोमीटर भऽ जायत। एहि सँ मिथिलांचल एक सूत्र मे जूड़ि जायत आ बंद भेल वियाह-दानक प्रक्रिया एक बेर फेर सँ प्रारंभ होयत। एकर गोटेक ऊंचाई 12 मीटर अछि। एकर निर्माण गेमन इंडिया कयलक अछि। एहि महासेतूक 17 वर्ष धरि रख रखाबक जिम्मेवारी सेहो निर्माण करय वाला कम्पनी पर अछि।
मिथिलांचल एकीकरणक एहि क्षणकेँ यादगार बनैबाक लेल मिथिलावासी उत्साह सँ लागल छथि। मिथिलांचलक आन क्षेत्र सँ कोसी क्षेत्र मे वियाह-दानक कम भेल गति मे तेजी अनबाक लेल प्रतीक स्वरूप उद्घाटनक दिन उद्घाटन स्थल पर एगारहटा वर-कन्याक सामुहिक विआह योजना सेहो बनल अछि। पटनाक प्रमुख मैथिल समाज सेवी धीरू जी उद्घाटनक अवसर पर एगारहटा जोड़ाक विवाह करैबाक घोषणा कयलनि अछि। एहि लेल मधुबनी आ दरभंगा जिला आ कोसी क्षेत्रक इच्छुक वरागत आ कन्यागत केँ आमंत्रित कयलनि अछि। एहि दिस हुनका सफलता सेहो भेटल अछि। किछु वरागत आ कन्यागत एहि पर अपन सहमति सेहो देलनि अछि जे कोसी क्षेत्र आ दरभंगा-मधुबनी जिलाक छथि।

प्रतीकक रूप मे कयल जा रहल एहि आयोजन सॅ एक बेर फेर मिथिलांचलक मे संबंधक क्षेत्र बढ़त आ कोसीक घाट सॅ बटल दिल फेर सॅ एक होयत।

४

20-21 दिसम्बर कें होयत शिक्षक पात्रता परीक्षा, बढ़ि रहल प्रवेश पत्र

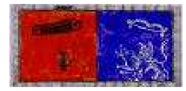
प्रदेश मे शिक्षक पात्रता परीक्षा 20 आ 21 दिसम्बर कँ जिला आ अनुमंडल मुख्यालयक 1380 परीक्षा केन्द्र मे आयोजित कयल जायत। एहि परीक्षा मे गोटेक 28 लाख परीक्षार्थी सम्मिलित होयताह। एहि परीक्षाक लेल प्रवेश पत्र बँटबाक काज चलि रहल अछि। आवेदन पत्र गलती भरलाक कारण दू लाखसँ बेसी आवेदन पत्र विभिन्न कारण रद्द कऽ देल गेल छल जाहिसँ आवेदक सभक आक्रोश सोझाँ आबि रहल छल। आवेदक सभक एहि आक्रोश पर तत्काल डेग उठबैत सरकार आवेदन रद्द भेल उम्मीदवार सभकँ राहत दैत सभ आवेदक कँ परीक्षा मे सम्मिलित करैबाक निर्णय लेलक अछि। शिक्षा मंत्री पी.के. शाही घोषणा कयलनि अछि जे जाहि आवेदकक आवेदन रद्द कऽ देल गेल अछि हुनका सेहो परीक्षा

मे बैसबाक अवसर देल जायत। सरकारक एहि निर्णय सँ आवेदन रद्द भेल उम्मीदवारक शिक्षक बनबाक बाट खूजि गेल अछि।

५

विधानमंडलक शीतकालीन सत्र समाप्त, पास भेल कतेको विधेयक मधुबनी मे खुजत मिथिला चित्रकला संस्थान सह संग्रहालय

बिहार विधानमंडलक शीतकालीन सत्र समाप्त भऽ गेल। 2 दिसम्बर सँ 9 दिसम्बर धरि चल एहि सत्रक दरमियान बिहार विधान सभा आ बिहार विधान परिषद्क पांच-पांच बैसक भेल। सत्रक दरमियान सरकार कतेको महत्वपूर्ण काजक निपटाराक संगहि कतेको महत्वपूर्ण विधेयक पास करौलक। ऐतिहासिक बिहार लोकायुक्त विधेयक पर सदन सेहो अपन मोहर लगौलक। सदन मे सत्तारूढ़ दलक अपार बहुमतक मध्य विपक्ष धानक खरीद आ चारा घोटाला मे मुख्यमंत्रीक भूमिकाक लऽकऽ सदन कैं गर्म रखबाक प्रयास कऽ अपन उपस्थितिक दर्ज करैबाक प्रयास कयलक। छोट सत्रक बावजूद एहि सत्र मे लोकायुक्त विधेयकक अलावा बिहार भूमि दाखिल खारिज विधेयक, बिहार अपार्टमेंट स्वामित्व (संशोधन) विधेयक, बिहार नगरपालिका संशोधन विधेयक, बिहार सहकारी सोसायटी संशोधन विधेयक, भू-सर्वेक्षण आ बंदोवस्ती विधेयक,

बिहार विश्वविद्यालय (संशोधन) विधेयक आ पटना विश्वविद्यालय संशोधन विधेयक सहित एगारहटा विधेयक पास कयल गेल।
बिहार विधानसभाक भेल पांच बैसक मे कुल 936 प्रश्नक सूचना भेटल छल जाहि मे 682 प्रश्न एकीकृत कयल गेल एहि मे 484 तारांकित, 176 अतारांकित आ 24 अपसूचित प्रश्न छल। स्वीकृत प्रश्न सॅ 70 प्रश्नक उत्तर देल गेल आ 90 प्रश्न कैँ सभा पटल पर राखल गेल।
कुल 113 ध्यानाकर्षण प्रश्न मे से 91क उत्तरक लेल संबंधित विभाग कैँ पठा देल गेल। दोसर दिस बिहार विधान परिषद्‌क 169म बेसक मे 471 प्रश्नक सूचना भेटल जाहि मे 429 प्रश्न स्वीकृत कयल गेल। स्वीकृत प्रश्न मे 115 प्रश्नक उत्तर देल गेल आ शेष बचल प्रश्नक उतर अगिला सत्र मे सदनक पटल पर राखल जायत। दूनू सदनक विभिन्न समितिक कतेको प्रतिवेदन सदन पटल पर राखल गेल। सत्रक दरमियान मधुबनी जिलाक लौकहा विधानसभा उपचुनाव मे विजयी भेल जदयूक सतीश कुमार साह सदनक सदस्यता ग्रहण कयलनि तऽ लोक जनशक्ति पार्टी डा. प्रमोद कुमार आ नौशाद आलम के जदयू सदस्यक रूप मे मान्यता देल गेल। दूनू सदस्य लोजपा सॅ इस्तीफा दऽ जदयू मे सम्मिलित भेल छलाह।
सत्रक दरमियान विधान परिषद् मे कला संस्कृति आ युवा विभागक मंत्री डा. सुखदा पाण्डेय जनतब देलनि जे मधुबनी मे मिथिलाचित्र कला संस्थान सह संग्रहालयक स्थापनाक लेल सैद्धांतिक रूप सॅ

ISSN 2229-547X VIDEHA

सहमति बनि गेल अछि। एहि संस्थान मे प्रशिक्षण, प्रदर्शनी आ संग्रहालयक व्यवस्था रहत। एहि ठाम प्रशिक्षण प्राप्त करय वालाकेँ डिग्री सेहो देल जायत। एहि सॅ पहिने परिषद मे शिक्षा मंत्री पी.के. शाही द्वारा संजय झाक प्रश्नक उत्तर देबाक क्रम मे परिषदक सभापति ताराकांत झा हस्तक्षेप करैत साहित्य आ संस्कृति केँ बचैबाक दिशा मे काज करबाक निर्देश देलनि। श्री झा कहलनि जे मिथिला संस्कृत शोध संस्थान दरभंगा मे साढ़े बारह हजार पाण्डुलिपि सड़ि रहल अछि जकरा बचैबाक आवश्यकता अछि। ओ कहलनि जे सरकार दुर्लभ पाण्डुलिपि सभक संरक्षण मे रूचि देखब। परिषद सदस्य संजय झा अपन ध्यानाकर्षणक माध्यम सॅ सरकारक ध्यान आकृष्ट करबैत कहलनि जे मिथिलाक्षर लिपि अति प्राचीन अछि। हालहि मे पटना मे उपेन्द्र महारथी शिल्प संस्थानक सफाईक दरमियान मिथिलांक्षर मे हस्तलिखित रामायण, महाभारत आ मिथिला दर्शन नामक पाण्डुलिपि भेटल अछि। मिथिलांक्षर मे होएबाक कारण किछु विशेष पता नहि चलि रहल अछि। मुदा देवनागरी लिपि मे किछु सूचना होयबा सॅ पता चलैत अछि जे ई पाण्डुलिपि अछि जे पहचानक मोहताज अछि। अपन उत्तर मे शिक्षा मंत्री कहलनि जे मिथिला संस्कृत शोध संस्थान एहि दिशा मे काज कऽ रहल अछि। आठ दशक पहिने पंडित जीवनाथ रायक मिथिलाक्षर लिपि मे लिखित पोथीक प्रकाशन कराओल जा रहल अछि।

३

उमेश मण्डल

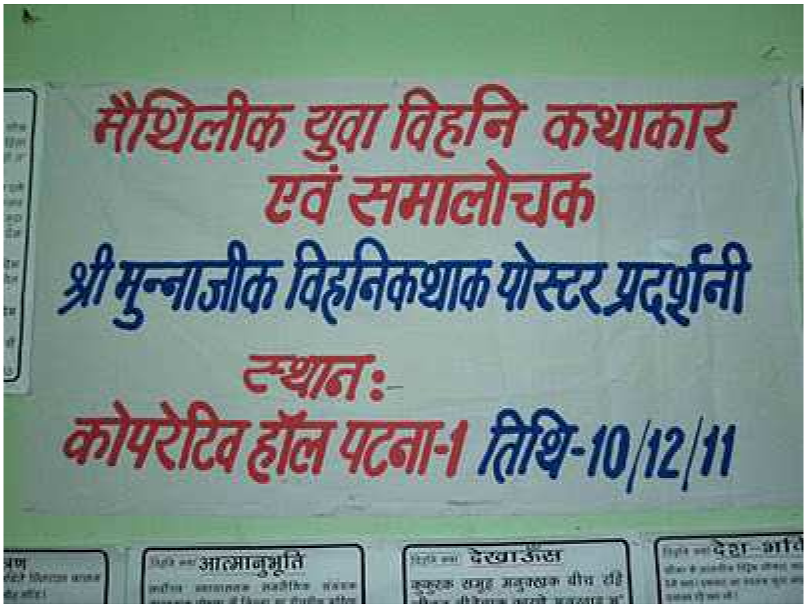
75म कथा गोष्ठीमे 39 टा कथापाठ

10 दिसम्बर 2011कैँ 'सगर राति दीप जरय'क 75म कथा गोष्ठीक आयोजन बिहार को-ऑपरेटिव फेडरेशन हॉल, बुद्धमार्ग पटनामे कएल गेल। साँझ 5:30 बजेसँ भिनसर 8 बजे धरि गोष्ठी जमल रहल। संयोजक द्वय अशोक आ कमल मोहन 'चुन्नू' जीक ऐ आयोजनमे 39 गोट कथा/ लघुकथाक पाठ भेल आ तइपर दूटप्पी समीक्षा सेहो कएल गेल। ऐ अवसरपर विभिन्न विधाक दर्जन भरि पोथी लोकार्पणक संग 16 म विदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी आ

विदेहक सहायक संपादक मुन्नाजी द्वारा मैथिलीक पहिल विहनि कथा पोस्टर प्रदर्शनी सेहो रहए।


मैथिलीक युवा विहनि कथाकार
एवं समालोचक
श्री मुन्नाजीक विहनिकथाक पोस्टर प्रदर्शनी
स्थान:
कोपरेटिव हॉल पटना-1 तिथि-10/12/11

ISSN 2229-547X VIDEHA



श्रीमती प्रीति ठाकुरक पोथी ‘‘मिथिलाक लोक देवता’’ आ विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी मूल पुरस्कारसँ पुरस्कृत पोथी ‘‘गामक जिनगी’’ (जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा संग्रह) , ऐ दुनू पोथीक एकहक सए प्रतिक वितरण श्रुति प्रकाशन केलक।

मैथिली कथा लेखनक क्षेत्रमे शान्त क्रान्तिक ऐ 75म गोष्ठीक दीप प्रज्वलित कऽ विधिवत् उद्घाटन केलनि श्री राजमोहन झा। स्वागत

केलनि श्री अशोक। अध्यक्षता केलनि श्री उग्रनारायण मिश्र ‘कनक’, संचालन डॉ. तारानन्द वियोगी। मुख्य अतिथि श्री श्यामानन्द चौधरीक उपस्थितिमे कार्यक्रमकेँ आगाँ बढ़ाओल गेल पोथी लोकार्पण सत्रसँ जइमे 12 गोट पोथीक लोकार्पण क्रमश: ऐ तरहेँ भेल-

1. निबंध सुधा (निबंध संग्रह, सुधा कुमारी) लोकार्पण श्री मोहन भारद्वाज।

2. जखन तखन पत्रिका (प्रेम विशेषांक, संपादक विभूति आनंद, अशोक मेहता) लोकार्पण डॉ. वासुकीनाथ झा।

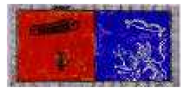
3. कोसी कातक गंगा (संस्मरण, साकेतानन्द) श्रीमती उषा किरण खाँ।

4. ऐ अकावोनमे (कविता संग्रह, राज) लोकार्पण- डॉ. रामानन्द झा ‘रमण’

5. जुबैदा (कथा संग्रह, उग्रनारायण मिश्र ‘कनक’) लोकार्पण केलनि श्री राजमोहन झा।

6. समय साक्षी थिक (लघुकथा संग्रह, अनमोल झा)- डॉ. देवशंकर नवीन आ श्री उग्रनारायण मिश्र ‘कनक’।

7. गंग नहौन (कविता संग्रह, निशाकर) डॉ. तारानंद वियोगी।

ISSN 2229-547X VIDEHA

8. बेटीक अपमान आ छीनरदेवी (नाटक, बेचन ठाकुर)- श्री राजमोहन झा।

9. अनचिन्हार आखर (गजल संग्रह, आशीष अनचिन्हार)- लोकार्पण- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री श्याम दरिहरे, श्री अनमोल झा।

10. जेना जनलियनि (संस्मरण, महेन्द्र नारायण राम 'नीलकमल')- लोकार्पण श्री मन्त्रेश्वर झा।

11. सीतावतरण (खण्डकाव्य, संपा. योगानंद झा) लोकार्पण श्री मोहन भारद्वाज।

12. गाममे (नेपाली भाषाक कविता संग्रह 'गाऔंमे हरू' मूल कवियत्री रेमीका थापा केर मैथिली अनुवाद, प्रदीप बिहारी) लोकार्पण श्री अशोक।

लोकार्पण सत्रक पछाति कथा सत्रक शुभारम्भ भेल जइमे नवोदित कथाकारक संग स्थापित कथाकार लोकनि अपन-अपन नूतन कथा/लघुकथाक पाठ केलनि जेकर सुची क्रमश: ऐ तरहेँ अछि-

प्रदीप बिहारी- कोदारि

तारानंद वियोगी- वैदिक हिंसा

मन्त्रेश्वर झा दूटा लघुकथा- जगरनाथ, उजारि

पन्ना झा- प्रवोधन

मधुकर भारद्वाज- रीमोट

शशिकान्त झा- चोरबा वंश

लछमीदास- भरमे-सरम

बेचन ठाकुर दूटा लघुकथा- भुखाएल आ अबाम

उमेश मण्डल दूटा लघुकथा- चोर-सिपाही आ काल्हि दिन

अनमोल झा- समाङ आ अन्हार

रघुनाथ मुखिया- प्रलोभन आ निचेन समयमे

दुगानन्द मण्डल- पोस्टमार्टम आ प्रदूषन

अजय कुमार मिश्र- उठह हौ वनियाँ हाट-बजार

मेनका बिहारी- घरारी

अरूाणा चौधरी- अभिन्न

निक्की प्रियदर्शनी- पलायन

धीरेन्द्र कुमार- मररिया चेतल

कमलकान्त झा- मँहतक्की

जगदीश प्रसाद मण्डल- परिवारक प्रतिष्ठा

हीरेन्द्र- हाष्यपर व्यंग फ्री

अर्द्धनारीश्वर- घोड़ा घास

दिलीप झा-

रामविलास साहु- स्वर्गक सुख

शिवकुमार मिश्र- प्लेटफार्म

नन्दविलास राय- जाति

पंकज सत्यम्- महानता

दिलीप कुमार- पुरस्कार

उमेश नारायण कर्ण- अन्धविश्वास

सुरेश पासवान- बगुलाक सरदार

जगदीश कुमार भारती- धुरफन्दीलाल

रामनारायणजी- सिनुरिया

ऋृषि बशिष्ठ- देश प्रेम

पंकज कुमार- प्रियांसु

मुन्नाजी- विकल्प

धनाकर ठाकुर- ओ

श्याम दरिहरे- जौहर

विभूति आनन्द- वन-वे ट्रेफिक

देवशंकर नवीन- मोटर साइकिल

भवनाथ झा- मंडनक मनोभाव (650-670 ऐतिहासिक घटना)।

अधिक कथाकारक जमघट भेने पठीत कथा सभपर समीक्षामे थोड़ेक कंजुशी कएल गेल। जे स्वभाविक छल। मुदा तैयो किछु कथापर किछु विशेष टिप्पणी आएल जेना तारानंद वियोगीक पठित कथा- वैदिक हिंसा'पर जगदीश प्रसाद मण्डल कहलनि- यथार्थवादी कथा पूर्णतामे कंजूसी। सम्प्रदाय, धर्म आ अध्यात्म, तीनू तीन। कथा एक अंगक, मात्र समस्याक। समस्याक कारण आ निदान सेहो होय।

तहिना कोदारि कथापर दुगानंद मण्डल कहलनि- शीर्षकक सार्थकताक अभाव। अही तरहेँ भवनाथ झाक पठित- मण्डनक मनोभाव' कथापर धनाकार ठाकुर कहलनि- ऐ कथाक मादे वेदक निंदा कऽ मण्डन मिश्रकेँ गैर ब्राह्मण विरोधी बताओल गेलहें। जे गलत अछि। जेकर कोनो प्रमाण नै। तइ लेल हम एकरा वहिष्कार करैत छी। कहैत डॉ. धनाकर ठाकुर गोष्ठीसँ बाहर निकलि गेलाह! चलि गेलाह!!

अंतमे, अगिला गोष्ठीक आयोजन हेतु प्रस्ताव लेल घोषणा कएल गेल। पूर्व प्रस्तावमे हजारिये बागसँ दूटा छल जे क्रमश: अर्द्धनारीश्वर आ प्रदीप बिहारीक छलनि। एकटा नव प्रस्ताव डॉ. देवशंकार नवीन जीक आएल। ऐ तीनू प्रस्तावमे अर्द्धनारीश्वरक प्रस्ताव रहनि बोकारोमे हुअए। जे 74म कथा गोष्ठी हजारिये बागसँ प्रस्तावक छलाह। मुदा प्रदीप बिहारी प्रस्तावक तँ अहुठाम बनलाह जे अगिला गोष्ठी बेगुसरायमे हुअए मुदा जहिना हजारीबागक गोष्ठीमे पटना भेने चूप भऽ समर्थके बनि गेल छलाह तहिना अहुठाम 76म गोष्ठी बेगुसरायमे हुअए तकर प्रस्तावक बनलाह मुदा देवशंकर नवीनक प्रस्ताव दिल्ली लेल एने चूप भऽ समर्थक बनि गेलाह।

अर्द्धनारीश्वरक बातपर कोनो विचार नै कएल गेल। अर्द्धनारीश्वर एक बेर बजेत सुनल गेलाह- 'अर्जी ककरो मर्जी ककरो'।

निर्णए भेल जे अगिला गोष्ठी दिल्लीमे डॉ. देवशंकर नवीनजी संयोजकत्वमे कएल जाएत। उपस्थिति पुस्तिका आ दीप डॉ. देवशंकर नवीन जीकँ सौंपैत गोष्ठी शेष भेल।

{ऐ सन्दर्भमे श्री परमेश्वर कापड़ि  जीक भूतकालमे देल सुझाव:

मैथिली कथाक परिवेश आ प्रवृति विमर्श

आजुक अपरिहार्य आवश्यकता अछि– नेपालक मैथिली कथाक प्रभाव आ प्रभुत्वपर, एकर विस्तृत परिधि आ पहुँचके सन्दर्भमे, एकर परिवेश आ प्रकृतिपर जमिक', जुटिक' विमर्श करब ।
मैथिली कथाक ऐतिहासिकता आ रचनाधर्मिताक समग्र आयाम बहुत विस्तृत आ परम ऐतिहासिक रहनहुँ, एकर
– पाठकीय समस्या तथा समीक्षात्मक मूल्याँकनक संकट,
– बदलैत परिप्रेक्ष्यमे, मोह भंगक स्थितिवोध,
– आधुनिक, उत्तर आधुनिकताक चुनौती आ मूल्य संक्रमणक स्थिति,
– युग परिवत्र्तन आ परिवत्र्तित परिप्रेक्ष्यमे मूल्य संघर्षक दिशा,
– प्रमाणिक परिवेश आ लोकसरोकारी आवाजक आवेग,
– समयसंग साक्षात्कार आ सृजनात्मक रचना प्रक्रियापर, खुलिक' बात करब ।

०००

एहि कथा गोष्ठीक उद्देश्यक आवेग महत्वाकाँक्षी रहल अछि आ बहुत किछु उपलव्धीमूलक पाबए चाहैत अछि । एहनमे बड़ नीक रहत जे मैथिली कथाक

– सामाजिक सन्दर्भ – - Social Context _

– सांस्कृतिक सन्दर्भ – -Cultural ,, _

– राजनैतिक सन्दर्भ – { -Political ,, _

– वैचारिक सन्दर्भ - Ideologicla ,, _
– समसामयिक सन्दर्भ - Contemporaneous context _
– प्रायोगिक सन्दर्भ - Experimental context _ पर

ठाठस' ठठिक', जमिक' जाँघ जोड़िक' एकठौहरी एकमुहरी भ' एकर समग्र मुद्दा आ विषय परिदृशयके एहन सानि मथिक' निष्कर्षपर पहुँची जे एकर रचनाधर्मिता आ लेखन प्रक्रियाके समेकित ऊर्जा आ

ISSN 2229-547X VIDEHA

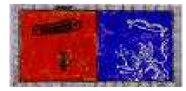
उत्साह दैक आ एकटा ठोस दिशानिर्देश ई पाबए । समकालीन मैथिली कथालेखनक अवलोकन आ पठित कथाके प्रतिक्रियात्मक टिप्पणीस' कथाकारके रचनात्मक ऊर्जा आ विश्वास प्रदान करबाक हेतुए अपन धारणा सहित, अपन विचारात्मक निर्देशकीय भूमिकास' उत्साहजनक स्थिति परिस्तिथि निमार्ण करैत, गोष्ठीके ऐतिहासिकता प्रदान कएल जाय !

प्रा.परमेश्वर कापड़ि

२०६८/८/०४ गोष्ठी संयोजक

श्रीरामानन्द युवा क्लव, जनकपुरधाम }

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।



डॉ - अरुण कुमार सिंह

ISSN 2229-547X VIDEHA

भा
र
ती
य

भा
षा
क

भा
षा
वै
ज्ञा
नि
क

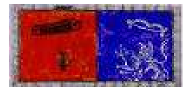
सां
ख्यि
की

सं

कायभारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

मैथिलेत्तर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कँप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका



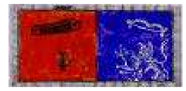


ISSN 2229-547X VIDEHA

भूमिका

भारत एकटा बहुभाषी देश अछि। एतय भारोपीय, द्रविड़, आस्ट्रो-एशियाटिक आओर चीनी-तिब्बती चारि भाषा परिवारक लगभग 1650क ऊपर भाषा बाजल जाइत अछि। एक मतक अनुसार लगभग 1455 भाषा एहन अछि जकरा 10 हजारसँ कमे लोक बजैत अछि। 'सेंसस डाटा 2001'क अनुसार-मैथिली बाज' वलाक संख्या 12,179,122 बताओल गेल अछि। आइ संविधान मान्यता प्राप्त 22 भाषा (मैथिली, हिंदी, संस्कृत, मलयालम, तेलगु, तमिल, कन्नड़, मराठी, बंगला, पंजाबी, गुजराती, कश्मीरी, उर्दू, उड़िया, असमिया, बोडो, संथाली, सिंधी, डोगरी, कोंकणी, मणिपुरी,नेपाली) अछि। तथा 100सँ बेसिए एहन भाषा अछि जे आठवीं अनुसूचीमे नहि अछि। भारतक एहन बहुसंख्यक भाषाई परिदृश्य पर बाज'वलाक संख्या आओर भौगोलिक दृष्टि सँ जखन विचार कएल जाइछ तें पता चलैछ जे मैथिलीक महत्त्वकेँ नजरअंदाज नहि कएल जा' सकैछ; कियाक तँ ई देशक एकटा पैध भू-भागक भाषा थिक। ई बिहारक प्रमुख भाषा अछि, तथा कतोक प्रदेशमे गौण भाषाक रूपमे सेहो व्यवहृत अछि।

विश्वभ्रामक संकल्पना तँ तकनीकी (Technology)केँ चरण पर पहुँचा देल अछि। आधुनिक तकनीकीक विकासमे

कँम्प्यूटरक आविष्कार एकटा युगांतकारी घटना अछि। कम्प्यूटर आइ जीवनक लगभग क्षेत्रमे अपन जगह बनाए लेल अछि। चूँकि भाषा जीवनक अभिन्न अंग अछि तेँ ओ कम्प्यूटरसँ कोना असम्पृक्त रहि सकैछ। आइ भाषिक अध्ययन आओर विश्लेषणक लेल कँम्प्यूटरक उपयोग बहु अनिवार्य भ' गेल अछि। अतः मैथिली भाषाक समृद्धि एवं प्रचार- प्रसारक लेल कँम्प्यूटरीकरण नितांत आवश्यक भ' गेल अछि। प्रस्तुत आलेखमे द्विती भाषाक रुपमे मैथिली सिखैबामे कंप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका पर विचार करबाक प्रयास कएल गेल अछि।

भाषा शिक्षण एवं भाषा विज्ञान

मानव-उच्चराण अवयव द्वारा उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकक ओहि व्यवस्थाकेँ जकर माध्यमसँ मानव समुदाय-विशेषक लोक परस्पर विचार-विनिमय करैत अछि, ओकरा बाजब, पढब, लिखब एवं सुनब तथा समझबाक शिक्षाकेँ भाषा-शिक्षण कहल जाइत अछि। ई झाँच अछि जे मैथिलेत्तरभाषी लोकक अपन मातृभाषा होइछ एवं ओकरा संगहि ओकर पहिल भाषा सेहो होइछ एहिलेल मैथिलीकेँ द्वितीय भाषाक रूपमे सीखबामे की-की कठिनाई अबैछ एवं ओहि कठिनाईकेँ भाषा-विज्ञान आओर कंम्प्यूटर कत' धरि समाधान क' सकैछ एहि पर विचार करब समीचीन होएत।

ISSN 2229-547X VIDEHA

प्राचीने कालसँ जीविकोपार्जन एवं ज्ञानार्जन आदिक लेल अधिकांश लोककेँ मातृभाषाक संगे-संग दोसर भाषा सीखबाक आवश्यकता पड़ैत आबि रहल अछि। एहि दोसर भाषाकेँ द्वितीय भाषा कहल जाइछ। एहि द्वितीय भाषाकेँ सीखबाक लोककेँ भाषार्जनक जटिल प्रक्रियासँ बैस सतर्कतापूर्वक गूजर' पड़ैछ। भाषा विज्ञान तथा शिक्षा शास्त्रक दृष्टिसँ पहिल भाषासँ हँटिक' सीखल जायवला सभ देशी बा विदेशी भाषा द्वितीय भाषाक श्रेणीमे अबैछ।

आधुनिक युगमे द्वितीय भाषा-शिक्षणकेँ गंभीरतापूर्वक लेल जा रहल अछि आओर एहि बातक पूरजोर प्रयास कएल जा' रहल अछि जे विद्यार्थी कमसँ कम समयमे भाषाकेँ ठीक ढंग सँ सीखए आओर सुगमतापूर्वक प्रयोग करबामे सक्षम भ' सकए। एहि संबंधमे चारि प्रारंभिक भाषा कौशल (Language Skills) सुनब, बाजब, पढ़ब आओर लिखबकेँ ध्यानमे राखि भाषा-शिक्षणकेँ अंजाम देल जा' रहल अछि। एहिमे पहिल दुई भाषाक उच्चरित रूपसँ सम्बद्ध अछि जखनकि अन्तिम दुई भाषाक लिखित रूपसँ। उच्चरित भाषासँ संबंधित कौशलमे भाषाक बोलीगत रूपसँ सम्बन्धित दुई प्रमुख कौशल-सुनबाक तथा बोलबाक अन्तर्गत निम्नलिखित भाषिक पक्ष लेल जाइत अछि–1. ध्वनीमे भेद करबाक योग्यता, 2. उच्चारणमे अनुकरणक सामर्थ्य, 3. उपकाव्य संरचना, 4. वाक्य संरचनाक नियमक ज्ञान, 5. मुक्त भाषण, 6. पदबन्ध, 7. शब्दावली, 8.

श्रवण बोधन, 9. मुक्त बोधन, 10. गप-सप। वस्तुतः पहिल दुई सुनबासँ संबंधित अछि आओर शेष बाजबासँ।

लिखित भाषासँ सम्बन्धित प्रमुख कौशल-पढ़बाक आओर लिखबाक अन्तर्गत निम्नलिखित भाषिक पक्ष अबैत अछि–1. लिपि चिह्नक पहिचान, 2. लिपि चिह्नक लेखन, 3. संकेतक सहायतासँ लेखन, 4. सन्दर्भ व्याकरण, 5. मुक्त लेखन, 6. मुक्त पठन 7. सन्दर्भक पहिचान 8. पत्राचार, 9. वर्ण बोधन, 10. कोश देखबाक अभ्यास।

भाषा-शिक्षणमे बहुत रास पद्धति (Methods) प्राचीन कालेसँ उपयोगमे लाबल जा' रहल अछि। एहिमे प्रमुख निम्नवत अछि

व्याकरण-अनुवाद पद्धति (Grammar translation Method)

ई पद्धति बहुत बेसी प्रचलित रहल अछि कियाकतँ एकरे माध्यमे शिक्षक अनुवादसँ भाषाक शिक्षण प्रदान करैत छलाह। विद्यार्थीकेँ अनुवादक माध्यमसँ द्वितीय भाषाक ओ सभ आवश्यक जानकारी देल जाइत छल जे भाषा सिखबाक लेल महत्त्वपूर्ण अछि। परंच

व्याकरण-अनुवाद पद्धतिक त्रुट ई छल जे छात्र नहि तँ भाषाक जीवंत तत्त्वसँ परिचित भ' पबैत छल आओर नहि तँ व्यावहारिक ज्ञानें प्राप्त करबामे समर्थ सिद्ध होइत छलाह। हुनक ज्ञान, भाषाक केवल सैद्धान्तिक पक्षे धरि सीमित रहैत छल, जाहि कारणेँ विद्यार्थी लक्ष्य भाषा (Target Language) केँ बाजबाक क्षमता कतोक वर्षक प्रयासक बादो नहि प्राप्त क' पाबैत छल। एकर मूल कारण ई अछि जे शिक्षक प्रारम्भेसँ विद्यार्थीकेँ मात्र द्वितीय भाषामे अनुवाद करबाक आओर व्याकरणकेँ रटबाक शिक्षा दैत रहैत छलाह। कखनहुँ विद्यार्थीकेँ लक्ष्य भाषाकेँ बाजबाक अवसर कक्षा वा कक्षासँ बाहर नहि भेटि पबैत छल। जे आधुनिक दौरमे कोनो भाषाकेँ सिखबाक लेल अति आवश्यक अछि।

व्याकरण-अनुवाद पद्धति आइयो देशक विभिन्न पाठशाला, मदरसा, महाविद्यालय, विश्वविद्यालयमे प्रचलित अछि। जकर माध्यमसँ विद्यार्थीकेँ लक्ष्यभाषा (Target Language)क तँ ज्ञान प्राप्त भ' जाइत अछि, परंच ओकरामे लक्ष्यभाषाकेँ सूक्ष्मतासँ बाजबाक वा व्यवहारमे लाबक क्षमता विकसित नहि भ' पबैछ। विद्यार्थी अपन समय मात्र भाषाक अनुवादेमे खपा दैत अछि। आइ हमसब भलीभाँति जनैत छी जे व्याकरणक नियमक ज्ञान आओर अनुवादक योग्याकेँ कोनो प्रकारेँ हम ओहि भाषामे बाजबाक, पढ़बाक आओर लिखबाक सक्षमताकेँ उचित मानक स्तर पर नहि राखि सकैत छी।

प्रत्यक्ष पद्धति (Direct Methods) ई पद्धति वर्त्तमान समयमे प्रभावशाली मानल जा रहल अछि। एहि पद्धतिक मूलभूत सिद्धान्त ई अछि जे मातृभाषे सदृश दोसरे भाषा सीखल वा सीखाओल जाय। यद्यपि एहिमे मातृभाषाक उपयोग नहि होइछ। परंच लक्ष्य भाषाकेँ सुनब, बोलब, लिखब, पढ़ब सिखाओल जाइत अछि। एहि पद्धतिक माध्यमे शिक्षण देलासँ विद्यार्थीमे भाषाकेँ बाजबाक क्षमताक विकास अत्यन्त तीव्रगतिसँ होइत अछि।

इएह कारण अछि जे आइ अंग्रेजी माध्यम विद्यालयमे प्रत्यक्ष पद्धतिकेँ पूर्णरूपसँ अपनाओल जा' चुकल अछि, आओर एकर पूरा फाइदा विद्यार्थीसभकेँ मिलि रहल अछि। ओ एहि पद्धतिसँ द्वितीय भाषा (Secondary Language) केँ सरलतासँ सीखि जाइत अछि आओर हुनक उच्चारण सेहो बड़ड बेसी संतोषजनक रहैत अछि। परंच एकरा संग दोसर विकसित पद्धति सेहो सहारा लेल जाय तँ शिक्षण आओर अधिगम (Learning) दुनू काज सरल भ' जाइत अछि।

प्रत्यक्ष पद्धकिक अतिरिक्त जे दोसर पद्धति अछि ओहिमे स्वाभाविक पद्धति, मनोवैज्ञानिक पद्धति, अनुकरणात्मक पद्धति, वार्तालाप पद्धति, भाषा प्रयोगशाला पद्धति ऑडियो लिंग्वल मेथड, चलचित्र पद्धति आओर कम्प्यूटर-पद्धति आदि प्रचलित अछि। एहिमे ऑडियो लिग्वल मेथड (Audio Lingual Method) एवं भाषा

प्रयोगशाला पद्धति (Language Laboratory Method) बहुत बेसी प्रचलित अछि। परंच एहि पद्धतिक किछु सीमा अछि; एहि कारणेँ विद्यालय तथा शैक्षणिक संस्थामे ई पद्धति बहुत कमे देखबामे अबैत अछि। एकर मूलकारण ई अछि जे भाषा प्रयोगशाला पद्धति बहुत बेसी खर्चावला अछि। एकरा कोनो साधारण संस्था वहन नहि क' सकैछ। जाहि संस्थामे एहि पद्धतिक प्रचलन अछि, ओहि संस्थामे भाषा सीखि रहल विद्यार्थीक क्षमता एवं दक्षता व्याकरण-अनुवाद पद्धति आओर प्रत्यक्ष पद्धतिसँ द्वितीय भाषा सीखि रहल विद्यार्थीक तुलनामे बेसी बढ़ियाँ अछि।

भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरक सात क्षेत्रीय भाषा-केन्द्र मैसूर, भुवनेश्वर, गुवाहटी, लखनऊ, पटियाला, पुणे, आओर सोलेनमे मैथिली, तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, बंगाली, डोगरी, कश्मीरी, पंजाबी, उड़िया, संथाली, उर्दू, गुजराती, कोंकणी, मराठी, सिंधी, असमिया, बोडो, मणिपुरी आओर नेपाली भाषा द्वितीय भाषाक रूपमे पढ़ाओल जाइत अछि। ओहिमे 'प्रत्यक्ष पद्धति' आओर 'ऑडियो लिंग्वल मेथड'क माध्यमेकेँ अपनाओल जा रहल अछि आओर विद्यार्थीक बाजबाक क्षमताक विकासक लेल सम्बन्धित भाषिक क्षेत्रमे पन्द्रह दिनक टूर सेहो कराओल जाइत अछि। जकर नीक परिणाम देखबाक लेल भेटैछ। जाहिसँ प्रशिक्षुक भाषिक क्षमता दस महीनामे एतबा विकसित भ' जाइछ जे ओ लक्ष्यभाषाक पठन-पाठनमे पूर्ण

रूपसँ समर्थ भ' जाइछ। आइकाल्हि 'ऑन लाइन शिक्षण' (Internet Learning) सेहो एहि दिशामे एक नव प्रयास अछि।

उपरोक्त पद्धतिक सन्दर्भमे ईहो बात उल्लेखनीय अछि जे जत' एहि पद्धतिसँ भाषा-शिक्षणमे लाभ अछि, ओतहि एहि पद्धतिक किछु सीमा सेहो अछि।

आधुनिक युगमे ध्वनि विज्ञानक बड़ पैघ महत्ता अछि। ध्वनि विज्ञानक द्वारा विद्यार्थीमे लक्ष्य भाषा (target language)कँ शालीनता आओर शुद्धतासँ बाजबाक क्षमता विकसित होइत अछि। ध्वनि विज्ञानक महत्त्व इहो लेल बढ़ि जाइछ जे जखन विद्यार्थी कोनो दोसर भाषाकँ सीखैत अछि तँ ओ भाषा ओकर मातृभाषासँ कतोक तरहेँ भिन्न होइत अछि। अर्थात् जखन ओ द्वितीय भाषा सीखैत अछितँ सीखबाक क्रममे विद्यार्थीकँ द्वितीय भाषाक कतोक नव ध्वनिक सामना कर' पड़ैछ। जकर उच्चारणमे विद्यार्थीकँ बहुत बेसी समस्या होइछ। विद्यार्थी द्वितीय भाषाक शब्दकँ सुचारू रूपसँ उच्चारण नहि क' पबैछ। भाषाशिक्षणमे उच्चारणक महत्वकँ कोनो प्रकारेँ नकारल नहि जा' सकैछ; उच्चारणक महत्व रीढ़क हड्डीक समान होइत अछि। एकर सहि ढंगसँ प्रयोग कयलासँ नहि केवल भाषा अपन प्रारकृतिक दशा एवं सुगमताक संग प्रभावित करैछ, अपितु शब्दक उचित अर्थ एवं भाव सेहो प्रकट होइछ।

'भाषा विज्ञान' द्वितीय भाषा-शिक्षण आओर प्रशिक्षणमे उत्पन्न हुअ' वला समस्याक निराकरणमे महत्वपूर्ण भूमिका निबाहल अछि। जँ शिक्षक भाषाविज्ञानसँ सभ तरहेँ परिचित अछि तँ ओ उच्चारण सदृश समस्याक समाधान सहजतापूर्वक क' सकैत अछि। भाषाक एहने सब समस्याकेँ देखैत व्यतिरेकी भाषा विज्ञान (Contrastive Linguistics) अस्तित्वमे आयल। जकरा द्वारा शिक्षक विद्यार्थीक मातृभाषाक संरचना (Structure)क द्वितीय भाषाक संरचनासँ तुलनात्मक अध्ययन (Comparative study) कएल अछि आओर तत्पश्चात् एहि बातक पता लगैबाक प्रयास कएल जे लक्ष्य भाषाक कोन एहन ध्वनि अछि जे विद्यार्थीक मातृभाषामे नहि अछि। ओहन ध्वनि जे दुनू भाषामे पाओल जाइत अछि, ओ छात्रकेँ कोनो प्रकारक समस्या उत्पन्न नहि करत। परंच ओ ध्वनि जे द्वितीय भाषामे तँ अछि मुदा मातृभाषामे नहि अछि एहन ध्वनि समस्यात्मक ध्वनि (Problematic Sounds) कहाऔत आओर भाषा सीखबामे समस्या उत्पन्न करत। शिक्षककेँ एहि ध्वनिक उच्चारणमे पूर्णतः साबधानी बरत' पड़त आओर एहि ध्वनिक उच्चारण प्रारंभिक मध्य आओर अन्तिम अवस्थआमे छात्रसँ कराब' पड़त। एहि तरहेँ बेर-बेर उछ्चारण करौलासँ छात्रक उच्चारण ठीक होएत।

अभ्यासक मात्रा मातृभाषा तथा द्वितीय भाषा-शिक्षणक उद्देश्य, शिक्षार्थीक अवस्था, अध्ययन-अध्यापनक लेल उपलब्ध समय आदि पर निर्भर करैछ। सैद्धान्तिक तथा व्यावहाहिक दृष्टिसँ

मातृभाषा तथा द्वितीय भाषाक शिक्षण-प्रक्रिया तथा तकनीकमे किछु अन्तर हैब स्वाभाविक अछि। भाषा कौशलक अभ्यास-मात्रा तथा ओकर प्रायोगिक पक्षमे जे अंतर देखार दैत अछि, तकर मातृभाषा तथा द्वितीय भाषाक शिक्षण-प्रक्रियासँ पर्याप्त संबंध अछि। भाषा शिक्षकेँ एहि भिन्नताकेँ दृष्टिमे राखि भाषा अध्यापन करबाक चाही, जे भाषा शिक्षार्थीक लेल सरल ओ बोधगम्य भ' सकए।

भाषा शिक्षणमे कॉर्पस (Corpus in Language Teaching)

भाषाविज्ञानमे कॉर्पस (कॉर्पोराक बहुवचन) पाठसभक एकगोट पैध आओर संरचनात्मक संग्रह अछि जाहिमे कोनो भाषाक शब्द तथा वाक्यकेँ संग्रहित क' ग्राह्य एवं पढ़बायोगय रूपमे राखल जाइत अछि। कॉर्पस एके भाषा (एकभाषी कॉर्पस) वा एकसँ बैसी भाषा (बहुभाषी कॉर्पस)मे पाठकेँ संग्रहित करैत अछि। बहुभाषी कॉर्पसकेँ प्रारूपित क' केँ तुलनात्मक दृष्टिसँ संरेखित समानांतर कॉर्पस सेहो कहल जाइत अछि। कॉर्पस दुई प्रकारक होइछ।

लिखित कॉर्पस (Written Corpus) एहिमे भाषाक लिखित रूप जेना, साहित्य, समाचारपत्र, कहानी, नाटक, उपन्यास, आलोचना आदिमे प्रयोग हुअ' वला भाषाकेँ रखैत छी।

वाचिक कॉर्पस (Speech Corpus) एहिमे सामान्य लोकक बीच सामान्य बोलचालक भाषाकेँ रिकार्ड क' संग्रहित कयल जाइछ।

कॉर्पसक प्रयोग प्रमुख रूपसँ कोशकारिता, मशीनी अनुवाद, वर्तनी संशोधक, भाषा शिक्षण, भाषिक अनुसंधान इत्यादि काजक लेल कयल जाइत अछि। कॉर्पसमे लिखित तथा वाचिक डेटा द्वारा उपकरण बनाओल जाइत अछि जे बेसी सार्थक तथा उपयोगी होइत अछि। एहिमे एकत्रित कयल गेल डेटामे सामान्य लोकक गप्प-सप्प तथा फराक-फराक समय पर एक लोक द्वारा प्रयोगमे लाबल जायवला भाषा एवं शब्दाबलीमे बदलाव आदिक जानकारी होइत अछि। मैथिली शिक्षणमे समानान्तर कॉर्पस, तुलनात्मक कॉर्पस, डोमेन स्पेशिफिक कॉर्पसक योगदान बैस महत्त्वपूर्ण होयत।

सूचना प्रत्यान्यन (Information Retrieval)

आजुक समय भूमण्डलीकरणक प्रभावसँ मानवक परिवर्त्तित जीवन-शैलीमे कमसँ कम समयमे बेसीसँ बेसी सूचनाक आवश्यकता भ' सकैछ। एहने संकल्पना पर आधारित प्रक्रिया कें सूचना-प्रत्यान्यन कहैत छी। एहिमे कोनों पैध पाठ वा दस्तावेजसँ निश्चित सूचनाकेँ प्राप्त कयल जा' सकैत अछि। बल्कि एकर सम्पूर्ण प्रक्रिया संगणक पर आधारित होइत अछि अतः समयक कम लागब स्वाभाविके अछि; जेहन कि एहिमे होइतो अछि। एहिमे वेबमे मैथिलीक लेल 'सर्चइंजन'क निर्माण तथा कोशमे खोजबाक काज सरल भ' सकैछ। खोज इंजनमे गूगल (Google), याहू (Yahoo), अल्ताविस्ता (Altavista), गुरूजी (Guruji.com),

वेबखोज (Webkhoj), रफ्तार (Raftar) आदि उपलब्ध अछि। जाहिमे निरंतर नव-नव वर्जन लांच भ' रहल अछि। गूगल हालिहमे 'क्रोम' नामक नव वर्जन लांच कयल अछि। भाषा सीखबामे एहिसँ बहुत बेसी सहयोग लेल जा' सकैछ अछि।

की वर्ड इन कान्टेक्स्ट एण्ड की वर्ड इन अदर कान्टेक्स्ट प्रत्यान्यन (KWIC and KWOC Retriever)

एहि टूलक सहायतासँ भाषा शिक्षणमे सेहो सहायता लेल जा सकैत अछि। कोनो शब्द कोन-कोन संदर्भमे प्रयुक्त भ' सकैत अछि, एकर जानकारी कमसँ कम समयमे प्राप्त कयल जा सकैत अछि। ई टूल कॉर्पस पर आधारित होइत अछि। जेना-कॉर्पसँ एहि टूलक सहायतासँ ई ज्ञात क' सकैत छी जे–बहब क्रिया कोन-कोन संदर्भमे आबि सकैत अछि। उदाहरण खून बहब, पानी बहब, धाम बहब इत्यादि।

वर्तनी संशोधक (Spell checker)

ई संगणकक माध्यमसँ मैथिली भाषाक मानक रूपकेँ संरक्षित एवं निर्धारित क' सकैत अछि, संगहि वर्तनी सम्बन्धी त्रुटिकेँ चिह्नित क' सकैत अचि। ई संगणक आधारित भाषा-शिक्षणमे सेहो महत्वपूर्ण योगदगान द' सकैत अछि। एकर

सहायतासँ मैथिली भाषाक वर्तनीक शुद्धताकेँ सुधारल जा' सकैत अछि। संगहि शुद्ध लेखनमे सहायक भ' सकैत अछि।

रूपिमिक विश्लेषक (Morphological Analyzer)

मैथिलीक मूल धातु रूप (Root Form)क डाटाबेस बनाक' एहिमे प्रयोगक समय जुड़ल अतिरिक्त संरचकक रूपमे प्रतिपादककेँ छाँटि क' एकर भाषा-सापेक्ष विश्लेषण क्रमशः करैत अछि। एकर बाद उपसर्ग एवं प्रत्ययक संग्रहित सूचनाक आधार पर अपन विश्लेषणकेँ आगू बढ़बैत अछि।

लिप्यंतरण (Transliteration)

एक लिपिसँ दोसर लिपिमे अंतरणक प्रक्रिया लिप्यंतरण कहबैछ। लिप्यंतरणक द्वारा सेहो कोनो भाषाकेँ सीखबामे बहुत बेसी सहायता मिलैत अछि। कर्नाटकमे संस्कृतक बहुत रास टेक्स्ट कन्नड़ लिपिमे लिप्यंतरित अछि। जेना-रामायण, महाभारत, पंचतंत्र, दुर्गाशप्तसती आदि। एत' धरि जे स्नातकोत्तर संस्कृतक उपाधि सेहो लोक कन्नड़ लिपिमे लिखिक' प्राप्त क' रहल अछि। Mozila FireFox's Girgit add-onक द्वारा सेहो भारतीय भाषासँ सीधे दोसर भारतीय भाषामे लिप्यंतरण क' सकैत छी। LDC-IL, CIIL सेहो लिप्यंतरण टूलक विकास कएल अछि।

ऑनलाईन मैथिली शब्दकोश (Online Maithili Dictionary)

भाषा सीखबाये ऑनलाईन मैथिली शब्दकोशक भूमिका सेहो महत्वपूर्ण अछि। जकर अवलोकन https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/ लिंक पर कयल जा' सकैत अछि। किछु प्रमुख ऑनलाईन शब्दकोश निम्न वितान स्थली पर उपलब्ध अछि

http://www.shabdkosh.com

www.tdil.gov.in

http://tdil.mithov.in/download/bharatiyabhasha.'htm'

आवृत्ति शब्दकोश (Frequency Dictionary)

भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरमे एकगोट महत्त्वाकांक्षी परियोजना 'भारतीय भाषाक भाषावैज्ञानिक सांख्यिकी संकाय' (LDC-IL)क अंतर्गत मैथिली कॉर्पस पर आधारित दस हजार शब्दक आवृत्ति शब्दकोश लगभग पूर्णताकेँ प्राप्त क' रहल अछि। एहिये समाविष्ट शब्द एहन अछि जे सभसँ बेसी प्रयोगमे अबैछ। ई पूर्णरूपसँ कॉर्पस पर आधारित अछि। LDC-IL अखन धरि कन्नड़, बंगाली एवं हिन्दी मे आवृत्ति शब्दकोशक निर्माण क' चूकल

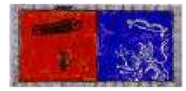
अछि। एवं अष्टम् अनुसूचिक भारतीय भाषामे काज चलि रहल अछि।

उच्चारण शब्दकोश (Pronunciation Dictionary)

(LDC-IL)क अन्तर्गत मैथिली कॉर्पस पर आधारित उच्चारण शब्दकोश बनयबाक दिशामे सार्थक प्रयास भ' रहल अछि। एहिमे प्रयुक्त शब्द जे सबसँ बेसी प्रयोगमे अबैत अछि तकरा स्थान भेटि रहल अछि। एकर उच्चारण अहाँ सुगमतासँ सुनि सकैत छी आओर सीख'बलाकेँ अभ्यास कराओल जा' सकैत अछि। LDC-IL अखन घटि कन्नड़, बंगाली, एवं हिन्दीमे उच्चारण शब्दकोशक निर्माण क' लेल अछि एवं अष्टम अनुसूचिक भारतीय भाषामे काज चलि रहल अछि।

उपसंहार

भूमण्डलीकरणक एहि दौरमे भारत एक पैध बाजारक रूपमे उभरि रहल अछि एवं मैथिली बाज' वलाक संख्या भारत एवं भारतसँ बाहर देखि एहन संभावना लागि रहल अछि जे मैथिलीकेँ कमोवेश सम्पर्क भाषाक रूपमे प्रयुक्त कयल जा' सकैछ। मनहि एकर एक निर्धारित सीमा कियैक नहि हो। मैथिली राष्ट्रक सांस्कृतिक चेतनासँ जुड़ल अछि। मैथिलीमे संस्कृत शब्दावलीक समावेशक कारणेँ मैथिलेत्तर भाषी लोक सेहो थोड़ प्रयासक बाद

एकरा बुझि जाइत अछि। एकर कारण अछि जे दोसर भारतीय भाषामे संस्कृतक शब्दक पहिनेसँ समावेश अछि, चलन अछि। एहि कारणेँ शब्दावली परिचयक स्तर पर साम्यक स्थिति बनि जाइत अछि आओर दुई व्यक्तिक बीच संवाद स्थापित करैब' मे मैथिली सेहो सक्षम भ' सकैछ।

सहायक ग्रंथ सूची

1. श्रीवास्तव, रविन्द्रनाथ, 'भाषा शिक्षण', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992

2. श्रीवास्तव, रविन्द्रनाथ, तिवारी भोलानाथ, गोस्वामी कृष्णकुमार, 'अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान, आलेख प्रकाशन, दिल्ली 1980

3. भाटिया कैलाशचन्द्र, 'आधुनिक भाषा-शिक्षण', तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001

4. Subbia, Pon, 'Tests of Language Proficiency', Central Institute of Indian Languages, Mysore, 2005

5. अनुवादपत्रिका (कंप्यूटर-अनुवाद विशेषांक-2), भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली, Apr-Jun 2007

6. गवेषणा (सूचना प्रौद्योगिकी विशेषांक), केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, Oct-Dec 2007

7. जैन, वृषभ प्रसाद, 'अनुवाद और मशीनी अनुवाद', सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995

8. मल्होत्रा, विजय कुमार, 'कम्प्यूटर के भाषिक प्रयोग', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002

Website

www.ldcil.org
www.tdil.mit.gov.in
www.cdac.in
www.indic-computing.sourceforge.net
www.ciil.org
http://censusindia.gov.in/census-dat-2001/census-data-online/language/statetment1.htm

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

**जगदीश प्रसाद मण्डल**

कथा- परिवारक प्रतिष्ठा

समाजमे सभकेँ छगुन्ता लगैत जे होइत भिनसर सौंसे गाम हड़-हड़-खट-खट शुरू भऽ जाइए मुदा कमलाकाकाक परिवारमे एको दिन नै सुनै छी, तेकर की कारण? जहिना रंग-विरंगक लोक समाजमे रहैए तहिना ने रंग-विरंगक रोगो-वियाधि आ क्रियो-कलाप रहैए। मुदा लंकाक विभीषण जकाँ यमुनाकाकी आ कमलाकाकाक परिवार केहेन हलसैत-फुलसैत, कलसैत अछि!

बहुत आँट-पेटक परिवार कमलाकक्काक नै। आने परिवार जकाँ अपन दसे कट्ठा जमीन। मुदा पनरह कट्ठा बटाइयो करै छथि। जइसँ सहि-मरि कहुना साल लगि जाइ छन्हि। ओना आन परिवार जकाँ धीया-पुता झमटगर नै, सिर्फ चारिये गोटेक परिवार। दू परानी अपने आ बेटा-पुतोहू। डोरामे गाँथि जहिना फूलक माला बनैत तहिना परिवारोक डोरा सक्कत। अपन-अपन सीमाक बीच चारू गोटे कोल्हुक बड़द जकाँ चौबीसो घंटा चलैत रहैत। ओना गामक आधासँ बेसी परिवारक समांग गाम-सँ-बाहर धरि रहि परिवार चलबैत, मुदा कमलाकाक्काक परिवारमे के बाहर जाएत तेकर अँटाबेशे ने होइत। काकाक मनमे रहनि जे एक्केटा समांग अछि जँ ओ बाहरे चलि जाएत तँ बेर-कुबेरमे एक लोटा पानियो के देत? मौका-कुमौकामे कोटो-कचहरी के करत? ततबे नै, जँ कहीं किसकारक समए बेमारे भऽ जाएब तँ खेती-पथारी के सम्हारत? जनिजाति तँ जनिजातिये होइत, खेत केना जोतएत? जँ खेते नै जोताएत तँ खेती केना हएत? जँ खेतिये नै हएत तँ परिवार केना चलत? अपनो कि आब ओ समरथाइ रहल जे बलधकेलो किछु कऽ लेब।

जहिना कमलाकाकाक मनमे अपन काजक ओझरी लगनि तहिना यमुनोकाकीक मन ओझराएल। मनमे उठनि जे मुँह-झाड़ि पतिकेँ किछु तँ नहिये कहि सकै छियनि मुदा पुतोहू लगा बेटाकेँ तँ कहि सकै छी। जखने बेटाकेँ कहबै तखने ओहो ने सुनताह। कोनो की कानमे ठेकी थोड़े रहतनि।

रधवाक मनमे तेसरे बात उठैत। गिरहस्ती काज बेसी बरसातमे होइए। मिरगिसरा-अद्राक पानि तेहेन ने होइए जे हाथ-पएर सड़ा दइए। एक तँ हाथ-पएर घबाह भऽ जाइए तइपर सँ काजो बढ़ि जाइए। तइसँ नीक जे परदेशे खटब। मुदा विचार लगले रधवाक मनकेँ बदलि दइ। ब्रह्म स्थानक भागवत कथा मन पड़ि जाइ। ओना पनरहो दिन सुनने रहए मुदा एक्केटा बात मन रहलै। ओ ई जे 'माए-बापक सेवा करब बेटाक सभसँ पैघ धर्म छी।'

पुतोहू लेल धैन-सन। 'कोउ नृत होउ हमे का हानी।' एकटा गारजनकेँ के कहए जे तीन-तीनटा गारजनक तरमे छी। जेहने दिन तेहने राति।

पिताक पीठपोहू बनि रधवा कमलाकाकाक संग खेती-बाड़ीमे पूरैत। एते बात रधवा बूझि गेल रहए जे खेतीक भरिगर काजमे हरबाहि, कोदरबाहि आ करिनबाहि अछि। ओना धनरोपनीमे सेहो डॉड़ दुखाइ

छै। तँए पिताकेँ ऐ सभ काजसँ फारकती दऽ देने रहनि। गिरहस्तीयो तँ अमरलत्ती जकाँ सघन होइए। काजक इत्ता नै। कलमसँ कोदारि धरिक काज। जते समए तते काज पसारि लिअ। ततबे नै, किछु काज एहनो होइए जइमे कम तरद्दुत होइत आ किछु एहनो होइत जे तीन-तीन बेर केलोपर गड़बड़ाएले रहैत। तइपर सँ मेठनियो बेसी। भरिगरकाज रधवा सम्हारियो लन्हि तैयो कमलाकाकाकेँ सोहरी लागल काज रहबे करनि। जते हाथ-पएरसँ करथि तइसँ कम बुधियोक नै। महीना, ग्रह, नक्षत्रक काज सेहो रहबे करनि। कोन नक्षत्रक धानक बीआ निरोग होइए आ कोनमे पाड़ने कललग्गु भऽ जाएत? कोन नक्षत्रमे कोन चीजक बीआ पाड़ल जाएत आ कोन चीज रोपल जाएत। बारहो मासक हिसाब कंठस्थ रखने छथि। जेकर खगता अखन धरि रधवाकेँ भेबे ने कएल। जते काल काजमे लगल रहैत ततबे बुझैत। बाकी समए ने मारी माछ ने उपछी खत्ता। बिना धैन-फिकिरक बीतरागी जकाँ चैनसँ रहैत। कमेनाइ-खेनाइ आ सुतनाइयेक जिनगी। तीनूक गतियो एकरंगाहे!

आंगनसँ बहराक काज जहिना दुनू बापूत कमलाकाकाक बीच अड़िआएल चलैत रहनि तहिना अंगनाक भीतरक काज दुनू सासु-पुतोहूक बीच। चूल्हि-चीनमार बाहरब-नीपब, घर-अंगना बहारबसँ लऽ कऽ थारी-लोटा धुअब, भनसा-भात करब धरिक भार पुतोहूक

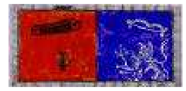
ऊपर। जे पुतोहुओ आ सासुओ बुझैत, तँए ने ककरो चड़ियबैक जरूरत आ ने कियो अढ़बैक आशा करैत। तहिना यमुनोकाकीक काज रहनि। कोठीक अन्न केना सुरक्षित रहत, तइठामसँ लऽ कऽ माल-जालक थैर-गोबर केनाइ घास लौनाइ धरिक। ओना किसकारोक समैमे आ कटनियोक समैमे गिरहस्तियोमे हाथ-बटबैत। चीनी मिलमे जहिना एकठाम कुशियार बोझिते, रेलबे टिकट लेनिहारक धारी जेना रसे-रसे आगू बढ़ैत, तहिना कमलाकाकाक परिवार। ने मुँहा-ठुठी करैक कोनो जगह आ ने होइत।

ओना गाम नीचरस जमीनमे बसल तँए ऊँचरस जमीनक बारहो-विरहिणीक खेती नै होइत। भीठ जमीन नै रहने भीठक उपजो नहिये! जइसँ गाममे बेख-बुनियादि सेहो कम आ गाछियो-खरहोरि। तीन हीसमे बास आ एक हीसमे बाड़ियो-झाड़ी। ओना तँ छह ॠतु होइत अछि मुदा गिरहस्तीक लेल मूलत: तीन मौसम होइत। ॠतु दुइये मासपर बदलैत, जखन कि फसिल तीन मासक उपरान्ते बदलैत। किछु-किछु तीन माससँ कम्मो समैमे होइत मुदा बेसी तीन माससँ बेसियेमे। तँए मोटा-मोटी जाड़, गड़मी वरसाती फसिल होइत। तहूमे डंडी-तराजू जकाँ बरसात डंडी पकड़ने अछि। तराजूक पलरा जकाँ जाड़-गरमी। एक-दोसराक दुश्मनो। कोनो एक्केटा रहत। सन्यासी जकाँ दोसर नै सोहाइत। मुदा बीचमे जँ पंच नै रहत तँ झगड़ेमे दुनू लगि जाएत, आगू की बढ़त। सालक

बरसाते मौसम एहेन होइत जे सालो-भरिक भाग-तकदीर निर्धारित्ति करैत। जहिना बेसी बर्खा भेने दहार होइए तहिना नै भेने रौदी! जे दुनू गिरहस्तीकेँ जान मारैए। हँ एहनो होइए जे, जइ साल समगम बर्खा भेल तइ साल सुभ्यस्त समए भेल। जइसँ नीचा ऊपर एक रंग फसिल उपजल। जहिना कृष्ण अर्जुनकेँ कहने रहथिन तहिना मौसमो होइए।

जइ धरतीपर गंगा, सरस्वती, यमुना सन धार एकठाम मिलि कुम्भ सजबैत अछि तइठाम दिन-दहार हत्या, बलात्कार अपहरण हुअए, बिनु बुद्धिक लोकक भरमार लागल रहए, मनुखकेँ मनुख नै बुझल जाए, तइठाम तीनू संगमक कोन उपकार? नमगर-चौड़गर ऑट-पेटक तीनू धार जे हँसैत-झिलहोरि खेलैत समुद्रमे समाहित होइत, तइठाम......?

हमरा सभकेँ इहो नै ओझल रखक चाही जे एकैसमी सदीक स्वतंत्र प्रजातंत्रक बीच बास करै छी। अखन धरिक इतिहासमे एते सक्षम मनुख ऐ धरतीपर नै भेल छल। तखन दायित्व बनैए जे युगक संग पकड़ि युग-युगान्तरक धाराकेँ स्वच्छ बना चलए दिऐ। काल मनुक्खेटा केँ नै सभ किछुकेँ प्रभावित करैत अछि। जखने सभ किछु प्रभावित हएत तखने जीवन-पद्धतिमे धक्का लगत। ओइ धक्काकेँ निष्क्रिय करए लेल जीवन-शैलीमे बदलाव आनए पड़त! बीतल युग तहिना बदलल। सत्युगमे जे क्रिया-कलाप छल ओ त्रेतामे आबि

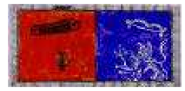



सुधरल, जइसँ बदलाव आएल। युग-परिवर्त्तन भेल। तहिना त्रेतासँ द्वापर भेल। तँए जरूरी भऽ गेल अछि जे समयांकन इमानदारीसँ हुअए।

कहैले तँ कमलाकाका परिवारक गारजन छथि मुदा अंगनाक सीमासँ अपनाकेँ बाहरे रखने छथि। खेतक उपजा-बाड़ी बाधसँ आनि पत्नीकेँ सुमझा दैत छथिन। यमुनोकाकी की आब नव-नौताड़ि छथि जे परिवारक धक्का-पंजा नै बुझथिन। जिनगीक धक्का-पंजा जीबैक बहुत किछु लूरि सिखा देने छन्हि। सुभ्यस्त समए भेने काकीक मनमे खुशीक कोढ़ी शुरूहे आद्रा नक्षत्रमे जे पकड़लकनि से बढ़ैत-बढ़ैत अगहनमे भकरार भऽ फुला गेलनि।

धान दौन होइते, आने साल जकाँ यमुनाकाकी उसनियाँ करैसँ पहिनहि उपजाक हिसाब बेटो-पुतोहू आ पतियोक कानमे दऽ देब, आने साल जकाँ नीक बुझलनि। मने-मन बुदबुदेलीह- “कते धान भेल, तेकर कते चाउर हएत आ कते दिन चलत?”

कते दिन चलतमे ओझरी लगि गेलनि। लोकक पेटक कोनो हिसाब अछि। देखैमे ने बीत भरिक बूझि पड़ैए मुदा हाथियो खा-पी कऽ पचा लैत अछि। फेर मन घुमलनि। जखन अपने परिवारक बात

ISSN 2229-547X VIDEHA

अछि तखन एना अग्गह-विग्गह किअए सोचै छी। देखले परिवार नपले सिदहा। मुदा लगले मन आगू घुसुकि गेलनि। आन-आन परिवार जकाँ तँ अपन परिवार नै अछि। आन-आनमे आनो-आनो उपाए छै अपना तँ से नै अछि। लऽ दऽ कऽ खेतियेक आशा अछि। तहूमे एते दिन घटबी पुड़बैले गाम-गाम महाजनो छलए मुदा आब तँ ओहो ने अछि। ने ओ देवी आ ने ओ कराह। महाजनी मरैक कारणो भेल। राजे रोग जकाँ ने बाढ़ियो-रौदी छी। जे जेहन तेकरा तही रूपे पकड़ैत अछि। जे जते कम आँट-पेटक ओकरा ओते कम आ जे जते नमहर ओकरा ओते बेसी नोकसान करैत। तइ संग इहो भेल जे गामक लोक बाहरसँ सेहो कमा-कमा अनए लगल। जइसँ महाजनीक बीच रोड़ा अँटकल।

ओना बहरबैयो बाहरक बहुत बात तँ नहियें बुझैत मुदा जिनगीक किछु बात तँ जरूर बुझए लगल। नै बुझैक कारण रहए जे पढ़ल-लिखल नै रहने एको गोटेकेँ ने बैंकक नोकरी रहै आ ने करखन्नाक ऑडिटरी। जइठाम धनक ककरोरबा बिआन होइत से कियो ने बुझैत! मुदा रिक्शा चलौन्हिार, ठेला ठेलिन्हिार, गोदाममे बोरा उठौन्हिारकेँ लगक महाजनसँ भेँट जरूर भेलै। जहिना छोट बच्चा हाथक आङुर मुँहमे लैत-लैत बाहियो पकड़ए लगैत, तहिना खुदरा महाजन लग एने भेल। ओना छोट महाजनी रहने साले भरिक लेन-देन चलैत मुदा पच्चीस हजारक सहयोगी तँ भेटल। बेटा-बेटीक बियाह, घर-घरहट आ बर-बेमारीक आशा तँ भेटल।

गामक महाजनीसँ सूदियो छोट। जतए आसीन-कातिकक कर्ज एक्के-दुइये मासमे सवैया-डेढ़िया वृद्धि करैत तइठाम दस प्रतिशत व्याजक बदला पच्चीस प्रतिशत दिअए पड़त, ततबे ने। मुदा तैयो तँ असाने भेल। दोसर इहो भेल जे आध-मन, एक-मन कर्ज लेल जे भरि-भरि दिन साबेक जौड़ी खर्ड़ए पड़ैत छल सेहो बन्न भेल।

दुनू बापूत -कमलोकाका आ रधवो-कँ यमुनाकाकी बुझबैत कहलखिन- ''एते धान भेल। एकर एते चाउर हएत। एते दिनक पछाति फेर अगिला अन्न हएत। एते दिनमे एते साँझ भेल, एतेटा आश्रम अछि। दिनमे एते सिदहा लगैए।''

यमुनाकाकीक हिसाव सुनि कमलाकाका विचारक दुनियाँमे बौआ गेलाह। जेहो सुनलनि सेहो रसे-रसे बिसरए लगलाह आ जे नै सुनलनि से तँ नहिये सुनलनि। अपन प्रस्तावक अनुमोदनक लेल यमुनाकाकी आँखि नचबए लगलीह। कखनो पतिपर तँ कखनो बेटापर दथि। उनटि कऽ पाछू तकथि तँ टाटक अढ़मे बैसल पुतोहूकँ देखथि। सभ अपने-अपने दुनियाँमे बौआइत। अपन प्रस्तावक उत्तर नै पाबि यमुनाकाकी पुन: दोहरौलनि- ''अखन सोचै-

विचारैक समए अछि तँ कियो कान-बात नै दइ छिऐ, आ जखन बेर पड़त तखन थुक्कम-थुक्का करैत घिनमा-घीन करब?''

यमुनाकाकीक कड़ुआएल बात सुनि कमलाकक्काक भक्क खुजलनि। मनमे उठलनि जे मुँहो चोरौराइ नीक नै। किछु तँ बजबे उचित। बजलाह- ''खेतसँ खरिहान आनि तैयार कऽ आंगन पहुँचा देलौं आबो हमरे काज अछि। आकि ओकरा उसनब, रौद लगा कोठीमे राखब, की सेहो पुरूखे भरोसे छी।''

काकाक उत्तरसँ यमुनाकाकीकेँ घरक लछमी मन पड़लनि। खुशीसँ मन नाचि उठलनि। मुदा लगले, जना घुरमी लगैए तहिना लगि गेलनि। बजलीह- ''जोड़ भरि धोती आकि जोड़ भरि साड़ी तँ कियो साले भरि ने पहिरत। साल भरिक पछाति ओ थोड़े पहिरै जोकर रहै छै। एकर अर्थ ई नै ने भेल जे वस्त्रक जरूरत मेटा गेल, साल भरि लेल मेटाएल, तोहूमे कते बिहंगरा अछि। कहीं चोरिये भऽ जाए की हराइये जाए, की कुत्ते बिलाइ दकैड़ दै आकि आगिये-छाइक प्रकोप भऽ जाए।''

यमुनाकाकीक बात सुन्यो कऽ कमलाकाका अनठा देलनि। चुपे रहलाह! मुदा मनमे ओँढ़ मारए लगलनि जे माए-बाप अछैत बेटा-पुतोहूकेँ परिवारक चिन्ताक उत्तरी पहिराएब उचिन नै। ओना काजक ढंग ओहन सिखा देब नीक, जइसँ जिनगीमे कहियो चिन्ता नै सतबै। आगूमे बैसल रधवा, जना संस्कृत आकि अंग्रेजी सुनि

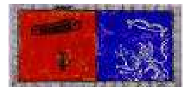
कोनो बच्चाकेँ होइत, तहिना सुनबे ने केलक। मुदा तैयो मनमे घुरिआइ जे जे-गति सबहक हेतै से हमरो हएत। तइले अनेरे माथ-कपार पीटब आकि धूनब नीक नै। रमरटियासँ खढ़कटिये नीक! भरमे-सरम चुपे रहल।

अढ़मे बैसल पुतोहूक मन बजैले लुस-फुस करैत। लुस-फुस करैक कारण जे के नै घर आकि गामक मुख्यियारी चाहैए? मुदा बेचारीकेँ कोनो एहन गरे ने भेटैत जे किछु बजैत। एक तँ नव-नौतुक कनियाँ, दोसर नैहरोमे माए भानसे-भात करैक लूरिटा सिखौने। घरक जुति-भाँतिक कोनो लुरि सिखौनहि नै। केना सिखेबो करितथि? सभ गाम आ सभ परिवारमे किछु-ने-किछु भिन्नता होइते छै। जहिना कोनो नट ओहने बोल्टमे नीकसँ लगैत जे समतुल्य होइत। तहिना तँ परिवारो ने होइत अछि। माइये-बापक परिवार जकाँ सासुओ-ससुरक परिवार हएत, से कोनो जरूरी नै। चाहियो कऽ वेचारी किछु ने बाजि सकल।

ओना धानक ढेरी देख कमलाकाकाक मन उमड़ैत रहनि। जहिना पान्मि भीजने किताबक पन्ना एक-दोसरमे सटि जाइत तहिना कमलोकाकाकेँ भेलनि। परिवारक सभ हृदैमे सटि गेलनि। मन

उमड़ि आगू बढ़लनि। पतिकेँ रहैत जँ पत्नीकेँ वा बाप-माएक रहैत बाल-बच्चाकेँ कोनो तरहक चिन्ता-फिकिर हुअए तँ जरूर कतौ-ने-कतौ माए-बापक दोख छिपल अछि। दोखक कारण मनमे एबे ने करनि। ओछाइनपर जहिना नीन नै एने कछमछी लगैत तहिना मन कछमछाइत रहनि। मुदा लगले, जहिना सुतली रातिमे ओछाइनपर सुतल माएकेँ देख जागल बच्चा सूति रहैत तहिना कमलोकाका केलनि।

काकाकेँ शान्त देख यमुनोकाकी असथिर भऽ गेलीह। मनमे उठलनि जे चारि गोटेक आश्रममे तीन गोटे तँ एक्के परिवारक छी, खाली कन्यियेटा ने अखन दस-आना छह-आनामे छथि। ओहो दू-चारि सालमे रिताइत-रिताइत रिता जेती। मुदा अखन तँ नैहरेक चालि-ढालि छन्हि। अखन थोड़े ऐ घरक तीत-मीठ पचौतीह। नैहर गेलापर जखन सखी-बहिनियाँ वा माए-पितिआइन पुछतनि जे बुच्ची अन्न-वस्त्रक ने तँ दुख-तकलीफ होइ छह, तखन ओ थोड़े आगू-पाछू ताकि बजतीह। ओ तँ परिवारेक बचौने बँचत। वएह ने परिवारक प्रतिष्ठा छी। जानियेँ कऽ तँ हमरा सभक घरक छप्पर भगवानक डंगेलहा छी, तेहीमे ने बँचि-खुचि कऽ घरक मर्यादाकेँ संगे लऽ कऽ चलैक अछि। अहीमे ने अपन इमान-धरम बचबैत परिवार चलाएब तखन ने समाजक संग कुटुमो-परिवारक प्रतिष्ठा ठाढ़ रहत।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।


गजेन्द्र ठाकुर

उल्कामुख (मैथिली नाटक)

चारिम कल्लोल

(नेपथ्यसँ गीत अबैत अछि)

कमला मैया बसत बड़ी दूर

गमक लागे गेंदा फूल

कथी डालि लोरहब बेली-चमेली

कथी डालि लोरहब अरहूल हे

गमक लागे गेंदा फूल कमला मैया.....

किनका चढ़ाएब बेली-चमेली

किनका चढ़ाएब अरहूल

गमक लागे गेंदा फूल

गमक लागे गेंदा फूल

कमला चढ़ाएब बेली-चमेली

कोयला चढ़ाएब अरहूल,

गमक लागे गेंदा फूल हे

कमला...किनका सँ मांगब अन-धन सोनमा

किनकासँ मांगब सोहाग गे सोहाग गे

मलहिनयाँ देखै मे फूल वर लाल हे

ससिया सँ मांगब अन-धन सोनमा

मातैर सँ मांगब सोहाग गे

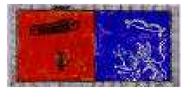
मलहिनयाँ देखै मे फूल वर लाल....।

(एक दिस मत्तवर्णीपर दीना आ दोसर दिस मत्तवर्णीपर भदरी छथि। एक दिस रंगशीर्षपर उदयन आ दोसर दिस रंगशीर्षपर वर्द्धमान छथि दीना भातढाला पोखरि आ भदरी सागढाला पोखरिक कातमे छथि। रंगपीठ खाली अछि।)

वर्द्धमान: धारक कातमे घर बनेने छी हम आ साँपबला घरमे रहै छी अहाँ आचार्य उदयन?

उदयन:: धारक कातमे निवास केनिहार आ आ साँपबला घरमे निवास केनिहारकेँ चैन कतऽ? वर्द्धमान, भातढाला पोखरि आ सागढाला पोखरि जाए पड़त तत्काल।





ISSN 2229-547X VIDEHA

दीना: (चिकड़ि कऽ) भातढाला पोखरिपर, जतए भीम भात रखैत रहथि? हम छी दीना, एतऽ भातढाला पोखरिपर।

भदरी: (चिकड़ि कऽ) सागढाला पोखरि, जतए भीम साग रखैत रहथि। हम छी भदरी, एतऽ सागढाला पोखरिक कातमे।

उदयन: हँ, आ सिमलवन सेहो जाए पड़त ककरो, ओतऽ कब्जा छन्हि आचार्य सरभक।

भदरी: हँ वएह सेमापुर छी सिमलवन जतए अर्जुन अपन अस्त्र-शस्त्र अज्ञातवास कालमे नुकेने रहथि?

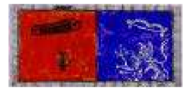
उदयन: हँ, एकटा आर युद्ध शुरू भऽ गेल अछि।

वर्द्धमान: मुदा ई युद्ध शास्त्रार्थसँ नै जीतल जा सकैए आचार्य उदयन। (रंगपीठ दिस इशारा करैत।) देखू ओतऽ सभ किछु लागि रहल अछि खाली खाली, मुदा अछि नुकाएल शस्त्र, घृणा आ..

उदयन: आ आचार्य सरभ। (रंगपीठक दूर भाग दिस इशारा करैत।) ओऽऽऽऽऽ छी ठाकुरगंज, भीम ठाकुर माने भनसिया बनि समै कटने रहथि, ओतै ओ कीचक वध केने रहथि।

भदरी: घृणाक वध हएत आब..





दीना: अवश्य भदरी...

भदरी: अगड़म बगड़म काठ कठम्बर

दीना: दिनमे कौआ देखि कऽ डेराइ, रातिमे नदी हेलि जाइ।

भदरी: (रंगपीठक लग भाग दिस आंगुर देखबैत) ओतए मनिहारीमे श्रीकृष्णक औंठीक मणि हेरा गेल छलन्हि।

उदयन: आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंह। अहाँ सभकेँ कागचक व्याघ्र आ सिंह बनाबैबला आचार्य सरभक काट आब जा कऽ भेटल अछि..

(नेपथ्यसँ गीत अबैत अछि।)

कटबै मे सोना सुतरिया बिनबै झुमरि जाल हे

जाल फरि-फरि कमला एलखिन

सन-झुन लागै गोहबरिया

कहाँ गेली परलोभिया सेवक

सुन लगै गोहबरिया हेऽऽ

कटबै……

जाल फरि-फरि गांगो एलखिन

रून-झुन लगै गोहबरिया हे

कहाँ गेली परलोभिया सेवक,

सुन लगै गोहबरिया हे

सुन लगै गोहबरिया हे

कटबै………

जाल फरि-फरि मातैर एलखिन

रून-झुन लगै गोहबरिया हे

कहाँ गेली परलोभिया सेवक

सुन लगै गोहबरिया हे

कटबै…..

बिनबै झुमरि जाल हे।

(अन्हार पसरि जाइत अछि।फेर इजोत होइत अछि आ आचार्य सरभ विक्षिप्त अवस्थामे मुख्य मंचपर अबै छथि।)

आचार्य सरभ: (मंचसँ बाहर पाछू कात बोन दिस इशारा करैत।) ई बँसबिट्टी एतेक पातर किए भऽ गेल अछि। ऐमे सँ कोनो अबाज नै अबै छलै, मुदा आब ई गीत पहिल बेर एकरा चीड़ि कऽ आबि रहल अछि। ई कोना रोकि सकत उल्कामुखकेँ..कोना रोकि सकत..(ठमकि कऽ पाछू दिस ताकि कऽ) शिष्य..(फेर ठमकि कऽ) मुदा ई शिष्य सभ तँ कोनो जोकरक अछिये नै। ई सभ कोना कऽ रोकि सकत उल्कामुखकेँ? ई सभ तँ रटन्त विद्याक पालक सभ अछि..आ स्त्रीक प्रतिबन्ध चौपाड़ि आ टोलमे कऽ देने छिऐ पहिनहियेसँ..जे ओ सभ उल्कामुख बिसरि जाइ जाथि.. ई सभ तँ उल्कामुख बुझबे गुनबे नै करत तँ कोना कऽ रोकि सकत।

(आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंहक प्रवेश।)

आचार्य व्याघ्र: आचार्य सरभ, बहुत भेल कल्पना, थाकि गेल छी हम।

आचार्य सिंह: आचार्य सरभ, कल्पना खतम। ई जादू खतम, ई बँसबिट्टीक बेढ़ खतम भेने आब नहिये हमर, नहिये आचार्य व्याघ्रक, नहिये अहाँक, नहिये गंगेशक, नहिये वल्लभाक, नहिये वर्द्धमानक, नहिये उदयनक, नहिये दीनाक आ नहिये भदरीक अस्तित्व बाँचल।

आचार्य व्याघ्र: वृन्दावन बोन बनि गेल ई बँसबिट्टी। (बाट दिस इशारा करैत) एतऽ आबैबला रस्ता ई बाटो बहिन मदति केनाइ शुरू कऽ देने अछि वल्लभाक। काछुक खोपड़ीमे सरिसवक तेलमे बाती राखि बियाहक दीप बनाओल गेल छलै वल्लभा लेल। कपोत रूपमे बिध-बिधाता आबि गेल छथि। (नेपथ्यसँ साँइ-साँइ करैत अबाज अबैए। आचार्य व्याघ्र कान पाथि सुनै छथि।) सुनू ई स्वर। स्वप्नलोकमे विचरणक दिन खतम भेल।

आचार्य सिंह: (अकास दिस इशारा करैत) हरियर पाँखि आ लाल ठोरबला ई सुग्गाक जोड़ी, लटपटिया सुग्गाकेँ देखू, ऐ प्रेम सखा मोरक जोड़ी देखू, बिदा भऽ गेल अछि ऐ वृन्दावनमे।

आचार्य सरभ: छिन्नमस्ताक कटल मूड़ीबला धड़क बिचका मोटका धार ओकर नीचाँ खसल मूड़ी पीबै छै आचार्य सिंह, ओ खसल मूड़ी हम बनि गेल छी..

आचार्य व्याघ्र: आ दूटा आर धार दूटा दुनू कातमे ठाढ़ जोगिन पीबै छै आचार्य सरभ। दीना, भदरी, उदयन आ वर्द्धमान ओइ जोगिनकेँ मोहि लेलन्हि।

आचार्य सिंह: इच्छा एकटा मशीन छी। सत्यक आ इतिहासक सत्यता मात्र आभासी

आचार्य व्याघ्र: सत्य आ आभासीक बीच भेद मेटा देने रहए ई बँसबिट्टी।

आचार्य सिंह: अचेतनता चेतना बनि गेल। ओकर भाषा अछि उल्कामुख।

आचार्य व्याघ्र: आचार्य सरभ, अहाँक शिक्षा पद्धतिमे किछु भाव आ सोच वंचित रहए।

आचार्य सिंह: निरन्तरताक विरोध करैए उल्कामुख।

आचार्य सरभ: समताक लगक शब्द असमता, न्यायक लगक शब्द अछि अन्याय आ वंचितक लगक शब्द अछि प्राप्ति।

आचार्य व्याघ्र: नै आचार्य, ई अहाँक दमित करैबला शिक्षा पद्धति अछि, एकर विरोध करैत अछि उल्कामुख।

ISSN 2229-547X VIDEHA

आचार्य सरभ: ऊँच स्थान लोकक कँ हाँ सभ नीचाँ आनऽ चाहै छी आ निचुलकाकेँ ऊपर।

आचार्य सिंह: अहाँक शिक्षा पद्धतिक भाग अछि ई ऊँच आ नीँच, एकर विरोध करैत अछि उल्कामुख।

आचार्य सरभ: (आचार्य सिंह दिस तकैत।) एकल वाद्यकेँ मेटा कऽ अहाँ जन कोलाहल आनऽ चाहै छी।

आचार्य सिंह: जन गाथापर लिखल नाराशंसीपर नाचत लोक आ ओकरे संगे नाच गन्धर्व। स्म्वेत स्वरक नाद अछि उल्कामुख।

आचार्य सरभ: *(हाथसँ वीभत्स इशारा करैत।)* मुदा रचनाकार तँ मरि गेल। के मानत जे के अछि लिखने ई उल्कामुख?

आचार्य व्याघ्र: रचनाकारसँ बेशी महत्वपूर्ण अछि ई रचना, एकर सन्देश, आ ओ रचना आ संदेश अछि उल्कामुख।

आचार्य सिंह: रातिक राजा छल चोर, दिनमे मालिक मालिक करै छल। चोरक रूप थोड़े होइ छै आब... आब तँ चोरियो सभ करऽ लागल अछि। पहिने ओकर प्रशिक्षण होइत रहए, खेतक आरिपर। सिंह कोना काटल जाय से आरिकेँ काटि कए देखाओल जाइत रहए। भोर भेने जे लोक सभ खेत जाइत छल तँ देखैत छल।

देखैत छल आरिमे काटल सिंघ... भरि गाम हल्ला..। रौ, सतर्क रहै जाइ जो। कोनो पैघ चोरिक योजनामे अछि ई सभ। मुदा फेर वएह सभ दिनमे सामान्य मनुक्ख।.....

आचार्य व्याघ्र: दू दिनसँ फुटहा खा कऽ गुजर कऽ रहल छी। आइ चोरि लेल जाए पड़त। बच्चा सभक लेल। देहमे तेल लगा कऽ, मुँहमे भसम लगा कऽ। क्यो पकड़ए चाहत तँ छछलि कऽ भागि जएब। हे क्यो चोरकँ रातिमे चीन्हि लेलहुँ तँ बरनी रहए देबैक। नाम नहि बकि देबैक। नहि तँ मारि देत...कारण दिनमे तँ अहाँ मालिक भऽ जएबैक। से डर छैक रातुक राजाकेँ।

आचार्य सरभ: की कथा सुना रहल छी..ओइ..की कहलिऐ..उल्कामुखक..

आचार्य सिंह: मुँह बिचकेलहुँ तँ लोक सभ बुझलक जे प्रसन्न छी, भौंहपर जोर देने बुझलक जे चिन्तनशील छी। मुदा हृदय रहैए सदिखन कनैत। से हम जनैत छी आचार्य सरभ..

आचार्य सिंह: (बाहर अकासमे एकटा किरण चमकैते रहैत अछि।) आ देखू, वनदेवी सेहो आबि गेलीह ऐ वृन्दावन, आ वनदेवीक सखी वनसप्तो, पाँखियुक्त ममातामयी गाय। आबि गेलीह वनसप्तो बोनमे हेराएल उल्कामुखकेँ रस्ता देखबै लेल।

(तीनू गोटे तेना अभिनय करै छथि जेना हबामे उड़िया रहल होथि। नेपथ्यसँ साँइ-साँइ करैत अबाज बढ़िते जा रहल अछि।)

तीनी गोटे सम्वेत: कल्पनाक पएर उखड़ि रहल अछि...आबि रहल अछि उल्कामुख।

अगड़म बगड़म काठ कठम्बर

अगड़म बगड़म काठ कठम्बर

अगड़म बगड़म काठ कठम्बर

आबि गेल ई उल्कामुख

(उड़ियाइत तीनू गोटे खसबाक अभिनय करैत छथि आ सगरे अन्हार पसरि जाइत अछि।)

(फेर प्रकाश होइत अछि आ मंचपर घनक स्थान गोलाकार पिण्ड लऽ लैत अछि।)

भगता: घूमि रहल अछि ई पृथ्वी। (गोलाकेँ परिश्रमसँ हाथमे उठबैत छथि।) लटकल अछि ई अकासमे। एकर नीचाँमे कोनो आधार नै छै। एतेक भारी अछि तैयो कोनो भार नै छै एकरामे।

अगरम बगड़म काठ कठम्बर

(गोलाकेँ नीचाँमे राखि दै छथि आ घसकि कऽ पाछाँ आबि जाइ छथि- दक्षिण दिशामे। हुनकर शिष्य अबैत छथि आ गोलाकेँ घुमबऽ लगै छथि।)

भगता: देखू। ई घड़ी विपरीत दिशामे घूमि रहल अछि ई पृथ्वी, मुदा जँ उत्तर दिश देखबै तखन। दक्षिण दिस तकबै तँ घड़ीक दिशामे घुमैत देखाएत ई। आ हम अहाँ जे ऐ पृथ्वीपर छी ओकरामे भार छै। आ ई पृथ्वी अछि बिन भारक, अकासमे लटकि रहल।

(हुनकर शिष्य पृथ्वीकेँ उठा लै छथि।)

अगरम बगड़म काठ कठम्बर

(भगता उकासी करऽ लगै छथि। शिष्य गोलाकेँ नीचाँ राखि कऽ भगताक छाती ससारऽ लगै छथि।)

भगताक शिष्य: दक्षिण दिशासँ आएल छथि गुरुजी खिस्सा सुनि कऽ..(मोन पाड़ैत) बासवेश्वरक। कहै छथि जे मिथिलामे सेहो हेतै

ISSN 2229-547X VIDEHA

ई सभ। हजार सालक बाद पुरनका गप घटित हेतै। (मुस्की दैत) मुदा गुरु छै हमर सिद्ध, केहेन केहेन गप बाजै छै नै सुनै छिऐ।

(भगता बेसी जोरसँ उकासी करऽ लगै छथि। शिष्य भगताक छाती ससारऽ लगै छथि। सगरे अन्हार पसरि जाइत अछि।)

पाँचम कल्लोल

पहिलसँ चारिम कल्लोल धरि मंचपर शतरंजक डिजाइन बनाएल घन राखल छल, आब पाँचम अंकसँ भूत आ कल्पनाक प्रतीक ओइ संकेतक बदला वास्तविकताक प्रतीक गोला राखल रहत।

[सोहागो (गंगाधरक माता), शिष्य साही बनि गेल हरपति (गंगाधरक पिता), गंगेश बनि जाइ छथि गंगाधर, वल्लभा बनि जाइ छथि कुमरसुता (गंगाधरक पत्नी), भगता बनि गेल जटा, भगताक शिष्य बनि गेल दलित गायक हीरू, आचार्य व्याघ्र बनि जाइ छथि मनसुख (जीवेक पिता), आचार्य सिंह बनि जाइ छथि हरिकर-सेनापति (मेधाक पिता), आचार्य सरभ बनि जाइ छथि कीर्ति सिंह (राजा), वर्द्धमान बनि जाइ छथि मितू (गंगाधरक बहिनोइ), आनन्दा

(गंगाधरक बहिन), मेधा (हरिकर- सेनापतिक बेटी), देवदत्त बनि जाइ छथि जीवे (मनसुखक बेटा), शिष्य खिखिर बनि गेल राजाक अर्थमंत्री नारायण, शिष्य नढ़िया बनि गेल दरबारी-१, शिष्य बिज्जी बनि गेल दरबारी-२, उदयन बनि गेल माधव (अनुभव मण्डलक सदस्य आ दरबारी), दीना बनि गेलाह माधवक सहयोगी-१, भदरी बनि गेलाह माधवक सहयोगी-२ , रुद्रमति (माधवक माए)]

(नेपथ्यसँ गीत आबि रहल अछि।)

पहिल मास चढ़ु अगहन, देवकी गरम संओ रे

ललना रे....

मूंगक दाल नहि सोहाय, केहन गरम संओ रे

ललना रे....

दोसर मास चढ़ु पूस, देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

पूसक माछी ने सोहाय, कि देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

तेसर मास चढ़ु माघ, देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

पौरल खीर ने सोहाय, कि केहन गरम संओ रे

ललना रे....

चारिम मास चढ़ु फागुन, देवकी गरम संओ रे

ललना रे....

फगुआक पूआ ने सोहाय, कि देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

पाँचम मास चढ़ु चैत, देवकी गरम संओ रे

चैत के माछ ने सोहाय, कि केहन गरम संओ रे

छठम मास चढ़ु वैशाक, देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

आम के टिकोला ने सोहाय, कि केहन गरम सेओ रे

सातम मास चढ़ु जेठ, देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

खुजल केश ने सोहाय, कि केहन गरम संओ रे

आठम मास चढ़ु अखाढ़, देवकी गरम संओ रे

ललना रे.....

पाकल आम ने सोहाय, कि केहन गरम संओ रे

नवम मास चढ़ु साओन, देवकी गरम संओ रे

ललना रे....

पिया के सेज ने सोहाय, कि केहन गरम संओ रे

दसम मास चढ़ु भादव, कि देवकी गरम संओ रे

ललना रे....

देवकी दरदे बेयाकुल दगरिन बजायब रे

जब जनमल जदुनन्दन, खुजि गेल बंधन रे

ललना रे.....

खुजि गेल बज्र केबार पहरू सभ सूतल रे।

(गीत खतम होइते एकटा बच्चाकेँ कोरामे लेने हरपति आ सोहागो प्रवेश करै छथि।)

हरपति: (सोहागोकेँ सम्बोधित करैत) सोहागो, गंगा माएक प्रतापेँ ई दिन हमरा सभकेँ देखबामे आएल अछि तेँ एक्र नाम गंगाधर राखि दैत छिऐ।

सोहागो: अबस्से किने। (बेटाकेँ कोरामे दुलार-मलार करऽ लगै छथि।)

(तखने *अगरम बगड़म काठ कठम्बर* बजैत ऋषि जटा आ हुनकर दलित गबैय्या शिष्य हीरू प्रवेश करैत छथि।)

ऋषि जटा: अगरम बगड़म काठ कठम्बर। अद्भुत, अद्भुत, अद्भुत..ई बच्चा अद्भुत..

शिष्य हीरू:

कौने मास मेघबा गरजि गेल

कोने मास बेंगवा बाजू रे

ललना रे कोने मासे होरिला जनम लेल

कि गोतिनक हिया सालू रे।

सावन मेघवा गरजि गेल,

भादव बेंग बाजू रे।

आसिन होरिला जनम लेल

कि गोतिनक हिया सालू रे।

कोने तेल देव सासु के

कोने ननदि जी के रे।

ललना रे, करू तेल देबैन सासु जी के

गरी ननदि जी के रे।

ललना रे अमला देबैन गोतिन के

हुनकर पैंच हेतनि रे।

ऋषि जटा: (गरामे सरभ खचित एकटा ताबीज गंगाधरकेँ पहिराबैत छथि।) ई बच्चा अद्भुत..अद्भुत..अद्भुत..अछि.. सामान्य बच्चा नै अछि ई..तैँ ई असामान्य भेंट..

शिष्य हीरू: धधरा फेकैत ई गीदर..की छी ऋषि जटा..

ऋषि जटा: उल्कामुख....

(चारू गोटे एक दोसराक मुँह ताकऽ लागै छथि।)

शिष्य हीरू: (आश्चर्य करैत) उल्कामुख?

ऋषि जटा: (आश्चर्य करैत) उल्कामुख?

शिष्य हीरू: (आश्चर्य करैत) हँ, अहीं तँ कहलौं, उल्कामुख।

ऋषि जटा: (आश्चर्य करैत) हमहीं कहलौं?

हरपति: हँ, अहीं तँ कहलौं, उल्कामुख ऋषि जटा।

ऋषि जटा: (आश्चर्य करैत) सत्ते, हमहीं कहलौं?

सोहागो: हँ, ऋषि जटा, अहीं तँ कहलौं, की कोनो अनिष्ट अछि..

ऋषि जटा: नै, कोनो अनिष्ट नै.. की नाम रखने छी एकर..

हरपति: गंगाधर..

ऋषि जटा: ई ताबीज एकर गरामे चलि गेल, हमर गुरूकेँ हुनकर गुरू देने रहथि, आ हुनका हुनकर गुरू आ ...हम नाम बिसरि गेल रही ऐ ताबीजक..उल्कामुख..हँ यएह हमर गुरू कहने रहथि हमरा आ हुनका कहने रहन्हि हुनकर गुरु आ..दिव्य..दिव्य..ई बच्चा दिव्य..

*(**ऋषि जटा** जोरसँ उकासी करऽ लगै छथि। **शिष्य हीरू** हुनकर छाती ससारऽ लगै छथि। सगरे अन्हार पसरि जाइत अछि।)*

(बालक गंगाधर आठ बर्खक भऽ गेल छथि। माए-बापसँ हुनकर बहस चलि रहल छन्हि। लगैए कोनो गम्भीर विवाद छन्हि।)

हरपति: एहनो भेल छै कहियो, यज्ञोपवीत नै कराएब। कोनो रोक-टोक हम केलौं, ब्राह्मणक बच्चा भऽ कऽ हीरूक टोल अहाँ गीत सुनैले, सिखैले जाइत रही, कहियो रोकटोक केलौ?

गंगाधर (अपन उल्कामुख ताबीज देखबैत) हम एकरा धारण कऽ लेने छी पिताश्री। आ हीरू कहै छथि जे उल्कामुख धारण केनिहारकेँ कोनो संस्कार करेबाक आवश्यकता नै होइ छै।

(हरिपति क्रोधित भऽ जाइ छथि।)

सोहागो: (गंगाधर दिस ताकैत) एना नै बाजू गंगाधर, एहेन आइ धरि नै भेल अछि, लोक की कहत, पण्डित सभ की बाजत?

गंगाधर माते, ई हमर अन्तिम निर्णय अछि..हीरू कहै छथि जे पण्डित लोकनि शास्त्रक गलत व्याख्या करै छथि... धर्मकेँ छागरक बलि धरि सीमित कऽ देल गेल अछि..

हरपति: (बीचमे क्रोधित भऽ गंगाधरकेँ काटै छथि) हीरू कहै छथि..सभ गपमे हीरू कहै छथि..आ हीरूकेँकेँ ई सभ कहलकन्हि..

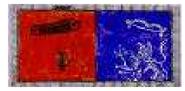
गंगाधर: हुनका ऋषि जटा ई गप कहलखिन्ह।

हरपति: (आर क्रोधित भऽ) आ ऋषि जटाकेँकेँ कहलकन्हि?

गंगाधर: ऋषि जटाकेँ हुनकर गुरु कहलखिन्ह..आ हुनकर गुरूकेँ हुनकर गुरू ...आ ..आ ...कोनो रहस्य छै जे ऐ उल्कामुखमे छै..आ जे छै सभक विस्मरणमे..

हरपति: माने ककरो बुझले नै छै..आ ओइ गपपर अहाँ अपन ई अन्तिम निर्णय लेलौ..

गंगाधर: (गप काटैत) मुदा जटिल कर्मकाण्ड अहाँकेँ नीक लगैए? हमरा तँ हीरूक गीतमे बेशी तत्त्व बुझाइए..आ हँ हमर अन्तिम निर्णय तँ अहाँ बुझिए गेलिऐ..

ISSN 2229-547X VIDEHA

हरपति: आ अहाँ अन्तिम निर्णय कऽ लेब, आ तकर बादो ऐ घरमे रहब, आ अहाँ ऐ घरमे रहब आ गौँआ सभ हमरा ऐ गाममे रहऽ देत..की ई सभ सम्भव छै?

(तखने मितू- गंगाधरक बहिनोइ आ आनन्दा- गंगाधरक बहिन प्रवेश करै छथि।)

आनन्दा: माँ- पिताजी। हमरा नै लगैए जे गंगाधर अपन बातसँ डिगत। गंगाधरकेँ अप्रत्यक्ष रूपमे घर छोड़बाक लेल विवश नै करू।

सोहागो: (आनन्दा दिस सम्मुख होइत) मुदा एतुक्का हाल नै देखै छहक।

हरपति: एतुक्का हाल छोड़ू, ई हमरो स्वीकार्य नै अछि..गंगाधर..हमर अन्तिम निर्णय अछि जे हम सभ ई गाम नै छोड़ब।

सोहागो: अहाँकेँ के कहैए गाम छोड़ैले।

गंगाधर: माते। हिनकर कहबाक अर्थ छन्हि जे जँ हम घर नै छोड़ब तँ हिनका गाम छोड़ए पड़तन्हि। पिताश्री..हम आइये सप्तरीक बोन दिस बिदा भऽ रहल छी..हमर अन्तिम निर्णय आ अहाँक अन्तिम निर्णयमे कोनो साम्य नै अछि।

सोहागो: गंगाधर, अहाँ आठ बर्खक छी..आ अहाँ असगरे...

मितू: नै..गंगाधरकेँ हम सभ ओहिना नै छोड़ि सकै छियन्हि। हमहू सभ संगे जाएब..की आनन्दा..

आनन्दा: हँ, हम सभ नै छोड़ि सकै छियन्हि हुनका। माँ, अहाँ पिताजी लग रहू..हम वचन दै छी जे गंगाधर अपन अध्ययन पूर्ण करत..आ

गंगाधर: आ ई उल्कामुख ओकरा संग छैहे...

(सोहागो विचलित भऽ जाइ छथि, हरपति पाथर बनि जाइ छथि। आ सगरे अन्हार पसरि जाइत अछि। फेर जखन इजोत होइत अछि तँ गंगाधर, आनन्दा, मितू, ऋषि जटा आ हीरू देखा पड़ै छथि। सभक मुँहपर लक्ष्य पाबि जेबाक प्रसन्नता स्पष्ट देखा पड़ि रहल छन्हि।)

ऋषि जटा: हमर मोनमे आब संतुष्टि अछि गंगाधर, अहाँ सन शिष्य हमरा भेटल। ई सौभाग्य हमर गुरु, हुनकर गुरु आकि हुनकर गुरुकेँ नै भेटल छलन्हि। अहाँकेँ पढ़बैकालमे जे आत्म संतुष्टि हमरा भेटल से अद्भुत। रटन्त विद्याक अखुनका वातावरणमे अहाँक विषयकेँ बुझबाक प्रवृत्ति अजगुत लागल। सन्तुष्ट छी हम..ई उल्कामुखक प्रभाव छी आकि अहाँक प्रभाव ऐ उल्कामुखकेँ सिद्ध बना देने अछि नै जानि की गप अछि। जाउ..जाउ अहाँ कीर्ति सिंहक राजदरबार। देखू की करबैत अछि ई उल्कामुख.....

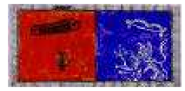
छठम कल्लोल

(कीर्ति सिंहक राजदरबार। दरबारी-१ आ दरबारी-२ सेहो छथि। गंगाधर आ राजाक अर्थमंत्री नारायणक प्रवेश दू दिशासँ होइत अछि।)

कीर्ति सिंह: (नारायण दिस तकैत) अर्थमंत्री नारायण, की भेल हिसाब-किताब मिलल आकि नै।

दरबारी-१: कोना मिलतन्हि, सभ रटन्त विद्याबला विद्यार्थी सभ पाठशालासँ बहार होइत अछि जे नव गणितक प्रश्नक ओझराहटिमे ओझरा जाइत अछि।

कीर्ति सिंह: (गरजैत) अर्थमंत्री नारायण।

  
ISSN 2229-547X VIDEHA

अर्थमंत्री नारायण: (हड़बराइत) हँ, हँ सएह तँ जोड़बा रहल छलहुँ अपन एकटा शिष्यसँ एक जोड़ दू जोड़ तीन...एक सए धरि..माने माने एकसँ एक सए धरि जोड़..कहने छल जे एक घण्टामे जोड़ि देब..तावत ई (दरबारी-२ दिस इशारा करैत) घीचि कऽ लऽ अनलन्हि।

दरबारी-२(दमसाइत): अर्थमंत्री, काल्हियो अहाँ बुते जोड़ मिलाओल नै भेल, जोड़पर जोड़..औ जी... कतेक घाटा आकि नफामे अहाँक खाता-खेसरा अछि ई तँ साल भरिसँ पता चलिये नै रहल अछि।

गंगाधर महराज जँ आदेश हुअए तँ हम किछु कही।

(राजा इशारासँ आदेश दै छथि।)

गंगाधर (अर्थमंत्री नारायण दिस सम्मुख होइत) एकसँ सए जोड़बा लेल पहिने ई बुझू जे संख्या कएक टा अछि।

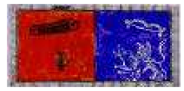
अर्थमंत्री नारायण: (बिहुँसैत) सए टा आर कतेक।

गंगाधर एक सँ सए आ सइया निनानबे ऐमे आब काज आएत। एक आ सए, दू आ निनानबे, तीन आ अनठानबे..ई सभ जोड़ाक कतेक परिणाम आएत।

अर्थमंत्री नारायण: (बिहुँसैत) एल सए एक आर कतेक?

गंगाधर दू दू टा जोड़ा अछि, तँ सए टामे कतेक जोड़ा भेल।

अर्थमंत्री नारायण: (बिहुँसैत) पचासटा आर कतेक?

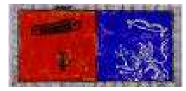
ISSN 2229-547X VIDEHA

गंगाधर *एक सए एक* केर पचास टा जोड़ा अछि। तँ *एक सए एक* केँ पचाससँ गुणा करू। वा पचासकेँ सएसँ गुणा करू आ ओइमे पचास जोड़ू..कतेक भेल।

अर्थमंत्री नारायण: (आश्चर्यसँ आँखि फाड़ि बजैत) पचासकेँ सएसँ गुणा भेल पाँच हजार ...पाँच हजार पचास। पाँच हजार पचास भेल महाराज। हँ ठीके तँ..

कीर्ति सिंह: अहाँक शिष्य तँ बड काबिल अछि। (गंगाधर दिस तकैत) की नाम अछि अहाँक वत्स..

अर्थमंत्री नारायण: (लज्जित होइत) नै महराज, ई हमर शिष्य नै छथि। ई तँ हमरासँ नोकरी माँगऽ आएल रहथि। मुदा जखन पुछलियन्हि जे कोन पाठाशालासँ छी तँ कहलन्हि जे सपतरीसँ ऋषि जटा आ हुनकर शिष्य हीरूसँ पढ़ल छथि, कोनो पाठशालामे नै पढ़ने छथि। तँ हम नोकरीपर नै रखलियन्हि। हम लज्जित छी महराज। हिनकर नाम छियन्हि गंगाधर..

कीर्ति सिंह: आश्चर्य। मुदा कोनो बात नै.. (दरबारी १-२ दिस इशारा करैत) जाउ आ हरिकर- सेनापतिकेँ बजाउ।

(दरबारी १ एक दिशासँ आ दरबारी-२ दोसर दिशासँ बहराइ छथि आ फेर संगे हरिकर सेनापतिक संग क्षणमे अबै छथि।)

कीर्ति सिंह: हम गंगाधरकेँ अपन धर्म बहिन कुमरसुतासँ विवाह करबा कऽ ऐ राज्यक प्राधानमंत्री बनबैत छियन्हि। सेनापति हरिकर..सभ प्रबन्ध कएल जाए।

सेनापति हरिकर: अवश्य महराज..अवश्य..शीघ्र सभ इन्तजाम भऽ जाएत।

(सगरे अन्हार पसरि जाइत अछि। फेर जखन इजोत होइत अछि तँ लगैत अछि जे राजदरबारसँ बेशी महत्वपूर्ण गंगाधरक कार्यालय भऽ गेल अछि। ओ एकटा अनुभव मण्डलक स्थापना केने छथि जइमे ने कोनो जातिक भेद छै आ ने स्त्री-पुरुषक भेद। गंगाधर,

मनसुख, हरिकर, मितू, आनन्दा, मेधा, जीवे, ऋषि जटा, हीरू, माधव, माधवक सहयोगी-१ आ माधवक सहयोगी-२ मंचपर आबि जाइ छथि, तखने प्रकाश होइत अछि। सभक गरामे उल्कामुख ताबीज लटकल छन्हि।)

गंगाधर: नव पाठशाला सभमे विद्यार्थी सभ सोचि रहल छथि, कऽ रहल छथि अपना हाथसँ काज। स्त्री-शिक्षा फेरसँ शुरू भऽ गेल अछि। जाति-पाति खतम कऽ देल गेल अछि, शिक्षा सभक लेल।

ऋषि जटा: आ सेहो रटन्त नै बुझन्त..जे हमर गुरू व हुनकर गुरू वा हुनकर गुरुक कालमे नै छलै... रटल विद्या तँ बुझू गदहाक ऊपर राखल बोझ थिक।

मनसुख: बेटा जीवे, सभ अभ्यागत लेल जलखैक व्यवस्था करू।

हरिकर: पुत्री मेधा अहाँक जीवेक सहयोग करू गऽ।

(जीवे आ मेधा बहरा जाइ छथि।)

गंगाधर अनुभव मण्डल परिश्रमक सत्कार करैत अछि धनिकक नै। धनिकक धन कुकुड़क दूध सन अछि, जइसँ कुकुड़क बच्चा मात्रक पोषण होइ छै, मिष्टान्न नै बनै छै। साँपक काटल आ भूत-प्रेतक शिकारसँ अहाँ किछु पूछि सकै छिऐ मुदा धन रूपी भूतसँ जे ग्रस्त अछि ओकरासँ की पुछबै?

मनसुख: सही कहलौं गंगाधर हमर बेटाकेँ कहियो अनुभव मण्डलक पाठशालामे अनुभव नै भेलै जे ओ सभ कहियो अछूत छल।

मितू: अछूत नै कहियौ मनसुख, अनुभव मण्डल ओकरा *उल्कामुखी* नाम देने अछि।

माधव: हँ उल्कामुखी। (माधव अपन सहयोगी-१ आ सहयोगी-२ दिस तकैत बजैत छथि।) अहाँ दुनू गोटे जाउ आ उल्कामुखी पाठशाला सभक बैसकीमे जे किछु आर्थिक जरूरति सोझाँ आबै ओकरा पूरा करू।

आनन्दा: तखन सभा खतम कएल जाए।

हरिकर: नै हमरा एकटा गप कहबाक अछि।

माधव: कोन गप सेनापति हरिकर।

हरिकर: माधव, गंगाधर अखन बाहर जा रहल छथि, सप्तरी। से अहींकेँ ई काज करऽ पड़त। हमर इच्छा अछि जे हमर पुत्री मेधाक बियाह जीवेसँ भऽ जाइ। हम बियाहक इन्तजाममे लागब, आ किएक तँ अहाँ आ हम दुनू गोटे राजाक दरबारमे छी से एकटा

औपचारिक अनुमति हम सभ राजासँ ऐ लेल लै छी। तँ ई भार अहींपर।

गंगाधर ई तँ हर्षक विषय अछि। (उठि कऽ ठाढ़ भऽ जाइ छथि। सभ उठि जाइ छथि आ मनसुख आ हरिकरकेँ बधाइ देबऽ लगै छथि। अन्हार पसरि जाइत अछि।)

(राजा कीर्ति सिंहक दरबार। राजा, अर्थमंत्री नारायण, दरबारी-१, दरबारी-२ आ माधव आ हुनकर दुनू सहयोगी दरबारमे छथि। राजा तमसाएल सन छथि।)

राजा कीर्ति सिंह: जखन हम जीवे आ मेधाक विवाहक अनुमति नै देने रही तखन ओ विवाह भेल कोना।

माधव: महराज, ओ तँ औपचारिक अनुमति छल, अनुभव मण्डलमे ओइ विवाहक कोने विरोध नै भेल रहए।

ISSN 2229-547X VIDEHA

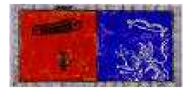
राजा कीर्ति सिंह: अनुभव मण्डल, अनुभव मण्डल। ई रजदरबारसँ पैघ भऽ गेल अनुभव मण्डल?

अर्थमंत्री नारायण: हम सेहो आंगुर उठेने रही महराज। ई अनुभव मण्डल की की सदावर्त बँटने फिरैए, राजकोषक क्षति करैए।

माधव: अनुभव मण्डलमे सभ परिश्रमक खेनाइ खाइए अर्थमंत्री नारायण। अहाँ बीच-बीचमे गंगाधरपर ई आरोप लगबैत रहै छियन्हि मुदा ओ एकर नीक जकाँ उत्तर दऽ देने छथि, आ अहाँ संतुष्ट सेहो भऽ गेल रही।

दरबारी-१: संतुष्ट की हेता, हुनकर घुमौआ हिसाब हिनका बुझैमे अबिते नै छन्हि।

दरबारी-२: मुदा ओ सभ तँ छोट मोट गप छल, ऐबेर तँ राजाक आदेशक निरादर भेल अछि। अनुभव मण्डलक कोनो काजपर राजा प्रतिबन्ध नै लगेने रहथि। रटन्त विद्या खतम करू, खतम भेल..

दरबारी-१: मुदा रटन्त विद्यासँ हिसाब जे नै मिलै छलन्हि अर्थमंत्रीक।

अर्थमंत्री नारायण: मुदा रटन्त विद्या खतम भेने लोक दिमागसँ सोचऽ लागल। ई तँ प्रारम्भ अछि महराज। मनसुख चर्मकारक बेटा आ ब्राह्मण सेनापति हरिकरक पुत्रीक विवाह क्रान्ति आनि देत..की कहै छै ओकरा..(सोचैत)

माधवक शिष्य-१ आ २: उल्कामुखी...

कीर्ति सिंह: माधव, अहाँ सभ जाउ आ हरिकरकेँ कहि दियन्हु जे आब ओ ऐ राजक सेनापति नै रहलाह। आ गंगाधर ऐ राज्यक प्रधानमंत्री नै रहलाह सेहो अनुभवमण्डल -हुँह- अनुभवमण्डलकेँ जानकारी दऽ दियौ। आब ई दुनू भार सम्हारताह नारायण। माधव, अहाँ सभ शीघ्र जाउ।

(माधव आ हुनकर दुनू शिष्यक प्रस्थान।)

ISSN 2229-547X VIDEHA

राजा कीर्ति सिंह: सेनापति नारायण, हमरा चारिटा आँखि चाही, दूटा मेधाक आ दूटा जीवेक। ऐ दुनू गोटेक आँखि निकाललाक बाद दुनूकेँ पागल ऐरावतक समक्ष धऽ दियौ। पिचरा कऽ दियौ दुनूकेँ, मुदा पहिने हमरा चाही चारिटा आँखि।

(अन्हार पसरि जाइत अछि आ नेपथ्यसँ जीवे आ मेधाक कनबाक अबाज अबैत अछि। फेर हाथीक चिघारसँ अकासमे बिजली कड़कऽ लगै छै। पुरुष, महिला आ हाथीक अबाज परस्पर मिज्झर भऽ जाइ छै। इजोत अबैत अछि आ अनुभवमण्डल बैसकी देखा पड़ैत अछि जइमे *गंगाधर, मनसुख, हरिकर, मितू, आनन्दा, ऋषि जटा, हीरू, माधव, माधवक सहयोगी-१ आ माधवक सहयोगी-२* सभ छथि मुदा जीवे आ मेधा नै।)

गंगाधर की ई अहाँ सभक अन्तिम निर्णय अछि?

सभ सम्वेत स्वरमे: हँ, हँ, अन्तिम निर्णय, गंगाधर, अहाँ मानी नै मान॥

गंगाधर अनुभव मण्डलमे सर्वदा बहुमतक सम्मान कएल गेल छै। ठीक छै, तँ एकर भार ककरापर देल जाए।

माधव: हम ई भार लै छी गंगाधर, सहर्ष... सहर्ष... (अपन दुनू शिष्यक संग माधव मंचपरसँ बहरा जाइ छथि।)

गंगाधर ठीक छै तँ सएह हुअए। अनुभव मण्डलक सभ सदस्य पुनः सप्तरी प्रस्थान करथि। तँ सएह हुअए।

(अन्हार पसरि जाइत अछि आ जखन इजोत होइत अछि तँ रुद्रमति- माधवक माए, माधव आ माधवक दुनू शिष्य मंचप छथि। खेनाइक बासन बगलमे राखल छै। रुद्रमति तमसाएल छथि।)

रुद्रमति: (बर्तनसँ भात नीचाँ जमीनपर फेकैत) अनुभवमण्डलक निर्णयक बिनु पालन केने अहाँ घरमे कोना प्रवेश कऽ गेलौं पुत्र

ISSN 2229-547X VIDEHA

माधव। जाबे अहाँ अनुभवमण्डलक निर्णयक पालन नै करब ताबे अहाँ कुकुड़क योनिमे रहब, आ कुकुड़कें थारीमे खेनाइ खेबाक अधिकार नै छै। खाउ, ई नीचाँमे फेकल भात खाउ।

(माधव भुकैत छथि आ छिड़िआएल भाय खाए लगैत छथि। अन्हार पसरि जाइत अछि। फेर जखन इजोत होइत अछि तँ राजदरबारमे राजा, दुनू दरबारी आ नारायणक संग माधव आ हुनकर दुनू शिष्यमे युद्ध होइत अछि। माधवक दुनू शिष्य दुनू दरबारी आ नारायणकेँ गछाड़ने छथि आ हुनका ऊपरसँ तड़पि कऽ माधव एकटा चक्कू लेने राजाक छातीपर चढ़ि जाइए आ ओकरा पेटमे चक्कू भोंकि दैत अछि। तावत राजाक सैनिक सभ आबि जाइत अछि मुदा माधव अपन पेटमे सेहो छूरा भोंकि लै छथि। माधवक दुनू शिष्यकेँ राजाक सैनिक मारि दै छथि। तीनू गोटेक गरासँ उल्कामुख ताबीज नारायण निकालैत छथि, आ सभकेँ देखबैत छथि। अन्हार फेरसँ पसरि जाइत अछि।)

(फेर मंचपर प्रकाश होइत अछि। मंच खाली अछि। अनुभवमण्डलक सदस्य मंचपर अबैत छथि जइमे गंगाधर, मनसुख, हरिकर, मितू, आनन्दा, ऋषि जटा आ हीरू छथि मुदा जीवे, मेधा,

माधव आ माधवक दुनू सहयोगी नै छथि। गंगाढर छड़ी धेने छथि, आ शान्त छथि। सभ बैस जाइ छथि।)

गंगाधर विदा लेबाक समए आबि गील मित्रवर। अनुभवमण्डल सभ जातिकेँ निकट आनलक, जाति खतम केलक, मुदा एकेटा डर..

ऋषि जटा: कोन डर गंगाधर।

गंगाधर यएह जे बदला भावक ई आगि अनुभवमण्डलकेँ एकटा उल्कामुखी जाति नै बना दै ऋषि जटा। यएह एकटा डर... यएह एकटा डर...

(आस्ते-आस्ते गंगाधर प्राणत्याग करैत छथि। अन्हार पसरऽ लगैए आ नेपथ्यसँ अबाज अबैए..

डर लगैए हे डेराओन लगैए

तोर अंगना, भयाओन लगैए

हे अजगर के सम्हा पर धामिन के बरेड़िया

गहुमन के कोरो फुफकार मारैए,

डर लगैए हे डेराओन लगैए

तोर अंगना, भयाओन लगैए

कड़ेत के बत्ती पर सांखड़ के बन्हनमा

बिढ़नी के खोता घनघन करैए।

डर लगैए हे डेराओन लगैए

तोर अंगना, भयाओन लगैए

सुगबा के पाढ़ि पर ढोरबा के ढोलनमा

पनिया के जीभ हनहन करैए

डर लगैए हे डेराओन लगैए

तोर अंगना, भयाओन लगैए

बिछुआ के कुण्डल सनसन करैए।)

-समाप्त-

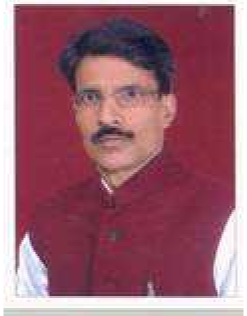
ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।



१. डॉ. शम्भु कुमार सिंह मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला सम्पन्न २. अतुलेश्वर- **विद्यापति समारोह, बिहार गीत आ मैथिल/ पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने**/ विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ

१

ISSN 2229-547X VIDEHA



डॉ. शम्भु कुमार सिंह

मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला समपन्न

राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, मैसूर द्वारा अनुवाद साहित्यमे प्रशिक्षण देबाक उद्देश्यक तहत स्थानीय डी. बी. महाविद्यालय, जयनगर, मधुबनीक संयुक्त तत्वाधानमे अनुवाद पर पाँच दिवसीय अभिविन्यास कार्यशालाक उद्घाटन दिनांक 25 नवम्बर,2011 कें स्थानीय विधायक श्री अरूण शंकर प्रसाद द्वारा कएल गेल। 25 सँ 30, नवम्बर,2011 धरि समपन्न भेल एहि कार्यशालामे विषय विशेषज्ञक रूपमे प्रो. कमलकान्त झा, प्रो. विजय कुमार मिश्र, प्रो. श्रुतधारी सिंह, डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' आ डॉ. टी. पी. सिंह, लगभग 43 टा प्रतिभागीकेँ विभिन्न विषयक मैथिली भाषामे अनुवादक गुर सिखौलनि।

पाँचो दिन क्रमशः दू सत्रमे संचालित एहि कार्यशालाक प्रथम सत्रमे जतय विभिन्न विशेषज्ञ द्वारा ज्ञान-पाठ्यक अनुवादमे

आबए वला समस्या आ ओकर समाधान, अनुवादक प्रकार/सिद्धान्त पर व्याख्यान देल गेल ओतहि दोसर सत्रमे प्रायोगिक रूपमे राष्ट्रीय अनुवाद मिशन द्वारा अंग्रेजीसँ मैथिलीमे अनुवादक हेतु चयनित ज्ञान-पाठ्य क्रमशः '*द इंडियन कन्टीच्यूशन : अ कॉर्नरस्टोन ऑफ द नेशन*, ग्रेनविल' '*हीट ट्रान्सफर*, होलमैन' '*फिजिकल कैमिस्ट्री*, वॉल्टर' '*आउटलाइन्स ऑफ इंडियन फिलॉसॉफी*, एम. हिरियन्ना' क पोथीसँ दू-दूटा अनुच्छेदक अंग्रेजीसँ मैथिलीमे अनुवाद कएल गेल, पछाति विशेषज्ञ लोकनि द्वारा ओहि अनूदित अनुच्छेदक वीक्षण कए संबंधित विषय पर परिचर्या कएल गेल।

कार्यक्रमक आरंभिक संबोधन सत्रमे मिशनक प्रतिनिधि डॉ. शंभु कुमार सिंह मिशनक गतिविधि आ उद्देश्य पर चर्चा करैत कहलनि जे राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, अनुवादक क्षेत्रमे भारत सरकारक एकटा पहल थिक जकर उद्देश्य छैक विभिन्न विषयक अंग्रेजीमे उपलब्ध उच्च स्तरीय ज्ञान-पाठ्य पुस्तकक भारतीय संविधानक आठम अनुसूचीमे सम्मिलित सभटा अठारहो भाषामे अनूदित संस्करण उपलब्ध कराएब। एहि महती उद्देश्य पूर्ति करबाक हेतु दिनांक 01 जुलाई,2008 केँ एहि मिशनक स्थापना भारतवर्षक प्रख्यात भाषाविद्, कवि, लेखक प्रो. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'(तत्कालीन निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर)क सत्प्रयासँ भेल छल। एहि अवसर पर मिशनक आन प्रतिनिधि श्री पवन कुमार चौधरी एहि विषय पर प्रकाश देलनि जे वर्तमान

ISSN 2229-547X VIDEHA

परिस्थितिमे मैथिलीमे एहि तरहक अभिविन्यास कार्यशालाक औचित्य किएक अछि? कार्यशालाक संचालन, आगन्तुक अतिथिक स्वागत आ धन्यवाद ज्ञापन मिशनक प्रमुख प्रतिनिधि डॉ. अजीत मिश्र द्वारा कएल गेल।







२

अतुलेश्वर- **विद्यापति समारोह, बिहार गीत आ मैथिल/ पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने/** विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ

१.

विद्यापति समारोह, बिहार गीत आ मैथिल

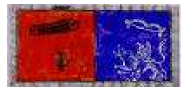
बाबा विद्यापतिक प्रति जे सहानुभूति छलन्हि ओ तं तीनदिनुका समारोहमे पूरा भ गेल। जिनकर मोनमे जे छल सभ किछु कहि देलन्हि अपन-अपन विद्वता आ योगदानक चर्चा जतेक करबाक छलन्हि से भ गेल। सभ अपन-अपन धारणा बाबा मिथिला आ मैथिलीक प्रति देखाओल,किछु गोटें बरसाती बेंग जेकां टरटरेलाह आ किछु गोटे बड़ड गम्भीर भ किछु बात उठाओल। ओना ओकर संख्या कम्मे अछि , ओना ई एकटा सत्य छैक जे उचित आ गम्भीर गप्प कहनिहार कम होइत छैक । एहि परिपेक्ष्यमे एक जन कहलन्हि जे चेतना समितिक कार्यक्रममे आमलोकक संख्या कम छल ओकर कारण अछि जे चेतना समिति आमलोकसँ जुड़ल नहि

अछि । बात ठीकें,मैथिलीक सभसँ पैघ संस्था मुदा कार्य किछु लोकक हेतु। राजधानीमे संस्था मुदा राजधानी मे मैथिलीक विरूद्ध होइत कोनो षडयंत्र सँ अनभिज्ञ। ओना सभसं बेशी सकारात्मक चिन्तन आयल धीरेन्द्र प्रेमर्षिक जे विद्यापतिकें राष्ट्रीय विभूति घोषित कयल जाए तेकरा लेल माहौल आ जनसमर्थन पर काज कएल जाए, चिन्तन बड्ड नीक।

हेमन्मि विद्यापति पर्व समारोहमे सत्ताशील पार्टीक नेताक लोकनि लेल नीक स्थिति नहि छल , कारण ओ लोकनि अपन पुरना राग जे हम सभ मैथिलीकें अष्टमअनुसूची मे स्थान देबाक लेल कोना कोना की की कएलहुं से बेशी जोर सँ नहि कहि सकलाह। कारण सुशासन बाबु तँ हुनकर लोकनिक एहि रागकें रोकि देलन्हि अपन कृति सँ । बिहार गीत मे मिथिलाक चर्च नहि। हम तँ कहब जे भेल से ठीके भेल । हमरा लोकनि हाथउठाइ ल ल ततेक ने ककरो गुणगान करए लगैत छी जे सभ किछु बिसरि जाइत छी। यदि एक दिश मिथिला राज्यक मांग क रहल छी तँ दोसर दिश मैथिली आ मिथिलाक संग अन्याय कएनिहारकें सम्मान।(कारण पूर्व मुख्यमंत्री डा. जगरनाथ मिश्र मिथिला राज्यक विरोध करैत छथि दोसर दिश मिथिलाक संस्था हुनका सम्मानित करैत अछि) हमरा जनैत सुशासन बाबू हमरा सभकें जगबाक लेल कहि रहल छथि यौजी हाथउठाइ जूनि लिय , संघर्ष करू तखनि मेवा भेटत नहि तं इएह सत्यनारायण भगवानक प्रसाद। (ओना की भ रहल

अछि आठम अनुसूची मे मैथिली अयला सँ एहि पर बड्ड नीक चिन्तन कएलन्हि अछि आदरणीय पं.गोविन्द झा जी मिथिला दर्शन मे समीपेषु मध्य ।) सुशासन बाबू बुझैत छथि जे मिथिला सँ आयल जनप्रतिनिधि मिथिला आ मैथिली लेल कतेक साकांक्ष छथि,यदि ओ सभ कहताह जे नहि हम सभ साकांक्ष छी तँ ई कोना भेल । कोन कारण सँ मिथिलाक संग अन्याय कयल गेल कि ओकर संस्कार , संस्कृति आ भाषा सुदृढ़ छैक तैंए , एकर एक मात्र कारण छल हमर सभक छोट मानसिकता । यदि अपन अस्मिता आ स्वायत्त चाहैत छी तँ लड़य पड़त , आ संगहि अपन चरित्रकें सेहो बदलय पड़त। कारण हमरा लोकनि घर मे खूब कूदब जखने बाहर जायब तँ समझौता परस्त भ जायब आ ई चरित्रकें बदललाक बादें हम सभ ओहि मिथिला आ मैथिलीक अस्मिताक विषयमे सोचि सकैत छी कहियो सम्पूर्ण भारतवर्षक मान छल मिथिला। हमरा लोकनि कखनो सोचलहुं जे हमर सभक सांस्कृतिक आ भाषाई संबंध हिन्दी पट्टी सँ नहि पूर्वोत्तर आ नेपाल सँ अछि तखनि हमरा लोकनि कियाक नहि हुनके लोकनि जेकां अपन भाषा , अपन अस्मिताक लड़ाई कोना लड़ल जाइत अछि एहि पर सोचि । ओना हमरा लोकनि हिन्दी दा कें नहि छोड़बन्हि आ तखनि भेटत कि से शब्द नहि लिखि सकैत छी हमरालोकनि स्वयं सोचि। हमर सभक मानसिकताक विषय मे यैह धारणा अछि जे हम सभ मैथिली बजबा सं कि मैथिली आ मिथिलाक कथा कहबा सं लाज करैत छी, हमर एकटा मित्र छथि हुनका हम

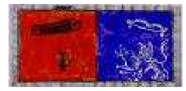




ISSN 2229-547X VIDEHA

कहलियनि जे अपने पोथी मैथिली भाषामे लिखु भाषाक सेहो सेवा होयत आ अहांक ई काज सं बहुत गोटा प्रभावित हेताह एहि सं मैथिली आ मिथिला के लाभ हेतैक,हुनका ग्लानि भेलन्हि,तखनि हमरालोकनि सोचि सकैत छी जे मिथिलामे केहन लोक छथि ।

विद्यापति समारोहक समाचार पढ़ल जाहि मध्य एकटा महानुभाव कहने छलाह जे मैथिली रोजी-रोटीक भाषा भ गेल अछि आब एकर विकास कियो नहि रोकि सकत । हमरा महाशय सं पूछियनि कत। विदेश मे कि देश मे। एतेक झूठ कियाक । जे भाषा अपन क्षेत्रमे शिक्षाक माध्यम वा कोनो संस्था मे कार्यालयक भाषाक धरि नहि भ सकल अछि ओ रोजी कत स देत। कारण मिथिलाक भाषा मैथिली भेल आ ओ मैथिलीक ई दशा छैक जे ओकर विकास लेल एकगोट संस्था धरि नहि छैक जखनि कि मिथिलाक अपन सम्पति छलैक अपन शासन छलैक । तखनि रोजी रोटीक सं एतेक जल्दी जोड़ब कनेक अनसोहांत लागल,एहिना कियो बजने छलाह जे हम सभ आन्दोलनक लेल तैयार छी,ई कथा हुनक हम प्रत्येक विद्यापति समारोह मे सुनैत छियैन्ह आ लगैत अछि भविष्यमे आरो सुनब। एहि परिपेक्ष्यमे बिहार गीतक हंगामा उठल बेचारे सत्यनारायण मिथिला नहि देखलन्हि आ एकटा बचकौन गीत लिखि बैसलाह आ तेकर विरोधमे स्वर उठल जे बिहार गीतमे मिथिलाक चर्च नहि करबाक लेल हमरा लोकनि विरोध क रहल छी औजी विरोध कत कोठरीमे ,कने आगू बढ़ू(ई टिप्पणी एकगोट यशस्वी

साहित्यकारक संस्था देने छल हुनका लेल, कारण मिथिलाक जनता घर सं बाहर भेल टा नहि अछि ओ सब एकर प्रतिरोध क रहल अछि) । कारण किनको मोन मे मिथिला आ मैथिलीक प्रति सनेह रहतनि,तं मैथिली आ मिथिलाकें दुर्दशा कियाक केने रहितथि।सुकान्त सोम मिथिला दर्शन मे एकटा लेख लिखने छथि जे 'मैथिली हाथउठाइ पर कते दिन, जाहिमे जे-जे विन्दु पर ओ चर्च कएलन्हि से चिन्तनशील आ गम्भीर अछि । बांकी हम मैथिल , कि करैए छी से समय बताओत।

२

पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्नेः-

हेमन्मिे गोहाटीमे एकटा सेमिनार आ कार्यशाला मे गेल छलहुं । सेमिनारक विषय छल लक्ष्मीनाथ बेजबरुआः- समकालीन पूर्वी भारतीय साहित्य आ कार्यशाला छल लक्ष्मीनाथ बेजबरुआक गल्पक पूर्वीय भारतीय भाषामे अनुवाद। ओतऽ जतेक लोक अपन-अपन आलेख पाठ कएलन्हि ओकर मध्य यैह देखबामे आयल जे सम्पूर्ण पूर्वी भाषा लक्ष्मीनाथ बेजबरुआक समयमे अपन-अपन अस्मिताक लेल लड़ाई लड़ि रहल छल जाहिमे असमिया आ उड़िया अपन स्वतंत्र स्थिति स्थापित क लेलक मुदा मैथिली हिन्दीक पाँजमे बहुत दिन धरि कि अखनो दबायल अछि आ ओ भाषाई स्वतंत्रता भेलाक पश्चातों अखनि धरि स्वतंत्र नहि भ सकल अछि ओकर कारण

ISSN 2229-547X VIDEHA

राजनीति,सामाजिक,आ आर्थिक अछि । हमरा लोकनिक राजनीति जातिगत सं भड़ल अछि राजनीति मिथिलाक अस्मिताक लेल नहि होइत अछि मात्र अपन स्वार्थक लेल। ओहिना सामाजिक स्थितिक अछि समाज जातिगत भेदभाव ,परम्परावादी मानसिकता आ एक दोसराक प्रति द्वैष सँ भड़ल अछि आ ताहू सँ बेशी स्थिति दयनीय अछि आर्थिक । स्वतंत्रता एतेक वर्ष भेलाक बावजूदो मिथिला भारतक अन्य प्रांत सँ पिछड़ल अछि लोकक खेती-बारी चौपट छैक तँ रोजी-रोटीक लेल अन्य प्रांत जयबाक लेल मजबूर होइत अछि आ पलायन ओकर संस्कृति , भाषा आ स्वतंत्रताकें छिनि रहल अछि ,जेकर कारण संस्कृति आ भाषा एक ठाम सँ दोसर ठाम जाइत आ दहशत मे रहैत जीवन जाहि कारण दबायल जा रहल अछि।जेकर कारण हम सभ मैथिली भाषी सं बेशी हिन्दी भाषीक रूप मे जानल जाइत छी आ हम सब अपन स्वतंत्र अस्तित्व नहि स्थापित क पबैत छी ।मुदा ई असम्भव नहि छैक एहि चेतनाक जगएबाक आवश्यकता छैक यदि अपन अस्तित्वक लेल चेतनशील रहब अपन स्वतंत्र अस्तित्व पाबि सकैत छी मुदा हमरा लोकनि मे एकर पूर्णतः अभाव अछि जेकर कारण हम सभ पिछड़ल छी। अपने देखि सकैत छी असमक चाह बगान मे काज करबाक लेल आनल गेल चाह बागानक मजूर अपन संस्कृति आ भाषाक आधार पर अपन स्वतंत्र अस्तित्वक निर्माण मे लागल छथि आ स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करबामे सफल सेहो भ रहल छथि कारण ओकर मूलमे अछि हुनक सांस्कृतिक एकजूटता आ भाषाई चेतना। मुदा

हम सभ जातिगत संस्कृति , जातिगत भाषाक कारण एखनि धरि अपन स्वतंत्र अस्तित्वक नहि निर्माण क पाबि रहल छी ओकर मूल मे अछि हमर सभक एकजूटताक कमी। नहि तं मिथिलामे कोनो साहित्यकारक देहान्त होइत छनि तँ मिथिलामे किनको शोकाकुल नहि देखल जाइत अछि (जं किनको शोकाकुल देखल जाइत अछि ओ हुनक औपचारिकता छी) जखनि कि मैथिली साहित्यकारों मिथिलाक लोकक जीवनकें अपन लेखनीक माध्यम सं विश्व परिदृश्यकें परिचित करबैत छथि आ एहि साधना मे लिन रहैत छथि ताहि बावजूदो मैथिली साहित्यकारकें मिथिलाक समाज आ लोक अपनासं नहि जोड़ि पबैत अछि , मुदा 29 नवम्बरक भोर मे असमिया साहित्य आ ओतुक्का लोकक मामोनी बाईदेउ (डॉ. इन्दिरा गोस्वामीक) निधन हुनका प्रति संवेदना देखि लागि रहल छल जे असमिया लोकक परिवार अपन कियो हुनका सभकें छोड़िकें चल गेल होथि आ ई संवेदना देखि लोकक प्रति जे भावनाक संचार होइत अछि ओहि सँ बेशी अपना उपर लाज होइत अछि जे एक्के देह मुदा संवेदना आ भावनामे एतेक अन्तर कियाक। असमक धरती बाजारवाद सं बांचल अछि आ ज्ञानक धरती मिथिला संवेदनहीन भेल जा रहल अछि कियाक एहि विषय पर सोच पड़त ।

३

विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ

यथार्थ मे ई सत्य छैक जे संघर्ष एकटा नव जीवनक जन्म दैत छैक आ जे व्यक्ति संघर्षकें अपन भाग्यक दोष नहि मानि ओकरा कर्म पथक सारथी मानि लिअए तं बुझु ओ कतेक माननीय अछि । ई उदाहरण असमिया साहित्यक महिला लेखिका , समाजसेवी आ शान्तिक लेल लड़ैत डॉ. इन्दिरा गोस्वामीक मादे कहि रहल छी। असमिया भाषा साहित्य , असमिया समाज आ लोकसं हुनका जे लगाव आ स्नेह छलन्हि ओकर उदाहरण देखल जा सकैत अछि हुनका देहावसान आ हुनका प्रति लोकक लगाव। सम्पूर्ण शहरे टा नहि सम्पूर्ण असम अपन बाईदेउक निधन सं आहत। मुदा प्रश्न उठैत अछि ई आत्मीयता आ संवेदना कोना प्राप्त भेलन्हि एहि विदुषीकें। तं अपनेकें भेटत संघर्ष आ संघर्ष सं उपजल एक-एक टा बूंदकें अपन जीवनमे आत्मसात करब। कहल जाइत अछि जखनि बाइदेउक जन्म भेलनि तं ज्योतिषक अनुसार ई अभागली हेतीह आ हिनका मारि देल जाए मुदा से नहि भेल , मुदा ककरो अभाग्यक अन्त नहि होइत छैक ज्योतिष द्वारा मारि देबा सं बांचि जीवन तं भेटलन्हि मुदा दुर्भाग्य बाइदेउकें नहि छोड़लक पिता दुनिया सं छोड़ि देलन्हि आ ओकर पश्चात् पतिक सड़क दुर्घटनामे निधन। ई सभ घटना बाइदेउकें एक दिश असगर क रहल छल तं दोसर दिश संघर्षक जन्म द रहल छल। मुदा बाइदेउ हारैत नहि छथि जखनि कोनो पुरुषक जीवनक आरम्भ होइत छैक तखनि

बाइदेउक जीवन अन्त होइत अछि मुदा बाइदेउक जीजिविषा एतेक मजगूत छल जे बाइदेउ एहि चुनौतीकें अपन जीवनसं आत्मसात् करैत छथि आ तेरह वर्षक अवस्था सं लेखनी प्रारम्भ कएनिहार बाइदेउ पुनः लेखनीसं जोड़ि लैत छथि । बाइदेउ मात्र अपन लेखनी मे नहि क्रान्ति नहि अनैत छथि ओ तं अपन जीवन मे सेहो क्रान्ति अनैत छथि। कहल जाइत अछि जीवनक एहि उकस-पाकसक क्षणमे बाइदेउ जखनि वृंदावन, काशी मे बास करैत छथि तं बाइदेउ अपन जीवनमे एक नव परिवर्तन अनैत छथि तं दोसर दिश बाइदेउ विधवाक जीवनकें अपन लेखनीसं कैनवास करैत छथि, कहल जाइत अछि बाइदेउ ओतऽ सं अयलाक बाद सधवाक रूपमे उपस्थित होइत छथि आ जीवनक अन्त धरि ओहिना रहैत छथि। बाइदेउक अपन जीवन मात्र लेखनी धरि सीमित नहि राखि ओ असमक शान्तिक लेल प्रयास करैत रहैत छलीह आ एहि कारण हुनका बहुत प्रकारक लांछन सेहो लगाओल गेल। मुदा जीवनक अन्त धरि ओ एहि लागल रहलीह किन्तु दुखद जे जखनि ओ असमक ओहि संत्रासकें कैनवास करबाक सोचलन्हि तावत धरि ओ दुनिया छोड़ि देलन्हि । एहि तरहें देखैत छी जे बाइदेउक जीवनमे जे जीजिविषा छल ओ मात्र असम आ असमिया साहित्य लेल नहि ओ सम्पूर्ण नारीक प्रतिक अछि जहिना मिथिलाक सीता सम्पूर्ण नारीक प्रतिक छथि ओहिना बाइदेउ सम्पूर्ण नारीक मार्गदर्शक ।

ISSN 2229-547X VIDEHA

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१.ओमप्रकाश झा -**बुढिया मैंया**दुर्गानंद मण्डल-२ टा विहनि कथा

१

ओमप्रकाश झा

बुढिया मैंया)कथा(

मोबाईल पर बाबूजीक फोन आयल। हम उठेलौं त' कुशल क्षेमक

बाद बाबूजी कहलैथ" -बुढिया मैंया स्वर्गवासी भ' गेलीह। "हम धक् रहि गेलौं। एखने दू मास पहिने गाम गेल छलौं, त' बुढिया मैंया स्वस्थ छलीह। ओना हुनकर अवस्था ९५ बर्ख छलैन्हि। पता चलल जे हर्ट अटैक आबि गेल छलैन्हि आ दरिभंगा ल' जैत बाटे मे हुनकर देहान्त भ' गेलैन्हि। बाबूजीक निर्देशानुसार हम तुरत गाम चलि देलियै। राति मे गाम पहुँचलौं, त' पता चलल जे दाह संस्कार लेल कठियारी गेल छैथ सब। माताजीक निर्देशक मोताबिक काठी चढेबा लेल हमहुँ कठियारी भागलौं। बुढिया मैंयाक दिव्य आ शान्त मुख देखि एना लागल जे ओ आब उठि बैसतीह। हुनका सानिध्य मे बिताओल समय मोन मे घूरिया लागल। एक दिन सब एहीना शांत भ' जैत। बुढिया मैंया कखनो कँ कहैथ रहथिन जे बौउआ, आब कते दिन बुढिया मैंया, हमर जे पार्ट छल से हम खेला लेलौं, आब अहाँ सभ अपन पार्ट खेलाइ जाइ जाउ। ठीके कहै छलखिन्ह ओ। अपन पार्ट खेला कँ कते दिन सँ हमरा सबहक पूर्वज एहीना शांत होइत रहलाह आ नबका पात्र सब मनुक्ख आ मनुक्खता कँ आगू बढबैत रहलाह। इ खेल सतत चलैत रहत। नब नब पौध आंगन मे आबैत रहत आ पुरान गाछ सब एहीना धाराशायी होइत रहत। मायाक जंजाल मे बान्हल हम सब एहीना मुँह ताकैत रहब। कतेक असहाय भ' जाइ छै मनुक्ख, जखन कियो अपन सामने सँ चलि जाइ छै आ ओ किछ करबा मे असमर्थ रहैत छै। एहने विचार सब मोन मे आबैत रहल आ हुनकर चिता जरैत रहलैन्हि। जखन दाह संस्कार पूर्ण भ' गेलै त'

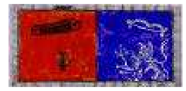
हरिदेव कक्का कहलैथ" -कोन विचार मे हरायल छी ओम बौउआ। चलू आब नहा कें गाम पर चली। ओहिनो भोर भ' गेल। नहा-सोना कें कनी सुतब, रतिजग्गा भ' गेल। "हम कहलियैन्हि" -कक्का, बुढिया मैंया बड़ड मोन पडै छैथ। "हरिदेव कक्का बजलाह" -छोडू ने इ सब गप, हमरा की नै मोन पडै छैथ। ऐ लेल गाम नै जैब की। मोन खराप क' ली बिना सुतने। अरे भेलै चलू, ९५ बरख केर पाकल उमैर मे गेलैथ, कते शोक मनायब। "हम चुपचाप चलि देलियै गाम दिस। आबि कें नहा-सोना कें सुतै लेल गेलौं। ओतय आँखि मुइन सुतबाक उपक्रम कर' लागलौं। आँखि मुनैत देरी बुढिया मैंया सामने ठाढ भ' गेलीह। हमरा दिस सिनेह सँ ताकैत वैह पुरना सवाल पूछ' लागली जे बौउआ खेलौं। हम हुनका एकटक ताकैत रहि गेलौं।

बुढिया मैंया हमर बाबाक काकी छलीह। हमर प्रपितामही लागैत छलीह। पूरा आंगन मे सब सँ जेठ आ आब त' बच्चा सभक संग सब गोटे हुनका बुढिया मैंया कह' लागल रहैन्हि। पूरा आंगनक बच्चा सभक सम्पूर्ण भार हुनके पर रहै छलैन्हि आ ओ एकरा पसिन्न करै छलखिन्ह। बच्चा सभ सँ खूब सिनेह रहै छलैन्हि हुनका। हमरा सभ कें खुएनाई हुनके जिम्मा रहै छलैन्हि। जखने हम सब खाई मे एको रत्ती हिचकिचाइ छलियै की ओ तुरते तोता कौर आ मैना कौर बना कें खुआब' लागै छलीह। माताजी गाम पर पहुँचैत देरी हमरा सब कें हुनकर संग लगा दैत छलीह। जेना हमरा बूझल ए, बुढिया मैंया ३५ बरखक आयु मे वैध्वय प्राप्त केने

छलैथ। हुनका तीन गोट पुत्र श्रीदेव, रामदेव आ विष्णुदेव छलखिन्ह। विष्णुदेव बाबाक पुत्र हरिदेव कक्का छलाह जिनका सँ हमरा बड्ड पटै छल। श्रीदेव बाबा खेती पथारी करै छलाह। रामदेव बाबा आ विष्णुदेव बाबा नौकरी करै छलाह आ आब रिटायर भ' कँ गामे मे रहै छलाह। बुढिया मैंयाक तीनू पुत्र आ तीनू पुतौह जीबते छलखिन्ह। हम नौकरी भेंटलाक बाद कखनो काल गाम जाइत छलौं त' बुढिया मैंया कहैथ जे भगवान हमरा उठबै मे किया देरी लगा रहल छैथ, हम चाहै छी जे तीनू पुत्रक सामने आँखि मुनी। पूरा आंगनक बच्चा बच्चा बुढिया मैंयाक चेला छल। हमहुँ छलौं। कियाक नै रहितौं, ओ निश्छल प्रेम, ओ देखभाल, सब गोटे कँ हुनका दिस आकर्षित करै छलै। सब पुतौह हुनका लग नतमस्तक रहैत छलीह। बुढिया मैंयाक हुकुमक अवहेलना कियो नै करैत छल। सबहक लेल हुनका मोन मे नीक भावना छलैन्हि। हम त' हुनकर जाउतक पोता छलौं, मुदा कहियो आन नै बूझलैथ। एहेन बुढिया मैंयाक पौत्र हरिदेव कक्का केर गप सँ हमरा बड्ड छगुनता लागल छल। हम सोचैत रही जे एखन चौबीसो घण्टा नै भेल हुनका मरल आ इ सब हुनका बिसरै मे लागि गेलाह। कियाक एना कियाक। ठीक छै जन्म मरण पर अपन बस ककरो नै छै, मुदा जे एतेक बर्ख धरि हमर धेआन राखलक, की हम ओकरा लेल किछो दिन, किछो बर्ख धरि नै सोची।

यैह सब सोचैत कखनो आँखि लागि गेल। एकाएक हंगामा सँ निन्न टूटल। जल्दी कोठली सँ बहरेलौं। आँगन मे बुढिया मैंयाक तीनू

पुतौह वाक् युद्ध मे लीन छलैथ। पता चलल जे बुढिया मैंयाक गहना गुडिया पर बहस होइत छल। श्रीदेव बाबाक कनियाँ एक दिस छलखिन्ह आ रामदेव बाबा आ विष्णुदेव बाबा केर कनियाँ एक दिस। बहसक विषय वस्तु छल एकटा अशर्फी। बुढिया मैंयाक पेटी मे १६ गोट अशर्फी छलै। तीनू पुतौह ५-५ टा हिस्सा लेलाक बाद सोलहम अशर्फी पर भीडल छलीह। पहिने कहा सुनी भेल आओर बाद मे व्यंग्य आ गारिक समायोजन सेहो भेल। हम जल्दी सँ आँगन सँ बाहर दलान पर चलि एलहुँ। ओतुक्का दृश्य कोनो नीक नै छल। बुढिया मैंयाक तीनू पुत्र हुनकर कोठलीक अधिकार एहि विषय पर धुरझार वाक् युद्ध मे लागल छलाह। हमरा इ सीन किछ किछ संसद आ विधान सभाक सीन जकाँ लागै छल। तीनू भाई अपन अपन कण्ठक उच्च स्वर प्रवाह सँ लाउडस्पीकर कैँ मात देने रहथिन्ह। एना लागै छल जे एकटा लहाश आइ खसिये पडतै। हम बड्ड डरि गेलौं आ बाबू कैँ फोन लगेलियेन्हि" -बाबूजी, एतय त' मारा मारीक भयंकर दृश्य उपस्थित भेल अछि। आब की हेतै। "बाबूजी कहलाह" -अहाँ नै किछ बाजब। यौ दियादी झगडा एहीना होइ छै। फेर मेल भ' जेतैन्हि। " मुदा हमरा नै रहल गेल आ झगडाक स्थान पर जा कैँ हम कहलियैन्हि जे बाबा अहाँ सब क्रिया-कर्म हुए दियौ, तकर बाद एहि मुद्दाक समाधान क' लेब। विष्णुदेव बाबा बजलैथ" -समाधान त' आइये हेतै। हमहुँ तैयारे छी। "हम बजलौं" -एना नै भ' सकै ए जे ओहि कोठली कैँ बुढिया मैंयाक स्मृति बनाओल जाइ। "एहि बेर

श्रीदेव बाबा बजलाह" -बडका ने एला स्मृति बनबाबै वाला। बुढिया की कोनो चीफ मिनिस्टर छलै आ की कतौक प्रेसीडेण्ट। "हम गोंगियाइत बजलौं" -मुदा बाबा ओ हमरा सभक एकटा स्तम्भ छलीह। मजबूत स्तम्भ। "रामदेव बाबा मुस्की दैत हमरा दिस ताकैत बजलाह" -इ छौंडा चारि लाईन बेसी पढि कें भसिया गेलै हौ। इ नै बूझै छै जे पुरना घर खसैत रहै छै आ नबका घर उठैत रहै छै। बुढिया बड़ड दिन राज केलकै नूनू, आब हमर सबहक राज भेल, हम सब फरिछा लेब। "तीनू गोटे हमरे पर भिड गेलाह। हम तुरत ओहिठाम सँ गाछी दिस निकलि गेलौं, जतय बुढिया मैंया कें जराओल गेल छलैन्हि। साराझपी नै भेल छल। ओहि स्थान पर छाउर छल, जतय हुनका जराओल गेल छल। हमरा लागल जेना बुढिया मैंया ओहि छाउर मे सँ निकलि हमरा सामने ठाढ भ' गेलीह आ कह' लागलीह" -बउआ अही माटि सँ एकदिन हम निकलल छलौं आ अही माटि मे फेर सँ चलि एलहुँ। अहाँ कथी लेल चिन्तित होइ छी। हमर स्मृति अहाँक मोन मे अछि, सैह हमर पैघ स्मृति अछि। जखन पुरना घर खसै छै ने, त' ओकर मलबा एहिना कात क' देल जाइ छै। ओहि जगह पर नबका घर बनाओल जाइत अछि। हम पुरान घर छलहुँ, खसि परलौं, अहाँ सब नब घर छी, जाउ उठै जाउ आ नाम करू। एहि सँ हमरो आत्मा तृप्त रहत। बिसरि गेलौं, बच्चा मे अहाँ सब कें घुआँ मुआँ खेलबैत छलौं त' की कहै छलौं नब घर उठै, पुरान घर खसै। "हमरा अपन नेनपनक खेल मोन पडय लागल। बुढिया मैंया

ISSN 2229-547X VIDEHA

अपन ठेहुँन पर चढा कें घुआँ मुआँ खेलबै छलीह। की इ संसार एकटा घुआँ मुआँक खेल थीक। एहि मे एहिना पुरना घर खसा कें बिसरि देल जाइ ए आ नबका घर सभ अपन चमक देखबैत रहै ए। हम ओहिठाम सँ सोझे बाजार दिस विदा भ' गेलौं इ बडबडाईत जे नब घर उठै, पुरान घर खसै।

२

दुर्गानंद मण्डल

२ टा विहनि कथा

१

पोस्टमार्टम

रामेश्वरबाबू गामक लब्धप्रतिष्ठित व्यक्ति, सभ तरहेँ सुखी-समपन्न, कथुक कमी नै। कनियाँ गामक प्राइमरी स्कूलमे शिक्षिका। छठम बेतन भेने दरमोहो बढ़ियाँ। अपने एकटा उच्च विद्यालयमे प्रधानाध्यापक पदपर वर्तमान कार्यरत। कुल मिला कऽ मासिक आमदनी लाखोसँ ऊपर! लहना-पातीसँ आमदनी अलगे। स्वयं जतए-कतौ रहलाह। प्रधानध्यापक रहबाक कारणेँ औटी आमदनीक जोगार सदिखन लगौने रहैत छलाह। आन-आन काज करबाक लेल आरो शिक्षकगण। मुदा आरम-फारम भर्ती-काल शुल्कादिसँ उपरी आदमनी अपनहि जेबीमे। सहयोगी शिक्षक आ छात्रो सभसँ बननि नै। हप्ता दस दिनपर किछु-ने-किछु रमन-चमन होइते रहैत छलनि। तखने हुनकर मन ठीक-ठाक रहैत छलनि। कएक बेर कौमनरूम, शौचालय, बोड आदिक लेल तोड़फोर भेल, मुदा हुनका लेल धैनसन! एक दिनक समए छल। समैसँ घंटी लागल, प्रार्थना भेल, शिक्षक लोकनि अपन-अपन वर्गमे गेला।

रामेश्वरबाबूक सेहो कक्षा दसमे वर्ग छलनि। बच्चा सबहक आग्रहोपर वर्ग दसमे जेबाक लेल तैयार नै भेलाह तँ सभ बच्चा वर्गसँ निकलि हिनका ऑफिससँ खीचि बाहर आनि कहा-सुनीक बाद, लाते-मुक्के गत्र-गत्र फोड़ि देलकनि। आब कहबी परि..... 'अपने करनी, गै मुसहरनी' भऽ गेलनि।

प्रात भने गारजियन सभ बजाओल गेलाह। स्कूलपर बैसार भेल। मनधनबाबा मास्सैबसँ पुछलखिन- ‘‘मास्सैब, किएक हमरा लोकनिकेँ बैसौलौं अछि?’’

रामेश्वरबाबू सभ बात कहलकनि। मनधनबाबा आँखि मुनने निचेनसँ सुनि उत्तर देलकनि- ‘‘अहाँ अपने गुरू छी बच्चासँ समाज धरि शिक्षा देबक अधिकारी छी ओहो मात्र समाजे नहि सरकारोक नजरिमे। तखन....?’’

२

प्रदूषण

आजुक भैतिकवादी युगमे विभिन्न प्रकारक संसाधनादिक उपभोगसँ मानव जीवन त्रस्त अइ। कतौ मिनटो भरिक लेल चैन नै। बढ़ैत जनसंख्या, गाड़ी-घोड़ा, रिक्शा-तांगा, जर-जनरेटरक आवाजसँ कान बहीर! शांतिपूर्ण ढंगसँ कम मीठ आवाजमे बाजब, स्वच्छ हवा लेब कठिन! फलस्वरूप नाना प्रकारक रोग-व्याधिक साम्राज्य पसरल अछि। घरे-घर नेना-भुटका सभ कोनो-ने-कोनो प्रकारक रोग-व्याधिसँ ग्रसित अछि। तात्पर्य, सुख लेल एतेक संसाधन होइतो कियो सुख-चैनसँ जीब नै रहल छथि।

दोसर दिस सहोदर होइतो सहोदराक संग भैयारी नै निभा दुश्मनी राखब, प्रेमसँ नै रहि झग्गर-झाटीमे फसि जाएब। ने सुखसँ अपने रहब आ ने दोसरकेँ रहए देब।

ISSN 2229-547X VIDEHA

रोगहु पुछलक मोल्हुसँ- ''भाय, तों तँ पढ़ल लिखल लोक छह। एकटा बात कहह औझका मनुखमे एतेक अलगाउ किएक?''

मोल्हु बाजलाह- ''से नै बुझहक, ऐ सबहक जड़ि बाहरी प्रदूषण नै, अपितु मनुखक भितरी प्रदूषण थिक।''

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।



डॉ॰ शशिधर कुमर, एम॰डी॰(आयु॰) कायचिकित्सा, कॉलेज ऑफ आयुर्वेद एण्ड रिसर्च सेण्टर, निगडी प्राधिकरण, पूणा (महाराष्ट्र) ४११०४४

पोथी समीक्षा : गामक जिनगी

हम कोनो व्यावसायिक आलोचक, समालोचक वा समीक्षक नञि छी, पर मैथिली पढ़ब लिखब नेनपने सँ नीक लगैत छल तेँ आइ एक गोट पोथीक समीक्षा लीखि रहल छी । पोथी थिक **श्री जगदीश प्रसाद मण्डल** जी रचित कथा संग्रह **"गामक जिनगी"** - ओना कोनो पोथीक ई हमर पहिलहि समीक्षा छी । एहि पोथीक समिक्षा पहिनहु किछु जगह ब्लॉग वा पत्रिका आदि मे प्रकाशित भऽ चुकल अछि जे पढ़ि हम स्वयं पुर्ण रूपेण संतुष्ट नञि भऽ सकलहुँ आ पोथीक पुनर्समिक्षा करबाक इच्छा भेल । बहुधा देखल जाइत अछि कि कथा संग्रहक नाँव कोनो एक गोट महत्त्वपुर्ण कथा वा घटना वा अंश पर राखि देल जाइत अछि, पर एहि बेर से नहि । एहि संग्रह मे १९ गोट कथाक समावेश भेल अछि आ संग्रहक हरेक कथा स्वतंत्र रूपेँ व समग्र रूपेँ संग्रहक नाँव केँ प्रतिबिम्बित करैछ । हर कथा मे गामक जिनगीक एक अलगहि स्वरुप देखबा मे अबैछ ।

आमुख मे श्री सुभाष चन्द्र यादव जी बहुत सटीक लिखने छथि - "एहि संग्रहक कथा सभ मे औपन्यासिक विस्तार अछि । वर्त्तमान समए मे प्रचलित आ मान्य कथा सँ ई कथा सभ भिन्न अछि । हर कथा घटना बहुलता आ ऋजु सँ

युक्त अछि ।" पर एहि औपन्यासिक विस्तार आ ऋजु सँ युक्त होयबाक बादो हरेक कथा रुचिकर, लयबद्ध आ सुसम्बद्ध अछि । आधुनिक टी॰भी॰ धारावाहिकक सदृश भँसियाइत नञि अछि, दिशाहीन सन नञि बूझि पड़ैत अछि । कथा केर प्रवाह दिग्भ्रमित नञि होइत अछि । कथाक हर घटना अप्पन ऋजु वा वक्रताक बावजूदो कथाक मुख्य भावनाक वा विषयवस्तुक अनुपूरक व सम्वाहक अछि । जेना कि “डाक्टर हेमन्त” नामक कथा मे गामक जमीनक दियादी बँटवाड़ा, सरकारी नोकरीक झंझटि आ क्लिनिकक झंझटि आ बाढ़िक संघर्ष चित्रित अछि पर तइयो कथा मे कोनो विरोधाभास नञि अबैछ, कथा एक लय मे शान्त अखण्ड प्रवाह जेना आगू बढ़ैत रहैत अछि ।

रौदी दाही मिथिलाक सभ दिन सँ प्रमुख समस्या तेँ गामक जिनगी मे ओ समाविष्ट नञि हो से कोना । कथा संग्रहक आरम्भ “भैँटक लावा” आ “बिसाँढ़” नामक कथा सभ सँ होइत अछि जाहि मे क्रमशः दाही (बाढ़ि) आ रौदी (अकाल) केर बहुतहि सटीक व सजीव वर्णन भेटैछ । ओना मिथिलाक अभिन्न अंग होयबाक कारणेँ एहि बिभीषिका सभक विभिन्न रूपक दर्शन आनो कथा सभ मे भेटैछ पर हर बेर नऽव स्वरूप मे, पुनरुक्ति कतहु नहि । 1967 ई॰ केर अकाल मे भारतक तत्कालीन प्रधानमण्त्री केँ देखाओल गेल छल जे कोना मुसहर लोकनि बिसाँढ़ खा कऽ अपन जीवनक रक्षा कएलन्हि तकरे

अधार बना कऽ ''बिसाँढ़' नामक कथा लिखल गेल अछि । यद्यपि ई एहि प्रकारक कथा मैथिली साहित्य मे बहुत पहिनहि अयबाक चाहैत छल पर नहि आबि सकल, एखन आयल अछि मैथिली साहित्यक धरोहड़ि कथा बनत ।

जिनगी वास्तव मे एकटा संघर्ष थिक, पर जे हिम्मत नञि हारैत अछि, परिस्थितिक सामना करैत अछि आ आगाँ बढ़ैत अछि सएह जीतैत अछि । ई एहि संग्रहक पुर्वार्धक हरेक कथाक मूल मण्त्र अछि तथापि पढ़बा मे उपदेशात्मक कथा सनि बोझिल कथमपि नञि बूझि पड़त । हर कथा मैथिल समाजक विभिन्न सामाजिक, आर्थिक वा व्यावसायिक वर्गक जीवन संघर्ष कैं सजीव रूपैं चित्रित करैछ चाहे ओ बोनिहारिन ''मरनी'' हो, ठेलाबला हो, चूनवाली हो, दू पाइ कमयबाक इच्छा सँ दिल्ली जायबला ''फेकुआ' हो, पीरारक फऽड़ बेचि गुजर कएनिहार ''पिचकुन आ धनिया'' हो वा जीविकाक लेल संघर्षरत ''शोभाकान्त व उमाकान्त' हो । चाहे ओ जीवनक उत्तरार्ध मे गाम आयल ''श्रीकान्त आ मुकुन्द'' होथि, नऽव युगक जीवनक अभिलाषी ''कुसुमलाल'' हो, माए बाप कैं एकसरि छोड़ि अमेरिका बसनिहार ''रघुनाथ'' हो अथवा अप्पन निजि जिनगी आ ऑफिसक बीच ओझड़ायल ''डॉक्टर हेमन्त'' हो ।

किनको मोन मे भऽ सकैत छन्हि जे जिनगी तऽ ओहिना संघर्ष थिक - ओहि मे ई संघर्षक खिस्सा पिहानी के पढ़त ? पर से नहि, लेखक कें मनोविज्ञान पर एतेक जबर्दस्त पकड़ि छन्हि जे ओ जिनगीक संघर्षक एहि कथा सभ कें सेहो अत्यन्त सहज ओ रुचिकर ढंग सँ प्रस्तुत करबा मे सक्षम भेलाह अछि । कोनो कथा कत्तहु निन्नक गोली सनि नञि बुझना जायत । पात्र सभक नाँव गाँव भले जे हो पर कथा पढ़बाक काल हर वर्गक पाठक लोकनि कें कथा अपनहि वा अपनहि कोनो सर सम्बन्धीक बुझि पड़तन्हि ।

बहुतेक कथा जिनगीक संघर्ष वा दुख सँ प्रारम्भ होइत अछि पर सुखान्त अछि ई पाठक कें एक मनःस्फुर्ति दैछ । किछु कथा किछु वर्ग व ओहि वर्ग सँ जुड़ल व्यवसायक सैकड़ो वर्षक उतार चढ़ाव व संघर्ष कें चित्रित करैछ, जेना कि कुम्हार (हारि जीत) , चूनवाली आदि । वास्तव मे ठेलावला, रिक्सावला, चूनवाली, बोनिहारिन, कुम्हार आदि सभ तऽ अपनहि मैथिल समाजक अंग छथि पर मैथिली साहित्य शायदे कखनहु अपन एहि अभिन्न अंग सभक सुधि लेलक आ तेँ एहि वर्गक लोक सभ अपना कें मिथिला - मैथिली सँ पृथक बुझैत रहलाह । ई कथा संग्रह हुनिका लोकनिक मन मे विश्वास आ ढाढ़स दैछ कि ओहो सभ एहि मैथिल समाजक अविभाज्य अंग छथि । यद्यपि पुर्व मे किछु साहित्यकार लोकनि एहि आर्थिक वा

सामाजिक रूप सँ पिछड़ल , संघर्षरत समुदाय पर लिखबाक प्रयास कयलन्हि अछि पर या तऽ ओ कृत्रिम बुझाइत अछि अथवा यथार्थपरक रहितहु पाठकक लेल ओ बोझिल सन बुझना जाइछ । एहि विषय सभ पर यथार्थपरक नीक व रुचिकर कथा सभक मैथिली साहित्य मे बहुधा अभाव रहल अछि । हमरा विचारेँ एहि कथा संग्रह मे ई दोष नञि कथा संग्रह केर हरेक कथा विभिन्न समाजिक वा आर्थिक वर्गक जीवन संघर्ष कँ चित्रित तऽ करैछ पर संगहि संग पढ़बा मे रुचिकर सेहो लगैछ । एकर अतिरिक्त किछु कथा जेना कि "अनेरुआ बेटा" आ "कामिनी" - अन्त मे एक गोट प्रश्न छोड़ि समाप्त होइत अछि । कथा लेखनक ई शैली मैथिलीक प्रशिद्ध कथाकार स्व॰ राजकमल चौधरीजीक कथालेखनक शैली सँ साम्य रखैत अछि जखन कि आन कथा किछु हद तक स्व॰ हरिमोहन झाजीक कथाशैली सँ साम्य प्रदर्शित करैछ । पर शैली मे एहि प्रकारक साम्य कथमपि कोनो कथाक मौलिकता कँ प्रभावित नञि करैछ ।

किछु लोकनिक कहब छन्हि जे लेखकक कथा संघर्षपरक छन्हि , सौन्दर्यपरक नहि । पर हमरा जनैत लेखक जिनगीक संघर्षक संग संग जिनगीक सौन्दर्यक सफल ओ सकारात्मक चित्रण कयलन्हि अछि । लेखकक सौन्दर्यबोध मात्र दैहिक नञि भऽ कऽ बहुत व्यापक अछि आ कायिक सौन्दर्यक

ISSN 2229-547X VIDEHA

अतिरिक्त जगह जगह पर मानसिक ओ प्राकृतिक सौन्दर्यक अजगुत चित्रण भेटैछ ।

लेखक जहिना मैथिल समाजक विभिन्न सामाजिक, आर्थिक वा व्यावसायिक रूपेण दलित (पिछड़ल) वर्गक जीवन संघर्ष कें अपन लेखनी मे उताड़बा मे सफल रहलाह अछि तहिना स्त्रिगणक मनोवैज्ञानिक चित्रण करबा मे सेहो । हरेक वयसक व वर्गक स्त्रीक मनोदशाक सजीव चित्रण एहि कथा संग्रह मे यत्र तत्र भड़ल पड़ल अछि । चाहे ओ भैंटक लावा मे “जिबछी” हो, बिसाँढ़ मे “सुगिया” हो, पीरारक फऽड़ बेचनिहारि “धनिया” हो, फेकुआक माए “रामसुनरि” होथि, पजेबा फोड़निहारि वृद्धा “मरनी” होथि वा मरनीक संग लबलब कएनिहारि स्वच्छन्द बाला “सुगिया” । चाहे पति सँ दू घड़ी बात करबाक लेल तरसैत “रागिनी” हो, चून बेचनिहारि “मखनी”, ओकर पुतोहु “फुलिया” वा ओकर पोती “कबुतरी” हो, मसोमात “लुखिया” होथि, आधुनिक नऽव परिवेशक बाला “सुनएना” हो अथवा कोशी कछेड़क निश्छल बाला “सुलोचना” हो ।

एकर अतिरिक्त लेखक किछु आनो सामाजिक समस्या सभ दिशि इशारा कएलन्हि अछि यथा स्त्री भ्रुण हत्या (ठेलाबला), शराबक समस्या व नऽव जीवन शैलीक लापरवाह अनुकरण (भैयारी), नऽव जीवन शैलीक महत्त्वाकांक्षा आ टूटैत

सम्बन्ध (बहीन, पछताबा व कामिनी), प्रतिभा पलायन (पछताबा), साम्प्रदायिक हिंसा (बहीन) आ रुपैय्याक जोड़ैँ बेमेल बियाह (कामिनी) आदि ।

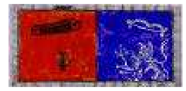
पोथीक भाषा शैली सर्वसामान्यक विशुद्ध मानक मैथिली थिक । ओना कतहु कतहु क्रिया आदिक प्रयोग मे मानक मैथिली सँ थोड़ेक फड़ाक बुझि पड़ैत अछि (यथा "लागल" केर स्थान पर "लगल") परञ्च ओ कथाक पात्र आ परिवेशक अनुरूपहि थिक तेँ ओ मानक मैथिली सँ पृथक नञि थिक । भाषा विन्यास बहुतहि सहज व स्वभाविक अछि तेँ बुझबा मे दुरूह नञि । "किछु" केर जगह हमेशा "कुछ" वा "कछु" केर प्रयोग भेल अछि जे बहुशः कथानकक अनुरूप सही अछि पर कतहु - कतहु मानक मैथिली मे भऽ रहल सम्वाद मे अचानक "कुछ" या "अइठीन" केर प्रवेश अखरैत अछि । एक्कहि शब्द, पात्र व परिवेशक अनुसारैँ साहित्य मे एक स्थान पर मानक भऽ सकैछ तऽ दोसर स्थान पर नञि यथा "कुछ" या "अइठीन" जँ कथा मे कोनो गामक सर्वसामान्य लोकक वार्त्तालाप थिक तऽ ओहि ठाम मातृभाषा होयबाक कारणेँ ओ मानक मानल जायत, पर ओएह शब्द जँ कथा मे कोनो मैथिलीक विद्वान बजैत अछि वा आन लोक - जकर मातृभाषा मैथिली नञि थिक - से बजैत अछि तऽ ओहि ठाम ओ मानक सँ विचलित बूझल जायत । पोथी मे शब्दक

ISSN 2229-547X VIDEHA

वैविध्य आ खाँटी मैथिलीक विलोपित होइत शब्द सभक प्रयोग स्व॰ हरिमोहन झा जीक रचना सभक याद करा दैत अछि । खाँटी मैथिलीक विलोपित होइत शब्द सभक ई कथा सभ एक अनमोल संग्रह थिक । इतिहासक किछु एहनो बातक इशारा एहि कथा सभ मे भेटैछ जे शायद एखनुका पीढ़ीक धिया पुता कें नञि बूझल होन्हि यथा चून पहिने डोका सँ बनैत छल (चूनवाली) , कोना छतौनी सन सन मैथिल क्षेत्र मे अपनहि गलती सँ आन भाषा -भाषीक आधिपत्य भेल (बोनिहारिन मरनी) आदि ।

अन्त मे हम श्री गजेन्द्र जीक पाँती (पोथीक पश्च मुखपृष्ठ पर देल) कें दोहड़ाबए चाहब जे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जी केर कथा सभ मैथिली कथा धाराक यात्रा कें एकभगाह होयबा सँ बचा लैत अछि । एहि संग्रहक सभटा कथा उत्कृष्ट अछि, मैथिली साहित्यक रिक्त स्थानक पुर्ति करैत अछि आ मैथिली साहित्यक पुनर्जागरणक प्रमाण उपलब्ध करबैत अछि ।

ओना तऽ कोनो पोथी कें पाठ्यक्रम मे शामिल करबाक की प्रक्रिया छै से हमरा नञि बूझल पर अपन विषयवस्तु, मौलिकता आ भाषाविन्यासक आधार पर एहि कथा सभ कें पाठ्यक्रम मे सम्मिलित करबाक चाही । केवल एक आध कथा कें नहि अपितु सम्पुर्ण कथा संग्रह स्नातक वा उच्चतर मैथिलीक पाठ्यक्रम मे शामिल करबा जोग अछि । बहुत सम्भव अछि जे

हमर ई बात आइ अतिशयोक्ति लागए पर भविष्य मे ई जरूर मैथिली पाठ्यक्रम मे अपन स्थान बनाओत ।

पोथीक नाँव   गामक जिनगी

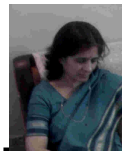
लेखक   श्री जगदीश प्रसाद मण्डल

प्रकाशक   श्रुति प्रकाशन, 8/12, न्यू राजेन्द्र नगर, दिल्ली - 110008

दाम (अजिल्द / साधारण संस्करण) - भारतीय रु॰ 200/ मात्र, वा US $ 60

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

३. पद्य

३.१.१.  **कामिनी कामायनी- द्रौपदी** २.  **भावना** नवीन- गजल

*३.२.*१.  ओमप्रकाश झा- सातटा गजल २.  जगदीश प्रसाद मण्डल- कविता- संघर्ष

*३.३.*१.  जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' २.  **मिहिर झा** ३.  जगदानंद झा 'मनु'

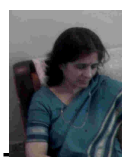
३.४.१.**शान्तिलक्ष्मी चौधरी** २रवि मिश्रा'भारद्वाज'

३.५.१.अनिल मल्लिक २.झा हेमन्त बापी

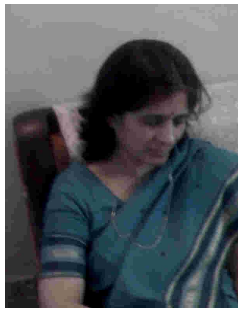
३.६.**निशांत झा**

*३.७.*१.डॉ॰ शशिधर कुमर २ नवीन कुमार "आशा"

*३.८.*१ **जवाहर लाल कश्यप-** काटि लिय कोन दुनू पॉखि २. नवीन ठाकुर

१.**कामिनी कामायनी- द्रौपदी** २.**भावना** नवीन-गजल

१

**कामिनी कामायनी**

द्रौपदी

सखा कहू रहस्य जिनगीक

हमरा किछु नै सुझैए

आगाँ आगाँ दू डेग फराक

हतभाग्य हमर चलैए ।

संकट बाधा विध्न बहुल

धेने पछोर किए हम्मर

सुख चैनसँ भरल जिनगी

लिखल किएक नहि गिरधर

जहिना चलल जनमक खिस्सा

तहिना सकल यौवनक

कहै लेल रानी, महल नसीब नै

देखल भटकि कऽ वनमे

सूरज अहिना उगथि पुरूबमे

पच्छिम अस्त होबैत छल ।

दारूण दुख विपदाक संग कहुना

दिवस हमर कटै छल ।

भोर साँझ नित देव पितरक

हमहूँ ध्यान करैत छी ।

मानव तन एक बेर खसैत अछि

हम नित रोज मरै छी ।

रूप गुणसँ सजल बहादुर

हमरे पति कहाबथि

बाट बाट पर खतरा जिनका

हरदम घेरय आबै ।

कहू सखा हम कोना कऽ जिबतौं

जौं संग अहाँ नै दैतौं

मनक तार तरंगित करि कऽ

बुद्वि बल नहि भरितौं ।

मोन पडै छै एखनो ओ दिन

रोम रोम सिहरैत अछि ।

कोना द्युतमे दाव लगा कऽ

हमरो सभ हारैत अछि ।

आएल जखन भवनमे हम्मर

ISSN 2229-547X VIDEHA

दूत सुनाबए खिस्सा

कहने छलहुँ तमकि कऽ हमहूँ

हारल के कोन हिस्सा

हारि चुकल जे अपने पहिनहि

हमरा की दाँव लगाओत

पूछू जा कए गुरूवृन्द सँ

ई अधिकार के पाओत ।

न्यायक गप सुनि दुर्योधन

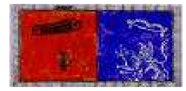
कड़कि गरजि कऽ बाजल

झोंट पकड़ि दासी ला जल्दी

जौं नै होइ छै आएल

अन्तःपुर सँ दरबार धरि

सौ जोजनक छल दूरी

मुदा दूत राजा के आएल

देखबैत किछु मजबूरी

भरल सभामे जेठ श्रेष्ठ लग

कऽल जोरि कऽ कानैत

कातर दृष्टि ताकि रहल अछि

गुरूजनसँ किछु मांगैत।

विदुर धृतक वाक् बन्न छल

पांडव मूँह लटकौने ।

कहै बहुरिया जे प्रजा गण

तिनको किछु नै फुरैलन्हि।

२

**भावना** नवीन

गजल

अहाँक मुस्की हमरा नीक लागल
लजा गेलों अहाँ हमरा नीक लागल

जाने कहिया अहाँसँ हेतीऐ मिलनाइ
अचक्के एनाइ अहाँक हमरा नीक लागल

रही तँ हमरा लेल अहाँ अनचिन्हार
अहाँसँ बतियेनाइ हमरा नीक लागल

चलि गेलौं अहाँ "भावना" मे बहि कऽहमर
अहाँक यादिमे कननाइ हमरा नीक लागल

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१.ओमप्रकाश झा- सातटा गजल २.जगदीश प्रसाद मण्डल- कविता- संघर्ष

१

संघर्ष

ओमप्रकाश झा

गजल

१

सब कहै ए पंचतत्व मे आइ अहाँ विलीन भ' गेलौं।

हम निशब्द भेल ठाढ छी, देखियौ वाणी-हीन भ' गेलौं।

नब वस्त्र पहीरि अहाँ कोन जतरा पर निकललौं,

बाट जोहैत छी एखनो, अपस्याँत राति-दिन भ' गेलौं।

अंगुरी अहाँक पकडि बाध-बोन हम घूमैत छलौं,

आब कहाँ ओ अंगुरी, हम बाट नापि अमीन भ' गेलौं।

जेनाई छल निश्चित, यौ दिन तकेने अजुके छलियै,

बंधन कोना कैँ तोडलियै, कानैत आब बीन भ' गेलौं।

चिंतित "ओम"क तन्नुक कन्हा आब कोना बोझ उठेतै,

गेल आब अहाँक छाहरि, हम छत-विहीन भ' गेलौं।

(१३.१२.२०११ केर राति हमर छोटका बाबा(हमर पितामहक अनुज) 88 बरखक अवस्था मे स्वर्गवासी भ' गेलाह। हुनकर स्मृति मे हम अपन भावांजलि ऐ गजलक माध्यमे प्रकट भेल। दिवंगत आत्माक शांति भेटैन्हि, येह परमात्मा सँ प्रार्थना अछि।

२

अपने खोज मे अपन मोन हम धुनैत रहै छी।

छिडियैल मोती आत्माक सदिखन चुनैत रहै छी।

आनक की बनब, एखन धरि अपनहुँ नै भेलौं,

मोन मारि कें सब गप पर आँखि मुनैत रहै छी।

कहियो भेंटबे करतै आत्माक गीत एहि प्राण मे,

छाउर भेल जिनगी कें यैह सोचि खुनैत रहै छी।

झाँपै लेल भसियैल जिनगीक टूटल धरातल,

सपनाक नबका टाट भरि दिन बुनैत रहै छी।

बूझि सोहर-समदाउन जिनगीक सभ गीत कें,

मोन-मगन भेल अपने मे, हम सुनैत रहै छी।

---------------- वर्ण १९ ----------------

३

हेतै की आब बूझाय नै एहि देश मे।

देश फँसल अछि घोटाला आ केसमे।

कोना कँ बचायब आब घर चोरी सँ,

फिरै छै चोर सगरो साधुक भेष मे।

जरै छै गाम, तखनो बंसी बजाबै ओ,

बूझै नै लिखल देबालक सनेस मे।

शिकारी मनुक्खक बनल छै मनुक्खे,

गोंतै छै सब बाट आ घरो कलेश मे।

बेईमानीक पताका फहरै आकाश,

पाकै ईमान आब पसरल द्वेष मे।

---------- वर्ण १४ ------------

४

हम त' केने बहाना राम केर, अहींक नाम लैत छी।

बनि गेलौं हम चर्चा गाम केर, अहींक नाम लैत छी।

रखने छी करेज सँ सटा कँ यादि अहाँक सदिखन,

हमरा काज की ताम-झाम केर, अहींक नाम लैत छी।

ताकि दितिये कनी नजरि सँ मुस्कीया कँ जे एक दिन,

काज पडितै नै कोनो जाम केर, अहींक नाम लैत छी।

हमर काशी, मथुरा, काबा सब अहीं मे अछि बसल,

जतरा भ' गेल चारू धाम केर, अहींक नाम लैत छी।

रोकि सकतै नै जमाना इ मोन सँ मोनक मिलनाई,

मोन कहाँ छै कोनो लगाम केर, अहींक नाम लैत छी।

-------------------- वर्ण २० -------------------

५

देखि हुनकर असल रंग, भक हमर टूटि गेल।

पोखरि मे सब नंग-धडंग, भक हमर टूटि गेल।

सभ आँखिक नोर सुखायल, आगि एहेन छै लागल,

देखि कँ कानैत यमुना-गंग, भक हमर टूटि गेल।

बूझलौं अपना कँ कपरगर, एकटा संगी भेंटल,

छोडि देलक ओ जखन संग, भक हमर टूटि गेल।

कते बियोंत लगाबै छलौं अहाँ कँ अंग लगाबै लेल,

जखन लगेलौं अंग सँ अंग, भक हमर टूटि गेल।

मस्तीक नाव भसिया गेल छै समयक ऐ प्रवाह मे,

छलौं यौ हमहुँ मस्त-मलंग, भक हमर टूटि गेल।

---------------- वर्ण २० -------------------

६

हमरा सँ की नै करेलक सिहन्ता हमर।

सदिखन खाली कनेलक सिहन्ता हमर।

अहाँ भेंटतौं, से हमर कहाँ इ भाग्य छलै,

मुदा अहीं दिस बढेलक सिहन्ता हमर।

सुरूजक आगि सँ बचू, यैह जमाना कहै,

बाट सुरूजक धरेलक सिहन्ता हमर।

चान मुट्ठी मे बन्न कैल ककरो सँ नै भेलै,

हमरा यैह नै सिखेलक सिहन्ता हमर।

"ओम"क सिहन्ता जेना कतौ मरि-हरि गेलै,

सबटा सिहन्ता जरेलक सिहन्ता हमर।

--------------- वर्ण १६ ---------------

७

आउ मजा लिय' शुरू फेर खेल भ' गेलै।

देखू खेलनिहार सब मे मेल भ' गेलै।

कोनो नियम-निष्ठाक जरूरति नै एत',

कोनो दोग सँ ढुकु, ठेलम-ठेल भ' गेलै।

जकरा किछ लागल नै हाथ, हल्ला करै,

जे लेलक मजा ओकरा त' जेल भ' गेलै।

टिकट बाँटै आ काटै केर कबड्डी शुरू,

चुनाव भेलै नै जेना कोनो रेल भ' गेलै।

जीतला पर सुन्नर कोठा-गाडी भेंटत,

बाटक इ धूरि जनताक लेल भ' गेलै।

-------------- वर्ण १५ ------------

२

जगदीश प्रसाद मण्डल

संघर्ष

पएर पंज पबिते पबैत

पैजनि चाह करैए।

तहिना चाहि चेत कुंड

धारण जिनगी करैए।

काया-माया संग सदए

मिलि संग जिनगी पबैए

शिव सदृश्य सीमा सिरैज

राति-दिन रूप धड़ैए।

बीच कृष्ण घन-श्याम जना

महाभारत द्वापर रचैए।

संग मिलि तहिना सदए

विपरीत दिशा धड़ैए।

एक कौरब एक पांडव बनि

शरीर-शरीरी खेल करैए।

गीता गाबि सम्हारि शास्त्र

लीला जिनगीक रचैए।

भरल हाथ एक, एक निहत्ता

उतड़ि भूमि वंश कुरूक्षेत्र।

हारि-जीत संगे सिरैज

संगे-संग रक्छो करैत।

निर्जीव दूध निकलि सजीव

आगि चढ़ि आरो निर्जीव बनैए।

कहि दही मटकुर सजि

दूध-दही कहबैए।

होइते ठाढ़ि बनिते दही

प्रेमी चाह करैए।

पाबि प्रेमी प्रेम पकड़ि

पपीहा नाच करैए।

पकड़ि संग संगी बना

मर्त सर्ग सज सजैए।

कहि-कहि जीवन-मरण

साँझ-भोर डहकैए।

अदय-अस्त नचिते-नचैत

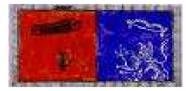
भू-भूलोक भुलबैए।

बरिस बादल गरैज-गरैज

मन मगन करबैए।

आशा-आस सटिते-सटैत

आँखि धार धारण करैए।

पकड़ि प्रेम पड़ि पएर

राहीक राह रचैए।

सीचि जल शीतल बन मन

चलए संग कहैए।

बिनु सिरक राही रचि

भवसागर टपए कहैए।

अजस्त्र धार भवसार सजल छै।

नाओं एक खाली पड़ल छै।

डेग-डेगी डेगिते डगै छै

डगमग-डगमग पएर करै छै।

डोर-डोर पकड़ि डारि

बनि-बनि सुत घिचै छै।

ISSN 2229-547X VIDEHA

बनल सूत राही जेना

तहिना सगरो पसरल छै।

पिछड़ि-पिछड़ि दीन-हीन

रूप सजि सटै छै।

कियो सटए झूलैत दहिना

वामा कियो सटै छै।

कियो सटै कोनो कोनचर

कियो बीचे-बीच उड़ै छै।

सदएसँ होइते एलैए

होइते रहतै आगूओ दिन।

अन्हार-इजोत बीच सदए

दिन-राति बीच दुर्दिन

दिन-दुर्दिन बनिते बनैत

अकास बीच उड़ैए।

सुदिन-कुदिन सीमा पकड़ि

निहाड़ि नजरि नचबैए।

डिम सतमी भगवती जेना

सिरजए सदैत ज्योति शक्तिक।

राति-महाराति बैस बीच

दर्शन दिशा दैत भक्तिक।

शक्त-शक्तिक संग सदए

जिनगीक होइत संघर्ष।

सीमा बीच जखन अबैत

मचबए लगैत दुर-घर्ष।

घर्ष-दुरघर्ष बीच जखन

ISSN 2229-547X VIDEHA

जिनगी करए रस्सा-कस्सी।

बीच समुद्र सिरैज मथान

पकड़ए लगैत अपन-अपन मस्सी।

आँखि मिचैनी खेल अजीब

कखन सुर-असुर बनैत।

असुर-सुर बनिते, बनि

कर्म-अकर्म एकबट्ट करैत।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' २.**मिहिर झा ३.**जगदानंद झा 'मनु'

१

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

गजल

१

टूटल छी तें गजल कहै छी

भूखल छी तें गजल कहै छी.

ISSN 2229-547X VIDEHA

ऑफिस-ऑफिस हमहूं गेलहुं
लूटल छी तें गजल कहै छी.

घरमे बैसल दुनिया देखू
गूगल छी तें गजल कहै छी.

खापड़ि सं परिचय अछि हमरो
भूजल छी तें गजल कहै छी.

उखड़ि आओर समाठ जनैए
कूटल छी तें गजल कहै छी.

यात्रीजीक अहां 'बलचनमा'
सूतल छी तें गजल कहै छी.

हम 'खट्टर कक्का' केर तबला
फूटल छी तें गजल कहै छी.

२

नदी छोड़ि क' नहरमे एलहुं

गाम छोडि क’ शहरमे एलहुं.

कहलक लोक शराब ने पीबू
हम नहि ककरहु कहलमे एलहुं.

तीन साल धरि रहलहुं मंत्री
चारिम साल जहलमे एलहुं.

जय हो जय हो के बी सी जी
खोपड़ी छोड़ि महलमे एलहुं.

बाट तकैत छलहुं फगुआमे
आखिर जूड़शीतलमे एलहुं.

आइ राति भरि करू तपस्या
आइ कथी ले’ सहलमे एलहुं.

रूसल रहलहुं अहां कते दिन
आइ हमर एहि गजलमे एलहुं.

२

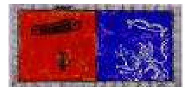
**मिहिर झा**

जमाना आब नहि सोहाइये
अपना से गॅप करै मे डर लगैये
विचार सब मोन से निकलि मुह मे अछि
ओकरा मुह से बजै मे डर लगैये ।

जमाना छल खूब ठिथीयायत छलहु
सभ से खूब गपियायत छलहु
मोन रहैत छल प्रसन्न
अनको प्रसन्न रखैत छलहु ।

धीरे धीरे चुप्पी आयल
अपन लोक सब छिरियाल
बजेलो पर आब कोई नई अबेयै
जमाना आब नहि सोहाइये ।

३


जगदानंद झा 'मनु',

पिता- श्री राज कुमार झा, जन्म स्थान आ पैत्रिक गाम : हरिपुर डिहटोल ,जिला मधुबनी, शिक्षा :प्राथमिक -ग्राम हरिपुर डिहटोल मे, माध्यमिक आ उच्च माध्यमिक -सी बी एस ई, दिल्ली, स्नातक -देशबंधु कालेज ,दिल्ली बिश्वविद्यालय

गजल

भाइ आब हमहूँ लिखब अपन फुटल कपार पर
जेना इ भात-दालि तीमन ओकर उपर अचार पर

सोन सनक घर-आँगन,स्वर्ग सन हमर परिवार
छोड़ि एलहुँ देस अपन दू-चारि टकाक बेपार पर

कनियों आटा नहि एगो जाँता नहि करछु कराही नहि
नून-मिरचाइ आनि लेलहुँ सभटा पैंच-उधार पर

चिन्हलक ने केओ ने जानलक टुग्गर बनि रहलहुँ
गेलहुँ इ अपन माटि-पानि छोड़ि दोसरक द्वार पर

हम कमेलहुँ धन ओ भरि लेलक हमर घर खालिए
आब बैसल हम कनै छी अपन फुटल कपार पर

२

सुगँधसँ सराबोर सुगन्धित सुंदर सजनी सुगंधा

हमर ह्रदय ओ जा बसली अदभुत सुंदरी सुगंधा

जिनक सुगंध चहुदिस नभ-थल कए कण-कण मे

रोम-रोम मे हमर ओ बसल छथि प्राणेश्वरी सुगंधा

सुर कए श्याम जेना राधाकेँ नटवर मुरली वजैया

श्वाँस-श्वास मे ओ छथि समायल हमर सजनी सुगंधा

जिनक नशा मे ई रचलौंहेँ हम सुर-सुगन्धित सुगंधा

ओ छथि हमर हृदयक रानी प्राण सँ प्यारी सुगंधा

ध्यानमे मानमे जिनकर आनमे अर्पित अछि 'सुगंधा'

भूल हुअए त मानियो जाएब 'मनु' मनके रानी सुगंधा

३

किनका कहियौन्ह पतियौता कए

हमर मोनक व्यथा बुझता कए

दिन भ्रि हम फर-फराइत छी

बुझु जेनाँ पंछी बंद पिंजरा कए

हम मकड़ा जाल मे ओझरैल छी

ने बुझहु हम नारी मिथिला कए

दुनियाँ कए तँ बात नहिये पूछू

लोक-व्यवहार केलक कोना कए

मुनलएन केबार विधाता सेहो

अबितए कोइखमे ममता कए

४

पुत्र अहीं कए हमहूँ छी हे माँ
नजरि किएक फेरैत छी हे माँ

अहाँ जगत जननी छी भवानी
अहाँ सँ छिपल किछु नै छी हे माँ

दिन-हिन् हम बालक अज्ञानी
अहाँ कँ सुमरि कऽ कनै छी हे माँ

सरधा भाव छी अहाँ वस देने
अर्पित ओकरे कएने छी हे माँ

नहि हम जानै छी पूजा-अर्चना
जप तप किछु नहि जानी हे माँ

माया मे हम घेरावल भवानी
ध्यान लगावए नहि जानी हे माँ

अहाँ मैया हम पुत्र अहीं कए
वस एतबे तँ हम जानी हे माँ

कविता

१

मिथिलाक गुणगान

सुनु मिथिलाक गुणगान अहाँ, हम की कहु अपन मोनेसँ
सभ किछु तँ अहाँ जनिते छी मुदा, हम कहैत छी ओरे सँ

ISSN 2229-547X VIDEHA

उदितमान ई अछि अति प्राचीन, ज्ञानक अति भंडार अछि
ऋषि-मुनिक पावन धरती, महिमा एकर अपार अछि

ड्यौढ़ी-ड्यौढ़ी फुलबारी, आँगनमे तुलसी सोभती
कोसी-कमला मध्य वसल ई, भारतक सुंदर मोती

भक्ति-रस सँ कण-कण डुबल, अछि महिमा एकर अपार
शिव जतए एला चाकर बनि कऽ, सुनि भक्तक करुण पुकार

कलि विष्णु पूजल जाइ छथि, मिथिलाक एके आंगनमे
छैक कतौ आन ई सामर्थ कहू, होइ जइ आँखिक देखनेमे

एहि धरतीसँ जानकी जनमलि, सृष्टिक करै लेल कल्याण
श्रीराम संग व्याहल गेलि, पतिवर्ताक देलनि उदाहरण महान

आजुक-काइल्हुक बात जुनि पुछू, भ्रष्ट बनल अछि दुनियाँ
मुदा मिथिलामें एखनो देखू, सुरक्षित घरमे छथि कनियाँ

माए-बापकेँ आदर दै छथि, एखनो तक मिथिले वासी
पूज्य मानी पूजा करैत छथि, घर आबैत जँ कियो सन्यासी

आजुक युगमे धर्म बचल अछि, जँ किछु एखनो मिथिलेमे

आँखिक पानि बचल अछि देखू, जँ किछु एखनो मिथिलेमे

की कहु आब मिथिलाक महिमा,समावल जाएत ने लेखनीमे
हमरामे ओ सामर्थ नहि अछि, बान्हि सकी जँ पंक्तिमे
२

मैथिलीक विकासक बाधा

मैथिलीक विकासक बाधा थिक
आजुक युवाशक्ति मिथिलाक
पढि लिख कऽ बनि जाइ छथि
डाक्टर आ कलक्टर
मुदा नहि पढि-लिख सकैत छथि
मिथिलाक दू अक्षर
घर सँ निकलैत
ओ कहथिन "चलो स्टेशन"
लागैत छनि संकोच
कहै मे की "चलु स्टेशन"
जेता जखन गामक चौक पर
लागत जेना
बैस रहला मैथिलीक कोइख पर
सदिखन दुगोट समभाषी

बाजत अपने भाषा

परंच दूगोट मैथिल

जतबै लेल अपन पर्शनेल्टी

मैथिली तियागि कऽ

बाजए लगता सिसत्मेती

अपन मायक भाषा सँ

प्रेस्टीज पर लागैत छनि बट्टा

लोक की कहतनि

संस्कारी सँ भऽ गेला मर्चत्ता

संस्कारी सँ भए गेला मर्चत्ता ।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१.**शान्तिलक्ष्मी चौधरी** २रवि मिश्रा'भारद्वाज'

१.

**शान्तिलक्ष्मी चौधरी**

गज़ल १

गुनगुनाइत प्रेमक गीत लऽ कंठ भेल सधुन सितार पिया

सिनेह खेल काल कियैक ऐना देखबैत छी लटमझार पिया

काटु जुनि एहन जोर सँ बड्ड दुखाइत अछि ई लहरचुट्टी

देखु सम्हैर चलु सुकुमार आंगुर नै आबि जाय मोचार पिया

कचोर हरियर गभाइत धान सन गम्हरैत ई स्त्री-यौवन

एहन तन तरुण केर भुखायल छैक सगर संसार पिया

सुमधुर अहाँक प्रीत संग गमकैत अछि हमर सुबदन

प्रेम-पाशक बान्हु जुनि छान खसब हम धड़मबजार पिया

अनुराग-बिराग आतिपाति खेलि कतैक स्नेह-कलह करब

उढ़ैर रहल आब मोन मे उठल सभ मधुरस शृंगार पिया

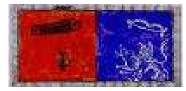
"शांतिलक्ष्मी" कहैत छथि ऐना जुनि विचलित मोन हौउ हे सखि

भरि आँखि सुप्रीतरस लS मुस्कैत भावैं भS गेलाह देखार पिया

……………वर्ण २४…………

गज़ल २





धधकलै सौंसे घरक लोकवेद डिविया लुक्का भS गेलय

फेरो बेटीये भेलय सुनिते अगिलग्गिक धुक्का भS गेलय

सौस ससुर दुनुप्राणिक मुँह बिधुयैल बकोर लागल

अधकचरुस तमाकु सन धुयैन मुँह हुक्का भS गेलय

बर हुनकर ओम्हर तामस सँ बोतलैल घुरै सगरे

लागय घरमे एखने चोरी चपाटी घरढुक्का भS गेलय

परसौतीक बाप माय कें सभ दिस सँ हुरकुचैन पड़ै

माँझघर लतियाति गरकैत लतिकुच्च चुक्का भS गेलय

दर दुश्मनक करेज जुरैले तँ ते हँस्सै-बाजै मुस्कियावै

ISSN 2229-547X VIDEHA

मुँह लाल सिनुरिया आम डम्हकैत देखनुक्का भs गेलय

अपना बेचारी प्रसवक पीड़े सँ बेशी मोनक बेथै मरै

मुँह फूल मौलायल वा फुलिकँ-चुटकल फुक्का भs गेलय

'शांतिलक्ष्मी' तँ समाजक आचार देखि भालरि सन काँपय

कलपैत छाति पर दनदन बरसैत मुक्का भs गेलय

…………………….वर्ण २२…………………….

गज़ल ३

लोकपाल! लोकपाल! जनलोकपाल! जनलोकपाल!

देसधर्म रक्षा लेल घुरि आउ हे गोविन्द! हे गोपाल!

कुरुक्षेत्र मे ता बाकयुद्ध केर घमासान मचल छै

अधर्म कपटी-भूप जनताकेँ पटकवा मे बेहाल

गोंगियाइत राजाक बेलज्ज प्यादा फुच-फुच उछलै

राज-मोहक आन्हर धृष्टराष्ट्रक धिचपिच घौंचाल

दुर्योधन-दुसाशन राष्ट्रक चीरहरण लऽ आतुर

राजलक्ष्मी केँ नग्न नचेताह मातृभुमियेक भुपाल

भीष्म द्रोण कर्ण पदत्यागि केँ धर्मक संग ठाढ़ भेल

लऽ लोकतंत्रक अस्त्र, सत्य-अहिंसा उपासक सुढ़ाल

"शांतिलक्ष्मी" कलजोड़ि अनुनय सुविनय करै अछि

हौइयौ आबो प्रगट हे कृपाल! हे प्रभु दीन-दयाल!

………………वर्ण २०…………

गज़ल ४

सोसल साइट पर करैत छै सेंसर के दाबी रे भाय

अभिव्यक्तिक स्वच्छंद साँढ़ मुँह बन्हबै की जाबी रे भाय

जखन चुट्टी कें घरघरावै मौत निकैल आबै छै पाँखि

आकि नढ़ियाक पैइर जे शहर दिस पराबी रे भाय

राखै देने छियौ बंदुक तँ देखवै छै हवलदारी रौव

पदक निंशा मे एना भँगेरी जकाँ जुनि बौराबी रे भाय

नागरिक अधिकार मान कें मरदें भऽ गेल छै हिंसक

हमरे पोसल बिलाय हमरे मिआँऊ सुनाबी रे भाय

देसक दहिण करूआरी धऽ तुँ हमरे प्रतापेँ बैसल

हमरे किचकिचावै की फ़ुरलौ जे मल्हार गाबी रे भाय

"शांतिलक्ष्मी" अहुँ नै करी अमोघ अस्त्रक अभद्र प्रयोग

पाकिस्तानक हाथ जेना अणुशक्ति शालाक चाबी रे भाय

................वर्ण २१...........

२


रवि मिश्रा'भारद्वाज'

ग्राम : ननौर

जिला : मधुबनी

'गजल'

१

सजबै अहाँ एना त दिन मे चान उगि जेतै
देखी अहाँ के हमर करेजा मे उफान उठि जेतै

अहाँक झलक पावक लेल बैसै छि जे दलान पर
लोक कहीं बुझि गेलै त ओ दलान छुटि जेतै

मोन हमर बहुत चंचल ताहि पर ई यौवन

एना जे नैना चलेवै त हमर ईमान झुकी जेतै

हमर जान जुरल जा रहल या अहाँक जान सँ
ज अहाँ आब रोकबै त इ नादान रुठि जेतै

२

अहाँक चौवनीया मुस्की केलक घायल
मोन हरौलक अहाँक छमछमायत पायल

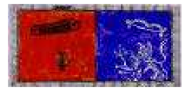
केलक एहेन जादु अहाँक नैना के तीर यै
देखलौव बहुत मुद किये दोसर नै भायल

कतय चुरौलौ अहाँ हमर मोन यै
कने कहु कतय अछि हमर मोन हरायल

आँखि सँ चुरा क नुकौलौ करेजा मे
फसल एना ककरो धिक्नौ ने बहरायल

कविता





ISSN 2229-547X VIDEHA

नवकी बहुरीया

शहर सँ एलि नवकी बहुरीया
पुरनकी देख काटे अहुरीया

पहिरने जिंस ताहि पर टँप्स गजवे
घुमे सौसे चौक चौबटिया
पुरनकी देख काटे अहुरीया

जेहने ढीठ तेहने निर्लज
टुकुर टुकुर देख हाँसे बुढिया
पुरनकी देख काटे अहुरीया

के जान आर के अन्जान
लागे जेना सब हुनक संगतुरीया
पुरनकी देख काटे अहुरीया

कतेक करब गुनगान हुनक
मुँह मे राखैत हैदखन पुरीया
पुरनकी देख काटे अहुरीया

बुढ सास सँ काज कराबैथ

ठोकने रहैत दिनो के केवरिया

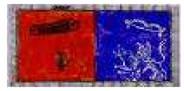
पुरनकी देख काटे अहुरीया

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१. अनिल मल्लिक २. झा हेमन्त बापी

१

अनिल मल्लिक

ISSN 2229-547X VIDEHA

हम कहि दैत छी

आइयो सजल छी पुतरी जेहन हम, लऽ कऽ जेबैन्ह हम फेरो चाय
लाख मना केलहुँ हम फेरो, चलल हमर नै कोनो उपाय

फेर अओलथि देखबा लेल हमरा, पुत्र,पिता आ संगे माय
बजता, भुकता, देखता, सुनता फेर निकलता कहिते बाय

फेर असमंजसमे कटत समय किछु, चिन्तित रहता बाबु, भाय
भोर मन्दिरमे सांझे चौरा, सदिखन प्रार्थना करती माय

रंग,रुप,गुण चाही विलक्षण, संगे जथगर जोगार भऽ जाए
मिन-मेख हमरेमे निकालथि, अपन पुत्रक खुब बड़ाइ

हमरा देखता एना की कहथि, चलु प्रोडक्टक डिस्प्ले भऽ जाए
सोचि बुझि कऽ ने जाइ छी कतहु यौ, बेर बेरक झमेला किए भाइ?

कहिया धरि एहन सहब हम, आब करब हम ठोस उपाय
कलम बनल अछि शस्त्र हमर, आ माँ शारदे छथि सहाय

यश, कीर्ति, धन, मान, प्रतिष्ठा, सभकेँ लेब हम आब रिझाय

पीड़ा की होइ छै तखन ओ बुझता, जखन हुनका हम देब घुमाय

आजुक बाद ने सजब एना हम, ने लऽ कऽ आब जाएब हम चाय
किछु दिन बाद ओ चाहता "अपोइन्टमेन्ट", हमरा संग पिबै के चाय
!!

२

झा हेमन्त बापी
ओझौल दरभंगा

१

माधुरी (एक नारी)

मस्टर साहेबक असगरे बेटी छलथि माधुरी।
संगे सतबा भाइ, भाउज रहै छलथि माधुरी।
आन्हर मस्टर साहेबक इजोत छलथि माधुरी।
खाइलै माधुरी,नित्यक्रिया ले माधुरी।

चलैले माधुरी, फिरैले माधुरी।
हुनकर बुढ़ाड़ीक ठेंगा , बनल छलथि माधुरी।
तइयो हुनकर जानक जपाल छलथि माधुरी।
सदिखन हुनकर मूहेँ, अपशब्द सुनै छलथि माधुरी।
तखनो खुशीसँ रहै छलथि माधुरी।
हसै छलथि माधुरी, गाबैत छलथि माधुरी, खेलाइत छलथि माधुरी।

मैटूअर तँ छलैथे, एक दिन बपटुअरो भेलथि माधुरी।
भाइ भाउज कहलथि माथ बथायल माधुरी।
सदिखन घरक काजमे अढ़ल रहै छलथि माधुरी।
दुनु गोटेकेँ खुश करएमे भिड़ल रहै छलथि माधुरी।
तखनो भाइक आँखिमे गड़इ छलथि माधुरी।

एक दिन कहुना बियाइहि कऽ सासुर गेलथि माधुरी।
पियक्कड़ पतिक संग उसनाइत छलथि माधुरी।
साँझ, भोरे, दिन, राइत मारि खाइ छलथि माधुरी।
साउस ससुर वरक सेवामे, मिझाइत छलथि माधुरी।
मोनक सपना मोनेमे पिस कऽ, औनाइत छलथि माधुरी।

समय बितल एक बेटाक माय भेलि माधुरी।
सोचलथि आब निक सँ, समय बितायब माधुरी।
शराब बनोउलक हुनका मशोमात ,कानैत छलथि माधुरी।

साउस ससुरसँ आब धिक्कारल जाइ छलथि माधुरी।
तखनहु आँखिक तारा बनै के परयास करै छलथि माधुरी।
कहियो दिन फिरत सोचैत छलथि माधुरी।
चौदह बरख टकटकी लगा कऽ ,निमाहि लेलथि माधुरी।

बेटा भेल सयान तँ आश केलन्हि माधुरी।
बहुरल दिन मोनमे बास कएलन्हि माधुरी।
साउस ससुरकेँ बहकेलासँ बेटासँ गारि सुनल माधुरी।
फुइट फुइट कऽ कानए लगलि देख विपदा माधुरी।
कि एहिना जनमे बितत विधाता, सोचि पड़ेली माधुरी।

अखन राहे, बाटे घुमै फिरै छथि माधुरी।
पहिनहिसँ बेसी हसै, गबै छथि माधुरी।

बुधियार लोक सभ कहै छथि "बताहि" भऽ गेल माधुरी।
मुदा "बापी" क आँइखक नोर बनल छथि माधुरी।
जे सभ ठाम खसि रहल अछि बनि एगो माधुरी।

की नारिक इएह परिभाषा थिक

२

दोषी

छथि सोचिमे लल्लन बाबू, धऽ माथापर हाथ।
सौसे गाँवसँ घुरि कऽ एलाह , नै टाका भेलनि हाथ।

काल्हि बुचिया केर सगुन उठत, पूरा पाइ नै पास।
बाप पुते सभ प्राणि घर, बैसल भेल उदास।

माल जाल खेती बाड़ी बेच , किछु तँ पाइ जोगेलथि।
गहना गुड़िया बेच घरक , दहेजक सामान जुटेलथि।

सोचलनि पाग राखि पएर पर, वर पछ कँ बुझेबनि।
होइते पाइक व्यवस्था हम , किछुए दिनमे पहुँचेबनि।

घरक भीतर केवाड़ पाछूसँ , सहमल बुचिया ताकै अछि।
कोइस रहल खुदकँ विधाताकँ, अप्पन भाग्यपर कानै अछि।

पहुँच लड़काक घरपर, भेल सभ बिध बेबहार।
मुदा लल्लन बाबुकँ आँइखक आगाँ बुझल अन्हार।

देबु बाबू कहला बजा कए , समधि कनी इम्हर अबियौ।
लेन देनक बात तँ अहाँ , पहिने तँ फरिछबियउ।

हाथ जोड़ि बजला लल्लन बाबू , नै भेल अखन जुगाड़।
किछु बेरक समय देल जाउ , सधा देब सभ उधार।

हम व्यापारी नै छी, सभ टा चाही एखने।
पूरा पाइ जे देब तँ सगुन, सगुन उठत आब तखने।

हाथ जोड़ि कऽ पएर धरि कऽ, लल्लन बाबू गोहरैला।
आरो सभ लोग बुझेलकनि, देबु टससँ मस नै भेला।

हारि थाकि कऽ गमा कऽ इज्जति, लल्लन बाबु अएला घर।
वज्रपात भेल सभक उपर सुनि कए ई खबर।

कानैत बजलाह लल्लन बाबु, एकरा कारणे इज्जैत गेल।
कथिलै जनमल घर ई छौड़ी, जनैमते किए नै मरि गेल।

सुनि बापक बज्जर सन बोल , बुचिया नै सहि पौलक।
चुप्पे चाप अपन कोठरीक , केवाड़ बन्द कए लेलक।

बोझ बनि बापक उपर, जियब हम कथी ला।
लगा कऽ फसरी बुचिया अप्पन शेष केलक इह लीला।

जतए शुभक गान होइत छल, मचल ओतए कोहराम।
बलि चढ़ल एक और नारि के , लऽ कऽ दहेजक नाम।

ISSN 2229-547X VIDEHA

"बापी" एक्कर के अछि "दोषी", केकरा फाँसी चढ़ायब।
लड़का या लड़काक बाप, या पुरा समाजपर दोष लगायब।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।



निशांत झा, माँ श्रीमती मंदाकिनी देवी (प्रधानाध्यापिका म. वि.) (साहित्याचार्य), पिता श्री प्रद्युम्न नाथ झा (समाजसेवी), घर सिंगियौन, प्रखंड राजनगर, जिला मधुबनी,

मरुस्थल रूपी हृदयमे

तृष्णा
गर्म दहकैत बालू अछि
की कखनो
हरियरीक लेल
नेह रूपी जल भेटत ?
या की
मृगतृष्णामे
भटकि जाएत जीवन
मोन आर आँखि दुनु टा
आकाशकँ तकैत
जलधरक प्रतीक्षामे
पुलकित होइत
मात्र जिन्दगी एकटा
उच्छ्वास बनि कऽ रहि जाएत ...

२

काल्हि जे गला मिलैत छल...
आइ गला काटि रहल अछि..
काल्हि जे साथ मुसकियाइ छलए...
आइ नोर बाँटि रहल अछि.......

देखू , समयक रचना केहेन ..
सभ कियो बाँटि रहल अछि अज्ञान...

कतेक बदलि गेल इन्सान ...

बदलाव अछि आदति एकर..

तरक्कीक नशामे चूर सभ ...
कनी कागतक टुकड़ा जतए...
सोचैक देरी रुकत ओतए...
काल्हि तक जे डराइत छल ..
आइ बुराइ अछि सबहक ईमान ...
कतेक बदलि गेल इन्सान ...

पएरमे माँ क स्वर्ग अछि ..
सुनाउ, सिखने छलौं कखनो यएह..
आउ देखू कनैत बूढ आँइख कें ..
जमाना आएल अछि .. हे भगवन केहेन...
जे पालि-पोसि कऽ बड़का केलक..
बनि कऽ रहि गेल घरमे मेहमान ...
कतेक बदलि गेल इन्सान ...

नारीक अछि रूप कतेक...
शब्दमे के एकर बयान करए.......
अछि पल पल पूजनीय एकर ..
एक जीवनमे .. सातटा, बलिदानकरए. .. (सात जन्मक)

सरे आम बिकैत अछि .. लाज शर्मक गहना आब ..
देखू केना खुलल अछि ई दोकान ..
कतेक बदलि गेल इन्सान.....

अछि आतंक चारू दिश ....नदी अछि खूनक ..
दिन दहाड़े -बाजार अछि आइ .. बौछारगारिक ..
बंद कर ई खेल लाशक ...आब तँ ..
मांग सुन्न भऽ रहल छै ...कतेक डोलीक...

काल्हि धरि जे पूजैत छल ... गीता आ कुरआन
आइ पुजाए हैवान..
कतेक बदलि गेल इन्सान......
देखू ..
कतेक बदलि गेल ......

३

सभटा यादक बुनियाद अछि ई झूठ ..
आदमीक सच्चा औकाति अछि ई झूठ ..
सच कहैत अछि .. दिल .. सचाई भरम अछि ..
सबहक ठोरपर घर बनेने अछि ई झूठ ..
भूखैलक लेल तृप्त भेनाइ अछि ई झूठ
आन्हरक लेल आँइख भेनाइ अछि ई झूठ...
मोन बहलाबै के बात अछि ई झूठ ..
फकीरा जे घुमैत अछि डगर डगर ...
सत्यक दर्शन नै हुअए मगर ...
भगवानकेँ पेबाक कोशिशो अछि झूठ..
आइ हवामे गर्मी अछि..
आँइखमे बेशर्मी अछि ..
मुरदा अछि एतऽ सभटा जिनगी जे चलि रहल अछि ..
खुश छी हम...
हर पल अपनासँ कहैत छी ई झूठ ..
काल्हि हमर होएत ...
एकटा नवका सवेरा होएत ...
सपनामे जंजीर आ ...
नींद मे पहरा नै होएत ...
रोज सुतऽ सँ पहिने दौगाबैत अछि ई झूठ ...
ककरो दुखी करै लेल तँ..
ककरो सुखी करै लेल ..

सभ दिन पता नै कतेक बाजल जाइत अछि झूठ...
हमहुँ झूट्ठा छी..
हमरा ऐ बातक विश्वास अछि ...
ओ एथिन भेट करैले एक दिन ...
जखन याद आबए तँ करेजसँ कहबेलौं यएह झूठ....
सभटा यादक बुनियाद अछि ई झूठ ..

आदमीक सच्चा औकाति अछि ई झूठ ....

४

भीजल कागतक जकाँ अछि जिनगी हमर
कियो लिखतो नै अछि आ कियो जरबितो अछि नै

ऐ तरहेँ अकेला भऽ गेल छी हम आइ-काल्हि
कियो सतबितो नै अछि आ कियो मनबितो अछि नै

सुखैल फूल जकाँ आब हम भऽ जे गेलौं ..
कियो तानक महफिलमे हमरा सजबितो अछि नै

सभ दिन भोर अबैए एकटा साँझक बाद

कियो अपन बनाकऽ निंदसँ जगबितो अछि नै

तन्हा अकेला रस्तामे चलैत चलल जा रहल छी ..
कियो रोकितो नै आ अंत अबितो अछि नै..

डराइत छी हम ..अहि भीड़मे कतौ हरा नै जाउ
हे भगवान अहाँक घरक पता कियो बतबितो अछि नै...

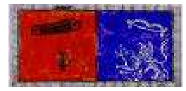
तन्हाइक ई अन्हार सभ किछु बिसरा देलक
कियो बतबितो अछि नै... ,आ किछु मोन पड़ैत अछि नै...

भीजल कागत जकाँ अछि जिनगी हमर
कियो लिखतो नै अछि आ कियो जरबितो अछि नै
५

आइ भऽ जाए सिर्फ एक बेर दिदार अहाँक हमरा ,
ऐ रस्मंजी मे आइ बिना पिने आब तँ बहकैक अछि

कनी आइ तँ ओ तान तँ छेरू हम्मर प्रीत केर अहाँ
हम्मर मोनक यएह धुन पर आइ मोन भरि कऽ थिरकनाइ अछि

जिनगी हम्मर रुकल अछि सिर्फ अहाँक एबाक इन्तजारमे,

किछु दया तँ करियौ करेजपर; ऐ दिलकेँ आब निश्चिंतसँ धड़कनाइ अछि

बुझल अछि हमरा अखन बहूत वक्त छै अहाँक एबामे
दिलकेँ अहींक यादक सहारे आब मचलैक अछि

अहाँक बिना हम्मर डेग डगमगाइत अछि महफिलमे
"अहींक सहारे" निशांतकेँ ऐ महफिलमे सम्हारमे रहैक अछि

अहींक यादमे जिबैत छी अहींक यादमे मरियो जाएब
अहींक याद कऽकऽ हम्मर ई नयन केँ आब डुबबाक अछि

हम्मर ई आँखि तराशि रहल अछि आब अहाँकेँ देखऽ लेल
एक बेर देखा जाए बस आब ई पपनीकेँ झपककने अछि

हम अहाँकेँ भेटी या नै भेटी जिनगीमे कहियो ,
बस खुश रही अहाँ, यएह हम्मर दुआ यएह हम्मर सपना अछि

६

कखनो रूसि रहलौं , कखनो छिरिऐ लगलौं...
हम अहाँकेँ ई चालि बुझि गेलौं ...
अहाँ निभायब ..रित प्रीत केँ ..
प्रिये हम अहाँकेँ पहचानि गेलौं ...

नैनमे छुरी रखबाक, अहाँकेँ शौख अछि
ई मारूख नयनपर नै बुझलिऐ ...
हमरा जेना कतेक बर्बाद भेलै

अहूँ निभायब ..रीत प्रीत केर ..
प्रिये हम अहाँकेँ चीन्हि गेलौं ...

ई गुलिश्ता नै एहन गुलबदन ..
ई नाज ई चालि अछि दिलफरेब
अपन दुपट्टाक झालरीसँ..
अहां टा जमानाक हुश्न छानि लेलौं ..

अहूँ निभायब ..रीत प्रीत केर ..
प्रिये हम अहाँकेँ चीन्हि गेलौं ...

हमहूँ कहियो ठोस छलौं पाथरसँ ..
नै एते कहियो प्यारमे पुछि लिअ करेजसँ.

लेकिन अहाँ निकललौं एक डेग आगू हमरासँ ..
वाह ! की इच्छा अहाँकेँ रूप हम ई मरि गेलौं ..

...अहूँ निभायब ..रीत प्रीत केर ..
प्रिये हम अहाँकेँ चीन्हि गेलौं ..

कखनो रूइस रहलौं, कखनो छिरिऐ लगलौं...
हम अहाँकेँ ई चालि बुझि गेलौं ...
अहूँ निभायब ..रीत प्रीत केर ..
प्रिये हम अहाँकेँ चीन्हि गेलौं...

७

आजुक दिनो बीतल
छा गेल अछि साँझ
फेर राति गहराए लागत

तकर बाद भोर होएत
ओहो धीरे-धीरे
दुपहरिया , सांझ आ रातिमे
बदलि जाएत
अहि तरहेँ

दिन पर दिन

कैलेण्डरपर तारीख

बदलैत रहत

अहिमेसँ

कोनो एक

हम्मर अंतिम तारीख हएत

आ दीवारपर हम

एकटा तस्वीर बनि

टंगि जाएब

आबऽ बला सभटा

तारीखक लेल।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१.*डॉ॰ शशिधर कुमर २* *नवीन कुमार "आशा"*

9.



डॉ॰ शशिधर कुमर, एम॰डी॰(आयु॰) कायचिकित्सा, कॉलेज ऑफ आयुर्वेद एण्ड रिसर्च सेण्टर, निगडी प्राधिकरण, पूणा (महाराष्ट्र) ४११०४४

।। <u>प्रथम् पुज्य मिथिला हमर शत् - शत् प्रणाम</u> ।।

<u>(मिथिला वन्दन गीत)</u>

स्वर्गहु सँ सुन्नर पावन जे धाम ।

प्रथम् पुज्य मिथिला हमर शत् - शत् प्रणाम ।।*

मण्डन - अयाची - उद्याना केर नगरी ।

कवि कोकिल विद्यापति केर गाम एतए विसफी ।

आबि एतए भेलाह शंकर निरूत्तर ,

कर्मभूमि जनकक, ओ सीता केर गाम ।

प्रथम् पुज्य मिथिला हमर शत् - शत् प्रणाम ।।

गोबर सँ नीपल द्वारि , पाड़ल अरिपन ।

स्वच्छ - सुगम्य बाट - घाट लागय मनोरम ।

गाछ जतऽ फूल, बेलपात आ अशोक केर ,

खल खल हँसैत, भरल खरिहान ।

प्रथम् पुज्य मिथिला हमर शत् - शत् प्रणाम ।।

नामी जतऽ केर अछि भोजन सचार ।

चुड़ा - दऽही - चिनी आ आमक अचार ।

नामी अछि विश्व भरि पेण्टिङ्ग जतऽ केर,

नामी जतऽ केर अछि पान आ मखान ।

प्रथम् पुज्य मिथिला हमर शत् - शत् प्रणाम ।।

गीत विद्यापति केर गूँजय हर अङ्गना ।

बाजय राधा केर पायल आ कङ्गना ।

गूँजय यत्र तत्र गीत भगवान केर,

हर हर महादेव, जय राम घनश्याम ।

प्रथम् पुज्य मिथिला हमर शत् - शत् प्रणाम ।।

* ई हमर बहुत पुराण गीत सभ मे सँ थिक, जे कि १९९० - १९९७ केर बीच किछु लोकनि द्वारा “जे॰ एन॰ कॉलेज मधुबनी”, “आर॰ के॰ कॉलेज मधुबनी” तथा “भगवती स्थान कोइलख मधुबनी” आदिक मञ्च सभ सँ गाओल जा चुकल अछि ।

नवकी कनिञा

हरिहर झा* केर आङ्गन मे,

अएलखिन्ह आइ नवकी कनिञा ।

जनिका कारण चुटकी लै छन्हि,

हुनिकर सगरो दुनिञा ।

ठोकि बैसल छथि अपन कपार, सोचैत किछु अङ्गना मे ।

हरिहर झा केर आङ्गन मे .... ।।

कोन जन्म केर पाप हमर छल,

भाग्य हमर एहेन भेल ।

कुल खानदानक मान मर्यादा,

माटि मे सभ मीलि गेल ।

हाय रेऽ जऽरल हमर कपार, सोचै छथि बैसि अङ्गना मे ।

हरिहर झा केर आङ्गन मे ………………………………………….
।।

मोबाइल पर बतियाए हमेशा,

जीन्स पैण्ट पहिरए छै ।

ब्युटी पार्लर जाय दड़िभंगा,

केश सेट करबए छै ।

पहीरि कऽ पएर मे सैण्डिल लाल, घुमै छै कोना अङ्गना मे ।

हरिहर झा केर आङ्गन मे ……………………………………………
।।

आठ बजे ओ सूति कऽ उठती,

काज ने किछुओ करती ।

लाज शर्म केर छुति ने कनिञो,

भरि दिन सिनेमा देखती ।

कोना चलतै एहि घऽरक काज, सोचै छति बैसि अङ्गना मे ।

हरिहर झा केर आङ्गन मे ………………………………………….
।।

* हरिहर झा नामक व्यक्ति काल्पनिक छथि ।

वास्तविक दुनिञाक कोनो हरिहर झा सँ एहि गीतक कोनो सम्बन्ध नञि थिक ।

<u>कल्पनाक यान सँ</u>

<u>(गीत)</u>

कल्पनाक यान सँ,
मोनक उड़ान सँ,
घुरि फिरि आबैत छी, प्रेयसीक गाम सँ ।।

कोनटा केर कात सँ,
ग्रसित लोक लाज सँ,
स्वागत ओ कयलि, अपन मन्द - मन्द हास सँ ।।

अधीर सनि गात सँ,
विरहक प्रताप सँ,
सोझाँ भेलीह ओ मिलनक उसास सँ ।।

कोमल सनि हाथ सँ,

तिलकोरहि पात सँ,*

आँजुर दुइ नेह देल पुर्वहि प्रभात सँ

।।

कागक अवाज सँ,

आभासहि प्रात सँ,

टूटल जे निन्न, स्वप्न डूबल सन्ताप सँ

।।

* तिलकोरहि पात = प्रेयषीक पातर पातर ठोरक लेल उपमा = तिलकोरक पात सन पातर ठोर

२.नवीन कुमार "आशा"

की फुराएल ने जानि

की फुराएल ने जानि

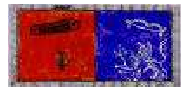
कोना फुराएल ई आइ

कोना जागल सूतल प्राण

कोना आएल मिथिला याद

जेकर केने छलौं त्याग

कोना याद आएल हुनक बलिदान

जे देलथि भारतीयक पहचान

की फुराएल ने जानि।

कोना फुराएल हमरा ई आइ

माए बाबूक कोना आएल याद

जे हमरा लेल केलथि अपन त्याग

हुनक याद कोना सताएल

कोना मोन भेल घुरि जाइ गाम

ने जानि की हमरा फुराएल।

कोना याद आएल अपन मिथिला

राजा जनकक ओ मिथिला

जतऽ क अछि मण्डन अयाची

सर गंगानाथ सन लोकसँ जुड़ल पहचान

की फुराएल ने जानि

कोना फुराएल ई आइ।

की फुराएल हमरा ई आइ

घुरि चलि आब अपन देश

छोड़ि दी आब ई परदेश

नै जानि हृदयमे आइ ई की भेल

की फुराएल ने जानि

कोना फुराएल हमरा ई आइ

मिथिलाक माछक आएल याद

जेकर अछि किछु अलगे स्वाद

ISSN 2229-547X VIDEHA

गामक भोजक अलगे मान

ओइमे लोकसँ होए पहचान

कोना याद आएल ओ मिथिला

याद कोना एला मिथिलावासी

ने जानि ई कोना भेल

कोना फुराएल हमरा ई आइ।

भाइ बहिनक आएल याद

जिनकासँ मिलि करी हुड़दंग

सभ कियोकेँ करै छलौं तंग

याद आएल ओ पुरान क्षण

कोना ने ई जानि

की फुराएल ने जानि

कोना फुराएल हमरा ई आइ।

अंतमे “आशा” बस एतबा चाहए

सभ कियोक जँ हुअए ईएह विचार

मिथिलापर की होए अत्याचार

की फुराएल ने जानि

कोना फुराएल हमरा ई आइ।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१ **जवाहर लाल कश्यप-** काटि लिय कोना दुनू पाँखि २. नवीन ठाकुर

१ **जवाहर लाल कश्यप**

काटि लिय कोना दुनू पाँखि

अहाँके सौंदर्य मे, ओझरा क हम अप्पन आँखि /

काटि लिय कोना दुनू पाँखि , काटि लिय कोना दुनू पाँखि /

चन्द्र राशि के तजि क हम, केश राशि मे कोना भटकि जाउ /

संसारक हम गुढ प्रश्न तजि ,बाहुपाश मे कोना अटकि जाउ /

और-और अन्यान्य सत्य के अपना स हम दूर हॉकि /

काटि लिय कोना दुनू पॉखि , काटि लिय कोन दुनू पॉखि /

हम छलहुँ उन्मुक्त, तन-मन हम्मर निर्बंध छल /

उडैत पवन संग उडैत छलहुँ , आ गति नीर सन चंचल छ्ल /

व्यस्त छलहुँ हम मस्त छलहुँ हम, वेकारी के धुल फॉकि /

काटि लिय कोना दुनू पॉखि, काटि लिय कोना दुनू पॉखि /

दुर्लभ मानव तन अछि भेटल , गुढ रहस्य खोजबा लेल /

ध्वंश क विगलीत् व्यवस्था नव निर्माण करवा लेल /

अहॉ कहै छी ठम्हि जाउ, मुदा बैस कोना जाउ, हारि-थाकि /

काटि लिय कोना दुनू पॉखि, काटि लिय कोना दुनू पॉखि /

२

ISSN 2229-547X VIDEHA

नवीन ठाकुर

१

गंगा

कल.कल ..करैत बहैत नीर
चुबैत ममता होइत अधीर

पतित पावनी निर्मल गंगा
जन्भूमिक बहैत रुधिर

तारैत सब निस्कंट पापकँ
एहि सँ जीवन आ शरीर

छुबैते ह्रदय द्रवित भऽ जाएत
गगन नयन भरि जायत नीर

एहन पवित्र जल नै कोनो
जहिना विष्णु सागर क्षीर

दर्शन कऽअहाँक मैया
पुलकित भऽ उठल शरीर

कल्पना नै बिन गंगा क
लागत भूमि हमर पूर्ण बिहिर !!

२

गुटखा माने मावा --

गली गली आ गाँव गाँवमे एहन देखेलक झटका ,
मतवाला भऽ किनऽ लागल रंग बिरंगक गुटखा !

रंग बिरंगक पन्नीमे जहरीला अछि पान मसल्ला
केंसरक प्रयोगशाला बनि गेल एही कऽ सेवन करऽवला

भेल लाचार युवा पीढ़ी, मुँह क केंसर केलक अट्टहास
दांतों सबहक भेल कबाड़ा, सेहत केलक सत्यानास

तबाह, यमराज, कफन -दफन, काल पसंदी एकर नाम
जाहिमे जतेक बेसी जहर , सभसँ कम ओकर दाम

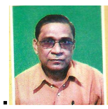
हँसि कऽकहल गुटका सभसँ , हम छी कतेक सर्वव्यापी
सुन रे मुर्खबा खा वला, हम छी यमराजक कार्बन कापी

कहत जवाहर सुन भाइ स्वादु
धूम मचा -रंग जमा , चलिते -फिरते कऽअर्थी उठा!

अक्लक आन्हर खाइ वला , जहर किनि कऽखाइए
जेकरा पास अक्ल अछि , जहरो सँ माल कमाइए

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

विदेह नूतन अंक मिथिला कला संगीत

१. ज्योति सुनीत चौधरी २.श्वेता झा (सिंगापुर) ३.गुंजन कर्ण ४.राजनाथ मिश्र (चित्रमय मिथिला) ५. उमेश मण्डल (मिथिलाक वनस्पति/ मिथिलाक जीव-जन्तु/ मिथिलाक जिनगी)

१.



ज्योति सुनीत चौधरी

जन्म स्थान -बेल्हवार, मधुबनी। ज्योति मिथिला चित्रकलामे सेहो पारंगत छथि आ हिनकर मिथिला चित्रकलाक प्रदर्शनी ईलिंग आर्ट ग्रुप केर अंतर्गत ईलिंग ब्रॊडवे, लंडनमे प्रदर्शित कएल गेल अछि।

ISSN 2229-547X VIDEHA

कविता संग्रह 'अर्चिस्' प्रकाशित। ज्योति सम्प्रति लन्दनमे रहै छथि।



२. श्वेता झा (सिंगापुर)



३.गुंजन कर्ण राँटी मधुबनी, सम्प्रति यू.के.मे रहै छथि। www.madhubaniarts.co.uk पर हुनकर कलाकृति देखि सकै छी।



४.

राजनाथ मिश्र

चित्रमय मिथिला स्लाइड शो

चित्रमय मिथिला (https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/)

५.

उमेश मण्डल

मिथिलाक वनस्पति स्लाइड शो

मिथिलाक जीव-जन्तु स्लाइड शो

मिथिलाक जिनगी स्लाइड शो

मिथिलाक वनस्पति/ मिथिलाक जीव जन्तु/ मिथिलाक जिनगी (https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

विदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भारती

१. मोहनदास (दीर्घकथा):*लेखक: उदय प्रकाश (मूल हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुवाद विनीत उत्पल)*

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलाक्षर)

मोहनदास (मैथिली-ब्रेल)

२.छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक सुशीला झा द्वारा मैथिली अनुवाद

छिन्नमस्ता

३.**कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद धीरेन्द्र प्रेमर्षि)**

भगता बेङक देश-भ्रमण

४.

बिपिन कुमार झा

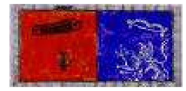
कर्णभारम्-महाकवि भास (मैथिली अनुवाद बिपिन कुमार झा)

अनुवादकर्ता एवं ग्रन्थ परिचय:- अनुवादक बिपिन कुमार झा, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय, श्री सदाशिव परिसर पुरी, ओडिशा केर साहित्य विभागमे अध्यापनरत छथि। संस्कृत केर प्रमुख ग्रन्थक अनुवाद मैथिलीमे करब अनुवादकक सहज रुचि मात्र छन्हि। यदि अनुवाद केर कोनो अंश समुचित नहि लालगए तँ अवश्य सूचित करी। एतय प्राप्त श्लोकक भावानुवाद गद्यमे देल गेल अछि । ई ग्रन्थ चौखम्भा पब्लिशर्स, वाराणसीसँ प्राप्त कएल जा सकैत अछि। 'कर्णभारम्' महाकवि भास रचित एकटा एकांकी अछि। जतय कर्णक उदात्त चित्रण कएल गेल अछि। कोनो प्रकारक टिप्पणी kumarvipin.jha@gmail.com पर दऽ सकैत छी।

नाटकक पात्र केर परिचय

पुरुष पात्र

कर्ण- कौरव केर सेनापति (अङ्गदेश केर राजा)।

शल्य- कर्ण केर सारथी (मद्र देश केर राजा)।

भट- सिपाही

इन्द्र- ब्राह्मणरूपधारी इन्द्र

देवदूत- इन्द्रक ब्राह्मणरूपधारी दूत।

(नान्दीपाठक अन्त में सूत्रधारक प्रवेश।)

सूत्रधार-

जाहि भगवान विष्णुक नरसिंह अवतारक शरीर के देखि के नर-नारी, राक्षस, देवतालोकनि और पाताललोक सेहो आश्चर्य मे पडि गेलाह। जे अपन वज्रक समान कठोर नहक अग्रभाग सँऽ दैत्यराज हिरण्यकश्यप केर छाती विदीर्ण कयलथि। एहेन राक्षसी सेनाक विनाश करयबला भगवान श्रीधर अहाँ सभ कें कल्याण करथु।।१॥

ISSN 2229-547X VIDEHA

एहि तरहें हम अपने सभ कें सूचित करैत छी जे (घूमि कें आ कान द कें सुनैक अभिनय करैत) अरे ! सूचना देबा मे व्यस्त हमरा ई कोन तरहक आवाज सुनाई दरहल अछि। ठीक! देखियै तऽ!

(नेपथ्य में)

महाराज अङ्गराज कर्ण सँ निवेदन कयल जाय; निवेदन कयल जाय।

सूत्रधार- ठीक अछि। बुझि गेलहुँ।

भयंकर लडाई शुरू भय गेला पर; व्याकुल आ हाथ जोडैत परिचारक, दुर्योधनक आज्ञा सँ कर्ण के समाद दय रहल अछि॥२॥

(सब चलि जाइत अछि।)

॥प्रस्तावना खत्म भेल॥

क्रमशः (... तीन भाग मे समाप्त होयत।)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

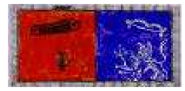
बालानां कृते

१.अनिल मल्लिक २.**डॉ० शशिधर कुमर "विदेह"**

१.

अनिल मल्लिक





ISSN 2229-547X VIDEHA

नेन्हपनक हरेक भोर होइत छल दादीक मधुर स्वरमे गावोल ई गीत सौं, तहिया दिवाल घडी नै छल, ने कोनो अलार्म.... दादीक गीत सुनि पड़ोसी बसीर अहमद बुझैत छलाह जे भोर भेल आ ओ अपन मवेशी भोरका पहर चराब'क बास्ते खोलैत छलाह ! मॉ, चाची, बाबुजी, कक्काजी बुझि जाइत छलथि जे भोर भ' गेल आ उठि जाइत छलाह ! जुग बितल..... दादी अपने संगे ल' गेली..... ई गीत..... एकर मधुर लय आ भाव सेहो ! रहि गेल दादी द्वारा लिपिबद्ध ऐ लोक गीतक मात्र आखर आखर..... शव्द शव्द..... अर्थहीन..... मर्महीन ! रहि गेल एकटा अन्तहीन प्रतीक्षा..... की दादी फेर औती..... कोनो ने कोनो रुपमे.... मिथिलाक घर घरमे..... फेर पहिले जेहन भोर होएत, ई गीतक बोल संगे आँखि खुलत सभक, आ जिबन्त होएत संस्कृति फेर एक बेर.....!

सादर ई गीत :

ऊठू हे फूलकुमैर रानी, झारु दिय ॲंगना
ऊठता जे कृष्ण बलदाउ, बासी छीक ॲंगना
ऊठू हे फूलकुमैर रानी ,झारु दिय ॲंगना

कथी के'र झारु झुरु ,कथी के'र बन्हना
कोना हम झारु दे'ब ,ससुरजी'त ॲंगना
कोना हम झारु दे'ब ,भैंसुरजी'त ॲंगना

सोनाकें'र झारु झुरु, रुपा के'र बन्हना
लिहुरी लिहुरी झारु दियौ ,नन्दजी के'र अँगना
ऊठता जे कृष्ण बलदाउ, खेलैथ दुनु अँगना

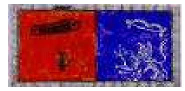
ऊठू हे फूलकुमैर रानी, झारु दिय अँगना !!

२.



डॉ॰ शशिधर कुमर "विदेह"
एम॰डी॰(आयु॰) कायचिकित्सा
कॉलेज ऑफ आयुर्वेद एण्ड रिसर्च सेण्टर, निगडी प्राधिकरण, पूणा (महाराष्ट्र) ४११०४४,

<u>नोर बहओने किछु नहि होयत</u>

ISSN 2229-547X VIDEHA

नोर बहओने किछु नञि होयत, भेटत नञि सन्मान ।

पएबा लेऽ किछु पड़त गमाबए, करए पड़त संग्राम ।।

भलहि सिंह हो वीर कतेको,

पर रहतइ जँ सूतल ।

मृगा ने कहतै खा ले हमरा,

मरि जायत ओ भूखल ।

करब परिश्रम, तखनहि जिउब, बाँचत तखनहि प्राण ।

पएबा लेऽ किछु पड़त गमाबए, करए पड़त संग्राम ।।

निज अधिकार ओ प्राणक रक्षा,

सभहक अछि कर्त्तव्य ।

श्रेष्ठ परम जननी केर सेवा,

एतबा हो ज्ञातव्य ।

परमश्रेष्ठ ई कर्म मनुक्खक, कहलन्हि श्री भगवान* ।

पएबा लेऽ किछु पड़त गमाबए, करए पड़त संग्राम ।।

स्मरणीय शोणित केर बदला,

जतऽ नोर बहइत अछि ।

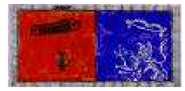
ओहिठाँ जनता शोषित, पीड़ित,

पराधीन रहइत अछि ।

हर पल मरबा सँ उत्तम अछि, देशक लेल बलिदान ।

पएबा लेऽ किछु पड़त गमाबए, करए पड़त संग्राम ।।

* श्री भगवान = श्री कृष्णक गीताक उपदेश

ISSN 2229-547X VIDEHA

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक

१.प्रातः काल ब्रह्ममुहूर्त्त (सूर्योदयक एक घंटा पहिने) सर्वप्रथम अपन दुनू हाथ देखबाक चाही, आ' ई श्लोक बजबाक चाही।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।

करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्॥

करक आगाँ लक्ष्मी बसैत छथि, करक मध्यमे सरस्वती, करक मूलमे ब्रह्मा स्थित छथि। भोरमे ताहि द्वारे करक दर्शन करबाक थीक।

२.संध्या काल दीप लेसबाक काल-

दीपमूले स्थितो ब्रह्मा दीपमध्ये जनार्दनः।

दीपाग्रे शङ्करः प्रोक्तः सन्ध्याज्योतिर्नमोऽस्तुते॥

दीपक मूल भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्यभागमे जनार्दन (विष्णु) आऽ दीपक अग्र भागमे शङ्कर स्थित छथि। हे संध्याज्योति! अहाँकेँ नमस्कार।

३.सुतबाक काल-

रामं स्कन्दं हनूमन्तं वैनतेयं वृकोदरम्।

शयने यः स्मरेन्नित्यं दुःस्वप्नस्तस्य नश्यति॥

जे सभ दिन सुतबासँ पहिने राम, कुमारस्वामी, हनूमान्, गरुड़ आऽ भीमक स्मरण करैत छथि, हुनकर दुःस्वप्न नष्ट भऽ जाइत छन्हि।

४. नहेबाक समय-

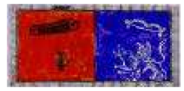
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू॥

हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु आऽ कावेरी धार। एहि जलमे अपन सान्निध्य दिअ।

५.उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।

वर्षं तत् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥

ISSN 2229-547X VIDEHA

समुद्रक उत्तरमे आऽ हिमालयक दक्षिणमे भारत अछि आऽ ओतुका सन्तति भारती कहबैत छथि।

६.अहल्या द्रौपदी सीता तारा मण्डोदरी तथा।

पञ्चकं ना स्मरेन्नित्यं महापातकनाशकम्॥

जे सभ दिन अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा आऽ मण्दोदरी, एहि पाँच साध्वी-स्त्रीक स्मरण करैत छथि, हुनकर सभ पाप नष्ट भऽ जाइत छन्हि।

७.अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।

कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरञ्जीविनः॥

अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनूमान्, विभीषण, कृपाचार्य आऽ परशुराम- ई सात टा चिरञ्जीवी कहबैत छथि।

८.साते भवतु सुप्रीता देवी शिखर वासिनी

उग्रेन तपसा लब्धो यया पशुपतिः पतिः।

सिद्धिः साध्ये सतामस्तु प्रसादान्तस्य धूर्जटेः

जाह्नवीफेनलेखेव यन्यूधि शशिनः कला॥

९. बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती।

अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूर्वाक्षत मंत्र(शुक्ल यजुर्वेद अध्याय २२, मंत्र २२)

आ ब्रह्मन्नित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः। लिंभोक्ता देवताः। स्वराडुत्कृतिश्छन्दः। षड्जः स्वरः॥

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शुरेऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्रीं धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योवा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे-निकामे नः पर्जन्यों वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगेक्षमो नः कल्पताम्॥२२॥

मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।

ॐ दीर्घायुर्भव। ॐ सौभाग्यवती भव।

हे भगवान्। अपन देशमे सुयोग्य आ' सर्वज्ञ विद्यार्थी उत्पन्न होथि, आ' शुत्रुकेँ नाश कएनिहार सैनिक उत्पन्न होथि। अपन देशक गाय खूब दूध दय बाली, बरद भार वहन करएमे सक्षम होथि आ' घोड़ा त्वरित रूपेँ दौगय बला होए। स्त्रीगण नगरक नेतृत्व करबामे सक्षम होथि आ' युवक सभामे ओजपूर्ण भाषण देबयबला आ' नेतृत्व देबामे

ISSN 2229-547X VIDEHA

सक्षम होथि। अपन देशमे जखन आवश्यक होय वर्षा होए आ' औषधिक-बूटी सर्वदा परिपक्व होइत रहए। एवं क्रमे सभ तरहेँ हमरा सभक कल्याण होए। शत्रुक बुद्धिक नाश होए आ' मित्रक उदय होए॥

मनुष्यकें कोन वस्तुक इच्छा करबाक चाही तकर वर्णन एहि मंत्रमे कएल गेल अछि।

एहिमे वाचकलुप्तोपमालङ्कार अछि।

अन्वय-

ब्रह्मंन् - विद्या आदि गुणसँ परिपूर्ण ब्रह्म

राष्ट्रे - देशमे

ब्रंह्मवर्चसी-ब्रह्म विद्याक तेजसँ युक्त

आ जांयतां- उत्पन्न होए

रांजन्यः-राजा

शुरैंऽ बिना डर बला

इषव्यो- बाण चलेबामे निपुण

ऽतिव्या॒धी-शत्रुकेँ तारण दय बला

म॒हार॒थो-पैघ रथ बला वीर

दोग्ध्रीं-कामना(दूध पूर्ण करए बाली)

धे॒नुर्वोढा॒न॒ड्वाना॒शुः धे॒नु-गौ वा वाणी वोँढा॒न॒ड्वा- पैघ बरद ना॒शुः-आशुः-त्वरित

सप्ति॒ः-घोड़ा

पुर॑न्धि॒र्योवा॑- पुर॑न्धि॒- व्यवहारकेँ धारण करए बाली योँवा॑-स्त्री

जि॒ष्णू-शत्रुकेँ जीतए बला

र॑थे॒ष्ठाः-रथ पर स्थिर

स॒भेयो॒-उत्तम सभामे

युवास्य-युवा जेहन

यज॑मानस्य-राजाक राज्यमे

वी॒रो-शत्रुकेँ पराजित करएबला

निका॒मे-निकामे-निश्चययुक्त कार्यमे

नः-हमर सभक

पर्जन्यों-मेघ

वर्षतु-वर्षा होए

फलवत्यो-उत्तम फल बला

ओषधयः-औषधिः

पच्यन्तां- पाकए

योगेक्षमो-अलभ्य लभ्य करेबाक हेतु कएल गेल योगक रक्षा

नः-हमरा सभक हेतु

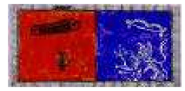
कल्पताम्-समर्थ होए

ग्रिफिथक अनुवाद- हे ब्रह्मण, हमर राज्यमे ब्राह्मण नीक धार्मिक विद्या बला, राजन्य-वीर,तीरंदाज, दूध दए बाली गाय, दौगय बला जन्तु, उद्यमी नारी होथि। पार्जन्य आवश्यकता पड़ला पर वर्षा देथि, फल देय बला गाछ पाकए, हम सभ संपत्ति अर्जित/संरक्षित करी।

8.VIDEHA FOR NON RESIDENTS

8.1 to 8.3 MAITHILI LITERATURE IN ENGLISH

1.

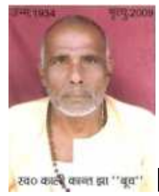



ISSN 2229-547X VIDEHA

Episodes Of The Life - ("Kist-Kist Jeevan" by

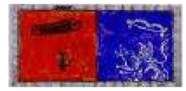


Smt. shefalika Varma translated into English by  **Smt. Jyoti Jha Chaudhary)**



2.Original Poem in Maithili by Kalikant Jha "Buch" Translated into English by  **Jyoti Jha Chaudhary**

१



Episodes Of The Life - ("Kist-Kist Jeevan" by

Smt. shefalika Varma translated into English by  Smt. Jyoti Jha Chaudhary)

Shefalika Verma has written two outstanding books in Maithili; one a book of poems titled “BHAVANJALI”, and the other, a book of short stories titled “YAYAVARI”. Her Maithili Books have been translated into many languages including Hindi, English, Oriya, Gujarati, Dogri and others. She is frequently invited to the India Poetry Recital Festivals as her fans and friends are important people.

Translator:*Jyoti Jha Chaudhary, Place of Birth-Belhvar (Madhubani District), Her Mithila Paintings have been displayed by Ealing Art Group at Ealing Broadway, London.*published

work: "ARCHIS"- COLLECTION OF MAITHILI HAIKUS AND POEMS. She currently lives in London.

Episodes Of The Life :

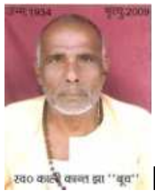
I was surprised when it was time to go to England in 1999. He became ready to go within one minute to respect the invitation by Vandana Pahun (Vandana's husband).Well, this was a different story that Sanjeev had recently resigned his job and started practicing advocacy under his father because, he couldn't neglect his clients and cases at any cost. He was writing book on human rights while travelling in England. He couldn't survive without law. We had been there for only two months. It was exactly two months over when we were to return India when the calamity attacked us. Pinki was employed in Conventry during that time. K P was there in Omskark hospital. Pritu and Ani was studying there so we were in Omskark. Varmaji had

prepared very good salad, 'does only Pahun know the style of making salad? See, how I make the stylist salad. Pahun was laughing a lot. We three had meal together then we sent Pahun to Hospital. We both watched TV for some time and he asked to go to the bedroom to take rest. Both children were in the school. We both went upstairs to take rest. We were talking about general things and suddenly he started complaining chest pain. I asked him whether I should call the pahun but he stopped me by reminding 'don't you remember I had the similar pain in Saharsa station. I got relieved after eating valium. I will eat Valium again and the pain will vanish.' But his pain increased. I phoned pahun(son in law). He came in his dress of operation theatre. After seeing him he took some medicine and called ambulance from different room. 'Mummy, we have to take papa to the hospital immediately'. He asked Vermaji whether he would be able to go downstairs himself. Vermaji had strong will power so he said

ISSN 2229-547X VIDEHA

yes why not. He went downstairs and I started changing dress. When I came downstairs I saw him lying on the sofa and struggling with pain on the sofa like a bird injured by arrow. Pahun stopped waiting for the ambulance and took him on his car. Quarter was in the hospital campus but before reaching there he fell on the car floor. I kept on shouting 'Pahun, papa has fallen down' but Pahut continued driving with speed and horn and reached the emergency finally. He was brought out of the car. He was numb and senseless. Pahun couldn't lift him alone so four ward boys came in a second. I was crying. All sisters took me to the other room. I was repeating a couple of words like a tape recorder- save him- save him, and they all were consoling me.

२

Kalikant Jha "Buch" 1934-2009, Birth place- village Karian, District- Samastipur (Karian is birth place of famous Indian Nyaiyyayik philosopher Udayanacharya), Father Late Pt. Rajkishor Jha was first headmaster of village middle school. Mother Late Kala Devi was housewife. After completing Intermediate education started job block office of Govt. of Bihar.published in Mithila Mihir, Mati-pani, Bhakha, and Maithili Akademi magazine.

 Translator:*Jyoti Jha Chaudhary, Place of Birth- Belhvar (Madhubani District), Her Mithila Paintings have been displayed by Ealing Art Group at Ealing Broadway, London.*published work: "ARCHIS"- COLLECTION OF MAITHILI

HAIKUS AND POEMS. She currently lives in London.

The Dream Girl

Dream girl, you are my life partner

Come in dream as usual for a moment

I have enjoyed up to my imagination

Now I am abstracted by my mind

I am a human and you are a divine angel

Come in dream as usual for a moment

One the only flaming spring

Now turned into anguish cloud of Asharh

The dried spined branches of rose

Come in dream as usual for a moment

You immortalized me by showering the nectar of your beauty

Why have you given the venom of separation there after

The life at home is linked to death

Come in dream as usual for a moment

Your repeated arrival again

Is welcomed cordially

The two eyes are cups of tea and heart is the saucer

Come in dream as usual for a moment.

Send your comments to ggajendra@videha.com

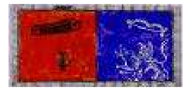
विदेह नूतन अंक भाषापाक रचना-लेखन

Input: (कोष्ठकमे देवनागरी, मिथिलाक्षर किंवा फोनेटिक-रोमनमे टाइप करू। Input in Devanagari, Mithilakshara or Phonetic-Roman.) Output: (परिणाम देवनागरी, मिथिलाक्षर आ फोनेटिक-रोमन/ रोमनमे। Result in Devanagari, Mithilakshara and Phonetic-Roman/ Roman.)

- English to Maithili
- Maithili to English

इंग्लिश-मैथिली-कोष / मैथिली-इंग्लिश-कोष प्रोजेक्टकेँ आगू बढ़ाऊ, अपन सुझाव आ योगदान ई-मेल द्वारा ggajendra@videha.com पर पठाऊ।

विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (इंटरनेटपर पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based

on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.

१.भारत आ नेपालक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक शैली आ २.मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

१.नेपाल आ भारतक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक शैली

१.१. नेपालक मैथिली भाषा वैज्ञानिक *लोकनि द्वारा बनाओल मानक उच्चारण आ लेखन शैली*

(भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग लऽ निर्धारित)

मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन

१.*पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार:* पञ्चमाक्षरान्तर्गत ङ, ञ, ण, न एवं म अबैत अछि। संस्कृत भाषाक अनुसार शब्दक अन्तमे जाहि वर्गक अक्षर रहैत अछि ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि। जेना-

अङ्क (क वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ङ् आएल अछि।)

पञ्च (च वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ञ् आएल अछि।)

खण्ड (ट वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ण् आएल अछि।)

सन्धि (त वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे न् आएल अछि।)

खम्भ (प वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे म् आएल अछि।)

ISSN 2229-547X VIDEHA
उपर्युक्त बात मैथिलीमे कम देखल जाइत अछि। पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइछ। जेना- अंक, पंच, खंड, संधि, खंभ आदि। व्याकरणविद पण्डित गोविन्द झाक कहब छनि जे कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व अनुस्वार लिखल जाए तथा तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षरे लिखल जाए। जेना- अंक, चंचल, अंडा, अन्त तथा कम्पन। मुदा हिन्दीक निकट रहल आधुनिक लेखक एहि बातकेँ नहि मानैत छथि। ओ लोकनि अन्त आ कम्पनक जगहपर सेहो अंत आ कंपन लिखैत देखल जाइत छथि।

नवीन पद्धति किछु सुविधाजनक अवश्य छैक। किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक बचत होइत छैक। मुदा कतोक बेर हस्तलेखन वा मुद्रणमे अनुस्वारक छोट सन बिन्दु स्पष्ट नहि भेलासँ अर्थक अनर्थ होइत सेहो देखल जाइत अछि। अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भावना सेहो ततबए देखल जाइत अछि। एतदर्थ कसँ लऽ कऽ पवर्ग धरि पञ्चमाक्षरेक प्रयोग करब उचित अछि। यसँ लऽ कऽ ज्ञ धरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग करबामे कतहु कोनो विवाद नहि देखल जाइछ।

२.*ढ आ ढ़* : ढ़क उच्चारण “र् ह”जकाँ होइत अछि। अतः जतऽ “र् ह”क उच्चारण हो ओतऽ मात्र ढ़ लिखल जाए। आन ठाम खाली ढ लिखल जएबाक चाही। जेना-

ढ = ढाकी, ढेकी, ढीठ, ढेउआ, ढङ्ग, ढेरी, ढाकनि, ढाठ आदि।

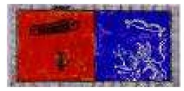
ढ़ = पढ़ाइ, बढ़ब, गढ़ब, मढ़ब, बुढ़बा, साँढ़, गाढ़, रीढ़, चाँढ़, सीढ़ी, पीढ़ी आदि।

उपर्युक्त शब्द सभकेँ देखलासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे साधारणतया शब्दक शुरूमे ढ आ मध्य तथा अन्तमे ढ़ अबैत अछि। इएह नियम ड आ ड़क सन्दर्भ सेहो लागू होइत अछि।

३.*व आ ब* : मैथिलीमे ''व''क उच्चारण ब कएल जाइत अछि, मुदा ओकरा ब रूपमे नहि लिखल जएबाक चाही। जेना- उच्चारण : बैद्यनाथ, बिद्या, नब, देबता, बिष्णु, बंश, बन्दना आदि। एहि सभक स्थानपर क्रमशः वैद्यनाथ, विद्या, नव, देवता, विष्णु, वंश, वन्दना लिखबाक चाही। सामान्यतया व उच्चारणक लेल ओ प्रयोग कएल जाइत अछि। जेना- ओकील, ओजह आदि।

४.*य आ ज* : कतहु-कतहु ''य''क उच्चारण ''ज''जकाँ करैत देखल जाइत अछि, मुदा ओकरा ज नहि लिखबाक चाही। उच्चारणमे यज्ञ, जदि, जमुना, जुग, जाबत, जोगी, जदु, जम आदि कहल जाएबला शब्द सभकेँ क्रमशः यज्ञ, यदि, यमुना, युग, यावत, योगी, यदु, यम लिखबाक चाही।

५.*ए आ य* : मैथिलीक वर्तनीमे ए आ य दुनू लिखल जाइत अछि।
प्राचीन वर्तनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि।
नवीन वर्तनी- कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।

ISSN 2229-547X VIDEHA

सामान्यतया शब्दक शुरूमे ए मात्र अबैत अछि। जेना एहि, एना, एकर, एहन आदि। एहि शब्द सभक स्थानपर यहि, यना, यकर, यहन आदिक प्रयोग नहि करबाक चाही। यद्यपि मैथिलीभाषी थारू सहित किछु जातिमे शब्दक आरम्भोमे ''ए''केँ य कहि उच्चारण कएल जाइत अछि।

ए आ ''य''क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पद्धतिक अनुसरण करब उपयुक्त मानि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएल गेल अछि। किएक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुरूहताक बात नहि अछि। आ मैथिलीक सर्वसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ बेसी निकट छैक। खास कऽ कएल, हएब आदि कतिपय शब्दकेँ कैल, हैब आदि रूपमे कतहु-कतहु लिखल जाएब सेहो ''ए''क प्रयोगकेँ बेसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि।

६.*हि, हु तथा एकार, ओकार* : मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोनो बातपर बल दैत काल शब्दक पाछाँ हि, हु लगाओल जाइत छैक। जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकरहु, तत्कालहि, चोट्टहि, आनहु आदि। मुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकार एवं हुक स्थानपर ओकारक प्रयोग करैत देखल जाइत अछि। जेना- हुनके, अपनो, तत्काले, चोट्टे, आनो आदि।

७.*ष तथा ख* : मैथिली भाषामे अधिकांशतः षक उच्चारण ख होइत अछि। जेना- षड्यन्त्र (खड़यन्त्र), षोडशी (खोड़शी), षट्कोण (खटकोण), वृषेश (वृखेश), सन्तोष (सन्तोख) आदि।

८.*ध्वनि-लोप* : निम्नलिखित अवस्थामे शब्दसँ ध्वनि-लोप भऽ जाइत अछि:

(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि। ओहिमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि। ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (' / ऽ) लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ए (पढ़य) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय) पड़तौक।

अपूर्ण रूप : पढ़' गेलाह, क' लेल, उठ' पड़तौक।

पढ़ऽ गेलाह, कऽ लेल, उठऽ पड़तौक।

(ख) पूर्वकालिक कृत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) लुप्त भऽ जाइछ, मुदा लोप-सूचक विकारी नहि लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : खाए (य) गेल, पठाय (ए) देब, नहाए (य) अएलाह।

अपूर्ण रूप : खा गेल, पठा देब, नहा अएलाह।

(ग) स्त्री प्रत्यय इक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनूमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : दोसरि मालिनि चलि गेलि।

अपूर्ण रूप : दोसर मालिन चलि गेल।

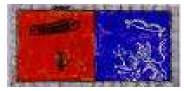
ISSN 2229-547X VIDEHA

(घ) वर्तमान कृदन्तक अन्तिम त लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-
पूर्ण रूप : पढ़ैत अछि, बजैत अछि, गबैत अछि।
अपूर्ण रूप : पढ़ै अछि, बजै अछि, गबै अछि।
(ङ) क्रियापदक अवसान इक, उक, ऐक तथा हीकमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-
पूर्ण रूप: छियौक, छियैक, छहीक, छौक, छैक, अबितैक, होइक।
अपूर्ण रूप : छियौ, छियै, छही, छौ, छै, अबितै, होइ।
(च) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, हु तथा हकारक लोप भऽ जाइछ। जेना-
पूर्ण रूप : छन्हि, कहलन्हि, कहलहुँ, गेलह, नहि।
अपूर्ण रूप : छनि, कहलनि, कहलौँ, गेलऽ, नइ, नजि, नै।

९.*ध्वनि स्थानान्तरण* : कोनो-कोनो स्वर-ध्वनि अपना जगहसँ हटि कऽ दोसर ठाम चलि जाइत अछि। खास कऽ ह्रस्व इ आ उक सम्बन्धमे ई बात लागू होइत अछि। मैथिलीकरण भऽ गेल शब्दक मध्य वा अन्तमे जँ ह्रस्व इ वा उ आबए तँ ओकर ध्वनि स्थानान्तरित भऽ एक अक्षर आगाँ आबि जाइत अछि। जेना- शनि (शइन), पानि (पाइन), दालि (दाइल), माटि (माइट), काछु (काउछ), मासु (माउस) आदि। मुदा तत्सम शब्द सभमे ई निअम लागू नहि होइत अछि। जेना- रश्मिकेँ रइश्म आ सुधांशुकेँ सुधाउंस नहि कहल जा सकैत अछि।

१०.*हलन्त()क प्रयोग* : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त ()क आवश्यकता नहि होइत अछि। कारण जे शब्दक अन्तमे अ उच्चारण नहि होइत अछि। मुदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आएल (तत्सम) शब्द सभमे हलन्त प्रयोग कएल जाइत अछि। एहि पोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शब्दकेँ मैथिली भाषा सम्बन्धी निअम अनुसार हलन्तविहीन राखल गेल अछि। मुदा व्याकरण सम्बन्धी प्रयोजनक लेल अत्यावश्यक स्थानपर कतहु-कतहु हलन्त देल गेल अछि। प्रस्तुत पोथीमे मथिली लेखनक प्राचीन आ नवीन दुनू शैलीक सरल आ समीचीन पक्ष सभकेँ समेटि कऽ वर्ण-विन्यास कएल गेल अछि। स्थान आ समयमे बचतक सङ्गहि हस्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सरल होबऽबला हिसाबसँ वर्ण-विन्यास मिलाओल गेल अछि। वर्तमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेबऽ पड़ि रहल परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एकरूपतापर ध्यान देल गेल अछि। तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषता सभ कुण्ठित नहि होइक, ताहू दिस लेखक-मण्डल सचेत अछि। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक कहब छनि जे सरलताक अनुसन्धानमे एहन अवस्था किन्नहु ने आबऽ देबाक चाही जे भाषाक विशेषता छाँहमे पडि जाए।

-(भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग लऽ निर्धारित)

ISSN 2229-547X VIDEHA

१.२. मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

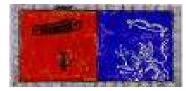
१. जे शब्द मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आइ धरि जाहि वर्त्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि वर्त्तनीमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह्य

एखन
ठाम
जकर, तकर
तनिकर
अछि

अग्राह्य
अखन, अखनि, एखेन, अखनी
ठिमा, ठिना, ठमा
जेकर, तेकर
तिनकर। (वैकल्पिक रूपेँ ग्राह्य)
ऐछ, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप वैकल्पिकतया अपनाओल जाय:

भऽ गेल, भय गेल वा भए गेल। जा रहल अछि, जाय रहल अछि, जाए रहल अछि। कर' गेलाह, वा करय गेलाह वा करए गेलाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत अछि यथा कहलनि वा कहलन्हि।

४. 'ऐ' तथा 'औ' ततय लिखल जाय जत' स्पष्टतः 'अइ' तथा 'अउ' सदृश उच्चारण इष्ट हो। यथा- देखैत, छलैक, बौआ, छौक इत्यादि।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि रूपे प्रयुक्त होयत: जैह, सैह, इएह, ओऐह, लैह तथा दैह।

६. ह्रस्व इकारांत शब्दमे 'इ' के लुप्त करब सामान्यतः अग्राह्य थिक। यथा- ग्राह्य देखि आबह, मालिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे)।

७. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उद्धरण आदिमे तँ यथावत राखल जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे वैकल्पिक रूपेँ 'ए' वा 'य' लिखल जाय। यथा:- कयल वा कएल, अयलाह वा अएलाह, जाय वा जाए इत्यादि।

८. उच्चारणमे दू स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आबि जाइत

अछि तकरा लेखमे स्थान वैकल्पिक रूपेँ देल जाय। यथा- धीआ, अढ़ैआ, विआह, वा धीया, अढ़ैया, बियाह।

९. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभव 'ञ' लिखल जाय वा सानुनासिक स्वर। यथा:- मैञा, कनिञा, किरतनिञा वा मैआँ, कनिआँ, किरतनिआँ।

१०. कारकक विभक्तिक निम्नलिखित रूप ग्राह्य:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। 'मे' मे अनुस्वार सर्वथा त्याज्य थिक। 'क' क वैकल्पिक रूप 'केर' राखल जा सकैत अछि।

११. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद 'कय' वा 'कए' अव्यय वैकल्पिक रूपेँ लगाओल जा सकैत अछि। यथा:- देखि कय वा देखि कए।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माङ, भाङ इत्यादि लिखल जाय।

१३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क बदला अनुसार नहि लिखल जाय, किंतु छापाक सुविधार्थ अर्द्ध 'ङ' , 'ञ', तथा 'ण' क बदला अनुस्वारो लिखल जा सकैत अछि। यथा:- अङ्क, वा अंक, अञ्चल वा अंचल, कण्ठ वा कंठ।

१४. हलंत चिह्न निअमतः लगाओल जाय, किंतु विभक्तिक संग

अकारांत प्रयोग कएल जाय। यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक।

१५. सभ एकल कारक चिह्न शब्दमे सटा क' लिखल जाय, हटा क' नहि, संयुक्त विभक्तिक हेतु फराक लिखल जाय, यथा घर परक।

१६. अनुनासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वारा व्यक्त कयल जाय। परंतु मुद्रणक सुविधार्थ हि समान जटिल मात्रापर अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक बदला कयल जा सकैत अछि। यथा- हिँ केर बदला हिं।

१७. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयल जाय।

१८. समस्त पद सटा क' लिखल जाय, वा हाइफेनसँ जोड़ि क' , हटा क' नहि।

१९. लिअ तथा दिअ शब्दमे बिकारी (ऽ) नहि लगाओल जाय।

२०. अंक देवनागरी रूपमे राखल जाय।

२१.किछु ध्वनिक लेल नवीन चिन्ह बनबाओल जाय। जा' ई नहि बनल अछि ताबत एहि दुनू ध्वनिक बदला पूर्ववत् अय/ आय/ अए/

आए/ आओ/ अओ लिखल जाय। आकि ऐ वा औ सँ व्यक्त कएल जाय।

ह./- गोविन्द झा ११/८/७६ श्रीकान्त ठाकुर ११/८/७६ सुरेन्द्र झा "सुमन" ११/०८/७६

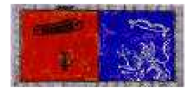
२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

२.१. उच्चारण निर्देश: (*बोल्ड कएल रूप ग्राह्य):-*

दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सटत- जेना बाजू नाम , मुदा ण क उच्चारणमे जीह मूर्धामे सटत (नै सटैए तँ उच्चारण दोष अछि)- जेना बाजू गणेश। तालव्य ***श****मे जीह तालुसँ ,* ***ष****मे मूर्धासँ आ दन्त* ***स****मे दाँतसँ सटत। निशाँ, सभ आ शोषण बाजि कऽ देखू। मैथिलीमे* ***ष*** *केँ वैदिक संस्कृत जकाँ* ***ख*** *सेहो उच्चरित कएल जाइत अछि, जेना वर्षा, दोष। य अनेको स्थानपर ज जकाँ उच्चरित होइत अछि आ ण ड़ जकाँ (यथा संयोग आ गणेश* ***संजोग*** *आ*

गड़ेस *उच्चरित होइत अछि)। मैथिलीमे व क उच्चारण ब, श क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होइत अछि।*

ओहिना ह्रस्व इ बेशीकाल मैथिलीमे पहिने बाजल जाइत अछि कारण देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे ह्रस्व इ अक्षरक पहिने लिखलो जाइत आ बाजलो जएबाक चाही। कारण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उच्चारण होइत अछि (लिखल तँ पहिने जाइत अछि मुदा बाजल

बादमे जाइत अछि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक कारण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ढंगसँ कऽ रहल छी।

अछि- अ इ छ **ऐछ (उच्चारण)**

छथि- छ इ थ छैथ **(उच्चारण)**

पहुँचि- प हुँ इ च **(उच्चारण)**

आब अ आ इ ई ए ऐ ओ औ अं अः ऋ ऐ सभ लेल मात्रा सेहो अछि, मुदा ऐमे ई ऐ ओ औ अं अः ऋ केँ संयुक्ताक्षर रूपमे गलत रूपमे प्रयुक्त आ उच्चरित कएल जाइत अछि। जेना ऋ केँ री रूपमे उच्चरित करब। आ देखियौ- ऐ लेल देखिऔ क प्रयोग अनुचित। मुदा देखिऐ लेल देखियै अनुचित। क् सँ ह् धरि अ सम्मिलित भेलासँ क सँ ह बनैत अछि, मुदा उच्चारण काल हलन्त युक्त शब्दक अन्तक उच्चारणक प्रवृत्ति बढ़ल अछि, मुदा हम जखन मनोजमे ज् अन्तमे बजैत छी, तखनो पुरनका लोककेँ बजैत सुनबन्हि- मनोजऽ, वास्तवमे ओ अ युक्त ज् = ज बजै छथि। फेर ज्ञ अछि ज् आ ञ क संयुक्त मुदा गलत उच्चारण होइत अछि- ग्य। ओहिना क्ष अछि क् आ ष क संयुक्त मुदा उच्चारण होइत अछि छ। फेर श् आ र क संयुक्त अछि श्र (जेना श्रमिक) आ स् आ र क संयुक्त अछि स्र (जेना मिस्र)। त्र भेल त+र ।

उच्चारणक ऑडियो फाइल विदेह आर्काइव http://www.videha.co.in/ पर उपलब्ध अछि। फेर **केँ / सँ / पर** पूर्व अक्षरसँ सटा कऽ लिखू मुदा **तँ / कऽ** हटा कऽ। **ऐमे**

ISSN 2229-547X VIDEHA

सँ मे पहिल सटा कऽ लिखू आ बादबला हटा कऽ। अंकक बाद टा लिखू सटा कऽ मुदा अन्य ठाम टा लिखू हटा कऽ जेना ***छहटा*** मुदा ***सभ टा***। फेर ६अ म सातम लिखू- छठम सातम नै। घरबलामे ***बला*** मुदा घरवालीमे ***वाली*** प्रयुक्त करू।

रहए-

रहै मुदा सकैए (उच्चारण सकै-ए)।

मुदा कखनो काल रहए आ रहै मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्मो जगहमे पार्किंग करबाक अभ्यास ***रहै*** ओकरा। पुछलापर पता लागल जे ढुनढुन नाम्रा ई ड्राइवर कनाट प्लेसक पार्किंगमे काज करैत ***रहए***।

छलै, छलए मे सेहो ऐ तरहक भेल। छलए क उच्चारण छल-ए सेहो।

संयोगने- (उच्चारण ***संजोगने)***

कँे कऽ

केर- ***क*** (

केर क प्रयोग गद्यमे नै करू , पद्यमे कऽ सकै छी।)

क (जेना रामक)

रामक आ संगे (उच्चारण ***राम के*** / ***राम कऽ*** सेहो)

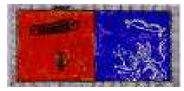
सँ- सऽ ***(उच्चारण)***

चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वार- अनुस्वारमे कंठ धरिक प्रयोग होइत अछि मुदा चन्द्रबिन्दुमे नै। चन्द्रबिन्दुमे कनेक एकारक सेहो उच्चारण

होइत अछि- जेना रामसँ- (उच्चारण राम सऽ) रामकेँ- (उच्चारण राम कऽ/ राम के सेहो)।

केँ जेना रामकेँ भेल हिन्दीक को (राम को)- राम को= रामकेँ
क जेना रामक भेल हिन्दीक का (राम का) राम का= रामक
कऽ जेना जा कऽ भेल हिन्दीक कर (जा कर) जा कर= जा कऽ
सँ भेल हिन्दीक से (राम से) राम से= रामसँ
सऽ , तऽ , त , केर (गद्यमे) ऐ चारू शब्द सबहक प्रयोग अवांछित।
के दोसर अर्थेँ प्रयुक्त भऽ सकैए- जेना, के कहलक? विभक्ति "क"क बदला एकर प्रयोग अवांछित।
नञि, नहि, नै, नइ, नँइ, नइँ, नइं ऐ सभक उच्चारण आ लेखन - **नै**

त्त्व क बदलामे त्व जेना महत्वपूर्ण (महत्त्वपूर्ण नै) जतए अर्थ बदलि जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक संयुक्ताक्षरक प्रयोग उचित। सम्पति- उच्चारण स म्प इ त (सम्पत्ति नै- कारण सही उच्चारण आसानीसँ सम्भव नै)। मुदा सर्वोत्तम (सर्वोतम नै)।
राष्ट्रिय (राष्ट्रीय नै)
सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)
पोछैले/ पोछै लेल/ **पोछए लेल**

ISSN 2229-547X VIDEHA

पोछैए/ पोछए/ *(अर्थ परिवर्तन)* ***पोछए/ पोछै***

ओ लोकनि (हटा कऽ, ओ मे बिकारी नै)

ओइ/ *ओहि*

ओहिले/

ओहि लेल/ ओही लऽ

जएबेँ/ बैसबेँ

पँचभइयाँ

देखियौक/ *(देखिऔक नै- तहिना अ मे ह्रस्व आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अनुचित)*

जकाँ */ जेकाँ*

तँइ/ ***तँए***

होएत / ***हएत***

नञि/ नहि/ *नँइ/ नइँ/ नै*

सौँसे/ सौँसे

बड़ /

बड़ी *(झोराओल)*

गाए (गाइ नहि), मुदा गाइक दूध (गाएक दूध नै।)

रहलेँ/ पहिरतैँ

हमहीं/ अहीं

सब - ***सभ***

सबहक *- सभहक*

धरि *- तक*

गप- बात

बूझब - समझब

बुझलौं/ समझलौं/ बुझलहुँ - समझलहुँ

हमरा आर - हम सभ

आकि- आ कि

सकैछ/ करैछ (गद्यमे प्रयोगक आवश्यकता नै)

होइन/ होनि

जाइन (जानि नै, जेना देल जाइन) मुदा **जानि**-बूझि (अर्थ परिवर्तन)

पइठ/ जाइठ

आउ/ जाउ/ आऊ/ जाऊ

मे, कें, सँ, पर (शब्दसँ सटा कऽ) तँ कऽ धऽ दऽ (शब्दसँ हटा कऽ) मुदा दूटा वा बेसी विभक्ति संग रहलापर पहिल विभक्ति टाकेँ सटाऊ। जेना **ऐमे सँ ।**

एकटा , दूटा (मुदा **कए टा)**

बिकारीक प्रयोग शब्दक अन्तमे, बीचमे अनावश्यक रूपेँ नै। आकारान्त आ अन्तमे अ क बाद बिकारीक प्रयोग नै (जेना **दिअ , आ**/ दिय' , आ', आ नै)

अपोस्ट्रोफीक प्रयोग बिकारीक बदलामे करब अनुचित आ मात्र फॉन्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)- ओना बिकारीक संस्कृत रूप ऽ अवग्रह कहल जाइत अछि आ वर्तनी आ उच्चारण दुनू ठाम एकर लोप रहैत अछि/ रहि सकैत अछि (उच्चारणमे लोप रहिते अछि)। मुदा अपोस्ट्रोफी सेहो अंग्रेजीमे पसेसिव केसमे होइत अछि

ISSN 2229-547X VIDEHA

आ फ्रेंचमे शब्दमे जतए एकर प्रयोग होइत अछि जेना raison d'etre एतए सेहो एकर उच्चारण रैजौन डेटर होइत अछि, माने अपोस्ट्रॉफी अवकाश नै दैत अछि वरन जोड़ैत अछि, से एकर प्रयोग बिकारीक बदला देनाइ तकनीकी रूपेँ सेहो अनुचित)।

अइमे, एहिमे/ **ऐमे**

जइमे, जाहिमे

एखन/ **अखन/** अइखन

कँ (के नहि) **मे** (अनुस्वार रहित)

भऽ

मे

दऽ

तँ (तऽ, त नै**)**

सँ (सऽ स नै**)**

गाछ तर

गाछ लग

साँझ खन

जो (जो go, करै जो do)

तै/तइ जेना- तै दुआरे/ तइमे/ तइले

जै/जइ जेना- जै कारण/ जइसँ/ जइले

ऐ/अइ जेन- ऐ कारण/ ऐसँ/ अइले/ मुदा एकर एकटा खास प्रयोग- लालति कतेक दिनसँ कहैत रहैत अइ

लै/लइ *जेना लैसँ/ लइले/ लै दुआरे*

लहँ/ ***लौँ***

गेलौँ/ लेलौँ/ लेलँह/ *गेलहुँ/ लेलहुँ/ लेलँ*

जइ/ *जाहि/* ***जै***

जहिठाम/ जाहिठाम/ ***जइठाम/ जैठाम***

एहि/ ***अहि/***

अइ ***(वाक्यक अंतमे ग्राह्य) / ऐ***

अइछ/ ***अछि/*** *ऐछ*

तइ/ *तहि/* ***तै/*** *ताहि*

ओहि/ ***ओइ***

सीखि/ ***सीख***

जीवि/ जीवी/ ***जीब***

भलेहीं/ ***भलहिं***

तैं/ *तँइ/* ***तएँ***

जाएब/ *जएब*

लइ/ ***लै***

छइ/ ***छै***

नहि/ ***नै/*** *नइ*

गइ/ ***गै***

छनि/ छन्हि *...*

समए शब्दक संग जखन कोनो विभक्ति जुटै छै तखन समै जना समैपर इत्यादि। असगरमे **हृदए** आ विभक्ति जुटने हृदे जना हृदेसँ, हृदेमे इत्यादि।

जइ/ जाहि/

जै

जहिठाम/ जाहिठाम/ **जइठाम**/ जैठाम

एहि/ अहि/ अइ/ **ऐ**

अइछ/ **अछि**/ ऐछ

तइ/ तहि/ **तै**/ ताहि

ओहि/ **ओइ**

सीखि/ **सीख**

जीवि/ जीवी/

जीब

भले/ भलेहीं/

भलहिं

तैं/ तँइ/ **तएँ**

जाएब/ जएब

लइ/ **लै**

छइ/ **छै**

नहि/ **नै**/ नइ

गइ/

गै

छनि/ छन्हि

*चुकल अछि/ **गेल गछि***

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

नीचाँक सूचीमे देल विकल्पमेसँ लैंगुएज एडीटर द्वारा कोन रूप चुनल जेबाक चाही:

बोल्ड कएल रूप ग्राह्य:

*१.होयबला/ होबयबला/ होमयबला/ हेब'बला, हेम'बला/ होयबाक/**होबएबला** /**होएबाक***

२. आ'/आऽ

आ

*३. क' लेने/**कऽ लेने**/**कए लेने**/कय लेने/ल'/**लऽ**/लय/**लए***

*४. भ' गेल/**भऽ गेल**/भय गेल/**भए***

गेल

*५. कर' गेलाह/**करऽ***

***गेलह**/**करए गेलाह**/करय गेलाह*

६.

***लिअ/दिअ** लिय',दिय',लिअ',दिय'/*

*७. कर' बला/**करऽ बला**/ करय बला **करैबला**/क'र' बला /*

करैवाली

*८. **बला** वला (पुरूष), वाली (स्त्री) ९*

.

आङ्ल आंग्ल

१०. ***प्रायः*** *प्रायह*

११. ***दुःख*** *दुख १*

२. चलि गेल ***चल गेल****/चैल गेल*

१३. ***देलखिन्ह*** *देलकिन्ह,* ***देलखिन***

१४.

देखलन्हि देखलनि*/ देखलैन्ह*

१५. ***छथिन्ह****/ छलन्हि* ***छथिन****/ छलैन/* ***छलनि***

१६. ***चलैत/दैत*** *चलति/दैति*

१७. *एखनो*

अखनो

१८.

बढ़नि *बढ़इन* ***बढ़न्हि***

१९. *ओ'/ओऽ(सर्वनाम)* ***ओ***

२०

. ***ओ*** *(संयोजक) ओ'/ओऽ*

२१. ***फाँगि****/फाङ्गि फाइंग/फाइङ*

२२.

जे *जे'/जेऽ २३.* ***ना-नुकुर*** *ना-नुकर*

२४. ***केलन्हि/केलनि****/कयलन्हि*

२५. *तखनतँ/* ***तखन तँ***

२६. ***जा***

रहल*/जाय रहल/****जाए रहल***

२७. निकलय/**निकलए**

लागल/ लगल *बहराय/* ***बहराए लागल/ लगल*** *निकल'/बहरै लागल*

२८. ओतय/ जतय जत'/ ओत'/ **जतए/ ओतए**

२९.

की फूरल जे *कि फूरल जे*

३०. **जे** जे'/जेऽ

३१. **कूदि** / **यादि**(मोन पारब) कूइद/याइद/कूद/याद/

यादि (मोन)

३२. **इहो/ ओहो**

३३.

हँसए/ *हँसय* ***हँसऽ***

३४. **नौ आकि दस**/नौ किंवा दस/ नौ वा दस

३५. **सासु-ससुर** सास-ससुर

३६. **छह/ सात** छ/छः/सात

३७.

की *की'/ कीऽ (दीर्घीकारान्तमे ऽ वर्जित)*

३८. **जबाब** जवाब

३९. **करएताह/ करेताह** करयताह

४०. दलान दिशि दलान दिश/**दलान दिस**

४१

. **गेलाह** गएलाह/गयलाह

४२. **किछु आर/** किछु और/ किछ आर

४३. ***जाइ छल/ जाइत छल*** *जाति छल/जैत छल*

४४. ***पहुँचि/ भेट जाइत छल/ भेट जाइ छलए*** *पहुँच/ भेटि जाइत छल*

४५.

जबान *(युवा)/* ***जवान****(फौजी)*

४६. *लय/* ***लए*** *क'/* ***कऽ/ लए कए*** */* ***लऽ कऽ/ लऽ कए***

४७. *ल'/****लऽ*** *कय/*

कए

४८. *एखन / एखने /* ***अखन / अखने***

४९.

अहींकेँ *अहीँकेँ*

५०. ***गहींर*** *गहीँर*

५१.

धार पार केनाइ *धार पार केनाय/केनाए*

५२. *जेकाँ जेँकाँ/*

जकाँ

५३. ***तहिना*** *तेहिना*

५४. ***एकर*** *अकर*

५५. ***बहिनउ*** *बहनोइ*

५६. ***बहिन*** *बहिनि*

५७. *बहिन-बहिनोइ*

बहिन-बहनउ

५८. नहि/ ***नै***

५९. ***करबा*** / करबाय/ ***करबाए***

६०. ***तँ***/ त ऽ तय/***तए***

६१. भैयारी मे छोट-***भाए/***भै/, जेठ-***भाय/भाइ,***

६२. गिनतीमे ***दू*** भाइ/भाए/***भाँइ***

६३. ई पोथी दू ***भाइक/*** भाँइ/ भाए/ लेल। यावत ***जावत***

६४. माय मै / ***माए*** मुदा ***माइक ममता***

६५. ***दैन्हि***/ ***दइन*** दनि/ दएन्हि/ दयन्हि ***दन्हि***/ दैन्हि

६६. द'/ ***दऽ***/ ***दए***

६७. ***ओ*** (संयोजक) ओऽ (सर्वनाम)

६८. ***तका*** कए तकाय ***तकाए***

६९. पैरे (on foot) ***पएरे कएक***/ कैक

७०.

ताहुमे/ ताहूमे

७१.

पुत्रीक

७२.

बजा कय/ ***कए*** / ***कऽ***

७३. बननाय/***बननाइ***

७४. ***कोला***

७५.

दिनुका दिनका

७६.

ततहिसँ

७७. गरबओलन्हि/ ***गरबौलनि/***

गरबेलन्हि/ ***गरबेलनि***

७८. ***बालु*** बालू

७९.

चेन्ह चिन्ह(अशुद्ध)

८०. ***जे*** जे'

८१

. ***से/ के*** से'/के'

८२. ***एखुनका*** अखनुका

८३. भुमिहार ***भूमिहार***

८४. ***सुगर***

/ सुगरक/ सूगर

८५. ***झठहाक*** झटहाक ८६.

छूबि

८७. करइयो/ओ ***करैयो ने देलक /करियौ-***करइयौ

८८. ***पुबारि***

पुबाइ

८९. झगड़ा-झाँटी

झगड़ा-झाँटि

९०. ***पएरे-पएरे*** पैरे-पैरे

९१. ***खेलएबाक***

९२. ***खेलेबाक***

९३. ***लगा***

९४. ***होए- हो होअए***

९५. ***बुझल*** *बूझल*

९६.

बूझल *(संबोधन अर्थमे)*

९७. *यैह* ***यएह*** */* ***इएह/*** *सैह****/ सएह***

९८. ***तातिल***

९९. *अयनाय- अयनाइ/* ***अएनाइ/ एनाइ***

१००. ***निन्न****- निन्द*

१०१.

बिनु *बिन*

१०२. ***जाए*** *जाइ*

१०३.

जाइ *(in different sense)-last word of sentence*

१०४. ***छत पर आबि जाइ***

१०५.

ने

१०६. ***खेलाए*** *(play)* ***खेलाइ***

१०७. ***शिकाइत****- शिकायत*

१०८.

ISSN 2229-547X VIDEHA

ढप- ढ़प

१०९

. ***पढ़***- ***पढ***

११०. कनिए/ ***कनिये*** कनिञे

१११. ***राकस***- राकश

११२. ***होए***/ होय ***होइ***

११३. अउरदा-

औरदा

११४. ***बुझेलन्हि*** (different meaning- got understand)

११५. बुझएलन्हि/***बुझेलनि***/ बुझयलन्हि (understood himself)

११६. चलि- ***चल/ चलि गेल***

११७. ***खधाइ***- खधाय

११८.

मोन पाड़लखिन्ह/ मोन पाड़लखिन/ मोन पारलखिन्ह

११९. कैक- ***कएक- कइएक***

१२०.

लग ल'ग

१२१. ***जरेनाइ***

१२२. ***जरौनाइ*** जरओनाइ- जरएनाइ/

जरेनाइ

१२३. ***होइत***

१२४.

गरबेलन्हि/ ***गरबेलनि*** *गरबौलन्हि****/ गरबौलनि***

१२५.

चिखैत*- (to test)चिखइत*

१२६. ***करइयो*** *(willing to do) करैयो*

१२७. जेकरा- ***जकरा***

१२८. ***तकरा****- तेकरा*

१२९.

बिदेसर स्थानेमे*/* ***बिदेसरे स्थानमे***

१३०. करबयलहुँ/ करबएलहुँ/ करबेलहुँ ***करबेलौँ***

१३१.

हारिक *(उच्चारण हाइरक)*

१३२. ***ओजन*** *वजन* ***आफसोच****/ अफसोस* ***कागत/ कागच/*** *कागज*

१३३. ***आधे भाग****/* ***आध-भागे***

१३४. ***पिचा*** */ पिचाय/****पिचाए***

१३५. नञ/ ***ने***

१३६. ***बच्चा*** *नञ*

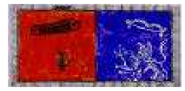
(ने) पिचा जाय

१३७. ***तखन ने*** *(नञ)* ***कहैत अछि। कहै/ सुनै/ देखै छल*** *मुदा* ***कहैत-कहैत/ सुनैत-सुनैत/ देखैत-देखैत***

१३८.

कतेक गोटे*/ कताक गोटे*

१३९. ***कमाइ-धमाइ/*** *कमाई- धमाई*

ISSN 2229-547X VIDEHA

१४०

. **लग** ल'ग

१४१. **खेलाइ** (for playing)

१४२.

छथिन्ह/ छथिन

१४३.

होइत होइ

१४४. क्यो **कियो** / केओ

१४५.

केश (hair)

१४६.

केस (court-case)

१४७

. **बननाइ**/ बननाय/ बननाए

१४८. **जरेनाइ**

१४९. **कुरसी** कुर्सी

१५०. **चरचा** चर्चा

१५१. **कर्म** करम

१५२. डुबाबए**/** डुबाबै**/ डुमाबै** डुमाबय/ **डुमाबए**

१५३. एखुनका/

अखुनका

१५४. **लए/ लिअए** (वाक्यक अंतिम शब्द)- **लऽ**

१५५. कएलक/

केलक

१५६. ***गरमी*** *गर्मी*

१५७

. ***वरदी*** *वर्दी*

१५८. ***सुना गेलाह*** *सुन'/सुनाऽ*

१५९. ***एनाइ-गेनाइ***

१६०.

तेना ने घेरलन्हि/ तेना ने घेरलनि

१६१. *नञि* / ***नै***

१६२.

डरो *ड'रो*

१६३. ***कतहु/ कतौ*** *कहीं*

१६४. *उमरिगर-**उमेरगर*** *उमरगर*

१६५. ***भरिगर***

१६६. *धोल/**धोअल*** *धोएल*

१६७. *गप/**गप्प***

१६८.

के *के'*

१६९. ***दरबज्जा****/ दरबजा*

१७०. ***ढाम***

१७१.

ISSN 2229-547X VIDEHA

धरि तक

१७२.

घूरि लौटि

१७३. **थोरबेक**

१७४. **बड़ड**

१७५. **तोँ**/ **तूँ**

१७६. तोँहि(पद्यमे ग्राह्य)

१७७. **तोँही / तोँहि**

१७८.

करबाइए करबाइये

१७९. **एकेटा**

१८०. **करितथि** /करतथि

१८१.

पहुँचि/ पहुँच

१८२. राखलन्हि **रखलन्हि/ रखलनि**

१८३.

लगलन्हि/ लगलनि लागलन्हि

१८४.

सुनि (उच्चारण सुइन)

१८५. **अछि** (उच्चारण अइछ)

१८६. **एलथि गेलथि**

१८७. बितओने/ **बितौने/**

बितेने

१८८. करबओलन्हि/ ***करबौलनि/***

करेलखिन्ह/ करेलखिन

१८९. करएलन्हि/ ***करेलनि***

१९०.

आकि/ कि

१९१. ***पहुँचि/***

पहुँच

१९२. बत्ती जराय/ ***जराए जरा*** *(आगि लगा)*

१९३.

से *से'*

१९४.

हाँ मे हाँ *(हाँमे हाँ विभक्तिमे हटा कए)*

१९५. ***फेल*** *फैल*

१९६. ***फइल****(spacious) फैल*

१९७. होयतन्हि/ होएतन्हि/ ***होएतनि/हेतनि/ हेतन्हि***

१९८. ***हाथ मटिआएब****/ हाथ मटियाबय/हाथ मटियाएब*

१९९. ***फेका*** *फेंका*

२००. ***देखाए देखा***

२०१. ***देखाबए***

२०२. ***सत्तरि*** *सत्तर*

२०३.

साहेब *साहब*

२०४.गेलैन्ह/ ***गेलन्हि/ गेलनि***

२०५. ***हेबाक****/* ***होएबाक***

*२०६.केलो/ कएलहुँ/****केलौं/*** *केलुँ*

२०७. किछु न किछु/

किछु ने किछु

२०८.घुमेलहुँ/ घुमओलहुँ/ ***घुमेलौं***

२०९. ***एलाक****/ अएलाक*

२१०. ***अः****/ अह*

२११.लय/

लए *(अर्थ-परिवर्त्तन) २१२.कनीक/* ***कनेक***

*२१३.****सबहक/*** *सभक*

२१४.मिलाऽ/ ***मिला***

*२१५.****कऽ****/ क*

२१६.जाऽ/

जा

२१७.आऽ/ ***आ***

*२१८.****भऽ*** */भ' (' फॉन्टक कमीक द्योतक)*

*२१९.****निअम****/ नियम*

२२०

.हेक्टेअर*/ हेक्टेयर*

*२२१.****पहिल अक्षर ढ/ बादक/ बीचक ढ़***

२२२.तहिं/**तहिँ**/ तञि/ **तँ**

२२३.कहिं/ **कहीं**

२२४.**तइं**/

तँ / तइँ

२२५.नइं/ नइँ/ नञि/ नहि**/नै**

२२६.है/ **हए** / **एलीहें**/

२२७.छञि/ **छै**/ छैक /छइ

२२८.**दृष्टिएँ**/ दृष्टियेँ

२२९.**आ** (come)/ आऽ(conjunction)

२३०.

आ (conjunction)/ आऽ(come)

२३१.**कुनो**/ **कोनो,** कोना/**केना**

२३२.गेलैन्ह-**गेलन्हि-गेलनि**

२३३.**हेबाक**- होएबाक

२३४.केलौँ- कएलौँ-कएलहुँ/**केलौं**

२३५.किछु न किछ- **किछु ने किछु**

२३६.केहेन- **केहन**

२३७.आऽ (come)-**आ** (conjunction-and)/**आ।** आब'-आब'

/आबह-आबह

२३८. **हएत**-हैत

२३९.घुमेलहुँ-घुमएलहुँ- **घुमेलौं**

२४०.**एलाक**- अएलाक

ISSN 2229-547X VIDEHA

२४१.होन्‍नि **होइन/ होन्हि/**

२४२.**ओ**-राम ओ श्यामक बीच(conjunction), ओऽ कहलक (he said)/**ओ**

२४३.**की हए/ कोसी अएली हए**/ की है। की हइ

२४४.**दृष्टिएँ** दृष्टियेँ

२४५

.**शामिल**/ सामेल

२४६.तँ / **तँए**/ तञि/ तहिं

२४७.**जौँ**

/ ज्योँ/ जँ

२४८.**सभ**/ सब

२४९.सभक/ **सबहक**

२५०.कहिं/ **कहीं**

२५१.**कुनो/ कोनो/** कोनहुँ/

२५२.**फारकती भऽ गेल**/ **भए गेल**/ भय गेल

२५३.**कोना/ केना/** कन्न/**कना**

२५४.**अः**/ अह

२५५.**जनै**/ जनञ

२५६.**गेलनि/**

गेलाह (अर्थ परिवर्तन)

२५७.केलन्हि/ कएलन्हि/ **केलनि/**

२५८.लय/ **लए/ लएह (**अर्थ परिवर्तन)

२५९.**कनीक**/ **कनेक/कनी-मनी**

२६०.**पढेलन्हि पढेलनि/** पठेलइन/ पपठओलन्हि/ **पठबौलनि/**

२६१.**निअम/** नियम

२६२.**हेक्टेअर**/ हेक्टेयर

२६३.पहिल अक्षर रहने ढ/ बीचमे रहने ढ़

२६४.आकारान्तमे बिकारीक प्रयोग उचित नै/ अपोस्ट्रोफीक प्रयोग फान्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक ओकर बदला अवग्रह (बिकारी) क प्रयोग उचित

२६५.**केर (पद्यमे ग्राह्य) / -क**/ कऽ/ के

२६६.छैन्हि- **छन्हि**

२६७.**लगैए/** लगैये

२६८.होएत/ **हएत**

२६९.**जाएत**/ जएत/

२७०.**आएत/** अएत/ **आओत**

२७१

.**खाएत**/ खएत/ खैत

२७२.पिअएबाक/ **पिएबाक/पियेबाक**

२७३.**शुरु**/ **शुरुह**

२७४.**शुरुहे**/ **शुरुए**

२७५.अएताह/अओताह/ **एताह/ औताह**

२७६.जाहि/ जाइ/ **जइ**/ **जै/**

२७७.**जाइत**/ जैतए/ **जइतए**

२७८.**आएल**/ अएल

२७९.कैक/ **कएक**

२८०.आयल/ अएल/ **आएल**

२८१. **जाए**/ जअए/ जए (लालति जाए लगलीह।)

२८२. नुकएल/ **नुकाएल**

२८३. **कठुआएल**/ कठुअएल

२८४. ताहि/ **तै/ तइ**

२८५. गायब/ **गाएब**/ गएब

२८६. **सकै**/ **सकए**/ सकय

२८७.**सेरा/सरा**/ **सराए** (भात सरा गेल)

२८८.**कहैत रही/देखैत रही/ कहैत छलौं/ कहै छलौं- अहिना चलैत/ पढ़ैत**

(पढ़ै-पढ़ैत अर्थ कखनो काल परिवर्तित) - आर बुझै/ बुझैत (बुझै/ बुझै छी, मुदा बुझैत-बुझैत)/ सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। छैक/ छै। बचलै/ बचलैक। रखबा/ रखबाक । बिनु/ बिन। रातिक/ रातुक बुझै आ बुझैत केर अपन-अपन जगहपर प्रयोग समीचीन अछि। बुझैत-बुझैत आब बुझलिऐ। हमहूँ बुझै छी।

२८९. **दुआरे**/ **द्वारे**

२९०.भेटि/ भेट/ **भेँट**

२९१.

खन/ खीन/ खुना (भोर खन/ भोर खीन)

२९२.तक/ **धरि**

२९३.**गऽ**/ **गै** (meaning different-जनबै गऽ)

२९४.सऽ/ **सँ** (मुदा दऽ, लऽ)

२९५.त्त्व,(तीन अक्षरक मेल बदला पुनरुक्तिक एक आ एकटा दोसरक उपयोग) आदिक बदला त्व आदि। महत्त्व/ **महत्व**/ **कर्ता**/ कर्त्ता आदिमे त्त संयुक्तक कोनो आवश्यकता मैथिलीमे नै अछि।

वक्तव्य

२९६.**बेसी**/ बेशी

२९७.बाला/वाला **बला**/ वला (रहैबला)

२९८

.वाली/ (बदलैवाली)

२९९.वार्त्ता/ **वार्ता**

३००. **अन्तर्राष्ट्रिय**/ अन्तर्राष्ट्रीय

३०१. **लेमए**/ **लेबए**

३०२.**लमछुरका**, **नमछुरका**

३०२.**लागै**/ **लगै** (

भेटैत/ **भेटै**)

३०३.**लागल**/ **लगल**

३०४.हबा/ **हवा**

३०५.**राखलक**/ **रखलक**

३०६.**आ** (come)/ **आ** (and)

३०७. **पश्चाताप**/ पश्चात्ताप

३०८. ऽ केर व्यवहार शब्दक अन्तमे मात्र, यथासंभव बीचमे नै।

३०९.***कहैत/ कहै***

३१०.

रहए (छल)/ रहै (छलै) *(meaning different)*

३११.***तागति/ ताकति***

३१२.***खराप/*** *खराब*

३१३.***बोइन/*** *बोनि/ बोइनि*

३१४.*जाति/* ***जाइठ***

३१५.*कागज/* ***कागच/ कागत***

३१६.***गिरै*** *(meaning different- swallow)/* ***गिरए*** *(खसए)*

३१७.***राष्ट्रिय/*** *राष्ट्रीय*

Festivals of Mithila

DATE-LIST (year- 2011-12)

(१४१९ साल)

Marriage Days:

Nov.2011- 20,21,23,25,27,30

Dec.2011- 1,5,9

January 2012- 18,19,20,23,25,27,29

Feb.2012- 2,3,8,9,10,16,17,19,23,24,29

March 2012- 1,8,9,12

April 2012- 15,16,18,25,26

June 2012- 8,13,24,25,28,29

Upanayana Days:

February 2012- 2,3,24,26

March 2012- 4

April 2012- 1,2,26

June 2012- 22

Dviragaman Din:

November 2011- 27,30

December 2011- 1,2,5,7,9,12

ISSN 2229-547X VIDEHA

February 2012- 22,23,24,26,27,29

March 2012- 1,2,4,5,9,11,12

April 2012- 23,25,26,29

May 2012- 2,3,4,6,7

Mundan Din:

December 2011- 1,5

January 201225,26,30

March 2012- 12

April 2012- 26

May 2012- 23,25,31

June 2012- 8,21,22,29

FESTIVALS OF MITHILA

Mauna Panchami-20 July

Madhushravani- 2 August

Nag Panchami- 4 August

Raksha Bandhan- 13 Aug

Krishnastami- 21 August

Kushi Amavasya / Somvari Vrat- 29 August

Hartalika Teej- 31 August

ChauthChandra-1 September

Karma Dharma Ekadashi-8 September

Indra Pooja Aarambh- 9 September

Anant Caturdashi- 11 Sep

Agastyarghadaan- 12 Sep

Pitri Paksha begins- 13 Sep

Mahalaya Aarambh- 13 September

Vishwakarma Pooja- 17 September

Jimootavahan Vrata/ Jitia-20 September

Matri Navami- 21September

Kalashsthapan- 28 September

Belnauti- 2 October

Patrika Pravesh- 3 October

Mahastami- 4 October

Maha Navami - 5 October

Vijaya Dashami- 6 October

Kojagara- 11 Oct

Dhanteras- 24 October

Diyabati, shyama pooja-26 October

Annakoota/ Govardhana Pooja-27 October

Bhratridwitiya/ Chitragupta Pooja-28 October

Chhathi-khama -31 October

Chhathi- sayankalik arghya - 1 November

Devotthan Ekadashi- 17 November

Sama poojarambh- 2 November

Kartik Poornima/ Sama Bisarjan- 10 Nov

ravivratarambh- 27 November

Navanna parvan- 29 November

Vivaha Panchmi- 29 November

Makara/ Teela Sankranti-15 Jan

Naraknivaran chaturdashi- 21 January

Basant Panchami/ Saraswati Pooja- 28 January

Achla Saptmi- 30 January

Mahashivaratri-20 February

Holikadahan-Fagua-7 March

Holi-9 Mar

Varuni Yoga-20 March

Chaiti navaratrarambh- 23 March

Chaiti Chhathi vrata-29 March

Ram Navami- 1 April

Mesha Sankranti-Satuani-13 April

Jurishital-14 April

Akshaya Tritiya-24 April

Ravi Brat Ant- 29 April

Janaki Navami- 30 April

Vat Savitri-barasait- 20 May

Ganga Dashhara-30 May

Somavati Amavasya Vrata- 18 June

Jagannath Rath Yatra- 21 June

Hari Sayan Ekadashi- 30 June

Aashadhi Guru Poornima-3 Jul

VIDEHA ARCHIVE

१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी रूपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

विदेह ई-पत्रिकाक पहिल ५० अंक

विदेह ई-पत्रिकाक ५०म सँ आगाँक अंक

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

३.मैथिली ऑडियो संकलन Maithili Audio Downloads

४.मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

५.मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र Mithila Painting/ Modern Art and Photos

"विदेह"क एहि सभ सहयोगी लिंकपर सेहो एक बेर जाऊ।

६.विदेह मैथिली क्विज : http://videhaquiz.blogspot.com/

७.विदेह मैथिली जालवृत्त एग्रीगेटर :

http://videha-aggregator.blogspot.com/

८.विदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनूदित

http://madhubani-art.blogspot.com/

९.विदेहक पूर्व-रूप "भालसरिक गाछ" :

http://gajendrathakur.blogspot.com/

१०.विदेह इंडेक्स :

http://videha123.blogspot.com/

११.विदेह फाइल :

http://videha123.wordpress.com/

१२. विदेह: सदेह : पहिल तिरहुता (मिथिलाक्षर) जालवृत्त (ब्लॉग)

http://videha-sadeha.blogspot.com/

१३. विदेह:ब्रेल: मैथिली ब्रेलमे: पहिल बेर विदेह द्वारा

http://videha-braille.blogspot.com/

१४.*VIDEHA* IST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

http://videha-archive.blogspot.com/

१५. *विदेह* प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

http://videha-pothi.blogspot.com/

१६. *विदेह* प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

http://videha-audio.blogspot.com/

१७. *विदेह* प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका वीडियो आर्काइव

http://videha-video.blogspot.com/

१८. *विदेह* प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

http://videha-paintings-photos.blogspot.com/

१९. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जालवृत्त)

http://maithilaurmithila.blogspot.com/

२०.श्रुति प्रकाशन

http://www.shruti-publication.com/

२१.http://groups.google.com/group/videha

Google समूह

VIDEHA केर सदस्यता लिअ

ईमेल : ?????? ???

एहि समूहपर जाऊ

२२.http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/

Subscribe to VIDEHA

enter email address YAHOO! Groups Join Now!

Powered by us.groups.yahoo.com

२३.गजेन्द्र ठाकुर इडेक्स

ISSN 2229-547X VIDEHA

http://gajendrathakur123.blogspot.com

२४. नेना भुटका

http://mangan-khabas.blogspot.com/

२५.विदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पोडकास्ट साइट

http://videha123radio.wordpress.com/

२६.Videha Radio

२७._Join official Videha facebook group.

२८. विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

http://maithili-drama.blogspot.com/

२९.समदिया

http://esamaad.blogspot.com/

३०. मैथिली फिल्म्स

http://maithilifilms.blogspot.com/

३१.अनचिन्हार आखर

http://anchinharakharkolkata.blogspot.com/

३२. मैथिली हाइकू

http://maithili-haiku.blogspot.com/

३३. मानक मैथिली

http://manak-maithili.blogspot.com/

महत्त्वपूर्ण सूचना:(१) 'विदेह' द्वारा धारावाहिक रूपे ई-प्रकाशित कएल गेल गजेन्द्र ठाकुरक निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प-गुच्छ), नाटक(संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बाल-किशोर साहित्य विदेहमे संपूर्ण ई-प्रकाशनक बाद प्रिंट फॉर्ममे। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक खण्ड-१ सँ ७ Combined ISBN No.978-81-907729-7-6 विवरण एहि पृष्ठपर नीचाँमे आ

ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रकाशकक साइट http://www.shruti-publication.com/ पर ।

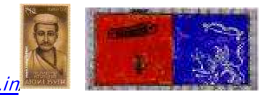
महत्त्वपूर्ण सूचना (२):सूचना: विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (इंटरनेटपर पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary. विदेहक भाषापाक- रचनालेखन स्तंभमे।

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक- गजेन्द्र ठाकुर



गजेन्द्र ठाकुरक निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक(संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बालमंडली-किशोरजगत विदेहमे संपूर्ण ई-प्रकाशनक बाद प्रिंट फॉर्ममे। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड-१ सँ ७

Ist edition 2009 of Gajendra Thakur's KuruKshetram-Antarmanak (Vol. I to VII)- essay-



paper-criticism, novel, poems, story, play, epics and Children-grown-ups literature in single binding:

Language:Maithili

६९२ पृष्ठ : मूल्य भा. रु. 100/-(for individual buyers inside india)

(add courier charges Rs.50/-per copy for Delhi/NCR and Rs.100/- per copy for outside Delhi)

For Libraries and overseas buyers $40 US (including postage)

The book is AVAILABLE FOR PDF DOWNLOAD AT

https://sites.google.com/a/videha.com/videha/

http://videha123.wordpress.com/

Details for purchase available at print-version publishers's site

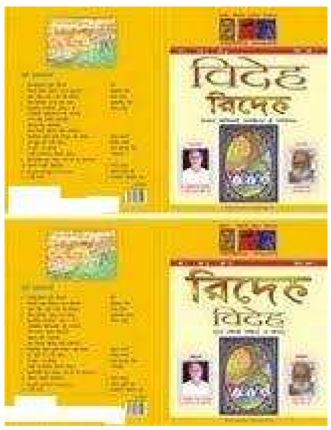
ISSN 2229-547X VIDEHA

website: http://www.shruti-publication.com/

or you may write to

e-mail:shruti.publication@shruti-publication.com

विदेह: सदेह : १: २: ३: ४ तिरहुता : देवनागरी "विदेह" क, प्रिंट संस्करण :विदेह-ई-पत्रिका (http://www.videha.co.in/**) क चुनल रचना सम्मिलित।**



विदेह:सदेह:१: २: ३: ४

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

Details for purchase available at print-version publishers's site http://www.shruti-publication.com

or you may write to shruti.publication@shruti-publication.com

२. संदेश-

[विदेह ई-पत्रिका, विदेह:सदेह मिथिलाक्षर आ देवनागरी आ गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डक- निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा,उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक (संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बाल-मंडली-किशोर जगत- संग्रह *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* मादेँ।]

१.श्री गोविन्द झा- विदेहकेँ तरंगजालपर उतारि विश्वभरिमे मातृभाषा मैथिलीक लहरि जगाओल, खेद जे अपनेक एहि महाभियानमे हम एखन धरि संग नहि दए सकलहुँ। सुनैत छी अपनेकेँ सुझाओ आ रचनात्मक आलोचना प्रिय लगैत अछि तेँ किछु लिखक मोन भेल। हमर सहायता आ सहयोग अपनेकेँ सदा उपलब्ध रहत।

२.श्री रमानन्द रेणु- मैथिलीमे ई-पत्रिका पाक्षिक रूपेँ चला कऽ जे अपन मातृभाषाक प्रचार कऽ रहल छी, से धन्यवाद । आगाँ अपनेक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना दऽ रहल छी।

३.श्री विद्यानाथ झा "विदित"- संचार आ प्रौद्योगिकीक एहि प्रतिस्पर्धी ग्लोबल युगमे अपन महिमामय "विदेह"कें अपना देहमे प्रकट देखि जतबा प्रसन्नता आ संतोष भेल, तकरा कोनो उपलब्ध "मीटर"सँ नहि नापल जा सकैछ? ..एकर ऐतिहासिक मूल्यांकन आ सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शताब्दीक अंत धरि लोकक नजरिमे आश्चर्यजनक रूपसँ प्रकट हैत।

४. प्रो. उदय नारायण सिंह "नचिकेता"- जे काज अहाँ कए रहल छी तकर चरचा एक दिन मैथिली भाषाक इतिहासमे होएत। आनन्द भए रहल अछि, ई जानि कए जे एतेक गोट मैथिल "विदेह" ई जर्नलकेँ पढ़ि रहल छथि।...विदेहक चालीसम अंक पुरबाक लेल अभिनन्दन।

५. डॉ. गंगेश गुंजन- एहि विदेह-कर्ममे लागि रहल अहाँक सम्वेदनशील मन, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत रंग, इतिहास मे एक टा विशिष्ट फराक अध्याय आरंभ करत, हमरा विश्वास अछि। अशेष शुभकामना आ बधाइक सङ्ग, सस्नेह...अहाँक पोथी *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* प्रथम दृष्टया बहुत भव्य तथा उपयोगी बुझाइछ। मैथिलीमे तँ अपन स्वरूपक प्रायः ई पहिले एहन भव्य अवतारक पोथी थिक। हर्षपूर्ण हमर हार्दिक बधाई स्वीकार करी।

६. श्री रामाश्रय झा "रामरंग"(आब स्वर्गीय)- "अपना" मिथिलासँ संबंधित...विषय वस्तुसँ अवगत भेलहुँ।...शेष सभ कुशल अछि।

७. श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- इंटरनेट पर प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" केर लेल बधाई आ शुभकामना स्वीकार करू।

८. श्री प्रफुल्लकुमार सिंह "मौन"- प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" क प्रकाशनक समाचार जानि कनेक चकित मुदा बेसी आह्लादित भेलहुँ। कालचक्रकेँ पकड़ि जाहि दूरदृष्टिक परिचय देलहुँ, ओहि लेल हमर मंगलकामना।

९.डॉ. शिवप्रसाद यादव- ई जानि अपार हर्ष भए रहल अछि, जे नव सूचना-क्रान्तिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकेँ प्रवेश दिअएबाक साहसिक कदम उठाओल अछि। पत्रकारितामे एहि प्रकारक नव प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "विदेह"क सफलताक शुभकामना।

१०. श्री आद्याचरण झा- कोनो पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन- ताहूमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशनमे के कतेक सहयोग करताह- ई तऽ भविष्य कहत। ई हमर ८८ वर्षमे ७५ वर्षक अनुभव रहल। एतेक पैघ महान यज्ञमे हमर श्रद्धापूर्ण आहुति प्राप्त होयत- यावत ठीक-ठाक छी/ रहब।

११. श्री विजय ठाकुर- मिशिगन विश्वविद्यालय- "विदेह" पत्रिकाक अंक देखलहुँ, सम्पूर्ण टीम बधाईक पात्र अछि। पत्रिकाक मंगल भविष्य हेतु हमर शुभकामना स्वीकार कएल जाओ।

१२. श्री सुभाषचन्द्र यादव- ई-पत्रिका "विदेह" क बारेमे जानि प्रसन्नता भेल। 'विदेह' निरन्तर पल्लवित-पुष्पित हो आ चतुर्दिक अपन सुगंध पसारय से कामना अछि।

१३. श्री मैथिलीपुत्र प्रदीप- ई-पत्रिका "विदेह" केर सफलताक भगवतीसँ कामना। हमर पूर्ण सहयोग रहत।

१४. डॉ. श्री भीमनाथ झा- "विदेह" इन्टरनेट पर अछि तेँ "विदेह" नाम उचित आर कतेक रूपेँ एकर विवरण भए सकैत अछि। आइ-काल्हि मोनमे उद्वेग रहैत अछि, मुदा शीघ्र पूर्ण सहयोग देब।*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* देखि अति प्रसन्नता भेल। मैथिलीक लेल ई घटना छी।

१५. श्री रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"- जनकपुरधाम- "विदेह" ऑनलाइन देखि रहल छी। मैथिलीकेँ अन्तर्राष्ट्रीय जगतमे पहुँचेलहुँ तकरा लेल हार्दिक बधाई। मिथिला रत्न सभक संकलन अपूर्व। नेपालोक सहयोग भेटत, से विश्वास करी।

१६. श्री राजनन्दन लालदास- "विदेह" ई-पत्रिकाक माध्यमसँ बड़ नीक काज कए रहल छी, नातिक अहिठाम देखलहुँ। एकर वार्षिक अंक जखन प्रिंट निकालब तँ हमरा पठायब। कलकत्तामे बहुत गोटेकेँ हम साइटक पता लिखाए देने छियन्हि। मोन तँ होइत अछि जे दिल्ली आबि कए आशीर्वाद दैतहुँ, मुदा उमर आब बेशी भए गेल। शुभकामना देश-विदेशक मैथिलकेँ जोड़बाक लेल।.. उत्कृष्ट प्रकाशन *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* लेल बधाइ। अद्भुत काज कएल अछि, नीक प्रस्तुति अछि सात खण्डमे। मुदा अहाँक सेवा आ से निःस्वार्थ तखन बूझल जाइत जँ अहाँ द्वारा प्रकाशित पोथी सभपर दाम लिखल नहि रहितैक। ओहिना सभकेँ विलहि देल जइतैक। (स्पष्टीकरण- श्रीमान्, अहाँक सूचनार्थ विदेह द्वारा ई-प्रकाशित कएल सभटा सामग्री आर्काइवमे https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/ पर बिना मूल्यक डाउनलोड लेल उपलब्ध छै आ भविष्यमे सेहो रहतैक। एहि आर्काइवकेँ जे कियो प्रकाशक अनुमति लऽ कऽ प्रिंट रूपमे प्रकाशित कएने छथि आ तकर ओ दाम रखने छथि ताहिपर हमर कोनो नियंत्रण नहि अछि।- गजेन्द्र ठाकुर)... अहाँक प्रति अशेष शुभकामनाक संग।

१७. डॉ. प्रेमशंकर सिंह- अहाँ मैथिलीमे इंटरनेटपर पहिल पत्रिका "विदेह" प्रकाशित कए अपन अद्भुत मातृभाषानुरागक परिचय देल अछि, अहाँक निःस्वार्थ मातृभाषानुरागसँ प्रेरित छी, एकर निमित्त जे

हमर सेवाक प्रयोजन हो, तँ सूचित करी। इंटरनेटपर आद्योपांत पत्रिका देखल, मन प्रफुल्लित भऽ गेल।

१८.श्रीमती शेफालिका वर्मा- विदेह ई-पत्रिका देखि मोन उल्लाससँ भरि गेल। विज्ञान कतेक प्रगति कऽ रहल अछि...अहाँ सभ अनन्त आकाशकेँ भेदि दियौ, समस्त विस्तारक रहस्यकेँ तार-तार कऽ दियौक...। अपनेक अद्भुत पुस्तक कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक विषयवस्तुक दृष्टिसँ गागरमे सागर अछि। बधाई।

१९.श्री हेतुकर झा, पटना-जाहि समर्पण भावसँ अपने मिथिला-मैथिलीक सेवामे तत्पर छी से स्तुत्य अछि। देशक राजधानीसँ भय रहल मैथिलीक शंखनाद मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली चेतनाक विकास अवश्य करत।

२०. श्री योगानन्द झा, कबिलपुर, लहेरियासराय- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पोथीकेँ निकटसँ देखबाक अवसर भेटल अछि आ मैथिली जगतक एकटा उद्भट ओ समसामयिक दृष्टिसम्पन्न हस्ताक्षरक कलमबन्द परिचयसँ आह्लादित छी। "विदेह"क देवनागरी सँस्करण पटनामे रु. 80/- मे उपलब्ध भऽ सकल जे विभिन्न लेखक लोकनिक छायाचित्र, परिचय पत्रक ओ रचनावलीक सम्यक प्रकाशनसँ ऐतिहासिक कहल जा सकैछ।

२१. श्री किशोरीकान्त मिश्र- कोलकाता- जय मैथिली, विदेहमे बहुत रास कविता, कथा, रिपोर्ट आदिक सचित्र संग्रह देखि आ आर अधिक प्रसन्नता मिथिलाक्षर देखि- बधाई स्वीकार कएल जाओ।

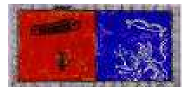
२२.श्री जीवकान्त- विदेहक मुद्रित अंक पढ़ल- अद्भुत मेहनति। चाबस-चाबस। किछु समालोचना मरखाह..मुदा सत्य।

२३. श्री भालचन्द्र झा- अपनेक *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* देखि बुझाएल जेना हम अपने छपलहुँ अछि। एकर विशालकाय आकृति अपनेक सर्वसमावेशताक परिचायक अछि। अपनेक रचना सामर्थ्यमे उत्तरोत्तर वृद्धि हो, एहि शुभकामनाक संग हार्दिक बधाई।

२४.श्रीमती डॉ नीता झा- अहाँक *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़लहुँ। ज्योतिरीश्वर शब्दावली, कृषि मत्स्य शब्दावली आ सीत बसन्त आ सभ कथा, कविता, उपन्यास, बाल-किशोर साहित्य सभ उत्तम छल। मैथिलीक उत्तरोत्तर विकासक लक्ष्य दृष्टिगोचर होइत अछि।

२५.श्री मायानन्द मिश्र- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* मे हमर उपन्यास *स्त्रीधनक* जे विरोध कएल गेल अछि तकर हम विरोध करैत छी।... *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पोथीक लेल शुभकामना।(श्रीमान् समालोचनाकेँ विरोधक रूपमे नहि लेल जाए।-गजेन्द्र ठाकुर)





ISSN 2229-547X VIDEHA

२६.श्री महेन्द्र हजारी- सम्पादक *श्रीमिथिला- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़ि मोन हर्षित भऽ गेल..एखन पूरा पढ़यमे बहुत समय लागत, मुदा जतेक पढ़लहुँ से आह्लादित कएलक।

२७.श्री केदारनाथ चौधरी- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* अद्भुत लागल, मैथिली साहित्य लेल ई पोथी एकटा प्रतिमान बनत।

२८.श्री सत्यानन्द पाठक- विदेहक हम नियमित पाठक छी। ओकर स्वरूपक प्रशंसक छलहुँ। एम्हर अहाँक लिखल - *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* देखलहुँ। मोन आह्लादित भऽ उठल। कोनो रचना तरा-उपरी।

२९.श्रीमती रमा झा-सम्पादक मिथिला दर्पण। *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* प्रिंट फॉर्म पढ़ि आ एकर गुणवत्ता देखि मोन प्रसन्न भऽ गेल, अद्भुत शब्द एकरा लेल प्रयुक्त कऽ रहल छी। विदेहक उत्तरोत्तर प्रगतिक शुभकामना।

३०.श्री नरेन्द्र झा, पटना- विदेह नियमित देखैत रहैत छी। मैथिली लेल अद्भुत काज कऽ रहल छी।

३१.श्री रामलोचन ठाकुर- कोलकाता- मिथिलाक्षर विदेह देखि मोन प्रसन्नतासँ भरि उठल, अंकक विशाल परिदृश्य आस्वस्तकारी अछि।

३२.श्री तारानन्द वियोगी- विदेह आ *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* देखि चकबिदोर लागि गेल। आश्चर्य। शुभकामना आ बधाई।

३३.श्रीमती प्रेमलता मिश्र ‘‘प्रेम’’- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़लहुँ। सभ रचना उच्चकोटिक लागल। बधाई।

३४.श्री कीर्तिनारायण मिश्र- बेगूसराय- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* बड्ड नीक लागल, आगांक सभ काज लेल बधाई।

३५.श्री महाप्रकाश-सहरसा- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* नीक लागल, विशालकाय संगहि उत्तमकोटिक।

३६.श्री अग्निपुष्प- मिथिलाक्षर आ देवाक्षर विदेह पढ़ल..ई प्रथम तँ अछि एकरा प्रशंसामे मुदा हम एकरा दुस्साहसिक कहब। मिथिला चित्रकलाक स्तम्भकँ मुदा अगिला अंकमे आर विस्तृत बनाऊ।

३७.श्री मंजर सुलेमान-दरभंगा- विदेहक जतेक प्रशंसा कएल जाए कम होएत। सभ चीज उत्तम।

३८.श्रीमती प्रोफेसर वीणा ठाकुर- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* उत्तम, पठनीय, विचारनीय। जे क्यो देखैत छथि पोथी प्राप्त करबाक उपाय पुछैत छथि। शुभकामना।

३९.श्री छत्रानन्द सिंह झा- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़लहुँ, बड्ड नीक सभ तरहेँ।

४०.श्री ताराकान्त झा- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद- विदेह तँ कन्टेन्ट प्रोवाइडरक काज कऽ रहल अछि। कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक अद्भुत लागल।

४१.डॉ रवीन्द्र कुमार चौधरी- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक बहुत नीक, बहुत मेहनतिक परिणाम। बधाई।

४२.श्री अमरनाथ- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक आ विदेह दुनू स्मरणीय घटना अछि, मैथिली साहित्य मध्य।

४३.श्री पंचानन मिश्र- विदेहक वैविध्य आ निरन्तरता प्रभावित करैत अछि, शुभकामना।

४४.श्री केदार कानन- कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल अनेक धन्यवाद, शुभकामना आ बधाइ स्वीकार करी। आ नचिकेताक भूमिका पढ़लहुँ। शुरूमे तँ लागल जेना कोनो उपन्यास अहाँ द्वारा सृजित भेल अछि मुदा पोथी उनटौला पर ज्ञात भेल जे एहिमे तँ सभ विधा समाहित अछि।

४५.श्री धनाकर ठाकुर- अहाँ नीक काज कऽ रहल छी। फोटो गैलरीमे चित्र एहि शताब्दीक जन्मतिथिक अनुसार रहैत तऽ नीक।

४६.श्री आशीष झा- अहाँक पुस्तकक संबंधमे एतबा लिखबा सँ अपना कए नहि रोकि सकलहुँ जे ई किताब मात्र किताब नहि थीक, ई एकटा उम्मीद छी जे मैथिली अहाँ सन पुत्रक सेवा सँ निरंतर समृद्ध होइत चिरजीवन कए प्राप्त करत।

४७.श्री शम्भु कुमार सिंह- विदेहक तत्परता आ क्रियाशीलता देखि आह्लादित भऽ रहल छी। निश्चितरूपेण कहल जा सकैछ जे समकालीन मैथिली पत्रिकाक इतिहासमे विदेहक नाम स्वर्णाक्षरमे लिखल जाएत। ओहि कुरुक्षेत्रक घटना सभ तँ अठारहे दिनमे खतम भऽ गेल रहए मुदा अहाँक *कुरुक्षेत्रम्* तँ अशेष अछि।

४८.डॉ. अजीत मिश्र- अपनेक प्रयासक कतबो प्रशंसा कएल जाए कमे होएतैक। मैथिली साहित्यमे अहाँ द्वारा कएल गेल काज युग-युगान्तर धरि पूजनीय रहत।

४९.श्री बीरेन्द्र मल्लिक- अहाँक *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* आ *विदेह:सदेह* पढ़ि अति प्रसन्नता भेल। अहाँक स्वास्थ्य ठीक रहए आ उत्साह बनल रहए से कामना।

५०.श्री कुमार राधारमण- अहाँक दिशा-निर्देशमे *विदेह* पहिल मैथिली ई-जर्नल देखि अति प्रसन्नता भेल। हमर शुभकामना।

५१.श्री फूलचन्द्र झा *प्रवीण*-विदेह:सदेह पढ़ने रही मुदा *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* देखि बढ़ाई देबा लेल बाध्य भऽ गेलहुँ। आब विश्वास भऽ गेल जे मैथिली नहि मरत। अशेष शुभकामना।

५२.श्री विभूति आनन्द- विदेह:सदेह देखि, ओकर विस्तार देखि अति प्रसन्नता भेल।

५३.श्री मानेश्वर मनुज-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* एकर भव्यता देखि अति प्रसन्नता भेल, एतेक विशाल ग्रन्थ मैथिलीमे आइ धरि नहि देखने रही। एहिना भविष्यमे काज करैत रही, शुभकामना।

५४.श्री विद्यानन्द झा- आइ.आइ.एम.कोलकाता- कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक विस्तार, छपाईक संग गुणवत्ता देखि अति प्रसन्नता भेल। अहाँक अनेक धन्यवाद; कतेक बरखसँ हम नेयारैत छलहुँ जे सभ पैघ शहरमे मैथिली लाइब्रेरीक स्थापन होअए, अहाँ ओकरा वेबपर कऽ रहल छी, अनेक धन्यवाद।

५५.श्री अरविन्द ठाकुर-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* मैथिली साहित्यमे कएल गेल एहि तरहक पहिल प्रयोग अछि, शुभकामना।

५६.श्री कुमार पवन-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* पढ़ि रहल छी। किछु लघुकथा पढ़ल अछि, बहुत मार्मिक छल।

५७. श्री प्रदीप बिहारी-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* देखल, बधाई।

५८.डॉ मणिकान्त ठाकुर-कैलिफोर्निया- अपन विलक्षण नियमित सेवासँ हमरा लोकनिक हृदयमे विदेह सदेह भऽ गेल अछि।

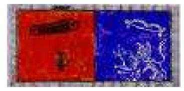
५९.श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास सराहनीय। दुख होइत अछि जखन अहाँक प्रयासमे अपेक्षित सहयोग नहि कऽ पबैत छी।

६०.श्री देवशंकर नवीन- विदेहक निरन्तरता आ विशाल स्वरूप- विशाल पाठक वर्ग, एकरा ऐतिहासिक बनबैत अछि।

६१.श्री मोहन भारद्वाज- अहाँक समस्त कार्य देखल, बहुत नीक। एखन किछु परेशानीमे छी, मुदा शीघ्र सहयोग देब।

६२.श्री फजलुर रहमान हाशमी-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* मे एतेक मेहनतक लेल अहाँ साधुवादक अधिकारी छी।

६३.श्री लक्ष्मण झा "सागर"- मैथिलीमे चमत्कारिक रूपेँ अहाँक प्रवेश आह्लादकारी अछि।..अहाँकेँ एखन आर..दूर..बहुत दूरधरि जेबाक अछि। स्वस्थ आ प्रसन्न रही।

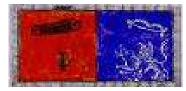
ISSN 2229-547X VIDEHA

६४.श्री जगदीश प्रसाद मंडल-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* पढ़लहुँ । कथा सभ आ उपन्यास *सहस्त्रबाढ़नि* पूर्णरूपेँ पढ़ि गेल छी। गाम-घरक भौगोलिक विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्त्रबाढ़निमे अछि, से चकित कएलक, एहि संग्रहक कथा-उपन्यास मैथिली लेखनमे विविधता अनलक अछि। समालोचना शास्त्रमे अहाँक दृष्टि वैयक्तिक नहि वरन् सामाजिक आ कल्याणकारी अछि, से प्रशंसनीय।

६५.श्री अशोक झा-अध्यक्ष मिथिला विकास परिषद- *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* लेल बधाई आ आगाँ लेल शुभकामना।

६६.श्री ठाकुर प्रसाद मुर्मु- अद्भुत प्रयास। धन्यवादक संग प्रार्थना जे अपन माटि-पानिकेँ ध्यानमे राखि अंकक समायोजन कएल जाए। नव अंक धरि प्रयास सराहनीय। विदेहकेँ बहुत-बहुत धन्यवाद जे एहेन सुन्दर-सुन्दर सचार (आलेख) लगा रहल छथि। सभटा ग्रहणीय- पठनीय।

६७.बुद्धिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी,अहाँक सम्पादन मे प्रकाशित 'विदेह'आ 'कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक' विलक्षण पत्रिका आ विलक्षण पोथी! की नहि अछि अहाँक सम्पादनमे? एहि प्रयत्न सँ मैथिली क विकास होयत,निस्संदेह।

६८.श्री बृखेश चन्द्र लाल- गजेन्द्रजी, अपनेक पुस्तक *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़ि मोन गदगद भय गेल , हृदयसँ अनुगृहित छी । हार्दिक शुभकामना ।

६९.श्री परमेश्वर कापड़ि - श्री गजेन्द्र जी । *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़ि गदगद आ नेहाल भेलहुँ।

७०.श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर- विदेह पढ़ैत रहैत छी। धीरेन्द्र प्रेमर्षिक मैथिली गजलपर आलेख पढ़लहुँ। मैथिली गजल कत्तऽ सँ कत्तऽ चलि गेलैक आ ओ अपन आलेखमे मात्र अपन जानल-पहिचानल लोकक चर्च कएने छथि। जेना मैथिलीमे मठक परम्परा रहल अछि। (स्पष्टीकरण- श्रीमान् प्रेमर्षि जी ओहि आलेखमे ई स्पष्ट लिखने छथि जे किनको नाम जे छुटि गेल छन्हि तँ से मात्र आलेखक लेखकक जानकारी नहि रहबाक द्वारे, एहिमे आन कोनो कारण नहि देखल जाय। अहाँसँ एहि विषयपर विस्तृत आलेख सादर आमंत्रित अछि।-सम्पादक)

७१.श्री मंत्रेश्वर झा- विदेह पढ़ल आ संगहि अहाँक मैगनम ओपस *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* सेहो, अति उत्तम। मैथिलीक लेल कएल जा रहल अहाँक समस्त कार्य अतुलनीय अछि।

७२. श्री हरेकृष्ण झा- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* मैथिलीमे अपन तरहक एकमात्र ग्रन्थ अछि, एहिमे लेखकक समग्र दृष्टि आ रचना कौशल

देखबामे आएल जे लेखकक फील्डवर्कसँ जुड़ल रहबाक कारणसँ अछि।

७३.श्री सुकान्त सोम- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* मे समाजक इतिहास आ वर्तमानसँ अहाँक जुड़ाव बड्ड नीक लागल, अहाँ एहि क्षेत्रमे आर आगाँ काज करब से आशा अछि।

७४.प्रोफेसर मदन मिश्र- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* सन किताब मैथिलीमे पहिले अछि आ एतेक विशाल संग्रहपर शोध कएल जा सकैत अछि। भविष्यक लेल शुभकामना।

७५.प्रोफेसर कमला चौधरी- मैथिलीमे *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* सन पोथी आबए जे गुण आ रूप दुनूमे निस्सन होअए, से बहुत दिनसँ आकांक्षा छल, ओ आब जा कऽ पूर्ण भेल। पोथी एक हाथसँ दोसर हाथ घुमि रहल अछि, एहिना आगाँ सेहो अहाँसँ आशा अछि।

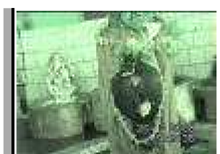
७६.श्री उदय चन्द्र झा "विनोद": गजेन्द्रजी, अहाँ जतेक काज कएलहुँ अछि से मैथिलीमे आइ धरि कियो नहि कएने छल। शुभकामना। अहाँकेँ एखन बहुत काज आर करबाक अछि।

७७.श्री कृष्ण कुमार कश्यप: गजेन्द्र ठाकुरजी, अहाँसँ भेँट एकटा स्मरणीय क्षण बनि गेल। अहाँ जतेक काज एहि बएसमे कऽ गेल छी ताहिसँ हजार गुणा आर बेशीक आशा अछि।

७८.श्री मणिकान्त दास: अहाँक मैथिलीक कार्यक प्रशंसा लेल शब्द नहि भेटैत अछि। अहाँक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक सम्पूर्ण रूपेँ पढ़ि गेलहुँ। त्वञ्चाहञ्च बड्ड नीक लागल।

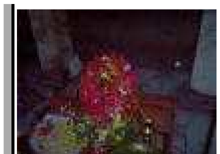
७९. श्री हीरेन्द्र कुमार झा- विदेह ई-पत्रिकाक सभ अंक ई-पत्रसँ भेटैत रहैत अछि। मैथिलीक ई-पत्रिका छैक एहि बातक गर्व होइत अछि। अहाँ आ अहाँक सभ सहयोगीकेँ हार्दिक शुभकामना।

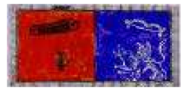
प्रस्तुत अछि विदेह, मिथिला, तीरभुक्ति आ तिरहुतक नामसँ विख्यात वर्त्तमान भारत आ नेपालमे पसरल माटिक प्राचीन आ नव स्थापत्य, चित्रांकित अभिलेख आ मूर्त्तिकलाक एकटा छोट संग्रह। एहि संग्रहकेँ पूर्ण करबाक हेतु अपन बहुमूल्य संग्रह ggajendra@videha.com केँ पठाऊ। आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार, सम्बन्धित फोटोग्राफर आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। फोटो सभ पठएबाक लेल धन्यवाद पाठकगण। साभार। पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल।

		
गौरीशंकर, जमथरि,	गौरीशंकर, जमथरि,	गौरीशंकर, जमथरि,

ISSN 2229-547X VIDEHA

हैंठी बाली, मधुबनी	हैंठी बाली, मधुबनी	हैंठी बाली, मधुबनी
		
गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी	गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी	गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी
		
गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी	गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी	गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी
		

गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी	गौरीशंकर, जमथरि, हैंठी बाली, मधुबनी	बाइसी-बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम्रलेख
 बाइसी-बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम्रलेख	 बाइसी-बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम्रलेख	 बाइसी-बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम्रलेख
 धरहरा, बनमनखी, पूर्णियाँ, नरसिंह अवतार	 धरहरा, बनमनखी, पूर्णियाँ, नरसिंह अवतार	 पूरणदेवी, पूर्णियाँ

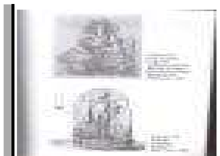
ISSN 2229-547X VIDEHA


बिदेश्वर स्थान अभिलेख, मधुबनी


अन्ध्राठाढी अभिलेख, मधुबनी


बुद्ध अष्टधातु, सिसव बसंतपुर, बगहा


12 शताब्दी, कोइलख, मधुबनी

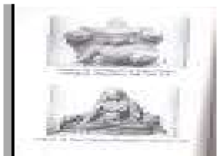
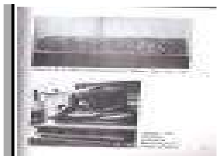
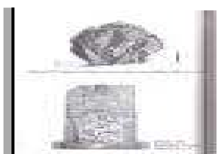

अग्नि बिदेश्वर स्थान, मधुबनी बुद्ध, मुंगेर


अहिल्या स्थान

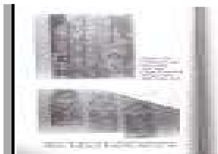
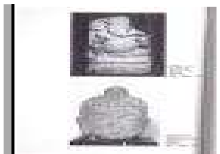
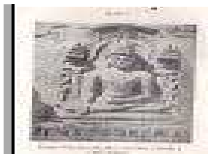
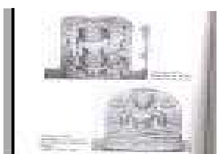
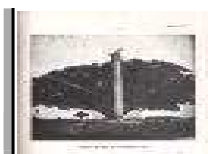

अन्ध्राठाढी, मधुबनी

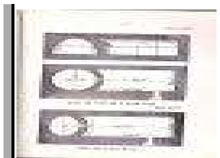
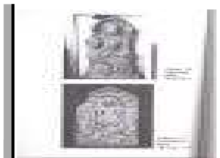
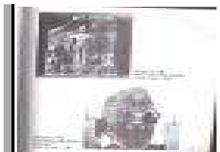

अशोक स्तंभ,

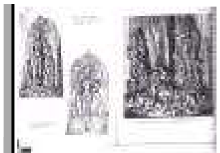
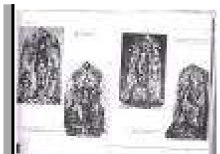
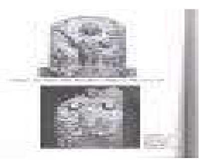
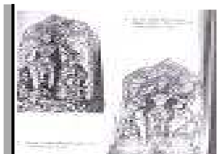

बुद्ध

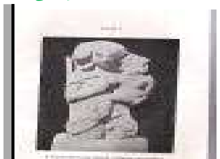
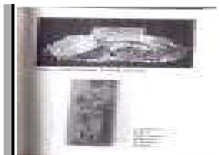
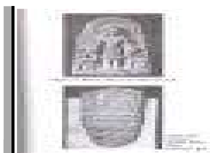
	बसाढ, वैशाली	
		
अवलोकितेश्वर तारा, भागलपुर	बसाढ, वैशाली	बुद्ध भूमिस्पर्श
		
बुद्ध, ताम्र	बुद्ध मस्तक, सुलतानगंज	वैशाली मूर्त्ति
		

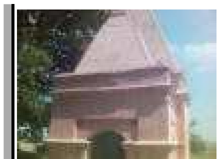
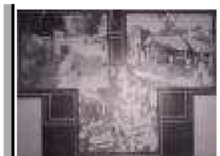
ISSN 2229-547X VIDEHA

चामुण्डा नाग-नागिनी, मुंगेर	मुकुटधारी बुद्ध, अंतीचक, भागलपुर	नाचैत गणेश, 10म शताब्दी, दरभंगा
 दरभंगा म्युजियम	 दरभंगा म्युजियम	 दुर्गा, कार्त्तिकेय
 10म शताब्दी, भीट भगवानपुर, अन्धा ठाढी	 गणेश बुद्ध	 गौतम बुद्ध, वैशाली
		

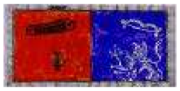
हरिहर बुद्ध	चिड़ैकेँ खुआबैत महिला, राजमहल	लौरिया नन्दनगढ, अशोक स्तंभ
		
लोमश सुदामा गुफा	मुंगेर	नागराज तीर्थंकर
		
कुमारिल भटट फेकेलाह, नालन्दा	विक्रमशिला विश्वविद्यालय, भागलपुर	ठाढ बुद्ध
		

पार्वती	रामायण	रामपुरवा वृषभ
		
रामपुरवा	बुद्धक अवशेष	संकिसा
		
सप्तमातृका	सर्वतो भद्र मण्डल	सूर्य
		
सूर्य	सूर्यक संगी	सूर्य, मधुबनी आ भागलपुर

		
मूर्त्ति	मूर्त्ति	मूर्त्ति, वैशाली
		
उमा माहेश्वर, कल्याणसुन्दर	वैशाली वृषभ शीर्ष	वैशाली, शालभंजिका भागलपुर
		
नाओक प्रकार	विष्णु बुद्धा	पाँखियुक्त महिला

 अहिल्या	 अष्टयोगिनी मन्दिर, सहरसा	 बनगंगा
 दरभंगा	 दरभंगा नगर, 1934	 दरभंगा मेडिकल कॉलेज
 दुल्हदुल्हिन मन्दिर, जनकपुर	 श्री यंत्र	 गण्डीश्वर







गंगासागर पोखरि, मधुबनी



हनुमान मन्दिर, मधुबनी



हरिहरस्थान



मधुबनी हॉस्पीटल



जनकपुर जानकी मन्दिर



जानकी मन्दिर



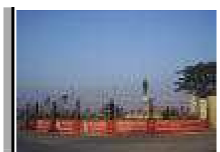
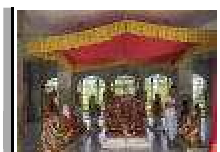
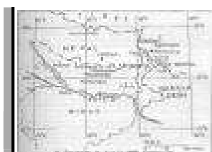
जानकी मन्दिर,

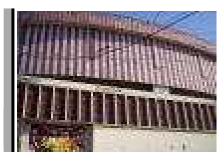


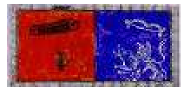
जानकी मन्दिर,



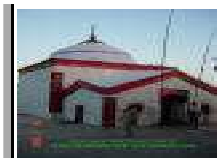
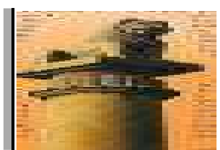
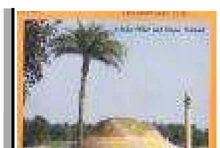
जिला स्वास्थ्य

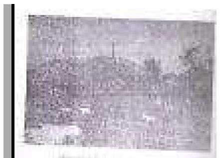
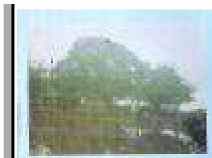
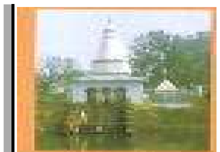
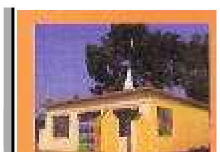
सीतामढी	सीतामढी	कार्यालय राजबिराज, नेपाल
 कलनेश्वर बाबा	 कपिलेश्वर	 कोषलेखाकार्यालय, राजबिराज, नेपाल
 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा	 लक्ष्मीश्वर पैलेस, 1934	 माध्यमिकविद्यालय , जनकपुर
		

महेन्द्र चौक, जनकपुर	जनकपुर मंडप	मिथिला, 1988 भूकम्प
		
पगलाबाबा धर्मशाला, जनकपुर, नेपाल	पंडौल अहल्या	मधुबनी बस स्टैंड
		
राज हेड ऑफिस, 1934	राज हॉस्पीटल, दरभंगा, 1934	सौराठ सभा
		

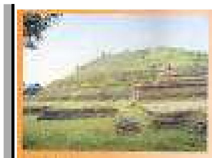
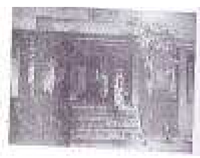



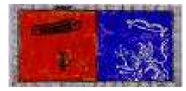
ISSN 2229-547X VIDEHA

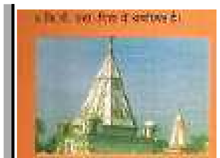
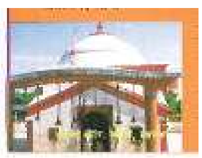
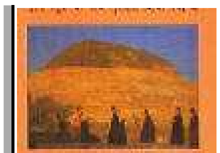
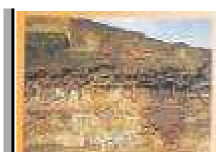
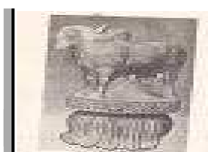
शिव मन्दिर, 1934	शिवशंकर सिनेमा, मधुबनी	श्यामा मन्दिर
		
विद्यापति मूर्त्ति, बिस्फी	उग्रतारा, तारास्थान, महिषी, सहरसा	विद्यापति स्मारक, बिस्फी
		
विस्फी, उदना महादेव	बिस्फी, विश्वेश्वरी भगवती	अहल्या मन्दिर, अहियारी
		

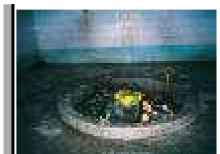
अशोक स्तंभ, वैशाली	स्तूप अशोक स्तंभ, वैशाली	बलिराजपुर किला पूर्वी गेट
		
बलिराजपुर किला मीनार	चण्डी स्थान, बिराटपुर, सहरसा	गाँधी पोखरि, ढाका, मोतिहारी
		
गाँधी विद्यालय, ढाका, मोतिहारी	गिरिजा स्थान, मधुबनी	हरिहर मन्दिर, सोनपुर
		

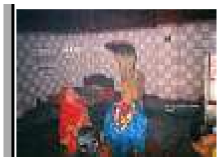
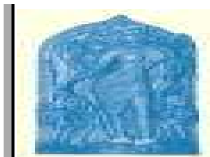
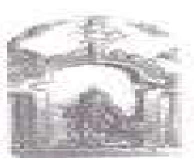
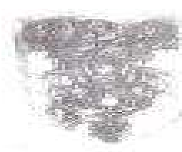
ISSN 2229-547X VIDEHA

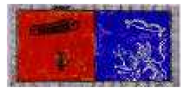
जैन मन्दिर, भागलपुर	जैन मन्दिर, वैशाली	कमलादित्य स्थान
		
कपिलेश्वर शिव मन्दिर	लौरिया नन्दनगढ	मदनेश्वर शिव मन्दिर
		
मन्दार पर्वत, बाँका	मोतिहारी सत्याग्रह स्मारक	परमेश्वरी मन्दिर, ठाढी, मधुबनी
		

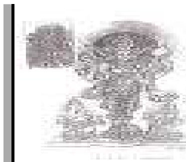
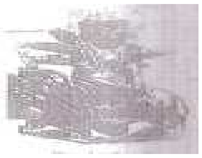
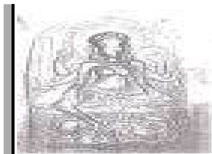
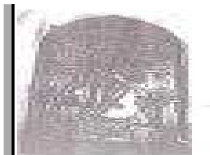
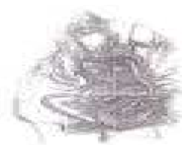
रामजानकी मन्दिर, सीतामढी	सत्याग्रह स्मारक, सीतामढी	शांति स्तूप, वैशाली
		
उच्चैठ भगवती	उच्चैठ मन्दिर	सिंघेश्वर स्थान, मधेपुरा
		
सूर्यधाम, परसा	उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा	वैशाली स्तूप
		

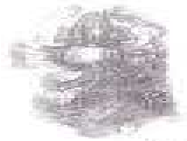
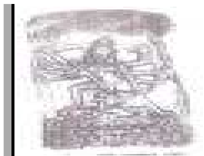
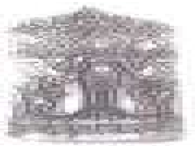
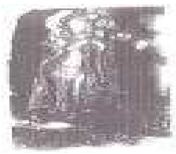
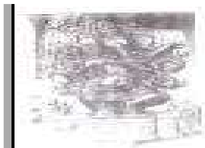
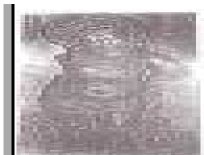
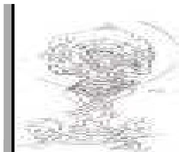
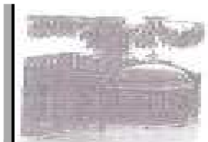
विक्रमशिला विश्वविद्यालय, भागलपुर	विराटपुर मन्दिर, मधेपुरा	वृषभ शीर्ष, रामपुरवा
		
सिंह शीर्ष, रामपुरवा	शरभ, नेपाल	पाँखियुक्त देवी, वैशाली
		
बाबा बडेश्वर, देवना, बनगाँव	वट वृक्ष, बनगाँव	भगवान विष्णु, देवना, बनगाँव
		

शास्त्रार्थ स्थल,तारास्थान महिषी	शास्त्रार्थ स्थल,तारास्थान महिषी	तारास्थान महिषी
		
माता तारा, तारास्थान महिषी	उग्रतारा (खादर वाणी तारा) मूर्ति, महिषी	वशिष्ठ मुनि, तारास्थान महिषी
		
आवर्धित काली उच्चैठ	बौद्धदेवी तारा वारी समस्तीपुर	भगवती देकुली

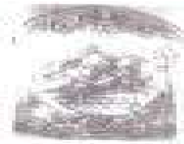
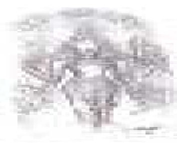
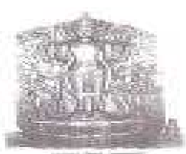
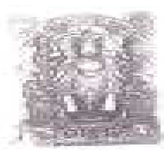
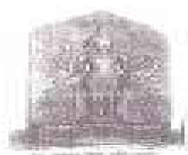



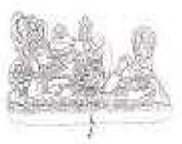
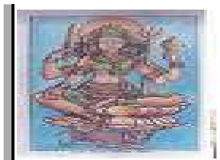
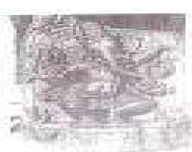
ISSN 2229-547X VIDEHA

 भगवती गिरिजा फुल्हर	 भगवती मृणमूर्ति गन्धबारि	 भगवती वारी समस्तीपुर
 भुवनेश्वरी कोर्थ	 देवीकाली कोर्थ	 गंगामूर्ति नगरडीह दरभंगा
 गोसाउनि मन्दिर कोर्थ	 हैहट्ट देवी हाबीडीह	 काली उच्चैठ

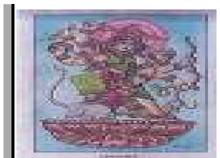
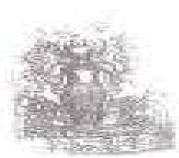
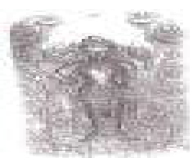
 महिषासुरमर्दिनी बहेरी दरभंगा	 महिषासुरमर्दिनी हाबीडीह	 महिषासुरमर्दिनी नाहर-भगवतीपुर
 उमा म्लेच्छमर्दिनी मिर्जापुर दरभंगा	 यमुना भैरव बलिया मधुबनी	 अष्टभुज गणेश,कोर्थ
 भैरव, भैरव-बलिया	 नटराज, तारालाही	 शिव-पार्वती मन्दिर,

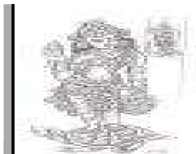
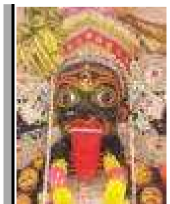
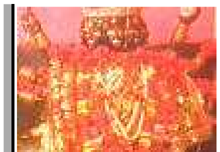
ISSN 2229-547X VIDEHA

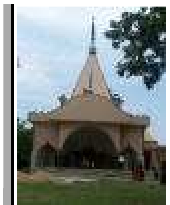
		कपिलेश्वरस्थान
 शिव-पार्वती मन्दिर, कपिलेश्वरस्थान	 शिव मन्दिर, सिंगिया, विस्पी	 उमामाहेश्वर, महादेवमठ
 उमामाहेश्वर, तिरहुत	 विष्णु, भवानीपुर	 विष्णु, भीठ भगवान्पुर
		

विष्णु, जयनगर	विष्णु, लदहो	विष्णु, साहो-पररी, हाबीडीह
		
शेषशायी विष्णु, सवास, मुजफ्फरपुर	वराह मूर्ति, तिलकेश्वरस्थान	मिथिलाक्षर अभिलेख, विष्णु बुद्ध मूर्ति
		
भगवती उच्चैठ, बेनीपट्टी	भगवती वाणेश्वरी, भंडारीसम	चामुण्डा मन्दिर, कटरा, मुजफ्फरपुर
		

ISSN 2229-547X VIDEHA

अष्टभुज गणेश, हाबीडीह	अष्टभुज गणेश, कोर्थ	गंगा, आन्ध्रा-ठाढ़ी
		
महिषासुरमर्दिनी, दुर्गा	म्लेच्छमर्दिनी मन्दिर, मिर्जापुर, दरभंगा	नटराज
		
राममन्दिर, अहिल्यास्थान	सेहनी, वैशाली, विष्णु तिलक-यज्ञोपवीतधारी	रूपनगर शिव मन्दिर
		

सूर्य, देकुली	सूर्य मूर्ति, डिलाही	सूर्य मूर्ति, विष्णु, बरुआर
		
उमामाहेश्वर	यमुना, आन्ध्रा-ठाढ़ी	सिमरौनागढ़ मूर्ति
		
आदि काली, चैनपुर सहरसा चैनपुर सहरसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिर, संगमे आदिकालीन भव्य काली-मन्दिर	त्योथागढ़क स्वामी माध्वानन्द कौलाचार्य काली मन्दिर त्योथा गढ़ लग। पुरान गढ़। एकर पूबमे ब्रह्मपुराक बाबा हरिहरनाथ महादेव	त्योथागढ़क दसमुखी काली त्योथा गढ़ लग। पुरान गढ़। एकर पूबमे ब्रह्मपुराक बाबा हरिहरनाथ महादेव मन्दिर आ दक्षिणमे

सेहो एहि गाममे अछि। महाशिवरात्रि आ कालीपूजा बड़ धूमधामसँ चैनपुरमे होइत अछि।	मन्दिर आ दक्षिणमे उच्चैठ भगवती छथि।	उच्चैठ भगवती छथि।
 कोइलख (मधुबनी) देवीक मन्दिर	 अकौर, बेनीपट्टी, भगवती दुर्गा, भगवतीपीठ	 अकौर, बेनीपट्टी, भगवती दुर्गा, भगवतीपीठ

<u>मिथिलाक खोज</u>

ई आलेख हमर दशकसँ ऊपरक मिथिलाक यात्राक उपरान्तक सूत्र-वृत्तान्त अछि आ एहिमे एहि सभ स्थानक स्थानीय निवासी आ गाइड सभक अकथनीय योगदान छन्हि । कखनो कालतँ भाड़ाक

गाड़ीक ड्राइवर लोकनि सेहो नीक गाइड सिद्ध भेलाह ।-गजेन्द्र ठाकुर

१.गौरी-शंकर स्थान- मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हैंठी बाली गामक बीच ई स्थान गौरी आ शङ्करक सम्मिलित मूर्त्ति आ एहि पर मिथिलाक्षरमे लिखल पालवंशीय अभिलेखक कारणसँ विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि। ई स्थल एकमात्र पुरातन स्थल अछि जे पूर्ण रूपसँ गामक उत्साही कार्यकर्त्ता लोकनिक सहयोगसँ पूर्ण रूपसँ विकसित अछि। शिवरात्रिमे एहि स्थलक चुहचुही देखबा योग्य रहैत अछि। बिदेश्वरस्थानसँ २-३ किलोमीटर उत्तर दिशामे ई स्थान अछि।

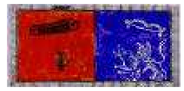
२.भीठ-भगवानपुर अभिलेख- राजा नान्यदेवक पुत्र मल्लदेवसँ संबंधित अभिलेख एतए अछि। मधुबनी जिलाक मधेपुर थानामे ई स्थल अछि।

३.हुलासपट्टी- मधुबनी जिलाक फुलपरास थानाक जागेश्वर स्थान लग हुलासपट्टी गाम अछि। कारी पाथरक विष्णु भगवानक मूर्त्ति एतए अछि।

४.पिपराही-लौकहा थानाक पिपराही गाममे विष्णुक मूर्त्तिक चारू हाथ भग्न भए गेल अछि।

५.मधुबन- पिपराहीसँ १० किलोमीटर उत्तर नेपालक मधुबन गाममे चतुर्भुज विष्णुक मूर्त्ति अछि।

६.अंधरा-ठाढ़ीक स्थानीय वाचस्पति संग्रहालय- गौड़ गामक यक्षिणीक

ISSN 2229-547X VIDEHA

भव्य मूर्त्ति एतए राखल अछि।

७.कमलादित्य स्थान- अंधरा ठाढ़ी गामक लगमे कमलादित्य स्थानक विष्णु मंदिर कर्णाट राजा नान्यदेवक मंत्री श्रीधर दास द्वारा स्थापित भेल।

८.झंझारपुर अनुमण्डलक रखबारी गाममे वृक्षक नीचाँ राखल विष्णु मूर्त्ति, गांधारशैली मे बनाओल गेल अछि।

९.पजेबागढ़ वनही टोल- एतए एकटा बुद्ध मूर्त्ति भेटल छल, मुदा ओकर आब कोनो पता नहि अछि। ई स्थल सेहो रखबारी गाम लग अछि।

१०.मुसहरनियां डीह- अंधरा ठाढ़ीसँ ३ किलोमीटर पश्चिम पस्टन गाम लग एकटा ऊंच डीह अछि।बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली, बौद्धकालीन मूर्त्ति, पाइ, बर्त्तनक टुकड़ी आ पजेबाक अवशेष एतए अछि।

११.भगीरथपुर- पण्डौल लग भगीरथपुर गाममे अभिलेख अछि जाहिसँ ओइनवार वंशक अंतिम दुनू शासक रामभद्रदेव आ लक्ष्मीनाथक प्रशासनक विषयमे सूचना भेटैत अछि।

१२.अकौर- मधुबनीसँ २० किलोमीटर पश्चिम आ उत्तरमे अकौर गाममे एकटा ऊँच डीह अछि, जतए बौद्धकालक मूर्त्ति अछि।

१३.बलिराजपुर किला- मधुबनी जिलाक बाबूबरही प्रखण्डसँ ५ किलोमीटर पूब बलिराजपुर गाम अछि। एकर दक्षिण दिशामे एकटा पुरान किलाक अवशेष अछि। किला चारि किलोमीटर नमगर आ एक किलोमीटर चाकर अछि। दस फीटक मोट देबालसँ ई घेरल

अछि।

१४.असुरगढ़ किला- मिथिलाक दोसर किला मधुबनी जिलाक पूब आ उत्तर सीमा पर तिलयुगा धारक कातमे महादेव मठ लग ५० एकड़मे पसरल अछि।

१५.जयनगर किला- मिथिलाक तेसर किला अछि भारत नेपाल सीमा पर प्राचीन जयपुर आ वर्त्तमान जयनगर नगर लग। दरभंगा लग पंचोभ गामसँ प्राप्त ताम्र अभिलेख पर जयपुर केर वर्णन अछि।

१६.नन्दनगढ़- बेतियासँ १२ मील पश्चिम-उत्तरमे ई किला अछि। तीन पंक्तिमे १५ टा ऊँच डीह अछि।

१७.लौरिया-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उत्तर स्थित अछि, एतए अशोक स्तंभ आ बौद्ध स्तूप अछि।

१८.देकुलीगढ़- शिवहर जिलासँ तीन किलोमीटर पूब हाइवे केर कातमे दू टा किलाक अवशेष अछि। चारू दिशि खधाइ अछि।

१९.कटरागढ़- मुजफ्फरपुरमे कटरा गाममे विशाल गढ़ अछि, देकुली गढ़ जेकाँ चारू कात खधाइ खुनल अछि।

२०.नौलागढ़-बेगुसरायसँ २५ किलोमीटर उत्तर ३५० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि।

२१.जयमंगलगढ़-बेगूसरायमे बरियारपुर थानामे काबर झीलक मध्य एकटा ऊँच डीह अछि। एतए ई गढ़ अछि। नाओकोठी (मझौल) गाम लग ई गढ़ अछि।

२१ अ.मंगलगढ़- समस्तीपुर जिलामे दुधपुरा बजार लग देओढ गाम

ISSN 2229-547X VIDEHA

लग।

२२.अलौलीगढ़-खगड़ियासँ १५ किलोमीटर उत्तर अलौली गाम लग १०० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि।

२३.कीचकगढ़-पूर्णिया जिलामे डेंगरघाटसँ १० किलोमीटर उत्तर महानन्दा नदीक पूबमे ई गढ़ अछि।

२४.बेनूगढ़-टेढ़गाछ थानामे कवल धारक कातमे ई गढ़ अछि।

२५.वरिजनगढ़-बहादुरगंजसँ छह किलोमीटर दक्षिणमे लोनसवरी धारक कातमे ई गढ़ अछि।

२६.गौतम तीर्थ- कमतौल स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पश्चिम ब्रह्मपुर गाम लग एकटा गौतम कुण्ड पुष्करिणी अछि।

२७.हलावर्त्त- जनकपुरसँ ३५ किलोमीटर दक्षिण पश्चिममे सीतामढ़ी नगरमे हलवेश्वर शिव मन्दिर आ जानकी मन्दिर अछि। एतएसँ डेढ़ किलोमीटर पर पुण्डरीक क्षेत्रमे सीताकुण्ड अछि। हलावर्त्तमे जनक द्वार हर चलएबा काल सीता भेटलि छलीह। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी) आ जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) पर एतए मेला लगैत अछि।

२८.फुलहर-मधुबनी जिलाक हरलाखी थानामे फुलहर गाममे जनकक पुष्पवाटिका छल जतए सीता फूल लोढ़ैत छलीह।

२९.जनकपुर-बृहद् विष्णुपुराणमे मिथिलामाहात्म्यमे जनकपुर क्षेत्रक वर्णन अछि। सत्रहम शताब्दीमे संत सूर किशोरकेँ अयोध्यामे सरयू धारमे राम आ जानकीक दू टा भव्य मूर्त्ति भेटलन्हि, जकरा ओ जानकी मन्दिर, जनकपुरमे स्थापित कए देलन्हि। वर्त्तमान मन्दिरक

स्थापना टीकमगढ़क महारानी द्वारा १९११ ई. मे भेल। नगरक चारूकात यमुनी, गेरुखा आ दुग्धवती धार अछि। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी),जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) आ विवाह पंचमी (अगहन शुक्ल पंचमी) पर एतए मेला लगैत अछि।

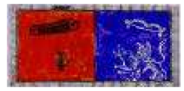
३०.धनुषा- जनकपुरसँ १५ किलोमीटर उत्तर धनुषा स्थानमे पीपरक गाछक नीचाँ एकटा धनुषाकार खण्ड पड़ल अछि। रामक तोड़ल ई धनुष अछि। एहिसँ पूब वाणगंगा धार बहैत अछि जे लक्ष्मण द्वारा वाणसँ उद्घाटित भेल छल।

३१.सुग्गा-जनकपुर लग जलेश्वर शिवधामक समीप सुग्गा ग्राममे शुकदेवजीक आश्रम अछि। शुकदेवजी जनकसँ शिक्षा लेबाक हेतु मिथिला आएल छलाह- एहि ठाम हुनकर ठहरेबाक व्यवस्था भेल छल।

३२.सिंहेश्वर- मधेपुरासँ ५ किलोमीटरपर गौरीपुर गाम लग सिंहेश्वर शिवधाम अछि।

३३.कपिलेश्वर-कपिल मुनि द्वार स्थापित महादेव मधुबनीसँ ६ किलोमीटर पश्चिममे अछि।

३४.कुशेश्वर- समस्तीपुरसँ उत्तर-पूब, लहेरियासरायसँ 60 किलोमीटर दक्षिण-पूब आ सहरसासँ २५ किलोमीटर पश्चिम ई एकटा प्रसिद्ध शिवस्थान अछि। एतए चिड़ै-अभ्यारण्य सेहो अछि जतए उज्जर आ कारी गैबर, लालसर, दिघौछ, मैल, नकटा, गैरी, गगन, सिल्ली, अधानी, हरिअल, चाहा, करन, रतबा चिड़ै सभ अनायासहि नवम्बरसँ मार्च धरि देखबामे आएत ।

ISSN 2229-547X VIDEHA

३५.सिमरदह-थलवारा स्टेशन लग शिवसिंह द्वारा बसाओल शिवसिंहपुर गाम लग ई शिवमन्दिर अछि।

३६.सोमनाथ- मधुबनी जिलाक सौराठ गाममे सभागाछी लग सोमदेव महादेव छथि।

३७.मदनेश्वर- मधुबनी जिलाक अंधरा ठाढ़ीसँ ४ किलोमीटर पूब मदनेश्वर शिव स्थान अछि।

३८.कुन्दग्राम:हाजीपुरसँ बत्तीस किलोमीटर उत्तर-पूर्वमे बसाध-वैशाली आ लगमे वासोकुण्ड लग गाम गढ़-टीलासँ २ कि.मी. उत्तर-पूर्व अछि कुन्दग्राम , जतए जैनक २४म तीर्थंकर महावीरक जन्म भेल छलन्हि। एतए बुद्धक छाउर, अभिषेक पुषकरणी (राजा अभिषेकसँ पूर्व एतए नहाइत रहथि), अशोक स्तम्भ आ संसद-भवन (राजा विशालक गढ़) अछि।

३९.चण्डेश्वर- झंझारपुरमे हरड़ी गाम लग चण्डेश्वर ठाकुर द्वारा स्थापित चण्डेश्वर शिवस्थान अछि।

४०.बिदेश्वर-मधुबनी जिलामे लोहनारोड स्टेशन लग स्थित शिवधामक स्थापना महाराज माधवसिंह कएलन्हि। ताहि युगक मिथिलाक्षरक अभिलेख सेहो एतए अछि।

४१.शिलानाथ- जयनगर लग कमला धारक कातमे शिलानाथ महादेव छथि।

४२.उग्रनाथ-मधुबनीसँ दक्षिण पण्डौल स्टेशन लग भवानीपुर गाममे उगना महादेवक शिवलिंग अछि। विद्यापतिकेँ प्यास लगलन्हि तँ उगनारूपी महादेव जटासँ गंगाजल निकालि जल पिएलखिन्ह।

विद्यापतिक हठ कएला पर एहि स्थान पर उगना हुनका अपन असल शिवरूपक दर्शन देलखिन्ह।

४३.उच्चैठ छिन्नमस्तिका भगवती- कमतौल स्टेशनसँ १६ किलोमीटर पूर्वोत्तर उच्चैठमे कालिदास भगवतीक पूजा करैत छलाह। भगवतीक मौलिक मूर्त्ति मस्तक विहीन अछि।

४४.उग्रतारा- मण्डन मिश्रक जन्मभूमि महिषीमे मण्डनक गोसाउनि उग्रतारा छथि।

४५.भद्रकालिका- मधुबनी जिलाक कोइलख गाममे भद्रकालिका मंदिर अछि।

४६.चामुण्डा- मुजफ्फरपुर जिलामे कटरागढ़ लग लक्ष्मणा वा लखनदेइ धार लग दुर्गा द्वारा चण्ड-मुण्डक वध कएल गेल। ओहि स्थान पर ई मन्दिर अछि।

४७.परसा सूर्य मन्दिर- झंझारपुरमे सग्रामसँ पाँच किलोमीटर पूर्व परसा गाममे साढ़े चारि फीटक भव्य सूर्य मूर्त्ति भेटल अछि।

४८.बिसफी- मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी थानामे कमतौल रेलवे स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पूब आ कपिलेश्वर स्थानसँ ४ किलोमीटर पश्चिम बिसफी गाम अछि। विद्यापतिक जन्म-स्थान ई गाम अछि। एतए विद्यापतिक स्मारक सेहो अछि।

४९.मंदार पर्वत-बांका स्थित स्थलमे मिथिलाक्षरक गुप्तवंशीय ७म् शताब्दीक अभिलेख अछि। समुद्र मंथनक हेतु मंदारक प्रयोग भेल छल। निकटमे बौंसीमे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक दूटा मूर्त्ति अछि, पैघ मूर्ति लाल पाथरक अछि तँ दोसर काँसाक जकर

सोझाँ दूटा पदचिन्ह अछि। जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक जन्म चम्पानगरमे आ निर्वाण एतहि भेल छलन्हि।

५०.विक्रमशिला-भागलपुरमे स्थित प्राचीन विश्वविद्यालय। भागलपुर जिलाक अंतीचक गाममे राजा धर्मपालक बनाओल बुद्ध विश्वविद्यालय अछि। १०८ व्याख्याता लेल रहबाक स्थान आ बाहरसँ पढ़ए बला लेल सेहो स्थान एतए निर्मित अछि

५१. मिथिलाक बीस टा सिद्ध पीठ- १.गिरिजास्थान(फुलहर, मधुबनी), २.दुर्गास्थान(उचैठ, मधुबनी), ३.रहेश्वरी (दोखर, मधुबनी), ४.भुवनेश्वरीस्थान(भगवतीपुर, मधुबनी), ५.भद्रकालिका(कोइलख, मधुबनी), ६.चमुण्डा स्थान(पचाही, मधुबनी), ७.सोनामाइ(जनकपुर, नेपाल), ८.योगनिद्रा(जनकपुर, नेपाल), ९.कालिका स्थान (जनकपुर स्थान), १०.राजेश्वरी देवी(जनकपुर, नेपाल), ११.छिन्नमस्ता देवी(उजान, मधुबनी), १२.बनदुर्गा(खररख, मधुबनी), १३.सिधेश्वरी देवी(सरिसव, मधुबनी), १४.देवी-स्थान (अंधरा ठाढ़ी, मधुबनी),१५.कंकाली देवी (भारत नेपाल सीमा आ रामबाग प्लेस, दरभंगा), १६.उग्रतारा (महिषी, सहरसा), १७.कात्यानी देवी(बदलाघाट, सहरसा), १८.पुरन देवी(पूर्णियाँ), १९.काली स्थान (दरभंगा), २०.जैमंगलास्थान(मुंगेर), ५२. जनकपुर परिक्रमाक १५ स्थल आ ओतुक्का मुख्य देवता १. हनुमाननगर- हनुमानजी, २.कल्याणेश्वर- शिवलिंग, ३.गिरिजा-स्थान- शक्ति, ४.मटिहानी- विष्णु मन्दिर, ५.जालेश्वर- शिवलिंग, ६.मनाई- माण्डव ऋषि, ७. श्रुव कुण्ड- ध्रुव मन्दिर, ८.कंचन वन- कोनो मन्दिर नञि मात्र मनोरम

दृश्य, ९.पर्वत- पाँच टा पर्वत, १०.धनुषा- शिवधनुषक टुकड़ी, ११.सतोखड़ी- सप्तर्षिक सात टा कुण्ड, १२.हरुषाहा- विमलागंगा, १३. करुणा- कोनो मन्दिर नहि मात्र मनोरम दृश्य, १४. बिसौल- विश्वामित्र मन्दिर, १५.जनकपुर।"मिथिलायद्यश्च मध्यंते रिपवो इति मिथिला नगरी" - मिथिला जतए शत्रुकेँ मथल जाइत अछि- पाणिनीक विवरण ।

५३. चैनपुर सहरसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिर, संगमे आदिकालीन भव्य काली-मन्दिर सेहो एहि गाममे अछि। महाशिवरात्रि आ कालीपूजा बड़ धूमधामसँ चैनपुरमे होइत अछि।

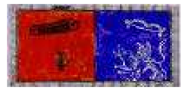
५४.धरहरा, बनमनखी, पूर्णियाँमे नरसिंह अवतारक स्थान अछि, एकटा खोह जेकाँ पैघ पाया अछि जाहिमे जे किछु फेकबैक तँ बड़ी काल धरि गोँ-गोँ अबाज होइत रहत। ई स्थान आब नरसिंह भगवानक मूर्ति आ मन्दिरक कारणसँ बेश विकसित भए गेल अछि।

५५.नेऊरी: दरभंगाक बिरौल प्रखण्डसँ १३.किलोमीटर पश्चिममे एकटा गढ़ अछि जे लोरिकक मानल जाइत अछि।

५६.दरभंगा कैथोलिक चर्च: १८९१मे स्थापित ई चर्च १८९७ केर भूकम्पमे क्षतिग्रस्त भए गेल। एकरा होली रोजेरी चर्च सेहो कहल जाइत अछि।

५७.सेंट फांसिस ऑसिसी चर्च मुजफ्फरपुरमे अछि।

५८.भिखा सलामी मजार: गंगासागर पोखरि दरभंगाक महारपर ई मजार अछि।

ISSN 2229-547X VIDEHA

५९.दरभंगा टावर मस्जिद इस्लाम मतावलम्बीक एकटा भव्य मस्जिद आ धार्मिक स्थल अछि।

६०. मकदूम बाबाक मजार:ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय आ कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगाक बीच स्थित ई मजार हिन्दू आ मुस्लिम मतावलम्बीक एकटा पावन स्थान अछि।

६१.चम्पानगर:भागलपुरक पश्चिममे, आब नगरसँ सटि गेल अछि। ई जैन लोकनिक एकटा पवित्रस्थल अछि, एतए महावीर तीनटा बस्सावास कएने रहथि। दू टा जैन मन्दिर एतए अछि, जे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथकेँ समर्पित अछि।

६२.बसैटी अभिलेख- पूणियाँमे श्रीनगर लग मिथिलाक्षरक ई अभिलेख मिथिलाक पहिल महिला शासक रानी इद्रावतीक राज्यकालक वर्णन करैत अछि। एकर आधार पर मदनेश्वर मिश्र 'एक छलीह महारानी' उपन्यास सेहो लिखने छथि।

बाइसी-बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर शिलालेख- रानी इन्द्रावती (१७८४-१८०२) जे फूड-फॉर-वर्क आ अन्य कल्याणकारी कार्यक प्रारम्भ कएलन्हि केर मिथिलाक्षर अभिलेख एतए एकटा मन्दिरक ऊपरमे ताम्र-पत्रपर कीलित अछि जे निम्न प्रकारसँ अछि:-

बसैटी (अररिया) बिहार, शिव मन्दिरक मिथिलाक्षर शिलालेखक देवनागरी रूपान्तरण।

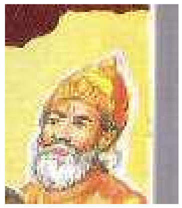
वंशे सभा समाने सुरगन बिदिते भू सूरस्यावतिर्नां।
राजाभूतकृष्णदेवोनृपति समरसिंहा मिधस्यात्मजातः॥

यस्मिन् राज्याभिषेकं फलयितु मिवतद्भक्तितुष्टोमहेशः।
कैलाशाद् भूगतेद्योप्यधिन सतितरा वैद्यनाथेन नाम्नाः॥
तस्य तनुजः सुकृतिनृपवरौ विश्वनाथ राजा भूत।
विरनारायण राजस्तस्याप्यासीद् सुतस्य॥
नरनारायण राजो नरपति कुल मौलि भूषणम् पुनः।
अर्थिनकल्पद्रूमदूव सुरगन वंसावतंसोत्भूत॥२॥
तस्मादि वैरिकुल सूदन रामचन्द्र नारायणो नरपतिस्तन्यो वभूक।
संमोदिता दश दिशो निज कीर्ति चन्द्र ज्योतिस्नेहाभिरार्थ निवहः सुरिवतश्चयेण॥३।।
यद्दानवारि परिवर्द्धित वारि राशि सक्तान्त कीर्ति विमलेन्दु मरिचिकाभिः।
प्रोद्योतिता दशदिशः सतनुज इन्द्रनारायणोस्य कुलभूषण राजराजः॥४॥
तेनच सत्कुल जाता तनया मनबोध शझणिः कृतिनः।
परिणीता बन्धु यत्नैस्त्रिलोचननाद्रि पुत्रीव॥५॥
यस्या प्रतापतरणावुदितेऽपिचिते
चिन्तारजविन्द वनमालभते विकासम
सौहृदय हृदय मकरन्द च उद्येन
तत्रैव यद् गुणगणा मधुपन्ति योगात्॥६॥
यज्ञेवर्देव गणो द्विजाति निवहः सस्तायनत्यादरैः।
दर्दानैपूर्णः मनोरथोऽर्थपरन सन्तितिनिः सज्जना॥७॥
गर्ज्जद वैरि मदान्धवारण चपश्चञ्चःपेतापांकुरौ।

ISSN 2229-547X VIDEHA

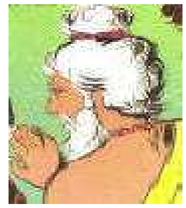
र्वस्याः सर्वदृशेकृतागुण चमेर्मस्याश्च भूमीतने॥८॥
श्री श्री इन्दुमति सतीमतिमती देवी महाराज्ञिका
जाता मैथिल माण्डराऽमिछकुलात् मोधोसरी जानयाः।
दानै कल्पलता मधः कृतवती श्री विष्णु सेवा परा
पातिव्रृत्य परायणाच सततं गंगेर सम्पारणी॥९॥
शाकेन्दु नवचन्द्र शैलधरणी संलक्षित फाल्गुने
मासि श्रेष्ठतरे सिताहनि शितेपक्षे द्वितीयायां तिथौ।
भूदेवैर्वर वैदिकेर्म्मठमयं निर्भारय सच्चिनिमिः
तत्रे सेन्दुमति सुरस्य विधित्र प्राण प्रतिष्ठाव्यधात्॥१०॥
सोदरपुर सम्भव राजानुकम्पापजिवनिकृतिनः।
श्री शुभनायस्य कृतिर्मिदं विज्ञेक्षं सन्नन्तताम्॥११॥

भारत आ नेपालक माटिमे पसरल मिथिलाक धरती प्राचीन कालहिसँ महान पुरुष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि रहल अछि। प्रस्तुत अछि मिथिला रत्नक एकटा छोट संग्रह। एहि संग्रहकेँ पूर्ण करबाक हेतु अपन बहुमूल्य संग्रहकेँ ggajendra@videha.com केँ पठाऊ। आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार, सम्बन्धित फोटोग्राफर आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। फोटो सभ पठएबाक लेल धन्यवाद पाठकगण। साभार। पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल।



वैदिक जनक

'वैदेह राजा' ऋगवेदिक कालक नमी सप्याक नामसँ छलाह, यज्ञ करैत सदेह स्वर्ग गेलाह, ऋगवेदमे वर्णन अछि। ओ इन्द्रक संग देलन्हि असुर नमुचीक विरुद्ध आ ताहिमे इन्द्र हुनका बचओलन्हि।शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि



वाल्मीकि



सीतापति राम

दुनू गोटेक पुरोहित
गौतम छथि से दुनू
एके छथि आ एतएसँ
विदेह राज्यक
प्रारम्भ। माथवक
पुरहित गौतम
मित्रविन्द यज्ञक/
बलिक प्रारम्भ
कएलन्हि आ पुनः
एकर पुनःस्थापना
भेल महाजनक-२ क
समयमे याज्ञवल्क्य
द्वारा। निमि गौतमक
आश्रमक लग **जयन्त**
आ मिथि -जिनका
मिथिला नामसँ सेहो
सोर कएल जाइत
छन्हि, **मिथिला**
नगरक निर्माण
कएलन्हि। निमीक
जयन्तपुर वर्तमान
जनकपुरमे छल,

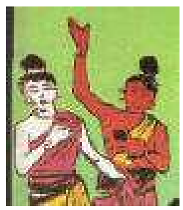
मिथीक
मिथिलानगरीक
स्थान एखन धरि
निर्धारित नहि भए
सकल अछि,
अनुमानित अछि
जनकपुरक लग ।
'सीरध्वज जनक'
सीताक पिता छथि
आ एतयसँ
मिथिलाक राजाक
सुदृढ़ परम्परा
देखबामे अबैत
अछि। 'कृति
जनक' सीरध्वजक
बादक 18म पुस्तमे
भेल छलाह। कृति
हिरण्यनाभक पुत्र
छलाह आ जनक
बहुलाश्वक पुत्र
छलाह। याज्ञवलक्य
हिरण्याभक शिष्य

ISSN 2229-547X VIDEHA

छलाह, हुनकासँ योगक शिक्षा लेने छलाह। कराल जनक द्वारा एकटा ब्राह्मण युवतीक शील-अपहरणक प्रयास भेल आ जनक राजवंश समाप्त भए गेल (संदर्भ अश्वघोष- बुद्धचरित आ कौटिल्य- अर्थशास्त्र)।



वैदेही सीता



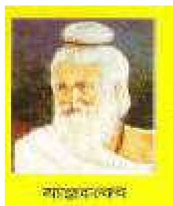
लव कुश



विदेघमाथव

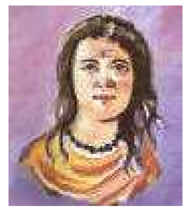
शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ

पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एके छथि आ एतएसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ।



वाजसनेयी याज्ञवल्क्य

याज्ञवल्क्य मिथिलाक दार्शनिक राजा कृति जनकक दरबारमे छलाह। हुनकर माताक वा पिताक नाम सम्भवतः वाजसनी छलन्हि।

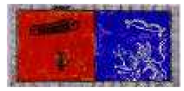


याज्ञवल्क्य पत्नी मैत्रेयी

याज्ञवल्क्यक दू टा पत्नी छलथिन्ह पहिल कात्यायनी आ दोसर मैत्रेयी। मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी छलीह। कात्यायनीसँ हुनका तीनटा पुत्र छलन्हि-



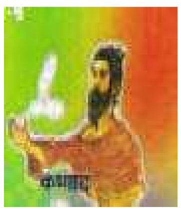
अंगराज कर्ण

ISSN 2229-547X VIDEHA

ओना हुनकर पिता देवरातकेँ मानल जाइत छन्हि। याज्ञवल्क्य १. शुक्ल यजुरवेद, २. शतपथ ब्राह्मण, ३.बृहदारण्यक उपनिषद आ ४.याज्ञवल्क्य स्मृतिक दृष्टा/लेखक छथि।

चन्द्रकान्ता, महामेघ आ विजय।

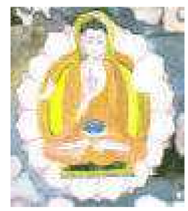


वैशेषिक दर्शन कणाद



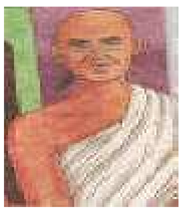
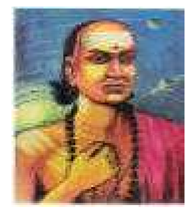
महावीर जैन 599-527

महावीर विदेहमे छह



गौतम बुद्ध BC 563-483

ओना तँ महावीर

	टा बस्सावास बितेलन्हि।	विदेहमे छह टा बस्सावास बितेलन्हि मुदा बुद्ध एकोटा नै मुदा मिथिलामे बौद्ध धर्मक प्रभाव पछाति बढ़ल। बुद्ध वैशाली नगरीमे आम्रपालीक उद्यानमे लिच्छवीगणकेँ सन्देश देने छलाह।
 चाणक्य BC 350-283 धर्म आ विधिक क्षेत्रमे कौटिल्यक अर्थशास्त्र आ याज्ञवल्क्य स्मृतिमे बड़ड समानता अछि जे चाणक्यक	 चन्द्रगुप्त मौर्य चाणक्यक शिष्य BC 340-293	 आर्यभट्ट वैज्ञानिक 476-550 पञ्जीमे आर्यभट्टक विवरण- (२७) (३४/०८) महिपतिय:

ISSN 2229-547X VIDEHA

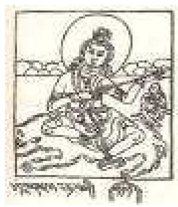
मिथिलावासी होयबाक प्रमाण अछि।

अर्थशास्त्रमे(१.६ विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे षडोऽध्यायः इन्द्रियजये अरिषड्वर्गत्यागः) कराल जनकक पतनक सेहो चर्चा अछि।

तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति- यथा दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मण कन्यायमभिमन्यमानः सबन्धराष्ट्रो विननाश करालश्च वैदेहः,...।

मंगरौनी माण्डैर सै पीताम्ब र सुत दामू दौ माण्ड्र सै वीजी त्रिनयनभट्ट: ए सुतो ***आर्यभट्ट:*** ए सुतो उदयभट्ट: ए सुतो विजयभट्ट ए सुतो सुलोचनभट (सुनयनभट्ट) ए सुतो भट्ट ए सुतो धर्मजटीमिश्र ए सुतो धाराजटी मिश्र ए सुतोब्रह्मजरी मिश्र ए सुतो त्रिपुरजटी मिश्र ए सुत विघुजटी मिश्र ए सुतो अजयसिंह: ए सुतो विजयसिंह: ए सुतो ए सुतो आदिवराह: ए सुतो महोवराह: ए सुतो दुर्योधन सिंह: ए सुतो सोढ़र

जयसिंहर्काचार्यास्त्रस महास्त्र विद्या पारङगत महामहोपाध्या य: नरसिंह:।।



सिद्ध सरहपाद 700-780

सरहपाद-"सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़िअउ ,मण्ड पिबन्तों बिसरउ एमइउ"।मिथिलामे अक्षरारम्भ सिद्धिरस्तु जकर पूर्वमे सिद्धिरस्तु,



आदि शंकराचार्य 788-820 मंडन मिश्रसँ शास्त्रार्थ



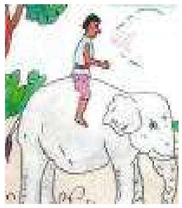
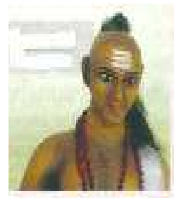
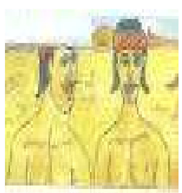
म.म.गोनू झा 1050-1150

करमहे सोनकरियाम गोनू झाक वर्णन पञ्जीमे अछि- महामहोपाध्याय धूर्तराज गोनू। पञ्जीक अनुसार पीढ़ीक गणना कएलासँ गोनूक

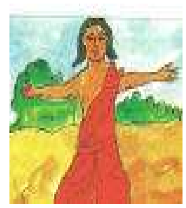
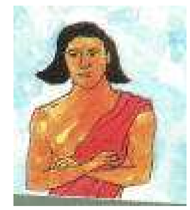
ISSN 2229-547X VIDEHA

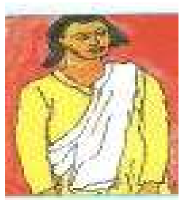
गणेशजीक अंकुश आँजी, लिखल जाइत अछि। मिथिलामे ई धारणा जे माँड़ पिलासँ स्मरण शक्ति क्षीण होइत अछि; ई सरहपादक मिथिलावासी होएबाक प्रमाण अछि।

जन्म (गोनूक सोनकरियाम करमहे-वत्समे २४म पीढ़ी चलि रहल अछि) *आर्यभट्टक बाद (आर्यभट्टक माण्डर-काश्यपमे ३९ म पीढ़ी चलि रहल अछि) आ विद्यापतिक पहिने (विद्यापतिक विषएवार बिस्फी-काश्यपमे १४म पीढ़ी चलि रहल अछि)* लगभग १०५० ई.मे सिद्ध होइत अछि। कारण एहि तरहेँ एक पीढ़ीकेँ ४० सँ गुणा केला सँ आर्यभट्टक जन्म लगभग ४७६ ई. आ विद्यापतिक जन्म लगभग १३५०

		ई. अबैत अछि जे इतिहाससम्मत अछि।
 कृष्णाराम आ हाथी सुबरन मिथिलाक यादव (गुआर) जातिक लोकदेवता कृष्णाराम अपन हाथी सुबरनपर सवार।	 वंशीधर ब्राह्मण	 छेछन महराज मिथिलाक डोम जातिक लोकदेवता
		

ISSN 2229-547X VIDEHA

दीना- भदरी मिथिलाक मुसहर जातिक लोकदेवता	ज्योति पँजियार	मोतीदाइ मिथिलाक रजक (धोबि) जातिक लोकदेवता
		
राजा सलहेस मिथिलाक दूधवंशी (दुसाध) जातिक लोकदेवता	दुलरा दयाल गोनू झाक गाम भरौड़ाक राजकुमार, "बहुरा गोढिन नटुआ दयाल" लोककथाक मलाह कथानायक। भरौड़ामे एखनो हिनकर गहबर छन्हि।	कालिदास

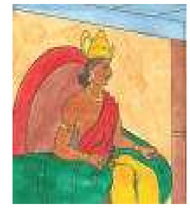


बोधि कायस्थ



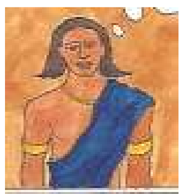
राधाकृष्ण आ करताराम मल्लिक

मिथिलाक अमता घरेनक प्रारम्भिक गबैय्या



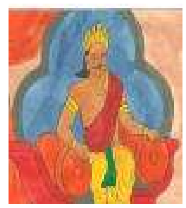
महाराज नान्यदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक 1097 ई. मे स्थापना। 1147 ई. मे मृत्यु।



मल्लदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक संस्थापक नान्यदेवक पुत्र। मिथिलाक गंधवरिया



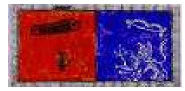
महाराज हरसिंहदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव



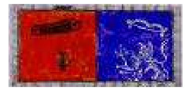
मंत्री गणेश्वर

मिथिलाक कर्णाट वंशक नरेश हरसिंहदेवक मंत्री। *सुगतिसोपानमे*

ISSN 2229-547X VIDEHA

राजपूत मल्लदेवकेँ अपन बीजीपुरुष मानैत छथि।	नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक	मिथिलाक सांवैधानिक इतिहासक वर्णन।

वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके)... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन

ISSN 2229-547X VIDEHA

	करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) *श्रोत्रिय* नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।	
 बिहुला चम्पानगरक बिहुला।	 गांगो देवी मिथिलाक मलाह जातिक लोकदेवता। गांगोदेवीक भगता	 मीरां साहेब मिथिलाक मुस्लिम लोकनिक बीच प्रसिद्ध लोकगाथाक

ISSN 2229-547X VIDEHA

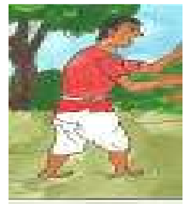
अखनो मिथिलाक मलाह लोकनिमे प्रचलित अछि।

नायक।



अमर बाबा

मिथिलाक मलाह जातिक लोकदेवता।



गरीबन बाबा

मिथिलाक धोबि जातिक लोकदेवता।

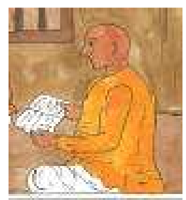


लालबन बाबा

मिथिलाक चर्मकार जातिक लोकदेवता।

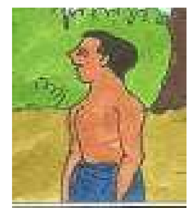


मोरंगक मोतीसायर



अयाची मिश्र

पन्द्रहम शताब्दीक भवनाथ मिश्र बड



शंकर मिश्र

"बालोऽहं जगदानन्द न मे

पैघ नैय्यायिक छलाह आ कहियो ककरोसँ कोनो वस्तुक याचना नहि कएलन्हि, ताहि लेल सभ हुनका अयाची मिश्र कहए लगलन्हि।

बाला सरस्वती।

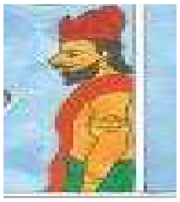
अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥" क वक्ता। पन्द्रहम शताब्दीमे भवनाथ मिश्रक घरमे मधुबनी जिलाक सरिसव ग्राममे शंकर मिश्रक जन्म भेल।शंकर मिश्र महाराज भैरव सिंहक कनिष्ठ पुत्र राजा पुरुषोत्तमदेवक आश्रित छलाह। एकर वर्णन रसार्णव ग्रंथमे भेटैत अछि। शंकर मिश्र कवि, नाटककार, धर्मशास्त्री आ न्याय-वैशेषिकक व्याख्याकार रहथि।शंकर मिश्र ग्रंथावली- १.गौरी दिगम्बर प्रहसन २.कृष्ण विनोद नाटक ३.मनोभवपराभव नाटक४.रसार्णव५.दुर्गा-

टीका६.वादिविनेद७.वैशेषिक
सूत्र पर
उपस्कार८.कुसुमांजलि पर
आमोद९.खण्डनखण्ड-खाद्य
टीका १०.छन्दोगाह्निकोद्धार
११.श्राद्ध प्रदीप
१२.प्रायश्चित प्रदीप।



पक्षधर मिश्र

विद्यापतिक समकालीन जयदेव मिश्र, जे अपन अकाट्य तर्कक कारण पक्षधर मिश्रक नामसँ जानल गेलाह।



महाराज शिव सिंह

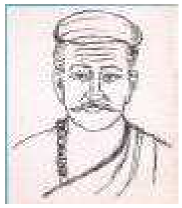
मिथिला नरेश विद्यापतिक आश्रयदाता ओइनवार वंशक महाराज शिव सिंह।



उगना महादेव

माहादेव विद्यापतिक अहिठाम गीत सुनबा लेल उगना नोकर बनि रहैत छलाह।

ISSN 2229-547X VIDEHA

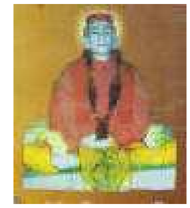


महाकवि विद्यापति ठाकुर 1350-1450

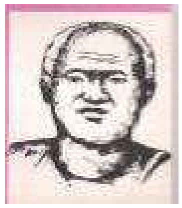
मैथिली भाषाक आदि कवि। अनेक गद्यग्रन्थहुक प्रणेता । कालजयी पद रचनाक अमर कवि । कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी मैथिली पदक रचयिता ।



शंकरदेव 1449-1569



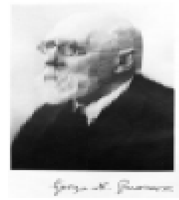
लक्ष्मीनाथ गोसाई 1793-1872



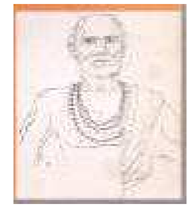
कवि चन्दा झा 1831-1907

मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम- पिण्डारुछ, दरभंगा। कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित। ग्रिएर्सनकेँ मैथिलीक प्रसंगमे मुख्य सहायता केनिहार।

कृति- मिथिला भाषा रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर विलास,



सर जी. ए. ग्रियर्सन मैथिली प्रेमी 1851-1941



महाकवि लालदास 1856-1921

हिनक जन्म खड़ौआ ग्राममे १८५६ ई. मे तथा मृत्यु १९२१ ई. मे भेलन्हि । हिनक अनेक रचना उपलब्ध होइत अछि, यथा–रमेश्वर चरित रामायाण,' स्त्री शिक्षा,' 'सावित्री-सत्यवान्,' 'चण्डी चरित,' 'विरुदावली,' 'दुर्गा सप्तशती,' तन्त्रोक्त मिथिला माहात्म्य' आदि ।

अहिल्याचरित आऽ विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।

मैथिलीक अतिरिक्त ई संस्कृत, हिन्दी तथा फारसीक ज्ञाता छलाह । कविताक अतिरिक्त गद्यमे सेहो ई रचना कएल । रमेश्वर चरित रामायण हिनक सभसँ विशिष्ट ग्रन्थ अछि । राम-कथाक उल्लेखमे सीताक महिमाक महत्त्व दए मिथिला तथा मैथिलीक प्रति ई अपन श्रद्धा तथा भक्तिकेँ व्यक्त कएल अछि ।

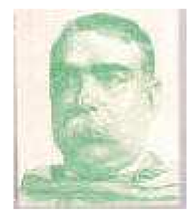


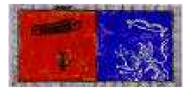




म. म. परमेश्वर झा 1856-1924	अवधबिहारी प्रसाद शाही 1859-1929	सर्वतंत्र स्वतंत्र बच्चा झा 1860-1921
जन्म 1856 ई. मे तरौनी ग्राम (दरभंगा) जिलामे भेल छलन्हि तथा निधन 1924 ई. मे । संस्कृत व्याकरणक ई दिग्गज विद्वान् छलाह तथा ‘वैयाकरण केशरी’ क उपाधिसँ विभूषित छलाह । मैथिली साहित्यमे अपन कृति ‘मिथिलातत्त्व विमर्श’ तथा ‘सीमंतिनी आख्यायिका’क कारणे महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत छथि । ई महाराज रमेश्वर सिंहक		मधुबनी जिलांतर्गत लवाणी(नवानी) गाममे हिनकर जन्म भेलन्हि।हिनक कृति सभ अछि। 1. सुलोचन-माधव चम्पू काव्य, 2.न्यायवार्त्तिक तात्पर्य व्याख्यान, 3.गूढ़ार्थ तत्त्वलोक(श्री मदभागवतगीता व्याख्याभूत मधुसूदनी टीका पर) 4.व्याप्तिपंचक टीका 5.अवच्छदकत्व निरुक्ति विवेचन 6.सव्यभिचार टिप्पण 7.सतप्रतिपक्ष टिप्पण

ISSN 2229-547X VIDEHA

दरवारमे राज-पंडितक पदपर अनेको वर्ष धरि सुप्रतिष्ठित छलाह ।		8.व्याप्तनुगन विवेचन 9.सिद्धांत लक्षण विवेक 10.व्युत्पत्तिवाद गूढार्थ तत्वालोक 11.शक्तिवाद टिप्पण 12.खण्डन-ख़ण्ड खाद्य टिप्पण 13. अद्वैत सिद्धि चन्द्रिका टिप्पण 14.कुकुकाञ्जलि प्रकाश टिप्पण।
 म. म. शशिनाथ झा 1860-1930	 मुंशी रघुनन्दन दास 1860-1945 गाम-सखबार, ज़िला-मधुबनी। "मिथिला	 डॉ. सर आशुतोष मुखर्जी मैथिली प्रेमी 1864-1924

नाटक" आ "दूतांगद व्यायोग"क लेखक।



मधुसूदन ओझा 1866-1939



म.म. मुरलीधर झा १८६८-१९२९

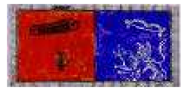
जन्म- गाम- भराम (जिला मधुबनी), अपन मातृक श्यामसीधपमे बसि गेलाह। काशीसँ १९०६ ई. मे ई "मिथिलामोद" नामक मासिक मैथिली पत्रिकाक प्रकाशन शुरु केलन्हि। हितोपदेश (अनुवाद),



मुकुन्द झा "बख्शी" 1869-1936

जन्म हरिपुर बख्शी टोल ग्राम (मधुबनी जिला) मे 1869 ई. मे भेल तथा हिनक निधन काशीमे 1937 ई. मे भेलन्हि । हिनक लिखल संस्कृत मे अनेक ग्रंथ अछि । मैथिलीमे हिनक महत्त्वपूर्ण कृति

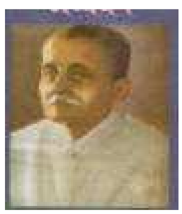




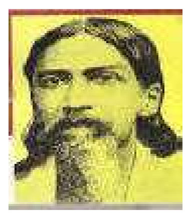
ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली व्याकरण, "अर्जुन तपस्या" (उपन्यास) प्रकाशित।

अछि 'मिथिला भाषामय इतिहास' । एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हिनक स्फुट निबन्ध सभ सेहो प्रकाशित भेल । मिथिलाक ऐतिहासिक वर्णन सभसँ पहिने हिनके प्रकाशित भेल । एहि इतिहासमे मिथिलाक सर्वतोमुखी परिचय प्रस्तुत कएल गेल अछि ।



डॉ. सर गंगानाथ झा 1871-1941



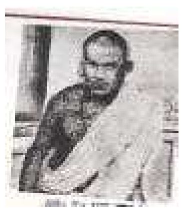
अरविन्द घोष मैथिली प्रेमी 1872-



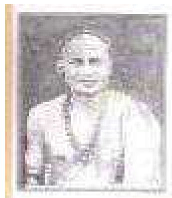
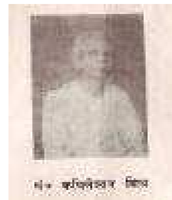
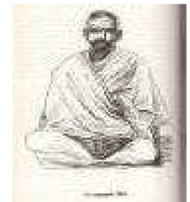
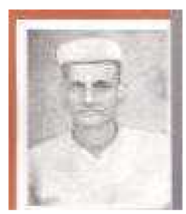
जनार्दन झा जनसीदन 1872-

जन्म मधुबनी जिलाक सरिसब-पाही ग्राममे 1871 ई. मे भेल तथा निधन प्रयागमे 1941 ई. मे । ई अपना समयक संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान म. म. चित्रधर मिश्र, म. म. जयदेव मिश्र तथा म. म. शिवकुमार शास्त्रीसँ मीमांसा एवं दर्शनक अध्ययन कएलन्हि तथा दर्शनक विभित्र दुरुह ग्रंथक अङरेजीमे अनुवाद कए पाश्चात्य संसारक ध्यान आकृष्ट कएलन्हि । ई गवर्नमेन्ट संस्कृत	1950	1951

कॉलेज बनारसमे
1917 सँ 1923
धरि प्रिसिपल छलाह
तथा एलाहाबाद
विश्वविद्यालयक
1923 सँ 1932
पर्यन्त कुलपति
रहलाह । मैथिलीमे
हिनक सम्पादित
चन्दा झाक
'महेशवाणी संग्रह'
तथा 'गणनाथ-
विन्ध्यनाथ पदावली'
प्रकाशित अछि ।
मैथिली साहित्य
परिषद् द्वारा
प्रकाशित हिनक
'वेदान्त दीपक'
(दर्शन) विषयक
अपूर्व ग्रंथ अछि ।
एहिसँ भिन्न हिनक
निबंध सभ सामयिक

मैथिली पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि ।		
		
रासबिहारी लालदास 1872-1940 "मिथिला दर्पण" क लेखक।	रामचन्द्र मिश्र "चन्द्र" 1873-1937 मैथिल प्रभा	महावैय्याकरणाचार्य पं दीनबन्धु झा 1878-1955
		
भवनाथ मिश्र 1879-1933 मैथिली शब्दकोष	कीर्त्यानन्द सिंह	टंकनाथ चौधरी 1884-1928

ISSN 2229-547X VIDEHA

"मिथिला शब्द प्रकाश"क लेखक।		
 भवप्रीतानन्द ओझा 1886-1970	 कपिलेश्वर मिश्र 1887-1987 गाम सलेमपुर, थाना- उजियारपुर, जिला समस्तीपुर। ‘‘सीतादाइ’’ पुस्तक भंडारसँ प्रकाशित।	 बालकृष्ण मिश्र 1888-1948
 सुनीति कुमार	 बलदेव मिश्र 1890-	 आचार्य रामलोचन

चटर्जी मैथिली प्रेमी 1890-1977

1975

हिनक जन्म सहरसा जिलाक वनगाँव ग्राममे 1890 ई. मे एवं निधन फरवरी, 1975मे भेलन्हि । प्रारम्भमे पं. गेनालाल चौधरीसँ ज्यौतिष पढ़ि ई काशीमे पं. सुधाकर द्विवेदीजीक शिष्य भेलाह । बहुत वर्ष धरि सरस्वती भवन (वाराणसी) मे हस्तलिखित विभागमे कार्य कएल । पश्चात् पटनाक काशीप्रसाद जयसवाल रिसर्च संस्थानमे अनेक प्राचीन तिब्बती

शरण 1889-1971

सीतामढ़ीमे जन्म आ दरभंगामे मृत्यु। "मैथिली रामचरित मानस" सहित तुलसीदासक समस्त रचनाक मैथिलीमे लेखन। मिथिलाक्षरमे मैथिलीक प्रकाशनक प्रारम्भ केनिहार। प्रकाशन संस्था "पुस्तक भण्डार", लहेरियासराय, पटनाक संस्थापक।

ISSN 2229-547X VIDEHA

हस्तलिपिकेँ देवनारीमे लिप्यन्तरित कएल। 'मिथिलामोद' प्रकाशन एवं म.म. मुरलीधर झाक प्रोत्साहनसँ ज्यौतिषीजी १९१० ई.सँ 'मोद'मे लिखए लगलाह। हिनक प्रकाशित रचना अछि–'रामायण शिक्षा', 'चन्दा झा', 'संस्कृति', 'भारत शिक्षा', 'गप्प-सप्प विवेक', 'समाज' आदि । पण्डितजी यावत् धरि पटना रहलाह बराबरि 'मिहिर'मे लिखैत रहलाह ।



सीताराम झा 1891-1975

जन्म चौगामा ग्राममे १८९१ ई.मे तथा निधन १९७५ ई. मे भेलन्हि । संस्कृतमे ज्योतिष शास्त्रक अनेक रचनाक .अतिरिक्त मैथिलीमे हिनक ’अम्ब चरित’ (महाकाव्य), ’सूक्ति सुधा,’ लोक लक्षण,’ ’पद्धआचरित,’ ’पूर्वापर व्यवहार,’ उनटा बसात,’ ’अलंकार दर्पण,



ताराचरण झा 1892-1928



बद्रीनाथ झा 1893-1973

जन्म मधुबनी जिलाक सरिसव ग्राममे १८९३ ई. मे भेलन्हि तथा १९१४ ई. मे ई काशी लाभ कएलिन्ह । बहुत दिन धरि ई मुजफ्फरपुरक धर्म्म समाज संस्कृत कॉलेजमे साहित्यक अध्यापक छलाह । मैथिलीक विख्यात कवि लोकनि यथा सुमनजी, मधुपजी,

ISSN 2229-547X VIDEHA

'भूकम्प वर्णन',
'काव्य षट-रस',
'मैथिली काव्योपवन,
आदि ग्रन्थ उपलब्ध
अछि । हिनक
गीताक मैथिली
अनुवाद सेहो
उपलब्ध अछि ।
मिथिला मोदक
सम्पादन १९२०
ई.सँ १९२७ ई.
धरि ई कएल ।

मोहनजी आदि हिनक
शिष्य छथिन्ह ।
संस्कृत साहित्यमे
हिनक अनेक रचना
अछि । जाहिमे
राधा परिणय'
(महाकाव्य) क
स्थान विशिष्ट अछि
। मैथिलीमे हिनक
'एकावली परिणय'
(महाकाव्य) एक
नवीन कीर्तिमान
स्थापित कएलक।
कोनो अलंकारक
दृष्टान्त तकबाक
हेतु 'एकावली
परिणय' पर्याप्त अछि
।



जीवनाथ राय 1893-1964



उमेश मिश्र 1895-1967

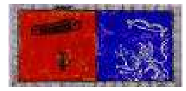
जन्म मधुबनी जिलाक गजहरा ग्राममे 1895 ई. मे भेल छलन्हि । ई एकहतरि वर्षक आयुमे १९६७ ई. मे प्रयागमे स्वर्गवासी भेलाह । ई अपन स्वनाम-धन्य पिता म. म. जयदेव मिश्र तथा म. म. डा. गंगानाथ झाक सान्निध्यमे विद्यार्जन कएल। १९२३ सँ



बाबू धनुषधारी लाल दास 1895-1965

मैथिलीमे बिहारी कविक अनुवाद प्रकाशित।

१९५९ धरि मिश्रजी एलाहाबाद विश्वविद्यालयमे संस्कृतक प्राध्यापक छलाह । दरभंगा ’मिथिला शोध संस्थान’क निदेशक पदपर किछु समय कार्य कए १९६२ सँ ६५ धरि कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलपति रहलाह ।म. म. मुरलीधर झासँ प्रभावित भए ’मिथिलामोद’मे ई लिखब प्रारम्भ कएलन्हि तथा अपन विविध प्रकारक रचनासँ मैथिलीक गद्यकेँ समृद्ध कएलन्हि ।

मैथिलीमे हिनक प्रसिद्ध ग्रन्थ अछि– ’कमला’ (शेक्सपीयरक ’टेम्पेस्ट’क भावानुवाद), ’नलोपाख्यान, ‘मैथिली-संस्कृति’ तथा अनेक वर्णनात्मक एवं आलोचनात्मक निबन्ध; मनबोधक कृष्णजन्मक सम्पादन, विद्यापतिक कीर्तिलता, कीर्तिपताका, गोरक्ष विजय आदिक अनुवाद-सम्पादन सेहो कएल।

ISSN 2229-547X VIDEHA



अमरनाथ झा
1897-1955

सरिसब पाहीटोल ग्राममे १८९७ ई. मे भेल । हिनक निधन पटनामे जखन ई बिहार लोक सेवा आयोगक अध्यक्ष छलाह, १९५५ मे भेलन्हि । ई एलाहाबाद विश्वविद्यालयक नओ वर्ष धरि कुलपति रहि पश्चात् हिन्दू विश्वविद्यालयक सेहो कुलपतिक पदकेँ



भोलालाल दास
1897-1977

हिनक जन्म दरभंगा जिलाक कसरौर मे भेलन्हि । साहित्य सर्जनाक अतिरिक्त अपन संगठन क्षमता तथा मैथिली साहित्यक सर्वतोमुखी विकासक हेतु सतत तत्पर रहबाक कारणेँ भोला बाबू मैथिली संसारक एक स्तम्भक रूपमे रहलाह । हिनक निधन 1977 ई. मे



कुमार गंगानन्द सिंह
1898-1971

जन्म–बनैली राजपरिवारमे 24-9-1898, मृत्यु:- श्रीनगर पूर्णिआ 17-1-1970 । भूतपूर्व शिक्षामंत्री, बिहार एवं कुलपति, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय ।रचना–अगिलही (अपूर्ण उपन्यास) तथा अनेक कथा एवं एकांकी । युगक अनुरूप

सुशोभित कएलन्हि । ई अंगरेजीक प्रकाण्ड विद्वान् छलाह, ताहि संग हिन्दी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, बङला एवं मैथिलीक सेहो अद्भुत विद्वान् छलाह।मैथिलीमे हिनका द्वारा सम्पादित 'हर्षनाथ काव्य ग्रन्थावली' तथा 'गोविन्ददासक श्रृग्ङारभजन' महत्त्वपूर्ण अछि । एहिसँ भिन्न हिनक मैथिली साहित्य परिषदक अध्यक्षीय भाषण तथा अन्य लेख प्रकाशित अछि ।

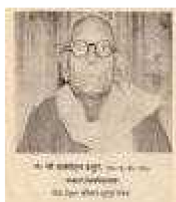
भेल । मैथिलीक प्रचार-प्रसारमे ई अपन जीवन समपित कएने छलाह। पाठ्यक्रममे मैथिलीकेँ स्थान हो ताहि हेतु ई बीड़ा उठओलन्हि । विद्यालय स्तरक अनेक पोथीक निर्माण कएल । मैथिली साहित्य परिषदक ई संस्थापक मण्डलक सदस्य छलाह । 1931 सँ 1940 ई. पर्यन्त ओकर प्रधान मन्त्री रहलाह । हिनक मन्त्रित्वकालमे 'भारती' नामक मासिक पत्रक प्रकाशन भेल ।

सामाजिक कुरीति आदिकेँ आधार बनाए सुधारवादी दृष्टिएँ कथा सभहिक रचना ।

ISSN 2229-547X VIDEHA

एहिसँ पूर्व (१९२९-३१) कुशेश्वर कुमरजीक संग संयुक्त सम्पादनमे 'मिथिला' नामक पत्र चलाओल । ई नवीन एवं प्रगतिशील विचारक लोक छलाह । नवव लेखककेँ प्रोत्साहित करब, शैलीमे एकरूपता आनब, नव प्रकाशनसँ मैथिलीक साहित्य भंडारक पूर्त्ति करब हिनक कर्त्तव्य बनि गेल छल । हिनक लिखल 'मैथिली व्याकरण' तथा हिनकहि द्वारा सम्पादित 'गद्यकुसुमांजलि बहुत

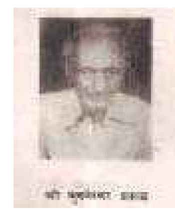
दिन धरि विद्यालयमे पढ़ाओल जाइत रहल । हिनक लिखल अनेक निबन्ध समालोचना, कविता, संस्मरण, जीवनी-साहित्य मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे छिड़िआएल अछि ।



ब्रजमोहन ठाकुर 1899-1977



रामवृक्ष बेनीपुरी 1899-1967

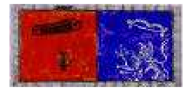


भुवनेश्वर प्रसाद 1902-

दरभंगा जिलाक बनौली गाम, निवास रायसाहेब पोखरि

ISSN 2229-547X VIDEHA

		लहेरियासराय। सरस्वती स्कूल लहेरियासरायमे १९३०-१९६४ ई. धरि अध्यापन। मैथिलीमे "बाल रामायण" प्रकाशित।
 जयनारायण झा 'विनीत' 1902-1991	 सुधाकर झा "शास्त्री" 1904-1974	 दामोदर लाल दास विशारद 1904-1981
 बबुआजी झा	 श्रीवल्लभ झा हाटी	 रमानाथ झा 1906-

'अज्ञात' 1904-1996 २००१- बबुआजी झा ''अज्ञात'' (प्रतिज्ञा पाण्डव, महाकाव्य)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।	1905-1940	1971 जन्म दरभंगा जिलाक उजान (धर्मपुर) ग्राममे 1906 ई. मे एवं हिनक निधन दरभंगामे १९७१ ई. मे भेलन्हि । 1930 ई. मे अङरेजीमे एम. ए. कएलाक बाद ई कतोक वर्ष धरि मधेपुर उच्च विद्यालयक प्रधानाध्यापक छलाह, तकरा बाद दरभङ्गा-राज-लाइब्रेरीक पुस्तकालयाध्यक्षक रूपमे 1936 सँ अन्तिम समय धरि रहलाह । 1952

सँ 62 चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे प्रो. झा अङरेजीक प्राध्यापक रूपेँ काजka पश्चात् ओही कॉलेजमे मैथिली विभागाध्यक्ष बनाओल गेलाह । 1965 मे रमानाथ बाबू साहित्य अकादमीक मैथिलीक प्रतिनिधि निर्वाचित भेलाह जाहि पद पर ओ जीवनक अन्त समय तक रहलाह ।

हिनक रचनाक क्षेत्र बहुत व्यापक छल । हिनक अनुसंधानात्मक निबंक दू गोट संग्रह

'निबन्धमाला' तथा 'प्रबंध संग्रह' प्रकाशित अछि । संकलित सम्पादित पुस्तक सभमे 'मैथिली पद्य-संग्रह', 'मैथिली गद्य-संग्रह', 'प्राचीन गीत', 'कथा काव्य', 'नवीन गीत', 'कविता कुसुम', 'कथा संग्रह' आदि अछि । 'कथासरित्सागर'क आधार पर प्राञ्जल गद्य शैलीमे हिनक 'उदयन-कथा' तथा 'बररुचि-कथा' बेश ख्याति पओलक । व्याकरणक 'मिथिला भाषा प्रकाश', 'अलक्ङारप्रवेश' आदि अनेक ग्रन्थ

प्रकाशित अछि । 'मैथिली साहित्य पत्र' त्रैमासिक पत्रिकाक संपादक।



काशीकान्त मिश्र "मधुप" 1906-1987

१९७०- काशीकान्त मिश्र ''मधुप'' (राधा विरह, महाकाव्य) पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त मैथिलीक प्रशस्त कवि आ मैथिलीक प्रचार-प्रसारक समर्पित कार्यकर्ता

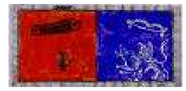


कांञ्चीनाथ झा "किरण" 1906-1988

जन्म स्थान- धर्मपुर,लोहना रोड, दरभंगा बिहार । मैथिली भाषा आंदोलनमे महत्वपूर्ण भूमिका। 'पराशर' महाकाव्य लेल साहित्य अकादमी ओ 'कथा किरण'



श्यामानन्द झा 1906-1949

'झंकार' कवितासँ
क्रान्ति गीतक
आह्वान कएलनि ।
प्रकृति प्रेमक
विलक्षण कवि ।
'घसल अठन्नी
कविताक लेल कथ्य
आ शिल्प-संवेदना–
दुहू स्तर पर चरम
लोकप्रियता
भेटलनि।

लेल वैदेही
पुरस्कारसँ सम्मानित
। प्रकाशित कृति:
चंद्रग्रहण (उपन्यास),
वीर-प्रसून
(बालकथा), जय
जन्मभूमि (एकांकी),
विजेता विद्यापति
(नाटक), कथा-
किरण (कथा-संग्रह),
किरण-कवितावली,
कतेक दिनक बाद
(कविता-संग्रह),
पराशर (महाकाव्य)
ओ किरण-निबंधावली
(निबंध-संग्रह)
आदि।१९८९-
काञ्चीनाथ झा
"किरण" (पराशर,
महाकाव्य)पर मैथिली
मे साहित्य अकादमी
पुरस्कारसँ

ISSN 2229-547X VIDEHA

सम्मानित।

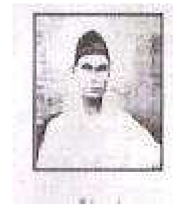


रमाकांत झा, नेपाल 1907-1971



ईशनाथ झा 1907-1965

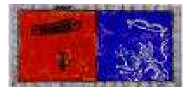
बहुमुखी प्रतिभाक कवि । प्राचीन आ नवीन पद्धतिक काव्य-रचनाक विलक्षण संयोग हिनकर कवितामे भेटैत अछि । दलित वर्ग, शोषणक समस्या, स्वदेश प्रेमक यथार्थवादी रचनाक संग संग व्यक्तिनिष्ठ कल्पनाक अनेक



भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' 1907-1944

अपन खाढ़ीक बहुमुखी प्रतिभाक कवि । प्राचीन आ नवीन रीतिक कविताक रचना विपुल संख्यामे कएलनि । 'भुवन भारती' कविता संकलन प्रकाशनसँ मैथिली ओज आ नव चेतनाक शंख फुकलनि।





विशिष्ट कविता मैथिलीमे लिखलनि।



हरिमोहन झा 1908-1984

हिनकर मैथिली कृति १९३३ मे “कन्यादान” (उपन्यास), १९४३ मे "द्विरागमन”(उपन्यास), १९४५ मे “प्रणम्य देवता” (कथा-संग्रह), १९४९ मे “रंगशाला”(कथा-



रामधारी सिंह ’दिनकर’ मिथिला रत्न 1908-1974

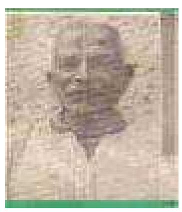


माँगनि खबास 1908-1943 संगीतज्ञ

पचगछियामे जन्म आ अल्प बएसमे मृत्यु। पचगछियाक रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंहक शिष्य।

ISSN 2229-547X VIDEHA

संग्रह), १९६० मे "चर्चरी"(कथा-संग्रह) आऽ १९४८ ई. मे "खट्टर ककाक तरंग" (व्यंग्य) अछि। मृत्योपरांत १९८५मे (जीवन यात्रा, आत्मकथा)पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।



सुभद्र झा 1909-2000

"फॉर्मेशन ऑफ मैथिली लैंगुएज"क लेखक। १९८६-



स्नेहलता 1909-1993

गाम- डरोड़ी, समस्तीपुर। पूर्ण नाम- कपिलदेव



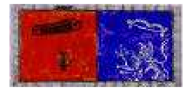
कालीकान्त झा 1909-

मूल गाम ढंगा (हरिपुर), मधुबनी। फेर मातृक

सुभद्र झा (नातिक पत्रक उत्तर, निबन्ध)पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।	ठाकुर "स्नेहलता"। रामाश्रयी रसिक सम्प्रदायक संत। हिनकर रचित वैदेही विवाह संकीर्तन, विनय पदावली, शिववाणी, चेतावनी, झूला-संकीर्तन, सीतावतरण प्रबन्धकाव्य आ स्नेहशतक-दोहावली-कवित्त आदि मिथिलाक महिला वर्ग आ संकीर्तनकार लोकनिक कंठमे परिव्याप्त अछि आ लोकमंगलक अनुष्ठानमे व्यापक रूपेँ व्यवहृत अछि। हिनक "वैदेही विवाह" मिथिलाक	बरदबट्टा,पो. उरलाहा, भाया-मदनपुर, जिला-पूर्णियामे बसि गेलाह। सतघरा (मधुबनी), मदनपुर आ काशीमे पाणिनी व्याकरणक अध्ययन। "हनुमान चरित"क लेखक।

ISSN 2229-547X VIDEHA

	कीर्तनिया नाट्य परम्पराकेँ लोकरुचिक अनुकूल बनौने अछि।	
 तंत्रनाथ झा 1909-1984 जन्म १९०९ ई मे दरभंगा जिलाक धर्मपुर ग्राममे भेलन्हि मुत्यु ४-५-’८४,चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे अर्थशास्त्रक प्राध्यापक छलाह । अवकाश ग्रहण क काव्य साधनामे	 जीवनाथ झा 1910-1977	 सुरेन्द्र झा ’सुमन’ 1910-2002 जन्म: ग्राम : बल्लीपुर, जिला-समस्तीपुर । प्रकाशित कृति: प्रतिपदा, अर्चना,साओन-भादव,अंकावली, अन्तर्नाद, पयस्विनी, उत्तरा आदि तीससँ अधिक मौलिक

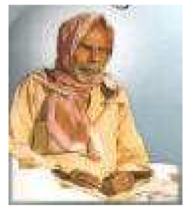
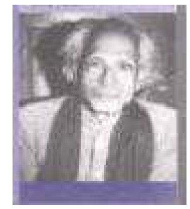



लागल रहलाह । महाकाव्य, मुक्तक, एकांकी सभ विधामे ई सिद्ध हस्त छलाह । हिनक 'कीचक वंध' महाकाव्य अङरेजीक 'ब्लैक्ङ भर्स' (अमित्राक्षर छन्द) म लिखल अछि । मैथिलीमे 'सौनेट' एवं ब्लैक्ङ भर्स'क ई प्रथम प्रयोक्ता थिकाह । संस्कृत परम्परामे काव्य रचना करितहुँ पाश्चात्य शैलीक नवीनता हिनका रचनामे भेल । हिनक 'कीचक वध' ओ 'कृष्ण चरित' महाकाव्य–'मङ्गल-पञ्चाशिका' एवं

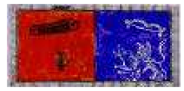
कविता-पुस्तक;पुरुष-परीक्षा, अनुगीतांजलि, ऋतु श्रृंगार तथा वर्णरत्नाकर, पारिजात-हरण, कृष्णजन्म, आनन्द-विजय आदि कतिपय ग्रन्थक अनुवाद-संपादन; 'मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव' नामक समीक्षा-ग्रंथ। 'पयस्विनी' लेल १९७१ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार तथा 'उत्तरा' पर १९९८ मे मैथिली अकादेमीक विद्यापति पुरस्कार प्राप्त । मैथिलीक प्रथम दैनिक पत्र

'नमस्या' मैथिली साहित्यमे अपन विशिष्ट स्थान रखैछ । तकर अतिरिक्त मुक्तक काव्यमे विषय वस्तुक व्यापकता एवं शिल्प शैलिक प्रचुरता अबैत अछि । एक दिश यदि प्राचीन ढंगक ईश्बर वन्दनाक रचना कएलन्हि तँ दोसर दिस 'सौनेट' (चतुर्दशपदी) 'बैलेड' आदि लिखबामे पूर्ण सफलता प्राप्त कएलन्हि ।'कृष्ण चरित' महाकाव्य पर हिनका 1979 ई क साहित्यक अकादमी पुरस्कार भेटलन्हि

'स्वदेश'क लब्धप्रतिष्ठ सम्पादक।१९९५- सुरेन्द्र झा ‘‘सुमन’’ (रवीन्द्र नाटकावली- रवीन्द्रनाथ टैगोर, बांग्ला)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। २००० ई.- पं.सुरेन्द्र झा ‘‘सुमन’’, दरभंगा;यात्री-चेतना पुरस्कार।

। 1980 ई. मे हिनका अभिनन्दन ग्रन्थसमर्पित कएल गेलन्हि ।		
 पं. रामचन्द्र झा 1910- गाम तरौनी। काशी मिथिला ग्रन्थमालाक सम्पादक।	 'नागार्जुन' वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' 1911-1998 जन्म अपन मामागाम सतलखामे भेलन्हि, जे हुनकर गाम तरौनीक समीपहिमे अछि, जिला-दरभ्गा । मूल नाम: वैद्यनाथ मिश्र । हिन्दीमे नागार्जुन	 आरसीप्रसाद सिंह 1911-1996 जन्म: ग्राम-एरौत, जिला-समस्तीपुर । प्रकाशित कृति: माटिक दीप, पूजाक फूल, सूर्यमुखी (कविता-संग्रह), मेघदूत (अनुवाद), आरसी, नन्ददास, संजीवनी (हिन्दी





ISSN 2229-547X VIDEHA

नामे प्रख्यात ।
प्रकाशित कृति:
चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (मैथिली कविता-संग्रह); पारो, बलचनमा, नवतुरिया (मैथिली उपन्यास); युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आंखें, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, तुमने कहा था, हजार हजार बाहो वाली, पुरानी जूतियो का कोरस, रत्नगर्भा, ऐसे भी हम क्या ! ऐसे भी तुम क्या ! (हिन्दी कविता-संग्रह); रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौध, बाबा बटेसरनाथ,

काव्य संग्रह)। 'सूर्यमुखी' लेल १९८४ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त ।

वरुण के बेटे,
दुखमोचन,
कुम्भीपाक,
अभिनन्दन, उग्रतारा,
इमरतिया (हिन्दी
उपन्यास); आसमान
में चन्दा तैरे
(कहानी संग्रह);
भस्मांकुर (हिन्दी
खण्ड काव्य);
अन्नहीनम् क्रियाहीनम्
(निबन्ध-संग्रह); गीत
गोविन्द; मेघदूत;
विद्यापति के गीत,
विद्यापति की
कहानियां (अनुवाद)
। 'पत्रहीन नग्न
गाछ' लेल १९६८
मे साहित्य अकादेमी
पुरस्कार प्राप्त ।
यायावरी जीवन ।
मैथिली प्रतिनिधिक

ISSN 2229-547X VIDEHA

रूपमे रूस भ्रमण । नागार्जुन (**स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”)**, हिन्दी आ मैथिली कवि, १९९४ ई.मे **साहित्य अकादेमीक फेलो** (भारत देशक सर्वोच्च साहित्यक पुरस्कार)।



गुरु जयदेव मिश्र 1911-1991 शिष्य गंगानाथ झा



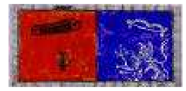
यशोधर झा

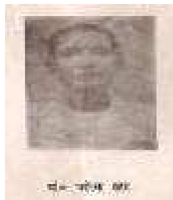
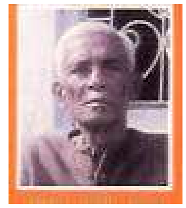
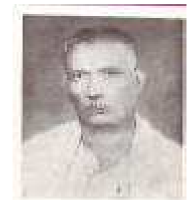
मिथिला वैभव, दर्शन मैथिली पोथीपर 1966 मे पहिल साहित्य अकादमी पुरस्कार मैथिली



वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' 1912-1987

१९७६- वैद्यनाथ मल्लिक “विधु” (सीतायन, महाकाव्य) लेल मैथिलीक

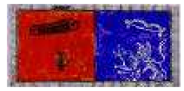
	लेल प्राप्त।	साहित्य अकादमी पुरस्कार।
 भीम झा 1912- पूर्णिया जिलाक मदनपुर गामक। जन्म ५ नवम्बर १९१२ ई.। बनैलीक श्री श्यामानन्द सिंहक अध्यक्षतामे “नारायण संकीर्तन महामण्डली”क स्थापना।	 राधानाथ दास १९१२-	 उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' 1913-1980 जन्म १९१३ ई. मे दरभंगा जिलाक चतरिया ग्राममे भेलन्हि । मृत्यु २४-५-१९८० । संस्कृत शिक्षामे साहित्याचार्य ओ बड़ौदा राजक विद्वत्-परीक्षासँ ‘साहित्य-रत्न’क उपाधिसँ विभूषित

ISSN 2229-547X VIDEHA

भेलाह । दैनिक आर्यावर्तमे आदिअहिसँ, पश्चात् १९६० सँ मिथिला मिहिरक उप-सम्पादक एवं सह-सम्पादक रूपेँ कार्य करैत १९७७ मे सेवा निवृत भेलाह।मोहनजी करीब पचास वर्ष साहित्य साधनामे लागल रहलाह । विजयानन्द, कुंजरंजन, सुदर्शन, पुण्डरीक, शास्त्री, बामन आदि छद्म नामसँ पत्र-पत्रिकामे विविध विषयपर हिनक लेख सभ प्रकाशित भेल अछि।मोहन जीक 'बाजि

उठल मुरली'मे १०१ गोट कविताक संकलन अछि जाहिमे हिनक सुदीर्घ काव्य-आराधनाक विभिन्न विचारधाराक ओ विभिन्न अनुभूतिक सामग्री उपलब्ध अछि । एहि पुस्तकपर मोहन'जीकेँ १९७८ मे साहित्य अकादम् पुरस्कार भेटलन्हि। एहिसँ बहुत पूर्व हिनक 'फुलडाली' नामक कविता संग्रह सेहो प्रकाशित भेल छल ।





ISSN 2229-547X VIDEHA



जयनाथ मिश्र
1913-1985



श्रीकांत ठाकुर "विद्यालंकार"



पञ्जीकार मोदानन्द झा
1914-1998

लब्ध धौत पञ्जीशास्त्र मार्त्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया। पिता-स्व. श्री भिखिया झा। गुरु- पञ्जीकार भिखिया झा। पूर्णिया जिलाक बनैली लगक शिवनगर गामक। जन्म २२ सितम्बर १९१४ ई.।सौराठमे अपन मौसा स्व. लूटनझा सँ पंजीशास्त्रक

अध्ययन। १९४८-१९५१ ई. धरि दरभंगामे रहि आचार्य रमानाथ झाकेँ पाँजि पढ़ओलनि।शास्त्रार्थ परीक्षा- दरभंगा महाराज कुमार जीवेश्वर सिंहक यज्ञोपवीत संस्कारक अवसर पर महाराजाधिराज(दरभंगा) कामेश्वर सिंह द्वारा आयोजित परीक्षा- 1937 ई. जाहिमे मौखिक परीक्षाक मुख्य परीक्षक म.म. डॉ. सर गंगानाथ झा छलाह।

ISSN 2229-547X VIDEHA



आनन्द झा 1914-1988



बाबू साहेब चौधरी 1916-1998

दरभंगा जिलाक दुलारपुर गामक। १९४३ ई. मे जीविकार्थ कलकत्ता अएलाह। नवम कक्षामे स्वराज्य आन्दोलनमे बाझि कए शिक्षाक इतिश्री। कलकत्तामे स्थानीत मैथिल संघमे प्रवेश। कलकक्तामे मैथिली आर्ट प्रेस. ९/१, खिलात घोष लेन,



लक्ष्मण झा 1916-2000

कलकत्ता-७००००६ सँ मैथिली-मिथिला आन्दोलनमे सक्रिय। “कुहेस” आ “चाणक्य” दूटा नाटक। १९७१-७९ धरि “मिथिला दर्शन” आ “मैथिली दर्शन” मैथिली मासिकक सम्पादन।



शुद्धदेव झा 'उत्पल' 1916-

गोड़डा जिलाक अलखदत्त-महेनपुरक निवासी। जन्म १६

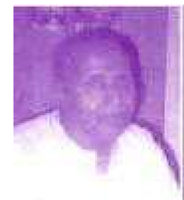


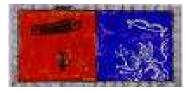
संगीत भाष्कर राजकुमार श्यामानन्द सिंह १९१६-१९९४



रामचरित्र पाण्डेय "अणु" १९१७-२०१०

ISSN 2229-547X VIDEHA

अक्टूबर १९१६ ई.।		
 लक्ष्मीनाथ झा मिथिला चित्रकला 1917-1990	 उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' 1917-2002 जन्म स्थान-हरिपुर वकशीटोल, मधुबनी, बिहार । १९६९- उपेन्द्रनाथ झा "व्यास" (दू पत्र, उपन्यास) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित । साहित्य	 मनमोहन झा 1918-2009 जन्म सरिसबमे, अश्रुकण, वीरभोग्या, मिथिलाक निशापुरमे।२००९- स्व.मनमोहन झा (गंगापुत्र, कथासंग्रह)पर मृत्योपरांत साहित्य अकादमी पुरस्कार।

अकादेमीक अनुवाद पुरस्कार प्राप्त । प्रकाशित कृति: कुमार, दू पत्र (उपन्यास), विडंबना, भजना भजले (कथा-संग्रह), पतन संन्यासी, प्रतीक (काव्य), महाभारत (पहिल दू पर्व) आदि।



ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' 1918-1986

जन्म स्थान-बहेड़ा,



पं. सहदेव झा १९१९-

"मिथिला की धरोहर" पोथी

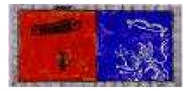


स्वर्गीय विन्ध्येश्वरी प्रसाद मंडल, राजनेता 1919-1982

ISSN 2229-547X VIDEHA

दरभंगा बिहार । १९७३- ब्रजकिशोर वर्मा “मणिपद्म” (नैका बनिजारा, उपन्यास) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित । उपन्यासकार, कथाकार ओ कवि । प्रकाशित कृति: कोब्रागर्ल, कनकी, अर्द्धनारीश्वर, लोरिक विजय, नैका-बनिजारा, लवहरि-कुशहरि, राय रणपाल, आदिम गुलाम आदि उपन्यास ओ कंठहार (नाटक) आदि।	प्रकाशित।	जन्म २५ अगस्त १९१९, मृत्यु १३ अप्रैल १९८२





ISSN 2229-547X VIDEHA



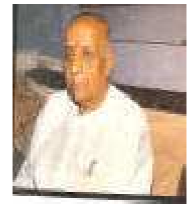
बुद्धिधारी सिंह रमाकर 1919-1991

जन्म मधुबनीमे 1919 ई. मे भेल । अपन पिता स्व. क्षेमधारी सिंहसँ विभिन्न विषयक शिक्षा ग्रहण कएलन्हि । ई रामकृष्ण कॉलेज, मधुबनीक मैथिली विभागाध्यक्ष छलाह । जतएसँ अवकाश प्राप्त कएलन्हि । बाल्या-वस्थहिसँ ई

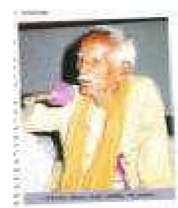


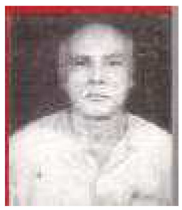
प्रो. रामशरण शर्मा १९२०-२०११

1 सितम्बर 1920 बरौनी (बिहार) मे जन्म , मृत्यु 21 अगस्त 2011 पटनामे। 15 देशी-विदेशी भाषामे 115 से बेशी किताब प्रकाशित, पहिल किताब "विश्व इतिहास की भूमिका (दू खंडमे) 1949 मे प्रकाशित, अंतिम पुस्तक "इकोनामिक हिस्ट्री आफ अर्ली



आद्याचरण झा 1920-

कविकार्यमे लागल रहलाह अछि । संस्कृत तथा मैथिली दुनू भाषामे हिनक रचना प्रकाशित अछि । यथा– मैथिलीमे 'प्रयास' (कथा-संग्रह), 'मधुमती', 'अमरबापू' (कविता-संग्रह), 'शरशय्या' (खंड-काव्य) 'स्मृति साहस्त्री' (महाकाव्य) आदि ।	इंडिया", भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषदक संस्थापक अध्यक्ष, जवाहरलाल नेहरू फेलोशिप, यूजीसी नेशनल फेलोशिप आ वीके राजवाड़े लाइफटाइम अवार्ड।	
 फणीश्वर नाथ 'रेणु' मिथिला रत्न 1921-	 जयकान्त मिश्र, पुत्रीक संग आ'	 चन्द्र भानु सिंह 1922-

1977	नेहरूक संग 1922-2009	२००४- चन्द्रभानु सिंह (शकुन्तला, महाकाव्य)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।
 सुधांशु शेखर चौधरी 1922-1990 जन्म दरभंगाक मिश्रटोलामे 1922 ई. मे भेलन्हि तथा मृत्यु 1990 ई. मे भेलन्हि । किछु दिन विभिन्न जीविकामे रहि पश्चात् साहित्यकारक जीवन	 गोविन्द झा 1923- जन्मस्थान- इसहपुर, सरिसब पाही, मधुबनी, बिहार । सिद्ध कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार, भाषा वैज्ञानिक ओ अनुवादक। साहित्य अकादेमी पुरस्कार,	 योगानन्द झा 1923-1986 हिनक जन्म मधुबनी जिलाक कोइलख ग्राममे 1923 ई. मे भेलन्हि । मृत्यु 1986 मे भेलनि । अग्रेजीमे एम. ए. कएलाक पश्चात् ई किछु दिन चन्द्रधरी

ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रारम्भ कएल । किछु दिन 'बैदेही'क सम्पादन श्री सुमनजी एवं श्री कृष्णकान्त मिश्रजीक संग कएल तत्पश्चात् 1960 ई. सँ 1982 ई. धरि पटनामे 'मिथिला मिहिर'क सफल सम्पादन कएल ।हिनक दू गोट नाट्यकृति-'भफाइत चाहक जिनगी', लेटाइत आँचर', तथा 'पहिल साँझ' हिनक नाटकक नीक व्यावहारिक अनुभवक परिचायक अछि ।छद्मनामसँ हिनक दू गोट उपन्यास मिहिर' मे प्रकाशित भेल अछि साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित। बिहार सरकारसँ कामिल बुल्के पुरस्कार, ग्रियर्सन पुरस्कार आदिसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: उपन्यास, नाटक, कथा, कविता, भाषा विज्ञान आदि विभिन्न विधामे अड़तीस टा पोथी प्रकाशित । प्रकाशन: सामाक पौती,नेपाली साहित्यक इतिहास (अनु) आदि । १९९३- गोविन्द झा (सामाक पौती, कथा)पुस्तक लेल सहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित मिथिला कॉलेजमे प्राध्यापक रहलाह । बिहार प्रशासनिक सेवामे 1981 धरि विभिन्न पदपर कार्य कएल । तत्पश्चात्मैथिली अकादमीक निदेशक '84 धरि ।योगानन्द झाजी मैथिली साहित्यमे अपन उपन्यास 'भलमानुस' एवं 'पवित्रा'क हेतु ख्यात छथि । हिनक नाटक 'मुनिक मतिभ्रम' एवं कथा संग्रह 'उड़ैत वंशी' यथेष्ट प्रतिष्ठा प्राप्त कएने अछि । एकर अतिरिक्त ई महात्मा गान्धीक आत्मकथाक अनुवाद

। हिनक उपन्यास ई वतहा संसार' जे मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित भेल आ जाहि पर 1980 क साहित्य अकादमीक पुरस्कार देल गेल ।

।१९९३- गोविन्द झा (नेपाली साहित्यक इतिहास- कुमार प्रधान, अंग्रेजी) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2006 सँ सम्मानित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१० (समग्र योगदान लेल)

एवं 'आमक जलखरी' नामक एक कथा संग्रहक सम्पादन सेहो कएने छथि ।







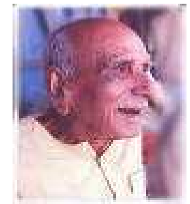
रामकृष्ण झा 'किसुन' 1923-1970

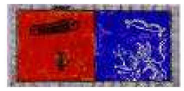
आधुनिक धाराक विशिष्ट कवि, कथाकार, चिन्तक । प्रकाशित कृति: आत्मनेपद (कविता संग्रह), मैथिली नवकविता (सम्पादन)। मृतयुपरान्त 'किसुन रचनावली' तीन खण्डमे प्रकाशित ।

उमानाथ झा 1923-2009

जन्म:-01-01-1923, मृत्यु 07-12-2009 महरैल, भधुबनी ।भूतपूर्व अङरेजी विभागाध्यक्ष एवं प्रति-कुलपति मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा । रचना:-रेखाचित्र, अतीत (कथा संग्रह); मैथिली नवीन साहित्य, इन्द्र धनुष, विद्यापति गीतशती (सम्पादन)।१९८७-उमानाथ झा (अतीत, कथा) पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ

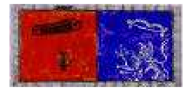
ज़टाशंकर दास 1923-2006

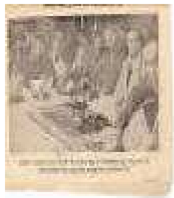
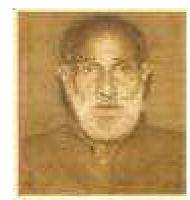
	सम्मानित।	
		
प्रबोध नारायण सिंह 1924-2005 हिन्दी, संस्कृत, मैथिली, पाली एवं फारसीक विद्वान्। मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक ई अनन्य भक्त छथि । कलकत्ता रहि मिथिला दर्शन, मैथिली कविता', मैथिली रंगमंच' आदि पत्रिकाक प्रकाशनक माध्यमसँ श्री	मदनेश्वर मिश्र 1924-2004	अमोघ नारायण झा "अमोघ" 1924-

ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रबोधजी मैथिलीक
जे सेवा कएल अछि
तकर वर्णन थोड़मे
सम्भव नहि ।
अनेक बङला
कृतिक ई अनुवाद
सेहो कएल अछि
।हिन्दीमे सेहो
हिनक 'कविता
संग्रह' प्रकाशित
अछि ।कलकत्ता
विश्वविद्यालयमे
हिन्दीक पूर्व
अध्यक्ष। २००२-
डॉ. प्रबोध नारायण
सिंह (पतझड़क
स्वर- कुर्तुल ऐन
हैदर, उर्दू) लेल
साहित्य अकादेमी
मैथिली अनुवाद
पुरस्कार।

 मुरलीधर सिंह, ब्रजमोहन ठाकुर, शुभंकर झा, मदनेश्वर मिश्र 1924-2004, ललित नारायण मिश्र, देवनाथ राय	 मतिनाथ मिश्र मतंग 1924-	 आनन्द मिश्र 1924-2007
 डॉ. जयमन्त मिश्र १९२५-२०१० जन्म १५-१०-१९२५ मृत्यु ०७-	 चन्द्रनाथ मिश्र अमर 1925- जन्म: खोजपुर, मधुबनी । वरिष्ठ	 मुक्तिनाथ झा (1926-2009)

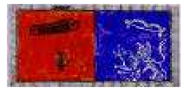
०९-२०१०, गाम- ढंगा-हरिपुर-मजरही।

१९९५- जयमन्त मिश्र (कविता कुसुमांजलि, पद्य) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार- मैथिली।

कवि, कथाकार- उपन्यासकार । हास्य-व्यंग्यक कवितामे बेजोड़। मैथिलीक लेल समर्पित व्यक्तित्व । पांच दर्जनसं बेसी कथा आ विदागरी, वीरकन्या (उपन्यास) जल समाधि (कथा संग्रह) प्रकाशित ।१९८३- चन्द्रनाथ मिश्र “अमर” (मैथिली पत्रकारिताक इतिहास) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। एम. एल. एकेडमी, लहेरियासरायसं शिक्षकक रूपमे

अवकाश प्राप्त। आशा दिशा, गुदगुदी, युगचक्र, उनटा पाल आदि कविता संग्रह प्रकाशित। १९९८- चन्द्रनाथ मिश्र “अमर” (परशुरामक बीछल बेरायल कथा- राजशेखर बसु, बांग्ला) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। चन्द्रनाथ मिश्र अमर २०१० मे मैथिली साहित्य लेल **साहित्य अकादेमीक फेलो** (भारत देशक सर्वोच्च साहित्यक पुरस्कार)।





ISSN 2229-547X VIDEHA

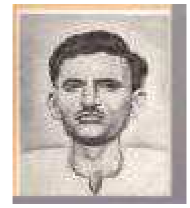


शुभंकर झा 1926-



डॉ. हरिवंश तरुण 1927-2009

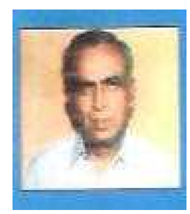
जन्म 21 जून 1927 ई.। गाम- चकसलेम, पो.- पटोरी, जिला- समस्तीपुर। तीन दर्जन सँ बेशी हिन्दी पोथी जाहिमे काव्य-कथा-प्रबन्ध सम्मिलित अछि।

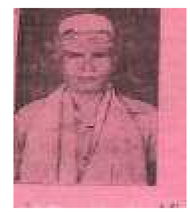


दीनानाथ पाठक 'बन्धु' 1928-1962





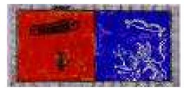


बुचन भगत, संत 1928-1991	अनंत बिहारी लाल दास "इन्दु" 1928-2010 २००७- अनन्त बिहारी लाल दास "इन्दु" (युद्ध आ योद्धा-अगम सिंह गिरि, नेपाली)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।	जगदानन्द झा 1928-
 दुर्गानाथ झा "श्रीश" हिनकर जन्म मधुबनी जिलाक विट्ठो गाममे १९२९	 राजकमल चौधरी 1929-1967 महिषी, सहरसा। रचना:- आदि कथा,	 विश्वनाथ झा "विषपायी" 1929-2005 "राम सुयश सागर"

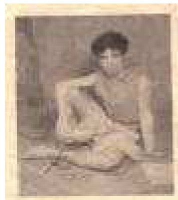
ई. मे भेलन्हि। हिन्दी आ मैथिलीमे एम.ए. आ बी.एड. केलाक बाद किछु दिन स्कूलमे अध्यापन, फेर मिल्लत कॉलेज, लहेरियासरायमे मैथिली आ हिन्दी विभागक अध्यक्ष। मैथिली भाषामे पहिल पी.एच. डी.। "श्रीश" जीक मैथिलीमे प्रकाशित रचना अछि- "मैथिली साहित्यक इतिहास", "भुवन भारती" (सम्पादन), "महामत्स्य ओ मनु" (कविता), "नाट्य कथा सार"(सम्पादन), आन्दोलन, पाथर फूल (उपन्यास), स्वरगंधा (कविता संग्रह), ललका पाग (कथा संग्रह), कथा पराग (कथा संग्रह सम्पादन)। हिन्दीमे अनेक उपन्यास, कविताक रचना, चौरङ्गी (बङला उपन्यासक हिन्दी रूपान्तर) अत्यन्त प्रसिद्ध। (मैथिली रामायण) १९८० ई. मे प्रकाशित। २५ जनवरी २००५ कें मृत्यु।

"पुरुषार्थ"(पद्य नाटक) आ अनेक कविता, एकांकी आ आलोचनात्मक निबन्ध।		
 जयधारी सिंह 1929-2007 समीक्षक, कवि । प्रकाशन: बौद्धगानमे तांत्रिक सिद्धांत, समीक्षा शास्त्रा अदि । रामकृष्ण कॉलेज, मधुबनीमै मैथिली विभागक पूर्व अध्यक्ष ।	 शैलेन्द्र मोहन झा 1929-1994 १९९२- शैलेन्द्र मोहन झा (शरतचन्द्र व्यक्ति आ कलाकार-सुबोधचन्द्र सेन, अंग्रेजी)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।	 विजयनाथ ठाकुर 1929-2008





ISSN 2229-547X VIDEHA



सुन्दर झा "शास्त्री" 1930-1998

जनकपुर, नेपाल, युवावस्थाक जेलक दुर्लभ फोटो।नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक मानद सदस्यता- स्व. सुन्दर झा शास्त्री।



रमेशचन्द्र वर्मा 1930-



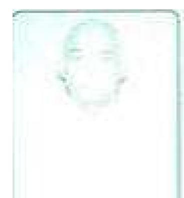
गणेश चंचल १९३०-२०११



गोपालजी झा 'गोपेश' 1931-



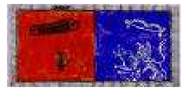
विवेकानन्द ठाकुर



ताराकांत मिश्र 1931-

2008 जन्म मधुबनी जिलाक मेहथ गाममे १९३१ ई.मे भेलन्हि।हिनकर रचित ‘‘सोन दाइक चिट्ठी’’, ‘‘गुम भेल ठाढ़ छी’’, ‘‘एलबम’’ ‘‘आब कहू मन केहन लगैए’’, "मखानक पात" प्रकाशित भेल जाहिमे सोनदाइक चिट्ठी बेश लोकप्रिय भेल।२००६ ई.-श्री गोपालजी झा गोपेश, मेंहथ, मधुबनी;यात्री-चेतना पुरस्कार।	1931- २००५- विवेकानन्द ठाकुर (चानन घन गछिया, पद्य)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।





ISSN 2229-547X VIDEHA



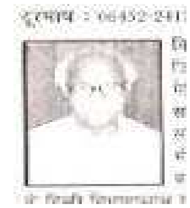
ललित 1932-1983

जन्म स्थान बसैठ चानपुरा मधुबनी, बिहार । प्रसिद्ध कथाकार ओ उपन्यासकार । प्रकाशित कृति: प्रतिनिधि, (कथा संग्रह), पृथ्वी-पुत्र (उपन्यास) आदि।



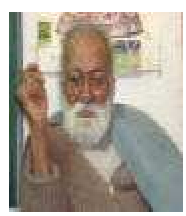
मुरारि मधुसूदन ठाकुर 1932-

ताराशंकर बंदोपाध्यायक बंगला उपन्यास "आरोग्य निकेतन"क मैथिली अनुवाद लेल साहित्य अकादमीक अनुवाद पुरस्कार 1999 भेटल छन्हि।



विद्यानारायण ठाकुर 1933-







धूमकेतु 1932-2000

जन्म स्थान कोइलख, मधुबनी, बिहार । प्रसिद्ध कथाकार, उपन्यासकार ओ कवि । प्रकाशित कृति : दू टा कथा संग्रह ओ एक टा उपन्यास ।

राजमोहन झा 1934-

जन्म स्थान कुमरबाजितपुर, वैशाली, बिहार । प्रख्यात कथाकार ओ संपादक । आइ काल्हि परसू (कथा-संग्रह) लेल १९९६ मे साहित्य अकादेमीसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति : एक आदि एकांत, झूठ साँच, एकटा तेसर, अनुलग्नक, आइ काल्हि परसू (कथा संग्रह), गलतीनामा, भनहि विद्यापति, टीप्पणीत्यादि (आलोचना)।

डॉ. धीरेन्द्र 1934-2004

जन्म स्थान लोहना, मधुबनी, बिहार । प्रसिद्ध कथाकार,उपन्यासकार ओ कवि । प्रकाशित कृति: कुहेस आ किरण, पझाइत घूरक आगि, शतरूपा ओ मनु अपन मन्दिर (कथासंग्रह) हैंगरमे टाँगल कोट, काल्हि ओ आइ (कविता संग्रह) सहित कैक विधामे विभिन्न पोथी।

ISSN 2229-547X VIDEHA

'आरम्भ' पत्रिकाक संपादन।प्रबोध सम्मान 2009 सँ सम्मानित।

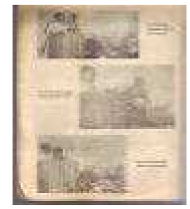


रमेश नारायण
१९३४- २०११

पूरा नाम- रमेश नारायण दास, जन्म १५ मार्च १९३४ कें मधुबनीक बहेरा गाममे। पिता-श्री हरिवल्लभ लाल दास। शिक्षा मधेपुर, मधुबनी आ पटनामे। १९६१ ई.सँ १९९४ ई. धरि ए.एन.



जमाहिरलाल जवाहरलाल नेहरू जयकान्त मिश्र बैद्यनाथ चौधरी



हरिमोहन झा, मायानन्द मिश्र, स्वरूप दास

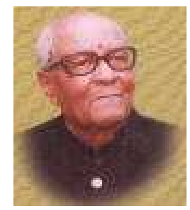
कॉलेज, पटनामे हिन्दी विभागमे अध्यापन। पाथरक नाव (मैथिली कथा संग्रह, १९७२) प्रकाशित। मृत्यु १२ जनवरी २०११ कँ पटनामे।



बाबू श्री सत्यनारायण सिंह आ राघवाचार्य



बाबू श्री सत्यनारायण सिंह



मायानन्द मिश्र 1934-

हिनक जन्म १७ अगस्त १९३४ ई. कँ सुपौल जिलाक बनैनियाँ गाममे भेलनि। भाङ्ग लोटा,

आगि मोम आ' पाथर आओर चन्द्र-बिन्दु- हिनकर कथा संग्रह सभ छन्हि। बिह्मड़ि पात पाथर , मंत्र-पुत्र ,खोता आ' चिडै आ' सूर्यास्त हिनकर उपन्यास सभ अछि॥ दिशांतर हिनकर कविता संग्रह अछि। एकर अतिरिक्त सोने की नैय्या माटी के लोग, प्रथमं शैल पुत्री च,मंत्रपुत्र, पुरोहित आ' स्त्री-धन हिनकर हिन्दीक कृति अछि।१९८८-मायानन्द मिश्र (मंत्रपुत्र, उपन्यास)पर मैथिलीक साहित्य

		अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रबोध सम्मान 2007सँ सम्मानित।
 हरिशंकर श्रीवास्तव "शलभ" 1934-	 सोमदेव 1934- उपन्यासकार ओ कवि । साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: चानोदाइ, होटल अनारकली (उपन्यास), काल ध्वनि (कविता संग्रह), चरैवेति	 राजनन्दन लाल दास 1934- "कर्णामृतक"क सम्पादन। "चित्रा-विचित्रा" प्रकाशित।

ISSN 2229-547X VIDEHA

(गीति नाट्य) सोम सतसइ (दोहा)।२००२- सोमदेव (सहस्त्रमुखी चौक पर, पद्य) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार। २००१ ई. - श्री सोमदेव, दरभंगा;यात्री-चेतना पुरस्कार, प्रबोध साहित्य सम्मान २०११।



रमानन्द रेणु 1934-2011

जन्म स्थान उसमामठ, दरभंगा,



कालीकांत झा "बूच" 1934-2009

हिनक जन्म, महान दार्शनिक



श्याम चन्द्र 1934-

उपन्यास "रूपा दीदी" प्रकाशित। गाम मलंगिया,

बिहार । वरिष्ठ कवि, कथाकार ओ उपन्यासकार। साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: कचोट, त्रिकोण, अंतहीन आकाश (कथा-संग्रह), दूधफूल (उपन्यास), अंतत:, ओकरे नाम (कविता-संग्रह)। २०००-रमानन्द रेणु (कतेक रास बात, पद्य)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०११ (समग्र योगदान

उदयनाचार्यक कर्मभूमि समस्तीपुर जिलाक करियन ग्राममे 1934 ई. मे भेलनि । पिता स्व. पंडित राजकिशोर झा गामक मध्य विद्यालयक प्रथम प्रधानाध्यापक छलाह । माता स्व. कला देवी गृहिणी छलीह । अंतरस्नातक समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुरसँ कयलाक पश्चात् बिहार सरकारक प्रखंड कर्मचारीक रूपमे सेवा प्रारंभ कयलनि । बालहिं कालसँ कविता लेखनमे विषेश रूचि छल । मैथिली

जिला- मधुबनी।

ISSN 2229-547X VIDEHA

लेल)

पत्रिका - मिथिला
मिहिर, माटि -
पानि, भाखा तथा
मैथिली अकादमी
पटना द्वारा प्रकाशित
पत्रिकामे समय -
समय पर हिनक
रचना प्रकाशित
होइत रहलनि ।
जीवनक विविध
विधाकेँ अपन
कविता एवं गीत
प्रस्तुत कयलनि ।
साहित्य अकादमी
दिल्ली द्वारा
प्रकाशित मैथिली
कथाक विकास
(संपादक डॉ
बासुकीनाथ झा) मे
हास्य कथा कारक
सूची मे डॉ
विद्यापति झा हिनक

रचना ‘‘धर्म शास्त्राचार्यक उल्लेख कयलनि । मैथिली अकादमी पटना एवं मिथिला मिहिर द्वारा प्रशंसा पत्र भेजल जाइत छल ।श्रृंगाररस एवं हास्य रसक संग-संग विचार मूलक कविताक रचना सेहो कयलनि । डॉ दुर्गानाथ झा श्रीश संकलित मैथिली साहित्यक इतिहासमे कविक रूपमे हिनक उल्लेख कएल गेल अछि । **प्रकाशित कृति (मृत्योपरांत) :** कलानिधि- कविता-संग्रह।



डोरीलाल शर्मा "श्रोत्रिय" १९३५-

"मिथिला की पाण्डित्य परम्परा" पोथी प्रकाशित।



तारानन्द तरुण १९३५-२०११



रामभद्र, धनुषा, नेपाल 1935-

साहित्य तथा अन्यान्य क्षेत्रक कतोक सफल व्यक्तिसभ अपन प्रेरणास्त्रोत आ पथ-प्रदर्शक मानैत छथि। मैथिली साहित्य-क्षेत्रमे हिनक परिचयक मादे एतबाए कहब पर्याप्त होएत जे मैथिलीक मूर्द्धन्य साहित्यकार डा. धीरेन्द्र हिनका मैथिली साहित्यक

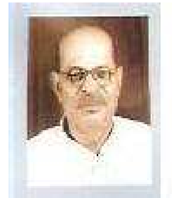
सर्वश्रेष्ठ कथाकार मानैत छथि ।हिनक कथामे प्रतीकात्मकताक अदभुत प्रयोगहिटा नहि, अपितु एकटा आदर्श कथाक समस्त वैशिष्टसभविद्यमान रहैत अछि । कथाकारक अतिरिक्त ई उत्कृष्ट समालोचक, नाटककार आ कवि सेहो छथि । नेपालमे मैथिलीक पहिल मोनोड्रामा लिखबाक श्रेय सेहो हिनका जाइत छनि ।सामाजिक कुरीतिसभकँ कुशलतासँ चित्रण

करबामे, चिन्तनीय बनएबामे आ मन-मस्तिष्कपर अमिट छाप छोड़बामे रामभद्र सिद्धहस्त छथि । धनुषा जिलाक कुर्था गाममे जनमल रामभद्रक पूर्ण नाम रामभद्र कर्ण छनि । अग्ङरेजी विषयक अवकाशप्राप्त शिक्षक रामभद्र व्याकरण, पाठयपुस्तक आ सहायक पुस्तकसभ लिखबाक काजमे निरन्तर सक्रिय छथि।



केदारनाथ चौधरी 1936-

जन्म 3 जनवरी 1936 ई नेहरा, जिला दरभंगामे। 1958 ई.मे अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर, 1959 ई.मे लॉ। 1969 ई.मे कैलिफोर्निया वि.वि.सँ अर्थस्थास्त्र मे स्नातकोत्तर, 1971 ई.मे सानफ्रांसिस्को वि.वि.सँ एम.बी.ए., 1978मे भारत



जीवकांत 1936-

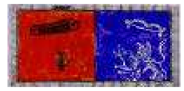
नाम- जीवकान्त झा,पिता-गुणानन्द झा, माता-महेश्वरी देवी, जन्म-२५.०७.१९३६ अभुआढ़, जिला-सुपौल। नौकरी-विज्ञान शिक्षक (उ.वि.खजौली १९५७-८१), हिन्दी शिक्षक (उ.वि.डेओढ़ एवं उ.वि.पोखराम १९८१-९८)।पहिल रचना-इजोड़िया आ टिटही (कविता,



देवकांत झा 1936-

आगमन। 1981-86क बीच तेहरान आ प्रैंकफुर्तमे। फेर बम्बई, पुणे होइत 2000 सँ लहेरियासरायमे निवास। मैथिली फिल्म ’ममता गाबय गीत’क मदनमोहन दास आ उदयभानु सिंहक संग सह निर्माता। तीन टा उपन्यास 2004 मे चमेली रानी, 2006 मे करार, 2008 मे माहुर।

जनवरी १९६५ मिथिला मिहिर)।पहिल छपल पोथी- दू कुहेसक बाट (उपन्यास १९६८)।नूतन पोथी-खिखिरक बीअरि (२००७ बाल पद्य कथा), अठन्नी खसलइ वनमे (पद्य-कथा संग्रह) आ पंजरि प्रेम प्रकासिया (जीवन-वृत्तक अंश)।पुरस्कार-साहित्य अकादेमी 1998 तकै अछि चिड़ै, पद्य , किरण सम्मान (१९९८), वैदेही सम्मान (१९८५)।प्रकाशित पोथी-

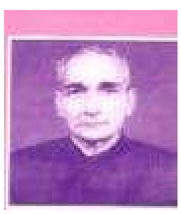
कविता संग्रह:नाचू हे पृथ्वी (७१), धार नहि होइछ मुक्त (९१), तकैत अछि चिड़ै (९५), खाँड़ो (१९९६), पानिमे जोगने अछि बस्ती (९८), फुनगी नीलाकाशमे (२०००), गाछ झूल-झूल (२००४), छाह सोहाओन (२००६), खिखिरिक बीअरि (२००७)

कथा-संग्रह:एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे (७२), सूर्य गलि रहल अछि (७५), वस्तु (८३), करमी झील (९८)

उपन्यास-दू कुहेसक बाट(६८), पनिपत(७७), नहि, कतहु नहि (७६), पीयर गुलाब छल (७१), अगिनबान (८१)

हिन्दी अनुवाद- निशान्त की चिड़िया (तकैत अछि चिड़ै, साहित्य अकादमी, दिल्ली २००३)।

प्रबोध सम्मान 2010 सँ सम्मानित।







डॉ अमरेश पाठक 1936-

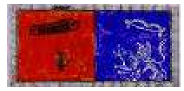
हिनक जन्म सीतामढ़ी जिलाक अन्तर्गत सामारि ग्राममे १९३६ मे भेलन्हि । १९५७ मे पटना विश्वविद्यालयसँ मैथिलीक एम. ए. परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथमस्थान पाओल । १९५७ सँ १९६० धरि रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनीमे व्याख्याता रूपेँ तकरा बाद पटना विश्वविद्यालयमे व्याख्याता रूपमे कार्य करए लगलाह

बलराम 1936-2008

जन्म स्थान पचही, मधुबनी, बिहार । विशिष्ट कथाकार । प्रकाशित कृति : दकचल देबाल (कथा-संग्रह)।

मैथिलीपुत्र प्रदीप 1936-

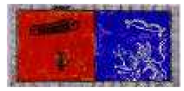
ग्राम- कथवार, दरभंगा। प्रशिक्षित एम.ए., साहित्य रत्न, नवीन शास्त्री, पंचाग्नि साधक। हिनकर रचित "जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर" आ "सभक सुधि अहाँ लए छी हे अम्बे, हमरा किए बिसरै छी यै" मिथिलामे लेजेंड भए गेल अछि।

। पटना
विश्वविद्यालयमे
मैथिली विभागाध्यक्ष
रूपेँ । मैथिली
उपन्यासक
आलोचनात्मक
अध्ययन' शोध
प्रबन्धपर हिनका
बिहार विश्व-विद्यालय
द्वारा डि. लिट्क
उपाधि भेटलन्हि ।
ई शोध प्रबन्ध
पुस्तकाकार रूपेँ
सेहो प्रकाशित भेल
अछि बिहार
राष्ट्रभाषा परिषदक
विद्यापति ग्रन्थावलीक
सम्पादक मण्डलक
सदस्य । हिनक
अन्य प्रकाशित
रचना अछि 'निबन्ध
संकलन' । एकरा

छोड़ि विभिन्न पत्र-
पत्रिकामे हिनक
कतेको निबन्ध
प्रकाशित छन्हि ।
मैथिली अकादमी
द्वारा प्रकाशित कथा-
संग्रहक इहो एक
सम्पादक छथि । ई
अधिकतर उच्च
स्तरीय
आलोचनात्मक
निबन्ध लिखैत छथि
। २०००- डॉ.
अमरेश पाठक,
(तमस- भीष्म
साहनी, हिन्दी)लेल
साहित्य अकादेमी
मैथिली अनुवाद
पुरस्कार।



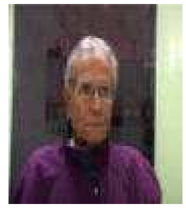


ISSN 2229-547X VIDEHA



रामदेव झा 1936-

कथाकर, समीक्षक, अनुवादक, ग्रंथ सम्पादक । साहित्य अकादेमीक मूल एवं अनुवाद पुरस्कार प्राप्त कर्त्ता ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगाक मैथिली विभागक पूर्व प्राचार्य । प्रकाशन: पसिझैत पाथर, (अनु.) आदि । १९९१- रामदेव झा (पसिझैत पाथर, एकांकी)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ



रवीन्द्र नाथ ठाकुर 1936-

जन्म पूर्णिञा जिलाक धमदाहा ग्राममे 1936 ई. मे भेलन्हि । नेने अवस्थासँ गीत गएबामे एवं कविता लिखबामे विशेष रुचि । कोनो मंच पर ठाढ़ भेला पर ई सहजहि श्रीताकेँ आह्लादित करैत छथि । हिनक सात गोट मैथिलीक गीत संग्रह, एक मिनी



बिनोद बिहारी वर्मा 1937-2003

मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण, बलानक बोनिहार ओ पल्लवी तथा अन्य कथा (कथा संग्रह)

सम्मानित ।१९९४- रामदेव झा (सगाइ- राजिन्दर सिंह बेदी, उर्दू) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

महाकाव्य, एक प्रयोगधर्मी काव्य, एक उपन्यास, एक नाटक ‘एक राति’ एवं एक हिन्दी नाटक, प्रकाशित भेल छन्हि ।



ललन कुमार वर्मा

1937-2001

सहरसा जिलाक डुमरा गामक। पिता श्री सूर्यनारायण लाल दास। पेशासँ वकील ललनजी मैथिली लेल कतेको केस



वीरेन्द्र मल्लिक

1937-

जन्म- 3 जनबरी 1937 ई. परसौनी, मधुबनीमे।कवि, सम्पादक, समीक्षक । आखर, अगनिपत्रक सम्पादन



कीर्तिनारायण मिश्र

1937-

जन्म १७ जुलाई १९३७ ई. कँ ग्राम शोकहारा (बरौनी), जिला बेगूसरायमे भेलन्हि। हुनकर प्रकाशित कृति अछि

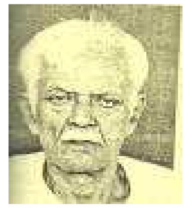
सरकारक विरुद्ध लड़लाह।

।अग्नि-शिखा (कविता संग्रह)।

सीमान्त,महानगर (दीर्घ कविता), हम स्तवन नहि लिखब, ध्वस्त होइत शांति स्तूप (एहि पोथीपर साहित्य अकादमी 1997 पुरस्कार), आदमीकेँ जोहैत (कविता संग्रह)। संस्मरण-अपन एकांतमे, स्मृति यात्रा, पत्रक दर्पणमे। सम्पादन- आखर मासिक पत्रिका, आधुनिक मैथिली साहित्य, ’63, राजकमल जीवन आ साहित्य, ’68, कथा-संकलन- काल कोठरी। आलोचना- अर्थांतर- 2004



गौरीकांत चौधरीकांत
1937-2001



युगल किशोर मिश्र
१९३८-२००७



प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'
1938-

ग्राम+पोस्ट- हसनपुर, जिला-समस्तीपुर।मैथिलीमे १.नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास(विराटनगर,१९७२ई.) २.ब्रह्मग्राम(रिपोर्ताज दरभंगा १९७२ ई.), ३.'मैथिली' त्रैमासिकक सम्पादन (विराटनगर,नेपाल १९७०-७३ई.), ४.मैथिलीक नेनागीत (पटना, १९८८ ई.), ५.नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य (पटना, १९९८ ई.) ६. प्रेमचन्द चयनित कथा, भाग- १ आऽ २ (अनुवाद),

ISSN 2229-547X VIDEHA

		७. वाल्मीकिक देशमे (महनार, २००५ ई.)।२००४- डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन" (प्रेमचन्द की कहानी-प्रेमचन्द, हिन्दी) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।
 महेश्वरनाथ मल्लिक 1938-	 परशुराम झा १९३८- गाम- मेंहथ (मधुबनी), कृति- डाइमेन्शन्स ऑफ पीस इन इन्गलिश ड्रामा,क्रिश्चियन पोएटिक ड्रामा।	 कुलानन्द मिश्र 1940-2000 जन्म पकड़ी कोठी, सीतामढ़ी, बिहार। सुविख्यात कवि,, संपादक, समालोचक। प्रकाशित कृति- तावत एतबे, भोरक

प्रतीक्षामे (कविता संग्रह), भारतक भाषा सर्वेक्षण, पारो, राजकमल चौधरी की ग्यारह कहानियाँ (अनुवाद)।



बिलट पासवान 'विहंगम' 1940-

जन्म मधुबनी जिलाक एकहत्था ग्राममे १९४० ई. मे भेलन्हि।



फजलुर रहमान हासमी 1940-2011

जन्म-पटना जिलाक बराह गाममे। वृत्ति अध्यापक। हिन्दी कविता संग्रह "रश्मि राशि" आ मैथिली कविता संग्रह

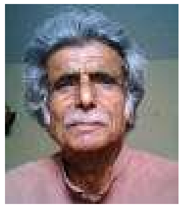


प्रभास कुमार चौधरी 1941-1998

गाम- पिंडारुछ, जिला- दरभंगा।प्रख्यात कथाकार ओ उपन्यासकार । प्रभासक प्रकाशित कृति : कथा-प्रभास, प्रभासक कथा, नव

"निर्मोही" प्रकाशित। १९९६मे अबुलकलाम आजाद- अब्दुलकवी देसनवी, उर्दूसँ मैथिली अनुवादपर साहित्य अकादमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

घर उठय पुरान घर खसय, दिदवल (कथासंग्रह), अभिशप्त, युगपुरुष, हमरा लग रहब, नवारम्भ, राजा पोखरिमे कतेक मछरी (उपन्यास) । विभिन्न महत्वपूर्ण पत्रिकाक सम्पादन । त्रैमासिक कथा गोष्ठी 'सगर राति दीप जरय' केर प्रारम्भ।१९९०- प्रभास कुमार चौधरी (प्रभासक कथा, कथा) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।



साकेतानन्द 1940-

वरिष्ठ कथाकार, गणनायक (कथा-संग्रह) लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: मैथिली कथा साहित्यमे 1962 स' सक्रिय । गोडेक चालिस_पचास टा कथा, रिपोर्ताज. संस्मरण, यात्रा_विवरण मैथिलीमे प्रकाशित अधिकांश पत्र_पत्रिकामे छपल



रामावतार यादव, मैथिली भाषिकी, नेपाल 1942-

देश-विदेशक भाषाविज्ञान जर्नलमे पचासो आलेखक द्वारा मैथिलीक विशिष्टताकेँ उजागर केनिहार। *मैथिली ध्वनिशास्त्र* 1984 ई. मे जर्मनीसँ आ *मैथिलीक सन्दर्भ व्याकरण* 1996 ई. मे बर्लिन आ न्यूयार्कसँ प्रकाशित। 2000 ई..मे लंदनसँ



गंगेश गुंजन 1942-

जन्म स्थान- पिलखबाड़, मधुबनी।श्री गंगेश गुंजन मैथिलीक प्रथम चौबटिया नाटक बुधिबधियाक लेखक छथि आ हिनका उचितवक्ता (कथा संग्रह) क लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छन्हि। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हम एकटा मिथ्या परिचय, लोक सुनू

ISSN 2229-547X VIDEHA

। पहिल मैथिली कथा ''ग्लेसियर'' 1962मे 'मिथिलामिहिर'मे प्रकाशित । हिन्दियोमे दू दर्जन कथा आदि प्रकाशित । सन 99मे छपल पहिल कथा_संग्रह ''गणनायक' के ओही वर्ष 'साहित्य अकादमी पुरस्कार। पैघ बान्ध' स' अबैबला विपत्तिके रेखांकित करैत, पर्यावरण के कथा वस्तु बना क' राजकमल प्रकाशन स' प्रकाशित एवं अत्यंत चर्चित उपन्यास ('डौकूमेंट्री फिक्शन) प्रकाशित *भारतीय आर्यभाषा* पुस्तक मे संकलित हिनकर मैथिली भाषा संबंधी आलेख विशेष उल्लेखनीय। नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसँ पासाङ ल्हामु प्रज्ञा-पुरस्कारसँ सम्मानित।

(कविता संग्रह), अन्हार- इजोत (कथा संग्रह), पहिल लोक (उपन्यास), आइ भोर (नाटक)प्रकाशित। हिन्दीमे मिथिलांचल की लोक कथाएँ, मणिपद्मक नैका-बनिजाराक मैथिलीसँ हिन्दी अनुवाद आ शब्द तैयार है (कविता संग्रह)।१९९४-गंगेश गुंजन (उचितवक्ता, कथा)पुस्तक लेल सहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।

"सर्वस्वांत" ।आकाशवाणीक राष्ट्रीय कार्यक्रममे प्रसारित दू टा उल्लेखनीय वृत्त रूपक_ 'महानन्दा अभयारण्य' पर आधारित "जंगल बोलता हैं" एवं झारखंड के ग्रामीण क्षेत्रक ज्वलंत डाइनक समस्या पर आधारित वृत्तरूपक " नैना जोगन " चर्चित एवं प्रसिद्ध ।



प्रेमशंकर सिंह



मार्कण्डेय प्रवासी



ISSN 2229-547X VIDEHA

1942-

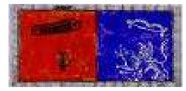
ग्राम+पोस्ट- जोगियारा, थाना- जाले, जिला- दरभंगा।मौलिक मैथिली: १.मैथिली नाटक ओ रंगमंच,मैथिली अकादमी, पटना, १९७८ २.मैथिली नाटक परिचय, मैथिली अकादमी, पटना, १९८१ ३.पुरुषार्थ ओ विद्यापति, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर, १९८६ ४.मिथिलाक विभूति जीवन झा, मैथिली अकादमी, पटना, १९८७५.नाट्यान्वाचय,

1942-2010

जन्म ग्राम: गरुआर, जिला: समस्तीपुर । प्रकाशित कृति: अगस्त्यायिनी (महाकाव्य); एतदर्थ (कविता संग्रह), अक्षर चेतना (काव्य संग्रह)। अभियान, हम कालिदास (उपन्यास)। 'अगस्त्यायिनी' लेल १९८१मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त।

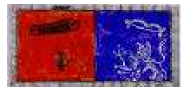
देवेन्द्र झा १९४३-

गाम- चान्पुरा (मधुबनी), कृति- विद्यापतिक श्रृंगारिक पदक काव्यशास्त्रीय अध्ययन, लालदास, सुधाकर झा "शास्त्री", अनुभव, बदलि जाइछ घरे टा।

शेखर प्रकाशन, पटना २००२ ६.आधुनिक मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्य, मैथिली अकादमी, पटना, २००४ ७.प्रपाणिका, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००५, ८.ईक्षण, ऋचा प्रकाशन भागलपुर २००८ ९.युगसंधिक प्रतिमान, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर २००८ १०.चेतना समिति ओ नाट्यमंच, चेतना समिति, पटना २००८। २००९ ई.- श्री प्रेमशंकर सिंह, जोगियारा, दरभंगा यात्री-चेतना पुरस्कार।



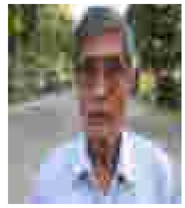


ISSN 2229-547X VIDEHA



डॉ. भीमनाथ झा 1945-

जन्म:कोइलख, मधुबनी, बिहार । प्रखर कवि, समालोचक, प्राध्यापक । ’विविधा’निबन्ध पुस्तक लेल सन् १९९२मे सहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: त्रिधारा, वीणा, की फुरैए की नहि, नाम तँ थिक ओएह



महेन्द्र मलंगिया 1946-

गाम- मलंगिया, जिला- मधुबनी । मैथिलीक सुपरिचित नाटककार, रंग निर्देशक एवं मैलोरंगक संस्थापक अध्यक्ष । लोक साहित्य पर गंभीर शोध आलेख । मैथिलीमे 13टा नाटक, 19टा एकांकी, 14टा नुक्कड़ आ 10टा रेडियो नाटक



डॉ राम दयाल राकेश, सर्लाही, नेपाल 1942-

मैथिली मातृभाषा, हिन्दीक प्राध्यापक आ नेपालीक लेखक ई तीनू भाषा ’राकेश’क व्यक्तित्वमे एना ने मिझराएल छैक जे कोन्हुसँ हिनका भिन्न नहि कएल जा सकैत अछि । ई विशेषत: नेपालीमे लिखैत छथि, मुदा लेखनक विषय मूलत:

(कविता संकलन), परिचायिका, सीताराम झा, कवि चूड़ामणिक काव्य साधना, विविधा (निबंध, आलोचना),टावर चौकसँ आदि ।

प्रकाशित आ आकाशवाणी सँ प्रसारित । सीनियर फेलोशिप (भारत सरकार), इंटरनेशनल थिएटर इंस्टिच्यूट (नेपाल), प्रबोध साहित्य सम्मान आदि सँ सम्मानित । संप्रति ज्योतिरीश्वर लिखित मैथिलीक प्रथम पुस्तक वर्णरत्नाकर पर शोध कार्य । श्री महेन्द्र मलगियाक जन्म २० जनबरी १९४६ मे मधुबनी जिलाक मलंगिया गाममे भेलन्हि। मलंगियाजी मैथिली हिन्दी, अंग्रेजी आ नेपाली भाषाक

मैथिलीए संस्कृति रहैत छनि । ओना मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीमे सेहो ई अनेक रचना कएने छथि ।नेपालक राजकीय-प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक सदस्य 'राकेश' दिल्ली विश्वविद्यालयसँ पीएचडी आ अमेरिकास्थित इण्डियाना यूनिभर्सिटीसँ पोस्ट डाक्टरल रिसर्च कएने छथि । डा. 'राकेश'क जन्म २५ जुलाइ १९४२ ई. कऽ सर्लाही जिलाक सिसौटियामे भेल छनि । नेपाली, मैथिली, हिन्दी आ

ISSN 2229-547X VIDEHA

जानकार आ थियेटर शिक्षण, पटकथा लेखन आ तत्सम्बन्धी शोधक फ्रीलान्स शिक्षक छथि।२००२ ई.- श्री महेन्द्र मलंगिया, मलंगिया;यात्री-चेतना पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2005 सँ सम्मानित।

अग्ङरेजीमे मौलिक, सम्पादित आ अनूदित कऽ करीब दू दर्जन पोथी प्रकाशित , दर्जनभरि देशक भ्रमण सेहो कएने छथि । नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता- श्री राम दयाल राकेश (1999)।



उपेन्द्र दोषी 1943-2001

जन्म स्थान रामपुर-कोरिगामा, दरभंगा



उदयचन्द्र झा "विनोद" 1943-

जन्म 5 अप्रैल 1943 ई.। गाम-



रेवती रमण लाल, जनकपुर 1943-

। कवि-कथाकार, गीत-गजलकार । प्रकाशित कृति: यंत्रणाक क्षणमे (कविता संग्रह)। हिन्दीमे अनेक पोथी प्रकाशित। ओड़ियासँ मैथिली अनुवाद हेतु मृत्युपरान्त साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत। २००३- उपेन्द दोषी (कथा कहिनी- मनोज दास, उड़िया) लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

रहिका, मधुबनी । जन्म-ग्राम- दुलहा, मधुबनी । प्रकाशित कृति: संक्रान्ति, मौसम अयला पर, एहना स्थितिमे, भरि देह गौरा, एहि जनपदमे, दोहा तीन सय दू, कहलनि पत्नी, सहरजमीन, अपक्ष, प्रश्नवाचक (कविता-संग्रह), धूरी (सहयोगी कविता संग्रह); जाँत (कथा संग्रह), उदास गाछक वसंत (नाटक)। 'माटि पानिक वरेण्य सम्पादक।२००५ ई.-श्री उदय चन्द्र झा "विनोद", रहिका,

ISSN 2229-547X VIDEHA

मधुबनी;यात्री-चेतना पुरस्कार।



मंत्रेश्वर झा 1944-

जन्म ६ जनवरी १९४४ ई.ग्राम- लालगंज, जिला- मधुबनीमे। प्रकाशित कृति: खाधि, अन्चिनहार गाम, बहसल रातिक इजोत (कविता संग्रह); एक बटे दू (कथा संग्रह), ओझा लेखे गाम बताह (ललित निबन्ध)। मैथिली कथा



रत्नेश्वर मिश्र 1945-

अनुवादक, निबंधकार । प्रकाशन: तमिल साहित्यक इतिहास,भवभूति (दुनू अनुवाद)।

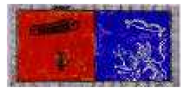


जगदीश प्रसाद मंडल 1947-

गाम-बेरमा, तमुरिया, जिला-मधुबनी। एम.ए.।कथाकार (गामक जिनगी-कथा संग्रह आ तरेगण- बाल-प्रेरक लघुकथा संग्रह), नाटककार(मिथिलाक बेटी-नाटक), उपन्यासकार(मौलाइल गाछक फूल, जीवन संघर्ष, जीवन मरण,

संग्रहक हिन्दी अनुवाद “कुंडली” नामसँ प्रकाशित। दि फूल्स पैराडाइज (अंग्रेजीमे ललित निबन्ध)। २००८ ई.-श्री मंत्रेश्वर झा, लालगंज,मधुबनी यात्री-चेतना पुरस्कार। २००८- मंत्रेश्वर झा (कतेक डारि पर, आत्मकथा) पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।

उत्थान-पतन, जिनगीक जीत- उपन्यास)। मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर कथामे गामक लोकक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (गामक जिनगी, कथा संग्रह)

ISSN 2229-547X VIDEHA



मोहनानन्द झा
1955-

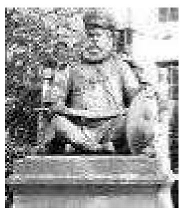


अभिराम दास

मिथिलाक प्रसिद्ध भागवत वाचक।



राज



महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह 1858-1898

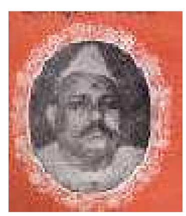


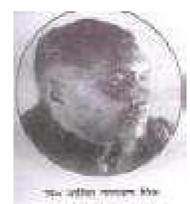
महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह 1860-1929

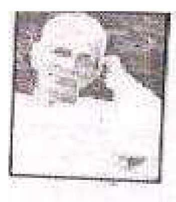
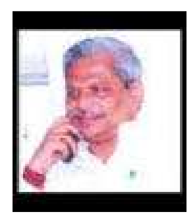


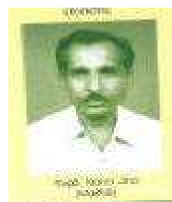
महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह 1907-1962







सर हरगोविन्द मिश्र, अलीगढ़ आ कामेश्वर सिंह	बिनोदानन्द झा 1895-1971	ललित नारायण मिश्र 1922-1975
		
कर्पूरी ठाकुर 1921-1988	रामविलास पासवान १९४६- जन्म ५ जुलाइ १९४६, गाम- शहरबन्नी, जिला खगड़िया। भारतीय राजनीतिज्ञ।	राम लषण राम "रमण"
		

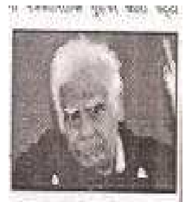
भोगेन्द्र झा	चतुरानन मिश्र	प्रभात झा, राजनीतिज्ञ
		
रमाकांत मिश्र	रमानाथ मिश्र "मिहिर"	गजेन्द्र नारायण चौधरी, पत्रकार 1929-2008
		
मोहन भारद्वाज 1943- गाम- नवानी, जिला- मधुबनी । मैथिलीक प्रखर	योगानन्द झा 1955- २००५- डॉ. योगानन्द झा (बिहारक लोककथा-	हीरानन्द झा "शास्त्री" ,पत्रकार

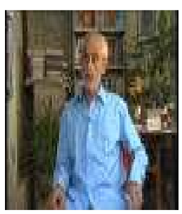
समालोचक।२००७ ई.-श्री आनन्द मोहन झा, भारद्वाज, नवानी, मधुबनी;यात्री-चेतना पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2008 सँ सम्मानित।

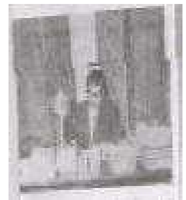
पी.सी.राय चौधरी, अंग्रेजी)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

प्रकाशित कृति: लोकजीवन ओ लोक साहित्य (निबन्ध) 1986, परिणीता (कथाकव्यांश) 1987, फकीर मोहन सेनापति (अनुवाद) 2000, आलेख सञ्चयन (निबन्ध) 2002, बिहारक लोककथा (अनुवाद) 2003, स्नेहलता (विनिबन्ध) 2006, मैथिली पत्रकारिताकेँ सौ वर्ष (निबन्ध) 2006, गहबरगीत (निबन्ध) 2007, लोक-

ISSN 2229-547X VIDEHA

	साहित्य ओ शब्द-सम्पदा (निबन्ध) 2007, मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली (शोघ-ग्रन्थ) 2009.	
 पद्म नारायण झा "विरंचि" 1941- जन्म- गाम खोजपुर, जिला-मधुबनीमे । मिथिला मिहिरक प्रशस्त स्तंभकार । 1977 केर जनता आन्दोलनमे अग्रणी भूमिका, पार्टीक मुखपत्र "जनता"क	 दीनानाथ झा, पत्रकार	 नरेन्द्र झा, अर्थशास्त्र-पत्रकार

सम्पादक। बादमे लोक दल (ब) मे हेमवतीनन्दन बहुगुणाक राजनीतिक सलाहकार।		
 स्व. दुर्गानाथ झा,पत्रकार 1946-2005 पत्रकार। पिता स्व.रमानाथ झा।	 प्रेमशंकर झा, पत्रकार	 सी.पी. झा, पत्रकार
		

शरदिन्दु चौधरी, पत्रकार	निशिकान्त ठाकुर, पत्रकार	मणिकान्त ठाकुर, पत्रकार
		
राधाकृष्ण चौधरी, इतिहासकार 1921-1985	विजयकान्त मिश्र इतिहासकार 1927-1994 डॉ. विजयकांत मिश्रक जन्म १० अगस्त १९२७ मंगरौनी गाम - जे नव्य न्याय आ तांत्रिक साधनाक जन्म-स्थली अछि- (जिला मधुबनी) मे भेलन्हि। ओ 1948 मे प्राचीन भारतीय इतिहास आ संस्कृति	द्विजेन्द्र नारायण झा, इतिहासकार

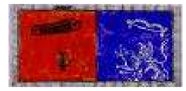
विषयमे एलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ सनात्तकोत्तर उपाधि कएलाक बाद कतेक बरख धरि बिहार सरकार आ पटना विश्वद्यालयसँ सम्बद्ध रहलाह आ 1957 ई. सँ भारतीय पुरात्तत्व विभागमे काज कएलन्हि आ ओकर शिशुपालगढ़, कौशाम्बी, वैशाली, हस्तिनापुर, कुम्हरार, पाटलिपुत्र, करियन, सोनपुर, बिलावली, नालन्दा, राजगीर, चन्द्रवल्ली, आ हम्पी खुदाइमे विभिना भूमिकामे भाग लेलन्हि।हिनकर लिखल-सम्पादित

ISSN 2229-547X VIDEHA

पोथी सभमे अछि:
1.वैशाली,1950
2.कुम्हरार
एक्सकेवेशंस:
1950-1957
3.पुरातत्व की
दृष्टिमे वैशाली
4.नागेश भट्टाज
पारिभाषेन्दुशेखर
5.मिथिला आर्ट एण्ड
आर्किटेक्चर
(सम्पादित)
6.कल्चरल हेरिटेज
ऑफ मिथिला
7.श्रृंगार भजनावली-
एक अध्ययन 8.क्षेत्र
पुरातत्वविज्ञान-
9.पुरातत्व
शब्दावली।

 सुरेश्वर झा, राजनीति विज्ञान २००१- सुरेश्वर झा (अन्तरिक्षमे विस्फोट- जयन्त विष्णु नार्लीकर, मराठी)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।	 कुमार तारानन्द सिंह, संगीतज्ञ	 संगीताचार्य रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंह
 रामचतुर मल्लिक ध्रुपद संगीत 1905-	 रामाश्रय झा 'रामरंग' अभिनव भातखण्डे	 अभयनारायण मल्लिक

1990	1928-2009 जन्म ११ अगस्त १९२८ ई. तदनुसारभाद्र कृष्णपक्ष एकादशी तिथिकेँ मधुबनी जिलान्तर्गत खजुरा नामक गाममे भेलन्हि। अभिनव गीतांजलि, हुनकर उच्चकोटिक शास्त्र रचना अछि।मिथिलावासी श्री रामरंग राग तीरभुक्ति, राग वैदेही भैरव, आऽ राग विद्यापति कल्याण केर रचना सेहो कएने छथि आऽ मैथिली भाषामे हिनकर खयाल

'रंजयति इति रागः' केर अनुरूप अछि।



पंडित परमानन्द चौधरी, संगीतज्ञ



मिथिलेश कुमार झा, तबला वादन



हृदयनारायण झा

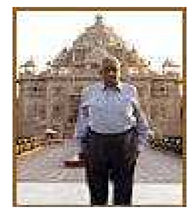


भागीरथ लाल दास

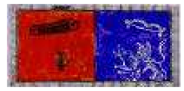
भारतक कएक देशमे राजदूत रहल छथि आ जी.ए.टी.टी. मे भारतक प्रतिनिधि सेहो छलाह।



लक्ष्मीकान्त झा
रिजर्व बैंक गवर्नर
1913-1988



एन. एन. झा
डिप्लोमेट

ISSN 2229-547X VIDEHA



कामेन्द्रनाथ झा "अमल" 1938-

जन्म- 4 जनवरी 1938, गाम कोइलख (मधुबनी)। ग्रिभांस (कथासंग्रह) प्रकाशित।



भाग्यनारायण झा 1941-



डॉ श्यामानन्द लाल दास



रमाकांत राय "रमा" 1947

जन्म- भादो पूर्णिमा



महेन्द्र 1944-2009

जन्म मधुबनी जिलाक जमसम



सुभाषचन्द्र यादव 1948-

जन्म ०५ मार्च

सम्वत् 2003, प्रथम रचना- बटुक, बाल मासिक प्रयाग, कथा विशेषांक द्वितीय भागमे 1964ई., प्रकाशित कृति-(क) तीनटा बाबाजी-(रूसीसँ मैथिलीमे मैथिलीमे टाल्स्टायक कथाक अनुवाद-1967ई.मे, (ख) फूलपात, कविता संग्रह 1978, (ग) भांगक गोला (2004 ई.मे), (घ) कटैत पाँखि : हँसैत आँखि , कथा संग्रह-2005, शीघ्र प्रकाश्य- कृष्णकान्त मिश्र (विनिबन्ध) साहित्य अकादेमी नई दिल्ली। प्राय:

गाममे। प्रसिद्ध मैथिली गीतकार आ गायक।

१९४८, मातृक दीवानगंज, सुपौलमे। पैतृक स्थान: बलबा-मेनाही, सुपौल।घरदेखिया (मैथिली कथा-संग्रह), मैथिली अकादमी, पटना, १९८३, हाली (अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९८८, बीछल कथा (हरिमोहन झाक कथाक चयन एवं भूमिका), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९९९, बिहाड़ि आउ (बंगला सँ मैथिली अनुवाद), किसुन संकल्प

ISSN 2229-547X VIDEHA

डेढ़ सए रचना (कथा-निबन्ध कविता) मैथिली हिन्दीक पत्र-पत्रिका, आकाशवाणी एवं दूरदर्शनसँ प्रकाशित/ प्रसारित। साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कवि सम्मेलनक आयोजनक क्रममे रेलक चपेटमे पड़ि दहिना पएर छाबा धरि गमा विकलांग। सेवा निवृत अध्यापक (उच्च विद्यालय) सम्पर्क- श्री रमानिवास, मानाराय टोल पो. नरहन (समस्तीपुर)।

लोक, सुपौल, १९९५, भारत-विभाजन और हिन्दी उपन्यास (हिन्दी आलोचना), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, २००१, राजकमल चौधरी का सफर (हिन्दी जीवनी) सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली, २००१, बनैत-बिगड़ैत (कथा-संग्रह) २००९। मैथिलीमे करीब सत्तरि टा कथा, तीस टा समीक्षा आ हिन्दी, बंगला तथा अंग्रेजी मे अनेक अनुवाद प्रकाशित।



योगेन्द्र प्रसाद यादव, भाषिकी,सिरहा, नेपाल 1946-

1998 ई. मे जर्मनीसँ प्रकाशित *इशुज इन मैथिली सिंटैक्स* आ *टॉपिक्स इन नेपालीज लिंग्विस्टिक्स, रीडिंग्स इन मैथिली लंगुएज- लिटरेचर एण्ड कल्चर* आ *लेक्सीग्राफी इन नेपाल* (सम्पादित) प्रकाशित। नेपाल राजकीय प्रज्ञा-



रमानन्द झा 'रमण' 1949-

जन्म: 02 जनबरी 1949, शिक्षा- एम.ए., पीएच.डी., आजीविका-भारतीय रिजर्व बैंक, पटना (सेवा निवृत्त)। **प्रकाशन**: 1. नवीन मैथिली कविता,1982, 2. मैथिली नऽव कविता,1993, 3. मैथिली साहित्य ओ राजनीति, 1994, 4. अखियासल,



रामलोचन ठाकुर 1949-

श्री रामलचन ठाकुर, जन्म १८ मार्च १९४९ ई.पलिमोहन, मधुबनीमे। वरिष्ठ कवि, रंगकर्मी, सम्पादक, समीक्षक। भाषाई आन्दोलनमे सक्रिय भागीदारी। **प्रकाशित कृति**- इतिहासहन्ता, माटिपानिक गीत, देशक नाम छल सोन चिड़ैया, अपूर्वा (कविता संग्रह),

प्रतिष्ठानमे भाषा-विभागक प्राज्ञ रहि कतोक महत्वपूर्ण कार्यक सम्पादन। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता श्री योगेन्द्र प्रसाद यादव (1994)। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान आजीवन सदस्यता श्री योगेन्द्र प्रसाद यादव।

1995, 5. बेसाहल,2003, 6. भजारल, 2005., 7. निर्यात कैसे शुरू करें? हिन्दी-रिजर्व बैंक, पटनाक प्रकाशन सम्पादित 8. मैथिलीक आरम्भिक कथा, 1978 समीक्षा, 9. श्यामानन्द रचनावली, 1981, 10. जनार्दन झा जनसीदन कृत निर्दयीसासु (1914) आ पुनर्विवाह (1926), 1984, 11. चेतनाथझाकृत श्रीजगन्नाथपुरी यात्रा (1910), 1994, 12. तेजनाथ झाकृत सुरराजविजय

बेताल कथा (व्यंग्य), मैथिली लोक कथा (लोककथा), प्रतिध्वनि (अनुदित कविता), *जा सकै छी, किन्तु किए जाउ*(अनुदित कविता), लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता), जादूगर (अनुवाद), स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरणात्मक निबन्ध), आंखि मुनने: आंखि खोलने (निबन्ध)। अनुवाद लेल **भाषा-भारती सम्मान 2003-04** (सी.आइ.आइ.एल., मैसूर) *जा सकै छी, किन्तु किए जाउ* शक्ति चट्टोपाध्यायक बांग्ला कविता-

नाटक (1919), 1994, 13. रासबिहारीलाल दासकृत सुमति (1918), 1996, 14. जीबछ मिश्रकृत रामेश्वर (1916), 1996, 15. भेटघाँट (भेटवार्ता), 1998, 16. रूचय तँ सत्य ने तँ फूसि, 1998, 17. पुण्यानन्द झाकृत मिथिला दर्पण (1925), 2003, 18. यदुवर रचनावली (1888-1934) 2003, 19. श्रीवल्लभ झा (1905-1940) कृत विद्यापति विवरण, 2005,

संग्रहक मैथिली अनुवाद लेल प्राप्त। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (पद्मानदीक माझी, बांग्लासँ मैथिली अनुवाद, बांग्ला-उपन्यास - मानिक बंद्योपाध्याय)

ISSN 2229-547X VIDEHA

20. मैथिली उपन्यासमे चित्रित समाज, 2003। अनुवाद लेल **भाषा-भारती सम्मान 2004-05** (सी.आइ.आइ.एल., मैसूर) छओ बिगहा आठ कट्ठा- फकीर मोहन सेनापतिक ओड़िया उपन्यासक मैथिली अनुवाद लेल प्राप्त।



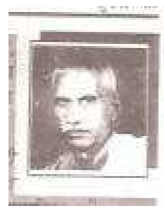
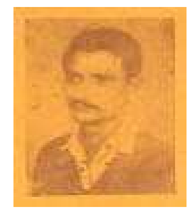
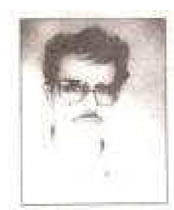
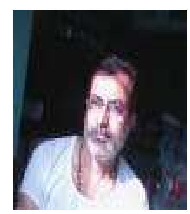
गंगा प्रसाद मंडल "अकेला", नेपाल 1944-

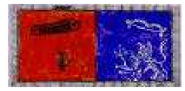


महेन्द्रनारायण निधि, धनुषा, नेपाल



परमेश्वर कापड़ि, धनुषा, नेपाल

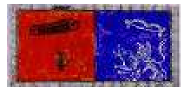
पं सुन्दर झा शास्त्री राष्ट्रिय प्रतिभा पुरस्कारसँ सम्मानित। मिथिलांचलक किछु लोक कथा (संकलन आ सम्पादन) आ शिरीषक फूल (अनुवाद) प्रकाशित।		
 जयनारायण झा "जिज्ञासु", नेपाल	 सुरेश झा, नेपाल 1920-1995	 रोहिणी रमण झा 1950-
		

ISSN 2229-547X VIDEHA

डॉ. कमलाकान्त भण्डारी 1952-	विनोद बिहारी लाल 1953- जन्म स्थान पचही, मधुबनी, बिहार।चर्चित कथाकार। सयसँ ऊपर कथा प्रकाशित।	अरविन्द ठाकुर 1954- परती टूटि रहल अछि (कविता संग्रह), अन्हारक विरोधमे (कथा संग्रह)
 श्याम दरिहरे 1954- जन्म स्थान बरहा, बेनीपट्टी मधुबनी, बिहार। कवि, कथाकार। प्रकाशित कृति : सरिसोमे भूत (कथा	 दिनेश कुमार झा	 अशोक कुमार ठाकुर जन्म 2 जनवरी 1944 ई.। गाम बड़ागाँव (पंडौल)। नागमंडल (नाटक-अनुवाद), निशांत, वसुधाक संसार (उपन्यास)

संग्रह) अनूदित कृति : कनिप्रिया (धर्मवीर भारती)		
 प्रतापनारायण झा, नेपाल	 शीतल झा, नेपाल	 उग्रनारायण मिश्र "कनक"
 देवनारायण यादव, निदेशक मिथिला शोध संस्थान	 अमरजी, एस. एन. दास, गोविन्द झा, ब्रजेन्द्र त्रिपाठी	 डॉ. शम्भूनाथ चौधरी 1920-2008

ISSN 2229-547X VIDEHA



इन्द्रकांत झा



पंचानन मिश्र

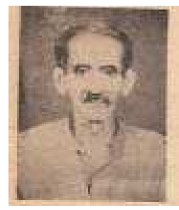


प्रोफेसर गुरमैता



प्रोफेसर महेन्द्र 1947-

जन्म: भेलाही, सुपौल, बिहार । प्रसिद्ध कवि, कथाकार, आलोचक । वृत्ति: भू.ना. विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर केन्द्र, सहरसामे मैथिली

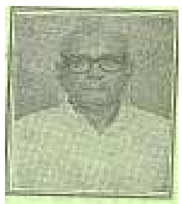


महेन्द्र नारायण सिंह "मगन"

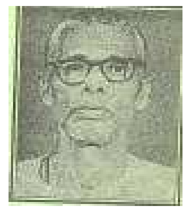


सूर्यकांत झा, जनकपुर

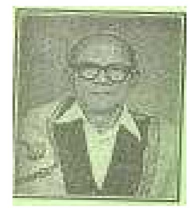
विभागाध्यक्ष।
प्रकाशित कृति
साहित्य अकादेमीसँ प्राकाशित मोनोग्राफ शैलेन्द्र मोहन झा ।
सहयोगी संकलन-संकल्प ।
’राजकमल जयन्ती प्रसंगक संपादन।



स्व. चन्द्रकान्त मिश्र, आसी, दरभंगा

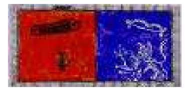


स्व. महेन्द्र नारायण झा, बेलौंजा, मधुबनी



स्व.राजकुमार मल्लिक, सोहराय (पोखरिभीड़ा), मधुबनी





ISSN 2229-547X VIDEHA



लक्ष्मीपति सिंह

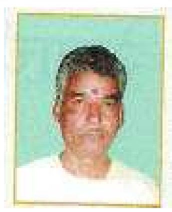


फूलचन्द्र मिश्र रमण



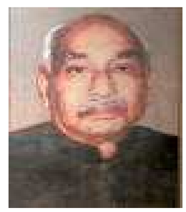
किशोरनाथ झा

गाम- विट्ठो, पो. सरिसवपाही, मधुबनी। "लोकवेद" पोथी प्रकाशित।



सूर्यनारायण झा "सरस"

पोथी "मैथिली श्री सीतारामचरितमानस" प्रकाशित।



भूपेन्द्र नारायण मण्डल



डॉ. अमरेन्द्र



गोरेलाल मनीषी

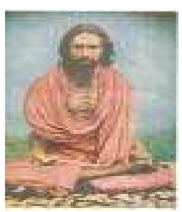


कुन्दन अमिताभ



शंभु अगेही

जन्म ८ जनवरी १९४१, प्रकाशित कृति:ओझराएल डीह (कथा-काव्य) १९९८, सतंजा (कथा संग्रह)१९९९, तेसरी बेरिआ (कथा काव्य)२००३, बज्जिका छंद विभास २००७







मेही दास

धरहरा कोठी_बनमनखी_असली नाम_रामानुग्रहलाल दास_आश्रम_मायामोहल्ला, कुप्पाघाट, भागलपुर

विन्ध्यवासिनी देवी मैथिली लोकगीत 1920-2006

कामेश्वरी देवी 1922-

मधुबनी जिलाक नवानी गामक। जन्म १९२२ ई. मे अपन मातृक नाहरमे भेलनि। पति पं मदनमोहन झा। बरौनीवासी प्रसिद्ध तान्त्रिक पण्डित केशव मिश्र हिनक पिता छलथिन। "मिथिला संस्कार गीत" पोथी।



कुसुमलता कर्ण



अणिमा सिंह

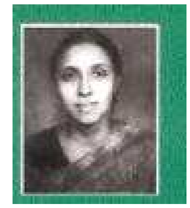
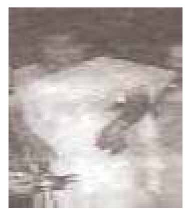


लिली रे 1933-

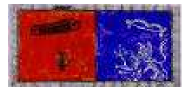
1924-

समीक्षिका, अनुवादिका, सम्पादिका । प्रकाशन: मैथिली लोकगीत, वसवेश्वर (अनु.) आदि। लेडी ब्रेबोर्न कॉलेज, कलकत्तामे पूर्व प्राध्यापिका।

जन्म:२६ जनवरी, १९३३,पिता:भीमनाथ मिश्र,पति:डॉ. एच.एन्.रे, दुर्गागंज, मैथिलीक विशिष्ट कथाकार एवं उपन्यासकार । मरीचिका उपन्यासपर साहित्य अकादेमीक १९८२ ई. मे पुरस्कार । मैथिलीमे लगभग दू सय कथा आ पाँच टा उपन्यास प्रकाशित । विपुल बाल साहित्यक सृजन। अनेक भारतीय भाषामे कथाक अनुवाद-प्रकाशित। पहिल प्रबोध सम्मान 2004 सँ

		सम्मानित।
 चित्रलेखा देवी 1935-	 मोहिनी झा 1937-	 डॉ. सावित्री झा
 कविता देवी 1942-	 प्रमिला झा	 शान्ति सुमन 1942- जन्म 15 सितम्बर 1942, कासिमपुर, सहरसा, बिहार, प्रकाशित कृति, ‘‘ओ प्रतीक्षित, परछाई

टूटती, सुलगते पसीने, पसीने के रिश्त, मौसम हुआ कबीर, समय चेतावनी नहीं देता, तप रेहे कचनार, भीतर-भीतर आग, मेघ इन्द्रनील (मैथिली गीत संग्रह), शोध प्रबंध: मध्यवर्गीय चेतना और हिन्दी का आधुनिक काव्य, उपन्यास: जल झुका हिरन। सम्मान: साहित्य सेवा सम्मान, कवि रत्न सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान। अध्यापन कार्य।

ISSN 2229-547X VIDEHA



प्रभावती झा 1945-1999



स्व. इलारानी सिंह 1945-1993

इलारानी सिंह: जन्म 1 जुलाई, 1945, निधन : 13 जून, 1993, पिता : प्रो. प्रबोध नारायण सिंह सम्पादिका : मिथिला दर्शन, विशेष अध्ययन : मैथिली, हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी, भाषा विज्ञान एवं लोक साहित्य । प्रकाशित कृति : सलोमा (आस्कर वाइल्डक फ्रेंच



उषाकिरण खान 1945-

जन्म:२४ अक्टूबर १९४५,कथा एवं उपन्यास लेखनमे प्रख्यात । मैथिली तथा हिन्दी दूनू भाषाक चर्चित लेखिका ।प्रकाशित कृति:अनुंत्तरित प्रश्न, दूर्वाक्षत, हसीना मंज़िल, भामती (उपन्यास) । २०१०-श्रीमति उषाकिरण खान (भामती, उपन्यास)

	नाटकक अनुवाद 1965), प्रेम एक कविता (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, विषवृक्ष (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, विन्दंती (1972), स्वरचित: मैथिली कविता संग्रह (1973), हिन्दी संग्रह।	लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार- मैथिली।
 नीरजा रेणु 1945- जन्म: ११ अक्टूबर १९४५,नाम: कामाख्या	 वीणा ठाकुर 1954- जन्म- भवानीपुर, पण्डौल (मधुबनी)।	 ज्ञानसुधा मिश्र भारतक उच्चतम न्यायालयक चारिम

देवी,उपनाम:नीरजा रेणु,जन्म स्थान:नवटोल,सरिसबपाही ।शिक्षा: बी.ए. (आनर्स) एम.ए., पी-एच.डी.,गृहिणी ।प्रकाशित रचना : ओसकण (कविता मि.मि., १९६०) लेखन पर पारिवारिक, सांस्कृतिक परिवेशक प्रभाव । मैथिली कथा धारा साहित्य अकादेमी नई दिल्लीसँ स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक पन्द्रह टा प्रतिनिधि कथाक सम्पादन ।सृजन धार पियासल कथा संग्रह,आगत क्षण ले कविता संग्रह,ऋतम्भरा कथा संग्रह,प्रतिच्छवि हिन्दी कथा संग्रह,१९६०

पिता श्री श्रीमोहन ठाकुर। प्रकाशित कृति: मैथिली रामकाव्यक परम्परा, इतिहास-दर्पण (समीक्षा), विद्यापतिक उत्स (समालोचना), भारती (उपन्यास)

महिला न्यायाधीश आ पहिल मैथिलानी।

सँ आइधरि सएसँ अधिक कथा, कविता, शोधनिबन्ध, ललितनिबन्ध,आदि अनेक पत्र-पत्रिका तथा अभिनन्दनग्रन्थमे प्रकाशित ।मैथिलीक अतिरिक्त किछु रचना हिन्दी तथा अंग्रेजीमे सेहो।२००३- नीरजा रेणु (ऋतम्भरा, कथा)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।		
 जस्टिस मृदुला मिश्र	 वीणा कर्ण 1946- जन्म 3 नवम्बर	 शेफालिका वर्मा 1943-

ISSN 2229-547X VIDEHA

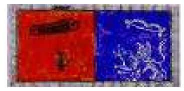
1946, गाम-पटोरी, पो.पंचगछिया, जिला- सहरसा। सदस्य, मैथिली साहित्य अकादेमी परामर्शदातृ समिति 1987-1993, सदस्य, भाषा परामर्शदातृ समिति (मैथिली), भारतीय ज्ञानपीठ। अवकाशप्राप्त विश्वविद्यालय आचार्य आ अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय।

प्रकाशित कृति- अर्गला, भावनाक अस्थिपंजर (मैथिली काव्य संग्रह), शंखनाद, तुभ्यमेव समर्पये, अनुबन्ध

जन्म:९ अगस्त, १९४३,जन्म स्थान : बंगाली टोला, भागलपुर । शिक्षा:एम., पी-एच.डी. (पटना विश्वविद्यालय), ए. एन. कालेज, पटना मे हिन्दीक प्राध्यापिका पदसँ सेवानिवृत्त । नारी मनक ग्रन्थिकेँ खोलि:करुण रससँ भरल अधिकतर रचना। प्रकाशित रचना:झहरैत नोर, बिजुकैत ठोर; विप्रलब्धा (कविता संग्रह), स्मृति रेखा (संस्मरण संग्रह), एकटा आकाश (कथा संग्रह),

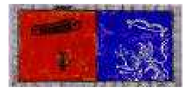
	(हिन्दी काव्य संग्रह)। प्रकाश्य: सप्तपदी (मैथिली निबन्ध संग्रह), चारित्रिक पृष्ठभूमिमे मैथिलीक प्रसिद्ध उपन्यास, मैथिली-उपन्यासक कथा किछु कहैत अछि (मैथिली आलोचना); जिन्दगीनामा (हिन्दी काव्य संग्रह), क्रमशः (हिन्दी आलोचना)।	यायावरी (यात्रा-वृत्तान्त), भावाञ्जलि (काव्य-प्रगीत) , किस्त-किस्त जीवन (आत्मकथा)। ठहरे हुए पल (हिन्दी) । २००४ ई.- डॉ. श्रीमती शेफालिका वर्मा, पटना;यात्री-चेतना पुरस्कार।
 नीता झा 1953-	 सुशीला झा 1945-	 आशा मिश्र 1950-





ISSN 2229-547X VIDEHA

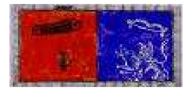
जन्म : २१-०१-१९५३,व्यवसाय:प्राध्यापिका । लेखन पर समाजक परम्परा तथा आधुनिकताक संस्कार सँ होइत विसंगतिक प्रभाव।प्रकाशित कृति : फरिच्छ, कथा संग्रह १९८४, कथानवनीत १९९०,सामाजिक असन्तोष ओ मैथिली साहित्य शोध समीक्षा ।		जन्म:६-७-१९५० ई.,प्रकाशित कथा मे मैथिकीक संग हिन्दी मे सेहो । सभसँ पैघ विजय मैथिली कथा संग्रह ।
 डॉ. सुनीति झा	 प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' 1948- जन्मस्थान:रहिका,माता:श्रीमती वृन्दा देवी,पिता:पं. दीनानाथ झा,शिक्षा:एम.ए.,	 डॉ. इन्दिरा झा 1957

	बी.एड.,प्रसिद्ध अभिनेत्री दू सयसँ बेशी नाटकमे भाग लेलनि ।भंगिमा (नाट्यमंच) क भूतपूर्व उपाध्यक्षा, पत्रिकाक सम्पादन, कथालेखन आदिमे कुशल । ’अरिपन’ आदि अनेक संस्था द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित।	
 मेनका मल्लिक 1966-	 शारदा सिन्हा मैथिली लोकगीत 1953-	 लालपरी देवी
 शकुंतला चौधरी	 राजेन्द्र प्रसाद सिंह,	 गोदावरी दत्ता,

	लिली रे, शशिकान्ता चौधरी, गोविन्द झा, शिवशंकर श्रीनिवास	मिथिला चित्रकला
 उषा वर्मा 1948-	 कमला चौधरी 1953- कृति- मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली, प्रकाशनाधीन: बाटे बिलायल पानि (कथा संग्रह), पिया मधुमास (कविता संग्रह), आशापूर्णा देवीक बंगला लघु उपन्यास **मन मंजूषा**क मैथिली	 सीता देवी, मिथिला चित्रकला





	अनुवाद। मुजफ्फरपुरसँ प्रकाशित मैथिली साहित्यिक पत्रिका **स्वाती**क सम्पादन (१९८४-८५)।	
		
सरस्वती चौधरी, जनकपुर	डॉ. अरुणा चौधरी	विभा रानी 1959- मैथिली के 3 साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता लेखकक 4 गोट किताब "कन्यादान" (हरिमोहन झा), "राजा पोखरे में कितनी मछलियां"

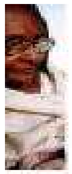
ISSN 2229-547X VIDEHA

		(प्रभास कुमार चाऊधरी), "बिल टेलर की डायरी" व "पटाक्षेप" (लिली रे) हिन्दीमे अनूदित छन्हि।2 गोट लोककथाक पुस्तक "मिथिला की लोक कथाएं" व "गोनू झा के किस्से"। मैथिली कथा संग्रह "खोहसँ निकसैत"।
 ज्योत्सना चन्द्रम 1963-	 सुस्मिता पाठक 1962-	 उर्मिला देवी, मिथिला चित्रकला

जन्मतिथि: १५ दिसम्बर, १९६३,जन्मस्थान : मरूआरा, सिंधिया खुर्द, समस्तीपुर,पिता : श्री मार्कण्डेय प्रवासी,माता: श्रीमती सुशीला झा,अध्यापन ।सुपरिचित कवयित्री, कथाकार । प्रकाशित कृति: बोनसाई (कविता संग्रह), झिझिरकोना (कथासंग्रह)।

जन्म: सुपौल, बिहार । परिचिति कविता संग्रह प्रकाशित । कथावाचक, कथासंग्रह प्रकाशनाधीन । राजनीति शास्त्रमे एम.ए.। संगीत, पेंटिंगमे रुचि । मैथिलीक पोथी पत्रिका पर अनेक रेखाचित्र प्रकाशित । समकालीन जीवन, समय, आ तकर स्पंदनक कवयित्री । अनेक भाषामे रचनाक अनुवाद प्रकाशित।

ISSN 2229-547X VIDEHA

 यमुना देवी, मिथिला चित्रकला	 यशोदा देवी, मिथिला चित्रकला	 रमा झा, सम्पादक मिथिला दर्पण
 पन्ना झा	 सुधा कर्ण	 नूतन दास सम्पादिका, मिथिलांगन
		

राधिका झा, अंग्रेजी लेखिका

हुनकर अंग्रेजी उपन्यास "स्मेल" आ "लैन्टर्न्स ऑन देयर हॉर्न्स" आ अंग्रेजी लघु कथा संग्रह "द एलीफेन्ट एण्ड द मारुति" प्रकाशित अछि। उपन्यास "स्मेल" लेल हुनका "फ्रेन्च प्रिक्स गुएरलेन" पुरस्कार भेटल छन्हि आ ई पोथी सोलह भाषामे अनूदित भेल अछि। राधिका "एमहर्स्ट कॉलेज"सँ "एन्थ्रोपोलोजी" पढ़ने छथि आ "शिकागो विश्वविद्यालय"सँ

स्वयंप्रभा झा 1970-

युवा रचनाकार

रूपा धीरू 1973-

रूपा धीरू- जन्मस्थान- मयनाकडेरी, सप्तरी, श्रीमती पूनम झा आ श्री अरूणकुमार झाक पुत्री।स्थायी पता- अञ्चल- सगरमाथा, जिल्ला- सिरहा। प्रथम प्रकाशित रचना-कोइली कानए, माटिसँ सिनेह (कविता),भगता बेङक देश-भ्रमण (कनक दीक्षितक पुस्तकक धीरेन्द्र प्रेमर्षिसँग मैथिलीमे सहअनुवाद,सङ्गीतसम्बन्धी कृति- राष्ट्रियगान, भोर, नेहक वएन, चेतना, प्रियतम हमर कमौआ (पहिल मैथिली सीडी), प्रेम भेल तरघुस्कीमे,

राजनीति विज्ञानमे मास्टर्स डिग्री लेने छथि। ओ "हिन्दुस्तान टाइम्स" आ "बिजनेस वर्ल्ड"मे काज केने छथि आ संगमे "राजीव गांधी फाउन्डेशन, दिल्ली" मे सेहो, जतए ओ आतंकवादसँ पीड़ित बच्चा सभ लेल सम्पर्क कार्यक्रमक प्रारम्भ केने रहथि। आइ काल्हि ओ अपन पति आ बच्चीक संग टोक्योमे रहै छथि।

सुरक्षित मातृत्व गीतमाला, सुखक सनेस। सम्पादन-पल्लव, मैथिली साहित्यिक मासिक पत्रिका, सम्पादन-सहयोग,हमर मैथिली पोथी (कक्षा १, २, ३, ४ आ ५ आ कक्षा 9-10 क ऐच्छिक मैथिली विषय पाठ्यपुस्तकक भाषा सम्पादन)।



रंजना झा, विद्यापति संगीत गायिका



रश्मि दत्त, गायिका, जनकपुर



कामिनी कामायनी



मुन्नी झा युवा रचनाकार



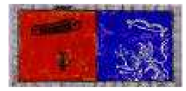
ज्योति सुनीत चौधरी

जन्म तिथि -३० दिसम्बर १९७८; जन्म स्थान -बेल्हवार, मधुबनी ; शिक्षा- स्वामी विवेकानन्द मिडिल स्कूल टिस्को साकची गर्ल्स हाई स्कूल, मिसेज के एम पी एम इन्टर कालेज़, इन्दिरा गान्धी ओपन यूनिवर्सिटी, आइ सी



कामिनी 1978- युवा कवियित्री

डबल्यू ए आइ (कॉस्ट एकाउण्टेन्सी); निवास स्थान- लन्दन, यू.के.; पिता- श्री शुभंकर झा, ज़मशेदपुर; माता- श्रीमती सुधा झा, शिवीपट्टी। ज्योतिकेँwww.poetry.comसँ संपादकक चॉयस अवार्ड (अंग्रेजी पद्यक हेतु) भेटल छन्हि। हुनकर अंग्रेजी पद्य किछु दिन धरि www.poetrysoup.com केर मुख्य पृष्ठ पर सेहो रहल अछि। ज्योति मिथिला चित्रकलामे सेहो पारंगत छथि आ हिनकर मिथिला चित्रकलाक प्रदर्शनी ईलिंग आर्ट ग्रुप केर अंतर्गत ईलिंग ब्रौडवे, लंडनमे प्रदर्शित कएल गेल अछि। कविता संग्रह 'अर्चिस्' प्रकाशित।

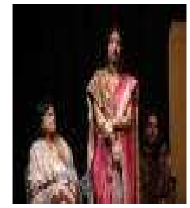





रुक्साना सिद्दीकी



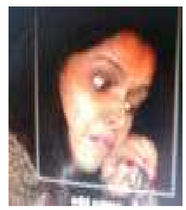
कल्पना मिश्र, मैथिली रंगमंच



ज्योति झा, , मैथिली रंगमंच



किरण झा, मैथिली रंगमंच



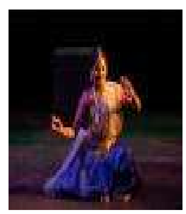
प्रियंका झा, मैथिली रंगमंच



ऋतु कर्ण, मैथिली रंगमंच



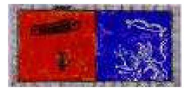
ज्योति वत्स, रंगमंच



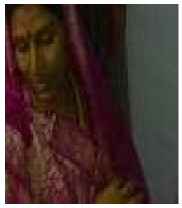
नेहा वर्मा, रंगमंच



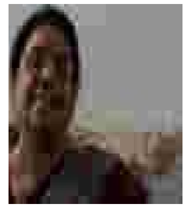
सविता

ISSN 2229-547X VIDEHA



अनुप्रिया



मृदुला प्रधान



अरुण मिश्र, महिला बॉक्सिंग



राखी दास, मिथिला चित्रकला



बनारसी पंडित,मिथिला चित्रकला, धनुषा, नेपाल



देवकला देवी कर्ण,मिथिला चित्रकला, नेपाल







मदनकला कर्ण,मिथिला चित्रकला, नेपाल	महासुन्दरी देवी,मिथिला चित्रकला	निर्जला झा, मिथिला चित्रकला, नेपाल
		
फुलो साह, मिथिला चित्रकला, महोत्तरी, नेपाल	रजनी पल्लवी	संगीता कुमारी, मैथिली फेडोरा प्रोजेक्ट
		
विन्देश्वरी दास	गौरी सेन	सीमा झा

ISSN 2229-547X VIDEHA

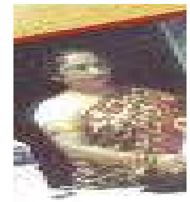


वाणी मिश्र, कवियित्री १९५३-१९९६

कोइलख, मधुबनी। जन्मस्थान तिलाठी, नेपाल।



मौसमी बनर्जी, कवियित्री



शैल झा



शान्ति देवी



शशिबाला

पिता श्री उग्र नारायण लाल, पति श्री उमेश कुमार



मुन्नी कुमारी वर्मा

कण्ठ (बिसहथ)। शिवा कश्यप आ कृष्ण कुमार कश्यपक सहयोगसँ "भारती विकास संस्था"क स्थापना। रचना: कृष्ण कुमार कश्यपक संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद, माछ-भात, मिथिला चित्र-शिक्षा, भाग-१, मिथिला चित्र-कोर, भाग-३।



प्रेरणा झा



अंशुमाला



श्वेता झा चौधरी,

मिथिला लोक कला	मैथिली लोकगीत।	चित्रकार
		गाम सरिसव-पाही, ललित कला आ गृहविज्ञानमे स्नातक। मिथिला चित्रकलामे सर्टिफिकेट कोर्स।कला प्रदर्शिनी: एक्स.एल.आर.आइ., जमशेदपुरक सांस्कृतिक कार्यक्रम, ग्राम-श्री मेला जमशेदपुर, कला मन्दिर जमशेदपुर (एक्जीवीशन आ वर्कशॉप)।कला सम्बन्धी कार्य: एन.आइ.टी. जमशेदपुरमे कला प्रतियोगितामे

निर्णायकक रूपमे सहभागिता, २००२-०७ धरि बसेरा, जमशेदपुरमे कला-शिक्षक (मिथिला चित्रकला), वूमेन कॉलेज पुस्तकालय आ हॉटेल बूलेवार्ड लेल वाल-पेंटिंग। प्रतिष्ठित स्पॉन्सर: कॉरपोरेट कम्युनिकेशन्स, टिस्को; टी.एस.आर.डी.एस, टिस्को; ए.आइ.ए.डी.ए., स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, जमशेदपुर; विभिन्न व्यक्ति, हॉटेल, संगठन आ व्यक्तिगत कला

		संग्राहक। हॉबी: मिथिला चित्रकला, ललित कला, संगीत आ भानस-भात।
 श्वेता झा मिथिला चित्रकला, सम्प्रति सिंगापुरमे निवास।	 डॉ. जया वर्मा 1964- जन्म १६.०२.१९६४. एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास, दिल्ली वि.वि.। "महाकाव्य आ पुराणमे नारी" आ "जेन्डर स्टडीज"पर विशेष	 रानी झा

अध्ययन। श्रीमति शेफालिका वर्माक उपन्यास “नागफाँस”क अंग्रेजी अनुवाद (विदेह ई-पत्रिकामे धारावाहिक रूपे)।



ब्यूटी कुमारी



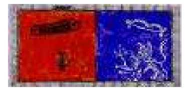
मोती कर्ण

मिथिला चित्रकला



कल्पना मिश्र

मुम्बइसँ प्रकाशित होइबला मैथिली पत्रिका "विदेह"क सम्पादक।

ISSN 2229-547X VIDEHA



तुनिशा प्रियम

माँक नाम- स्व. निभा रानी, पिता- डॉ. रमेश कुमार राय, नाना- प्रो. शिवनाथ मंडार, विभागाध्यक्ष भूगोल, बलिराम भगत कॉलेज, समस्तीपुर। नानी- श्रीमति निरुपमा पटेल, प्रधानाध्यापिका, म.वि.गाँधीपार्क, समस्तीपुर। जन्मतिथि- २०-१०-१९९८ पैतृक गाम-



निक्की प्रियदर्शिनी



प्रज्ञा झा

मँझौलिया, प्रखण्ड-बोचहा, जिला मुजफ्फरपुर, मातृक-ग्राम-धोबियाही, पोस्ट- बहेड़ी, जिला-समस्तीपुर। छात्रा- कक्षा- सप्तम "अ", डी.ए.वी. स्कूल, समस्तेपुर। आदर्श- नानाजी। आवास, आशियान भवन, रोड नं.०२, आदर्शनगर, समस्तीपुर।



डॉ. नलिनी चौधरी



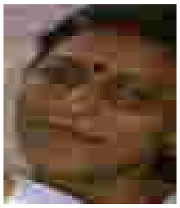
नीलम चौधरी, कथक नृत्यांगना



शान्तिलक्ष्मी चौधरी

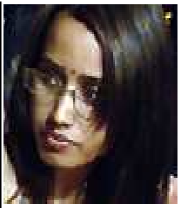
श्रीमति शांतिलक्ष्मी चौधरी, ग्राम गोविन्दपुर, जिला सुपौल निवासी आ राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय, सहरसा मे कार्यरत पुस्तकालयाध्यक्ष श्री श्यामानन्द झाक जेष्ठ सुपुत्री, आओर ग्राम महिषी (पुनर्वास आरापट्टी), जिला सहरसा निवासी आ दिल्ली स्कूल ऑफ इकानोमिक्स सँ जुड़ल अन्वेषक आ समाजशास्त्री श्री अक्षय कुमार चौधरीक अर्धांगिनी छथि। प्राणीशास्त्र सँ स्नातकोत्तर रहितो शिक्षाशास्त्रक

स्नातक शिक्षार्थी आ एकटा समाजशास्त्री सँ सानिध्यक चलिते आम जीवनक सामाजिक बिषय-बौस्तु आ खास कऽ महिलाजन्य सामाजिक समस्या आ प्रघटनामे हिनक विशेष अभिरूचि स्वभाविक।



इरा मल्लिक

इरा मल्लिक, पिता स्व. शिवनन्दन मल्लिक, गाम-



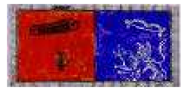
गुंजन कर्ण

राँटी मधुबनी, सम्प्रति यू.के.मे रहै छथि।
www.madhubaniarts.co.uk



पूनम मंडल

प्रियंका झाक संग मैथिली न्यूज पोर्टल "समदिया"
www.esamaad.blogspot.

ISSN 2229-547X VIDEHA

महिसारि, दरभंगा। पति श्री कमलेश कुमार, भरहुल्ली, दरभंगा।	पर हुनकर कलाकृति देखि सकै छी।	*क संचालन ।*
 प्रियंका झा *पूनम मंडलक संग मैथिली न्यूज पोर्टल "समदिया" www.esamaad.blogspot.com क संचालन ।*	 स्तुति नारायण	 डॉ. ललिता झा १९५१ जन्म पनिचोभ, दरभंगामे। "मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली" प्रकाशित"।
		

आरती कुमारी

१९६७-

"मैथिली मुक्तक काव्यमे नारी" प्रकाशित।

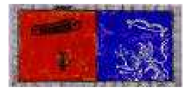
मीना झा

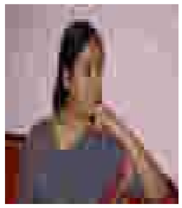
अनुपमा प्रियदर्शिनी

पति डॉ. रतन कर्ण, गाम- उजान (बड़कागाम), पो. लोहना रोड, जिला दरभंगा। सम्प्रति लोजियान (संयुक्त राज्य अमेरिकामे), शिक्षा- एम.एस.सी. (जंतु विज्ञान), ल.ना. मिथिला वि.वि., दरभंगा; बी.एस.सी. बी.आर. अम्बेडकर वि.वि. मुजफ्फरपुरसँ, हॉबी, मिथिला चित्रकला, कमप्यूटराइज्ड चित्रकला, ललित कला। उपलब्धि: अखिल भारतीय कला आ दस्तकारी

ISSN 2229-547X VIDEHA

		प्रतियोगिताक पुरस्कार 1995 मे; संस्कार भारती भाव नृत्य प्रतियोगिता 1989 मे सहभागी।
 आराधना मल्लिक मैथिली रंगमंच।	 शिखा मैथिली रंगमंच।	 प्रीति ठाकुर गाम- जगेली, भाया तारानगर, पूर्णियाँ। मैथिली बाल साहित्यमे "गोनू झा आ आन चित्र कथा २००८", "मैथिली चित्रकथा २००९" आ "मिथिलाक लोकदेवता २०१०" प्रकाशित।



सारिका ठाकुर

गुलसारिका नामसँ लेखन।



भावना नवीन



अनुपमा झा

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल, भारत।



दयानाथ झा

गाम नागदह, मधुबनी। मैथिली रंगमंडल मिथि-यात्रिक, कोलकाता।



गंगा झा

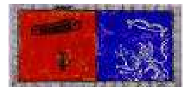
मैथिली रंगमंडल कोकिल मंच, कोलकाता। कोलकाता आ गाम पजुआरिडीह टोलमे



कमलेश कुमार दास, रंगमंच कलाकार

ISSN 2229-547X VIDEHA

	मैथिली रंगमंच निर्देशन।	
 डॉ. सुधाकर चौधरी १९४६- जन्म १५ मार्च १९४६ ई.। प्रकाशित पोथी: काजर, तीन रंग तेरह चित्र (कथा संग्रह), पंडी जी छत्ता (प्रहसन), विप्लवी सुभाष (नाटक)।	 स्व. चुनचुन मिश्र, रहिका, मधुबनी। मिथिला राज्यक आन्दोलन कर्मी।	 सत्यनारायण लाल कर्ण मिथिला चित्रकला



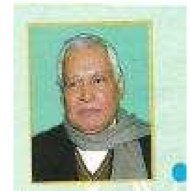
ले. कर्नल मायानाथ झा 1945-

जन्म 1 अप्रैल 1945 ई.। गाम- भराम (मधुबनी)। जकर नारि चतुर होइ (मैथिली लोक कथा संग्रह) प्रकाशित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ,



डॉ. राजीव कुमार वर्मा 1963-

, डुमरा, सहरसा। जन्म २१.०७.१९६३, एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास, दिल्ली वि.वि.। कतेको अनुवाद खास कऽ श्रीमति शेफालिका वर्माक “बोल्डनेसक लहास”क “कोर्प्स ऑफ बोल्डनेस”- स्पैरो, मुम्बै द्वारा प्रकाशित आ श्रीमति शेफालिका वर्माक



श्याम किशोर सिंह

कथा संग्रह)

उपन्यास ‘‘नागफाँस’’क अंग्रेजी अनुवाद (विदेह ई-पत्रिकामे धारावाहिक रूपे)।



सचिन्द्रनाथ झा

मिथिला लोक चित्रकला



कृष्ण कुमार कश्यप 1949-

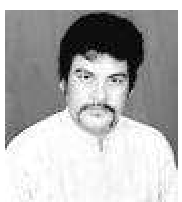
जन्म १५ सितम्बर १९४९ ई.। पिता-कवि-उपन्यासकार स्व. इन्द्रनारायण लाल "सँवलिया"। जनबरी १९६५ ई. मे नेना सभ लेल "नाइट स्कूल", १९८१ ई. मे "कला



कालीनाथ ठाकुर

ग्राम सर्वसीमा

आधारित जीवन आ शिक्षण पद्धति"क प्रवर्तन आ तकर कार्यान्वयन लेल शिवा कश्यप आ शशिबालाक सहयोगसँ "भारती विकास संस्था"क स्थापना। रचना: शशिबालाक संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद, माछ-भात, मिथिला चित्र-शिक्षा, भाग-१, मिथिला चित्र-कोर, भाग-३।







ISSN 2229-547X VIDEHA

मुरलीधर, मैथिली फिल्म निर्देशक

राजेन्द्र विमल, जनकपुर, नेपाल 1949-

मैथिली, नेपाली आ हिन्दी भाषाक प्राज्ञ विमल शिक्षाक हकमे विद्यावारिधि (पी.एच.डी.)क उपाधि प्राप्त कएने छथि।कम्मो लिखिकऽ यथेष्ट यश अरजनिहार डा. विमलक लेखनीक प्रशंसा मैथिलीक सङ्गसङ्ग नेपाली आ हिन्दी साहित्यमे सेहो होइत रहलनि अछि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे

नरेश कुमार विकल 1950-

जन्म २७ जुलाइ १९५० भगवानपुर देसुआ (समस्तीपुर)। काव्य- अरिपन, महुआ मदन रस टपकय, बिन बाती दीप जरय। कथा-संग्रह- भरि गेल दर्दक इनार। उपन्यास- टहकैत टीस। नाटक- चोखगर खौंच।

प्राध्यापन कएनिहार डा. विमलक पूर्ण नाम राजेन्द्र लाभ छियनि। हिनक जन्म २६ जुलाई १९४९ ई. कऽ भेल अछि।

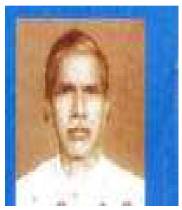
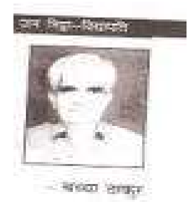
साहित्यकारक नव पीढ़ीकेँ निरन्तर उत्प्रेरित करबाक कारणे ई डा.धीरेन्द्रक बाद जनकपुर-परिसरक साहित्यिक गुरुक रूपमे स्थापित भऽ गेल छथि।







ISSN 2229-547X VIDEHA

जनक किशोर लाल दास	कृष्णचन्द्र झा "मयंक"	लक्ष्मण झा "सागर" 1953- "उचरि बैसू कौआ" मैथिली कविता संग्रह प्रकाशित।
 रघुवीर मोची	 शारदानन्द दास "परिमल"	 शशिबोध मिश्र "शशि" 1946-
 सुरेन्द्रनाथ	 अमरनाथ १९७५ ई. मे	 बच्चा ठाकुर

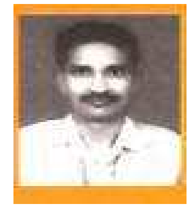
	"क्षणिका" लघुकथा संग्रह प्रकाशित। हास्य कथाकार।	
 बुद्धिनाथ मिश्र	 कुंज बिहारी, मैथिली गायक	 टोक्यो हासेगावा, निदेशक मिथिला म्यूजियम, निगाटा
 राजाराम सिंह राठौर, धनुषा	 वैद्यनाथ विमल 1955-	 डॉ वासुकीनाथ झा 1940-



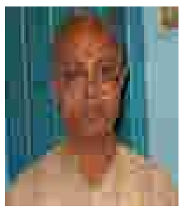
जितेन्द्र मिश्र "जीवन"



वीरेन्द्र नारायण झा



वीरेन्द्र झा 1956-



वैकुण्ठ झा 1954-

पिता-स्वर्गीय रामचन्द्र झा, जन्म-२४ - ०७ - १९५४ **(**ग्राम-भरवाड़ा**,** जिला-दरभंगा**),** शिक्षा-स्नात्कोत्तर **(**अर्थशास्त्र**),** पेशा-शिक्षक। मैथिली**,**



वैकुण्ठ झा



विद्यानन्द झा 'पञ्जीकार' 1957-

जन्म-09.04.1957,पण्डुआ, ततैल, ककरौड़(मधुबनी), रशाढ़य(पूर्णिया), शिवनगर (अररिया) आ सम्प्रति पूर्णिया।

हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा मे लगभग २०० गीतक रचना। गोनू झा पर आधारित नाटक ''हास्यशिरोमणि गोनू झा तथा अन्य कहानी" क लेखन। एकर अलावा हिन्दीमे लगभग १५ उपन्यास तथा कथाक लेखन।

पिता लब्ध धौत पञ्जीशास्त्र मार्त्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया| पितामह-स्व. श्री भिखिया झा। पञ्जीशास्त्रक दस वर्ष धरि 1970 ई.सँ 1979 ई. धरि अध्ययन, 22 वर्षक बएससँ पञ्जी-प्रबंधक संवर्द्धन आ संरक्षणमे संलग्न। कृति- पञ्जी शाखा पुस्तकक लिप्यंतरण आ संवर्द्धन।

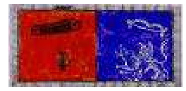






ISSN 2229-547X VIDEHA

महेन्द्र नारायण कर्ण	डॉ. विश्वेश्वर मिश्र	अर्जुन नारायण चौधरी
		
नरेन्द्र	महेन्द्र मिश्र, नेपाल	कमल कांत झा 1943-
		
महाप्रकाश 1946- जन्म: बनगांव, सहरसा, बिहार । वरिष्ट कवि ओ कथाकार। प्रकाशित कृति: कविता	छत्रानन्द सिंह झा 1946-	अयोध्यानाथ चौधरी, धनुषा, नेपाल 1947- मूलत: कविक रूपमे परिचित छथि । नेपालक आधुनिक

संभवा, संग समय के (कविता संग्रह)।
कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान २०१० ई.- श्री महाप्रकाश (कविता संग्रह “संग समय के”)।

कविताक क्षेत्रमे हिनक नाम उल्लेखनीय अछि । श्री चौधरीक लेखनमे मानवीय संवेदनाक प्रतिबिम्ब पाओल जाइत अछि । कविताक संग कथा आ निबन्धमे सेहो ई कलम चलबैत छथि । फड़िछाएल लेखन हिनक विशेषता थिकनि ।धनुषा जिलाक दुहबी गामक रहनिहार श्री चौधरीक जन्म ६अक्टुबर १९४७कऽ भेल छनि । हिनक क्षितिजक ओहिपार नामसँ एक कविता-सग्ङ्ग्रह प्रकाशित छनि ।



विद्यानाथ झा 'विदित'



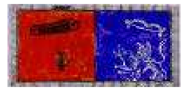
सियाराम झा "सरस" 1948-

जन्म स्थान मेंहथ, मधुबनी बिहार । प्रसिद्ध गीतकार, बादमे कथा लेखन प्रारम्भ केलनि । प्रकाशित कृति आंजुर भरि सिंगरहार, शोणिताएल उगैत सूर्यक धम्मक (कथा संग्रह)।



अग्निपुष्प 1948-

जन्म: तरौनी, दरभंगा। मूलनाम : महेन्द्र झा । मैथिलीमे सहस्त्रबाहु कविता संग्रह प्रकाशित । मुक्ति प्रसंगक अनुवाद प्रकाशित । वामपंथी आन्दोलनमे सक्रिय। शिक्षा, सम्वाद आदि पत्रिकाक सम्पादन । वामपंथी विचारधाराक सशक्त कवि।



मधुकांत झा 1949-



डॉ. रामबरन यादव, नेपाल राष्ट्रपति



जगदीश चन्द्र अनिल १९५०-

मूल नाम जगदीश चन्द्र ठाकुर, जन्म: 27.11.1950,शंभुआर, मधुबनी । सेवा निवृत बैंक अधिकारी।
मैथिलीमे प्रकाशित पोथी-1. तोरा अडनामे -गीत संग्रह-1978; 2. धारक ओइ पार-दीर्घ कविता-1999

ISSN 2229-547X VIDEHA



हरेकृष्ण झा 1950-

जन्म १० जुलाई १९५० ई. गाम- कोइलखमे। अभियंत्रणक अध्ययण छोड़ि मार्क्सवादी राजनीतिमे सक्रिय। अनेक कविता आ आलोचनात्मक निबन्ध प्रकाशित। अनुवाद एवं विकास विषयक शोध कार्यमे रुचि। स्वतंत्र लेखन। प्रकृति एवं जीवनक तादात्म्य



एस.एन.सत्यार्थी



महेन्द्र हजारी

बोधक अग्रणी कवि। "एना त' नहि जे" (कविता संग्रह)।२००८ ई. -श्री हरेकृष्ण झाकेँ कविता संग्रह ‘‘एना त नहि जे’’लेल कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान।



गिरीश चन्द्र लाल



वीनू भाइ



उदय नारायण सिंह नचिकेता 1951-

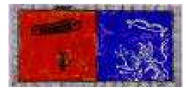
जन्म-१९५१ ई. कलकत्तामे।पहिल काव्य संग्रह ‘कवयो वदन्ति’। १९७१

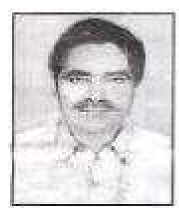
ISSN 2229-547X VIDEHA

'अमृतस्य पुत्राः' (कविता संकलन) आऽ 'नायकक नाम जीवन' (नाटक)| १९७४ मे 'एक छल राजा'/ 'नाटकक लेल' (नाटक)। १९७६-७७ 'प्रत्यावर्त्तन/ 'रामलीला'(नाटक)। १९७८मे जनक आऽ अन्य एकांकी। १९८१ 'अनुत्तरण'(कविता-संकलन)। १९८८ 'प्रियंवदा' (नाटिका)। १९९७- 'रवीन्द्रनाथक बाल-साहित्य'(अनुवाद)। १९९८ 'अनुकृति'- आधुनिक मैथिली कविताक बंगलामे

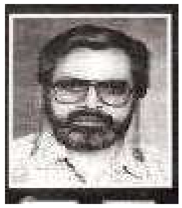
अनुवाद, संगहि बंगलामे दूटा कविता संकलन। १९९९ 'अश्रु ओ परिहास'। २००२ 'खाम खेयाली'। २००६मे 'मध्यमपुरुष एकवचन'(कविता संग्रह। २००८ ई. मे नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश" सम्पूर्ण रूपेँ "विदेह" ई-पत्रिकामे धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित भए एकटा कीर्तिमान बनेलक।२००९ ई.- श्री उदय नारायण सिंह "नचिकेता"केँ नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश लेल कीर्तिनारायण मिश्र

		साहित्य सम्मान।
 डॉ. अशोक अविचल 1967- जन्म- ५ जनवरी १९६७, गाम- रहुआ संग्राम, जिला मधुबनी। मैथिली प्राध्यापक। रचना: एक बनू नेक बनू (लघु नाटक), मैथिली भाषा: सर्वेक्षण आ विश्लेषण, हमरा देशक भागमे	 रविकांत नीरज	 सत्यानन्द पाठक

(मैथिलीक प्रथम असंगत नाटक), सम्पादन: झारखण्डक सनेश, कचोट (नौ अंक), झारखण्ड वाणी (हिन्दी साप्ताहिक), सम्मान: अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनमे सम्मान (२०००), परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति सम्मान (२००८)		
 शिव कुमार नीरव	 विद्यानाथ झा	 योगीराज

ISSN 2229-547X VIDEHA

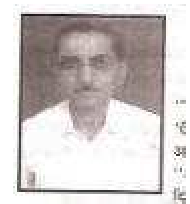


कुणाल 1951-



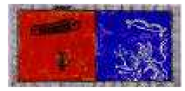
राम भरोस कापड़ि भ्रमर, धनुषा, नेपाल 1951-

जन्म-बघचौरा, जिला धनुषा (नेपाल)।बन्नकोठरी: औनाइत धुँआ (कविता संग्रह), नहि, आब नहि (दीर्घ कविता), तोरा संगे जएबौ रे कुजबा (कथा संग्रह, मैथिली अकादमी पटना, १९८४), मोमक पघलैत अधर (गीत, गजल संग्रह,



धीरेन्द्रनाथ मिश्र

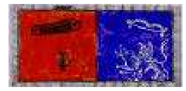
१९८३), अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह, १९९० ई.), रानी चन्द्रावती (नाटक), एकटा आओर बसन्त (नाटक), महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक (नाटक संग्रह), अन्ततः (कथा-संग्रह), मैथिली संस्कृति बीच रमाउंदा (सांस्कृतिक निबन्ध सभक संग्रह), बिसरल-बिसरल सन (कविता-संग्रह), जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिङ्गस), लोक नाट्य: जट-जटिन (अनुसन्धान)।

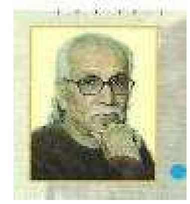
ISSN 2229-547X VIDEHA

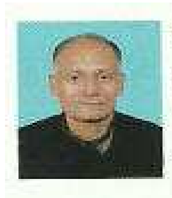
	नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता- श्री राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (2010)।	
 शिवेन्द्रलाल कर्ण, धनुषा, नेपाल 1951- लेखकसँ अधिक शिक्षकक रूपमे परिचित आ प्रतिष्ठित छथि । त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गतरा. रा. ब. कैम्पस, जनकपुर-धामक सह-प्राध्यापक श्री कर्णक	 ब्रह्मदेव लाल दास	 चण्डेश्वर खान गाम- पट्टीटोल, जिला मधुबनी। लघुकथा लेल चर्चित प्रशंसित।





ऐतिहासिक विषय-वस्तुपर लिखल कतोक लेख मैथिली, हिन्दी आ अग्ङरेजी भाषामे प्रकाशित अछि । स्वान्त-सुखाय ई कहियो कालकऽ कविता-कथा सेहो लिखि लैत छथि । हिनक लेखन ज्ञानवर्द्धक, जानकारीमूलक एवं सोझारएल रहैत अछि । देखलापर बुझना जाइत अछि जे ई हिनक गम्भीर अध्ययनक परिणति थिक ।सामाजिक तथा साहित्यिक सङ्घ-संस्थासभमे सेहो सक्रिय प्राध्यापक कर्णक जन्म धनुषा

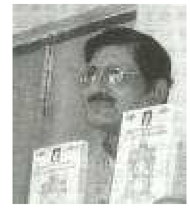
जिलाक देवडीहा गाममे २ जनवरी १९५१ ई. कऽ भेल छनि ।		
 दयाकान्त झा	 गजेन्द्र नारायण सिंह, नेपाल	 पद्मश्री श्री गजेन्द्र नारायण सिंह
 गौरीशंकर राजहंस	 हरिकान्त झा	 इन्द्रनारायण झा



कमलेश झा



किशोरीकान्त मिश्र



ललित कुमुद



मनमोहन झा



प्रवासी साहित्यालंकार



सीताराम सिंह

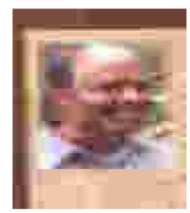
संगीतज्ञ।



तुलानन्द मिश्र



शैलेन्द्र कुमार झा



शिवशंकर श्रीनिवास

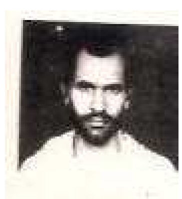
ISSN 2229-547X VIDEHA

	1952- जन्म स्थान हरिपुर, वकशी टोल, मधुबनी बिहार। प्रकाशित कृति: आरोह अवरोह, दशम खुट्टी (कथा संग्रह), इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ मिथिला (अंग्रेजी) ।	1953- जन्म स्थान लोहना मधुबनी, बिहार । चर्चित कथाकार ओ आलोचक । गीत ओ कविता सेहो कहियो काल लिखैत छथि । प्रकाशित कृति : त्रिकोण, अदहन, गाछ-पात, गामक लोक (कथा संग्रह)।
 अशोक 1953- जन्म स्थान लोहना, मधुबनी, बिहार।	 विभूति आनन्द 1953- जन्म: शिवनगर,	 केदार कानन 1959- जन्म स्थान सुपौल,

चर्चित कथाकार, कवि ओ सम्पादक । प्रकाशित कृति : चक्रव्यूह (कविता संग्रह) त्रिकोण (सहयोगी कथा संग्रह), ओहि रातिक भोर (कथा-संग्रह), मातवर (कथा संग्रह)।

मधुबनी, बिहार। चर्चित कवि, कथाकार, संपादक । प्रकाशित कृति टूटा उपन्यास टूटा समीक्षा, तीन टा कथ संग्रह, टूटा गीत-गजल संग्रह ओ चारिटा कथा-संग्रह प्रकाशित।२००६- विभूति आनन्द (काठ, कथा)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार ।

बिहार। चर्चित कवि, कथाकार ओ संपादक। प्रकाशित कृति : आकार लैत शब्द (कविता संग्रह), अनूदित कृति राजा राम मोहन राय, प्रायश्चित। सम्पादन संकल्प, भारती मंडन (पत्रिका)।



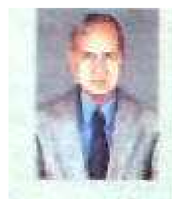
डॉ. शशिनाथ झा

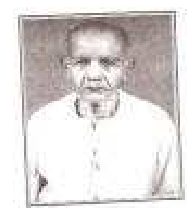




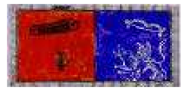
शिवकान्त पाठक

ISSN 2229-547X VIDEHA

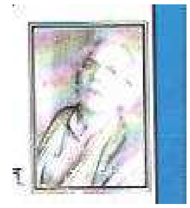
1954- गाम-दीप, जिला- मधुबनी। मैथिली, बांग्ला, नेवारी आ देवनागरी पांडुलिपिक विशेषज्ञ। साहित्य अकादमीक भाषा सम्मान 2007 क्लासिकल आ मध्यकालीन साहित्य लेल।	धनुर्धर झा गाम- विशौल। "वाक्यार्थविवेचनम्" लेल श्रीवाणीयुवालंकरण पुरस्कार 2010 प्राप्त।	
 डॉ. योगेन्द्र पाठक "वियोगी" , वैज्ञानिक	 मानस बिहारी वर्मा, वैज्ञानिक	 राजनन्द झा २००६- राजनन्द झा (कालबेला- समरेश मजुमदार,

		बांग्ला)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।
 आद्यानाथ झा "नवीन"	 अमलतास 1956-	 डॉ. बैद्यनाथ चौधरी "बैजू"
 कमलधर दास "मैथिल कर्ण कायस्थक गोत्र, प्रवर, मूल आ वैवाहिक सम्बन्ध"	 यंत्रनाथ मिश्र	 दिगम्बर ठाकुर





ISSN 2229-547X VIDEHA

पोथी प्रकाशित।		
 गणेश झा 1950-	 स्व. जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' हिन्दीक साहित्यकार।	 कन्दर्पनारायण लाल कर्ण
 कीर्तिनाथ झा 1955-	 शैलेन्द्र आनन्द 1955-	 कमलाकांत झा अध्यक्ष, मैथिली अकादमी, पटना



रमण झा (1957-)

रचना: पश्चात्ताप (कथा-संग्रह)-1995, काव्य-वाटिका (कविता-संग्रह)-1999, अलंकार-भास्कर (पूर्व-खण्ड) - 2002, अलंकार-भास्कर (अलंकार शास्त्र)- 2003, भिन्न-अभिन्न (समीक्षा)- 2008, संग सम्पादन: मैथिली (मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली



लल्लन प्रसाद ठाकुर 1951-1995

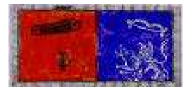
जन्म ५ फरबरी १९५१ मुंगेर मे श्रीमती सुभद्रा देवी आ श्री हीरानंद ठाकुरक द्वितीय बालक । हिनक ग्राम- समौल,जिला-मधुबनी। सिविल इंजीनियर, टाटा स्टीलमे चाकरी। प्रकाश झाक फ़िल्म "कथा माधोपुर की" मे मुख्य भुमिका। नाटककार आ मंच



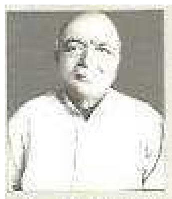
डॉ. कमलानन्द झा

ISSN 2229-547X VIDEHA

विभागक शोध-पत्रिका) - 1996, सम्पादन: मैथिली (मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली विभागक शोध-पत्रिका)-2007,2008	अभिनेता। हुनक लिखल किछु प्रसिद्ध मैथिली नाटक छन्हि :बडका साहेब,मिस्टर निलो काका, लोंगिया मिरचाई,बकलेल आदि वा अंत।	
 लोकनाथ मिश्र	 डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी 1966- जन्म:5 मार्च 1966 ई. गनपतगंज, सुपौल। मैथिलीक प्राध्यापक। रक्षामंत्रीक पदक आ बिहार आ झारखण्ड	 जितेन्द्र जीत

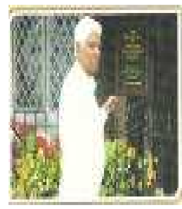



सरकार द्वारा पुरस्कृत। झारखण्डक मैथिली आन्दोलनमे अग्रणी।



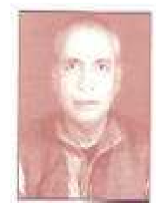
डॉ. श्रीपति सिंह १९४४-

"उमंग-तरंग" कविता-संग्रह प्रकाशित।



महेन्द्रनाथ झा

यात्रा साहित्य "हमर इंग्लैंड यात्रा" प्रकाशित।

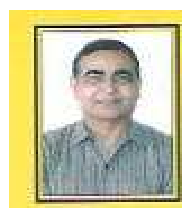


डॉ. उमाकान्त

मैथिली व्यंग्य-आलेखक पोथी "अपन बात" प्रकाशित।



सुशील 1942-



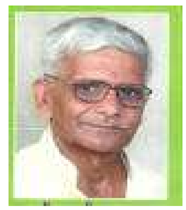


श्रीदेव

मूल नाम- वागेश्वर झा। कथा-सँग्रह "हिलकोर", नाटक "लोहक कङना", गीत-प्रबन्ध "पुलोमा" प्रकाशित।

सुकांत सोम 1950-

जन्म दरभंगा जिलाक तरौनी गाममे 1950 ई. मे भेलन्हि । बी. ए. पास कए ई पटनाक दैनिक ‘जनशक्ति’क सहायक सम्पादक छलाह । फेर नव भारत टाइम्स, पटनामे।बाल्यवस्थासँ अपन पैतृक (पिता यात्रीजी) गुण कविता करबाक तथा कथा लिखबामे सेहो यश अर्जन कएलन्हि अछि । वर्त्तमान राजनीति सामाजिक विषयसँ सम्बद्ध व्यंग्यात्मक, सरल भाषामे लिखल नव

		कविता हिनक विशेषता छन्हि । गामघरक परिवेश तदनुकूल शब्द एवं बिम्ब रचनामे क्रमहि सिद्ध छथि ।
 डॉ. देवकांत मिश्र 1952- पिता कविचूड़क्षामणि पं. काशीकांत मिश्र "मधुप", "बेनीपुर अनुमण्डलमे मैथिली" पोथी प्रकाशित।	 मुरलीधर झा 1955- कबिलपुर, दरभंगा। बाल कथा संग्रह "पिलपिलहा गाछ" (2010) प्रकाशित।	 डॉ. नित्यानन्द लाल दास पिता स्वर्गीय सूर्यनारायण दास। फारबिसगंज कॉलेज, फारबिसगंज सँ अंग्रेजी विभागाध्यक्ष पदसँ १९९८ मे अवकाशप्राप्त। डॉ.

सुरेन्द्र झा "सुमन"क संयोजकत्वक कार्यकालमे "मैथिली परामर्शदातृ समिति" (साहित्य अकादेमी, दिल्ली)क सदस्य। मैथिली पत्रिका सभ जेना बटुक, प्रयाग; मिथिला मिहिर, पटना; स्वदेश, दरभंगा; पहुँच, पटना आ परती पलार, अररियामे रचना प्रकाशित। १९६७ ई. सँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मे सक्रिय। प्रांतीय प्रतिनिधि २००४ धरि जिला सरसंघचालक। जे.पी.आन्दोलनमे लोकतंत्र सेनानी।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलामक अंग्रेजी पोथी "इग्नाइटेड माइण्ड्स"क मैथिलीमे "प्रज्वलित प्रज्ञा" नामसँ अनुवाद। साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार २०१०- डॉ. नित्यानन्द लाल दास- (इग्नाइटेड माइण्ड्स- डॉ.ए.पी.जे. कलाम, अंग्रेजी) लेल।

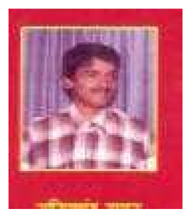
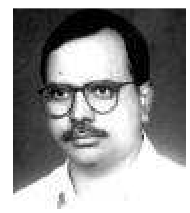


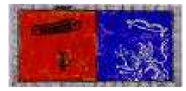
राजनाथ मिश्र





ताराकान्त झा

1950- "अ बड़्र्स आइ व्यू ऑन मिथिला" प्रकाशित।	विजयनाथ झा "अहींक लेल" (गीत-गजल संग्रह प्रकाशित)।	मैथिली भाषिकी (सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद) २००८- ताराकान्त झा (संरचनावाद उत्तर-संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र-गोपीचन्द नारंग, उर्दू)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।
 पशुपतिनाथ झा, महोत्तरी, नेपाल 1954-	 अनिलचन्द्र ठाकुर 1954-2009 जन्म 13 सितम्बर	 वृखेश चन्द्र लाल, नेपाल 1955- जन्म 29 मार्च

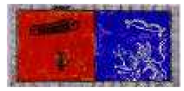



हिनक लेखन विवरणात्मक होइत अछि आ सम्बद्ध विषयमे नीकजकाँ जानकारी दैत अछि । विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक लेख-रचना बरोबरि देखबामे अबैत रहैछ।रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे मैथिली विषयक प्राध्यापनमे संलग्न श्री झा मैथिलीसम्बन्धी सग्ङठनात्मक गतिविधिसँ सेहो जुड़ल छथि । मैथिली भाषाक लोपोन्मुख अवस्थामे रहल अपन लिपि तिरहुतामे विशेषज्ञता

1954 ई.कँ कटिहार जिलाक समेली गाममे भेलन्हि। 1982 ई.मे हिन्दी साहित्यमे स्नातकोत्तर केलाक बाद नवम्बर '93 सँ नवम्बर '94 धरि "सुबह" हस्तलिखित पत्रिकाक सम्पादन-प्रकाशन कएलन्हि आ कोशी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकमे अधिकारी रहथि। मैथिली, अंगिका, हिन्दी आ अंग्रेजीमे समानरूपेँ लेखन। मृत्युक पूर्व ब्रेन ट्यूमरसँ बीमार चलि रहल छलाह। **प्रकाशित कृति**: आब मानि जाउ(मैथिली

1955 ई. कँ भेलन्हि। पिताः स्व. उदितनारायण लाल,माताः श्रीमती भुवनेश्वरी देव। हिनकर छठिहारक नाम विश्वेश्वर छन्हि। मूलतः राजनीतिककर्मी । नेपालमे लोकतन्त्रलेल निरन्तर संघर्षक क्रममे १७ बेर गिरफ्तार । लगभग ८ वर्ष जेल।सम्प्रति तराई मधेश लोकतान्त्रिक पार्टीक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष । मैथिलीमे किछु कथा विभिन्न पत्रपत्रिकामे प्रकाशित ।





ISSN 2229-547X VIDEHA

रखनिहार श्री झा एकर संरक्षण-सम्बर्द्धनक दिशामे सेहो क्रियाशील छथि।प्रध्यापक झा मैथिली महाकाव्यमे रस निरूपण विषयपर विद्यावारिधि कएने छथि आ शिक्षा तथा कानून विषयमे सेहो स्नातक छथि । महोत्तरी जिलाक एकरहिया रहनिहार श्री झाक जन्म ४ दिसम्बर १९५४ कऽ भेलछनि।चेन्नैमे मिथिला रत्नसँ सम्मानित।

उपन्यास)- पहिने भारती-मंडन पत्रिकामे प्रकाशित भेल, फेर मैलोरंग द्वारा पुस्तकाकार प्रकाशित भेल।; कच(अंगिकाक पहिल खण्ड काव्य,1975); एक और राम (हिन्दी नाटक,1981); एक घर सड़क पर (हिन्दी उपन्यास, 1982); द पपेट्स (अंग्रेजी उपन्यास, 1990); अनत कहाँ सुख पावै (हिन्दी कहानी संग्रह,2007)। आब मानि जाउ (मैथिली उपन्यास) - एहि उपन्यासमे एक एहन

आन्दोलन कविता संग्रह आ बी.पीं कोइरालाक प्रसिद्ध लघु उपन्यास मोदिआइनक मैथिली रुपान्तरण तथा नेपालीमे संघीय शासनतिर नामक पुस्तक प्रकाशित । ओ विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक प्रतिबद्ध राजनीति अनुयायी आ नेपालक प्रजातांत्रिक आन्दोलनक सक्रिय योद्धा छथि। नेपाली राजनीतिपर बरोबरि लिखैत रहैत छथि।

युवतीक संघर्ष-गाथा
अंकित अछि जे
अपन लगनसँ जीवन
बदलैत अछि।
असंख्य गामक ई
कथा कुलीनताक
अधःपतनक कथा,
संस्कारविहीनताक
उद्घाटन आ भविष्यक
पीढ़ीकेँ बचएबाक
चेतौनी छी।



नारायणजी 1956-

जन्म: घोघरडीहा (मधुबनी)। मैथिली भाषा-साहित्यमे एम.

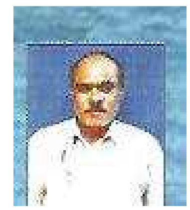


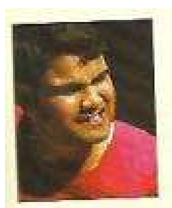
भक्तीश्वर झा "सारथी"



डॉ. श्री श्रीशंकर झा 1952-

ISSN 2229-547X VIDEHA

ए., पी-एच. डी. कामेश्वर लता संस्कृत विद्यालय, घोघरडीहामे अध्यापन। प्रकाशित कृति: 'घरि घुरि रहल छी' (काव्य-संग्रह)।		
 जगदीपनारायण "दीपक"	 राजदेव मंडल शिक्षा- एम.ए.द्वय, एल एल बी.,पता- ग्राम-मुसहरनियाँ, रतनसारा (निर्मली, मधुबनी)। **प्रकाशित कृति**- अम्बरा- (मैथिली- कविता संग्रह); हिन्दीमे	 ललित कुमार झा १९६३- गाम- सिरसी, जिला- सीतामढ़ी।

	राजदेव प्रियंकर नामसँ उपन्यास- जिन्दगी और नाव, पिजरें के पंछी, दरका हुआ दरपन।	
 दुर्गेश कुमार चौधरी रंगमंच	 कुंदन कुमार रंगमंच	 दीपक नीलेश मैथिली रंगमंच।
 जितेन्द्र कुमार झा मैथिली रंगमंच	 शिवप्रसाद यादव	 हीरेन्द्र कुमार झा 1958-

ISSN 2229-547X VIDEHA

		जन्म 30 अगस्त 1958,ग्राम-कोइलख (मधुबनी), पिता श्री कामेन्द्र नाथ झा। ट्रांसफर्मर (मैथिली कथा संग्रह) प्रकाशित।
 मानेश्वर मनुज 1958- जन्म गम्हरिया (मानपौर, मधुबनी)मे, 1978सँ 1992 धरि नौसेनामे विभिन्न जहाजपर कार्यरत, फेर यात्री रेलमे। सम्बन्ध (कथा	 नबोनाथ झा	 महेन्द्र नारायण राम 1958- सम्पादन-“नव ज्योति” पत्रिका, “लोकशक्ति” सामाजिक मुख-पत्रक। लोकवृत्त ताहूमे लोकगाथाक अध्येता।

संग्रह) प्रकाशित।



तारानन्द वियोगी 1966-

महिषी, सहरसामे जन्म। पहिल पोथी अपन युद्धक साक्ष्य (गजल संग्रह) १९९१ मे प्रकाशित। अन्य पुस्तक हस्तक्षेप (कविता-संग्रह), अतिक्रमण (कथा-संग्रह), शिलालेख (लघुकथा संग्रह), कर्मधारय।



भालचन्द्र झा

ए.टी.डी., बी.ए., (अर्थशास्त्र), मुम्बईसँ थिएटर कलामे डिप्लोमा। मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी, मराठी, अग्रेजी आ गुजरातीमे निष्णात। १९७४ ई.सँ मराठी आ हिन्दी थिएटरमे निदेशक। महाराष्ट्र राज्य उपाधि १९८६ आ १९९९ मे।



कुमार शैलेन्द्र

राजकमल चौधरीक
कथाकृति एकटा
चंपाकली एकटा
विषधर संकलन-
सपादन। साहित्य
अकादेमी मैथिली
बाल साहित्य
पुरस्कार २०१०-
तारानन्द वियोगीकेँ
पोथी "ई भेटल तँ
की भेटल" लेल।
यात्री-चेतना पुरस्कार
२०१० ई.- डॉ.
तारानन्द वियोगी।

आइ.एन.टी. केर
लेल नाटक ‘‘सीता’’
क निर्देशन।
‘‘वासुदेव संगति’’
आइ.एन.टी.क लोक
कलाक शोध आ
प्रदर्शनसँ जुड़ल
छथि आ
नाट्यशालासँ जुड़ल
छथि विकलांग बाल
लेल थिएटरसँ।
निम्न टी.वी. मीडियामे
रचनात्मक निदेशक
रूपेँ कार्य।लेखन-
बीछल बेरायल
मराठी
एकांकी(अनुवाद),
सिंहावलोकन (मराठी
साहित्यक १५०
वर्ष), आकाश
(जी.टी.वी.क
धारावाहिकक ३०

एपीसोड), जीवन सन्ध्या(मराठी साप्ताहिक, डी.डी, मुम्बई), धनाजी नाना चौधरी (मराठी), स्वयम्बर (मराठी), फिर नहीं कभी नहीं(हिन्दी), आहट (हिन्दी), यात्रा (मराठी सीरयल), मयूरपन्ख (मराठी बाल-धारावाहिक), हेल्थकेअर इन २०० ए.डी.) (डी.डी.)।२००९ मे- भालचन्द्र झा (बीछल बेरायल मराठी एकाँकी- सम्पादक सुधा जोशी आ रत्नाकर मतकरी, मराठी)लेल साहित्य अकादेमी मैथिली

ISSN 2229-547X VIDEHA

अनुवाद पुरस्कार।



रमेश 1961-

जन्म स्थान मेंहथ, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार ओ कवि । प्रकाशित कृति: समांग, समानांतर, दखल (कथा संग्रह), नागफेनी (गजल संग्रह), संगोर, समवेत स्वरक आगू, कोसी धारक सभ्यता, पाथर पर दूभि (काव्य संग्रह), प्रतिक्रिया



मेघन प्रसाद 1961-



प्रदीप बिहारी 1963-

जन्म स्थान कन्हौली मल्लिक टोल, खजौली, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार, उपन्यासकार ओ रंगकर्मी । प्रकाशित कृति: गुमकी ओ बिहाड़ि, विसूवियस (उपन्यास), औतीह कमला जयतीह कमला, खण्ड-खण्ड जिनगी, सरोकार

(आलोचनात्मक निबंध)।

(कथा संग्रह)। २००७- प्रदीप बिहारी (सरोकार, कथा)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार ।



चन्द्रमोहन झा पर्वा



अशोक दत्त, जनकपुर

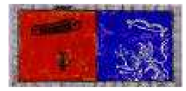


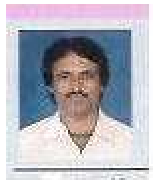
कृष्ण मोहन झा 1968-

जन्म मधेपुरा जिलाक जीतपुर गाममे। “विजयदेव नारायण साही की काव्यानुभूति की बनावट” विषयपर जे.एन.यू. सँ

एम.फिल आ ओतहिसँ “निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में प्रेम की परिकल्पना” विषयपर पी.एच.डी.। हिन्दीमे एकटा कविता सँग्रह “समय को चीरकर” आ मैथिलीमे “एकटा हेरायल दुनिया” प्रकाशित। हिन्दी कविता लेल “कन्हैया स्मृति सम्मान”(1998) आ “हेमंत स्मृति कविता पुरस्कार”(2003)। असम विश्वविद्यालय, सिल्चरक हिन्दी विभागमे अध्यापन।







परमानन्द प्रभाकर

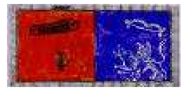


रमेश रंजन, परवाहा, नेपाल 1966-

परवाहा, नेपालमे जन्म । नेपालीय कथा-जगतक नवीन मुदा सम्मानित नाम । जनपक्षधर कथा-दृष्टि आ मोहक शिल्प । थोड़ लिखलनि, मुदा बेर-बेर चर्चित रहलाह ।



डॉ. सुरेन्द्र लाभ, नेपाल

ISSN 2229-547X VIDEHA



रोशन जनकपुरी, नेपाल



डॉ. अरविन्द अक्कू 1957-



अशोक झा 1957-



कुमार पवन 1958

गाम मुरैठा। कथा संग्रह, कविता संग्रह आ व्यंग्य संग्रह शीघ्र प्रकाश्य। मैथिलीमे १९९० ई सँ विरल लेखन। २००८ ई. सँ दस सालक मौन भंगक बाद पुनः



फूलचन्द्र झा "प्रवीण" 1961-

गाम तुमौल दरभंगा, आयल नवल प्रभात, पांगल गाछक छाहरि, हमरा मोनक खजन चिड़ैया, बसंतक बजनिञा (कविता संग्रह), भूत



रणजीत कुमार सिंह

रचनाक दोसर पालीक प्रारम्भ।

होइत भविष्य (कथा संग्रह)।



देवशंकर नवीन 1962-

ओ ना मा सी (गद्य-पद्य मिश्रित हिन्दी-मैथिलीक प्रारम्भिक सर्जना), चानन-काजर (मैथिली कविता संग्रह), आधुनिक (मैथिली) साहित्यक परिदृश्य, गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली, राजकमल चौधरी



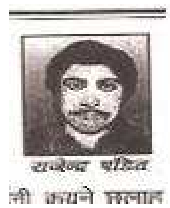
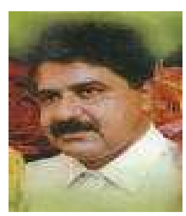
विद्यानन्द झा 1965-

बुद्धपूर्णिमा, १९६५कें कैथिनियाँ, झंझारपुर मुधुबनीमे जन्म। पराती जकाँ (कविता संग्रह) प्रकाशित । मूलतः कवि, थोड़ कथा लिखलनि, जे अपन मार्मिक अभिव्यक्तिक कारण बेस चर्चित भेल । विडम्बनापूर्ण

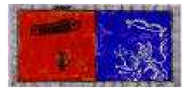


किशोर कुमार झा "सिक्किन"

ISSN 2229-547X VIDEHA

का रचनाकर्म (आलोचना), जमाना बदल गया, सोना बाबू का यार, पहचान (हिन्दी कहानी), अभिधा (हिन्दी कविता-संग्रह), हाथी चलए बजार (कथा-संग्रह)।	परिस्थितिक पाछू जिम्मेवार समाजार्थिक कारणक खोज हिनकर मूल सृजन प्रेरणा थिक ।	
		
लाला पंडित, मिथिला मूर्तिकला	राजेन्द्र पंडित, मिथिला मूर्तिकला	बटोही झा, मिथिला चित्रकला
		

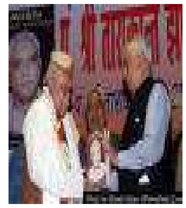
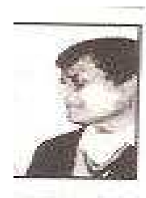
उदितनारायण फिल्म गायक	स्व. हेमकान्त झा, गायक	रामबाबू झा, गायक
		
राजकमल झा, अंग्रेजी लेखक, पत्रकार हिनकर अंग्रेजी उपन्यास "द ब्लू बेडस्प्रेड" , "इफ यू आर अफरेड ऑफ हाइट्स" आ "फायरप्रूफ" प्रकाशित छन्हि। "द ब्लू बेडस्प्रेड" (१९९९)पर हुनका "कॉमनवेल्थ राइटर्स प्राइज फॉर बेस्ट फर्स्ट बुक-यूरेशिया" भेटल छन्हि।	प्रकाश झा, फिल्म निर्देशक	प्रकाश झा, मैथिली रंगमंच सुपरिचित रंगकर्मी। राष्ट्रीय स्तरक सांस्कृतिक संस्था सभक संग कार्यक अनुभव। शोध आलेख (लोकनाट्य एवं रंगमंच) आ कथा लेखन। राष्ट्रीय जूनियर फेलोशिप, भारत सरकार प्राप्त।

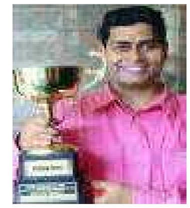
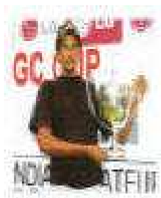



ISSN 2229-547X VIDEHA

राजकमल झा श्री मुनीश्वर झा आ श्रीमती रंजना झाक पुत्र छथि, "आइ.आइ.टी.खड़गपुर"सँ बी.टेक.छथि, आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि, जतए ओ "इण्डियन एक्सप्रेस" मे एक्जीक्यूटिव एडिटर छथि।

राजधानी दिल्लीमे मैथिली लोक रंग महोत्सवक शुरुआत। मैथिली लोककला आ संस्कृतिक प्रलेखन आ विश्व फलकपर विस्तारक लेल प्रतिबद्ध। अपन कर्मठ संगीक संग मैलोरंगक संस्थापक, निदेशक। मैलोरंग पत्रिकाक सम्पादन। संप्रति राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्लीक रंगमंचीय शोध पत्रिका रंग-प्रसंगक सहयोगी संपादकक रूपमे कार्यरत।

 डॉ. धनाकर ठाकुर	 ताराकांत झा	 डॉ. नारायण कुमार झा
 रामेश्वर प्रेम	 नागेश्वर लाल कर्ण, तबला वादक	 केष्कर ठाकुर
 काश्यप कमल, रंगमंच	 मुकेश कुमार झा, रंगमंच	 मनीष झा फिल्म निर्देशक

 संजय झा फिल्म निर्माता	 कीर्ति आजाद क्रिकेट	 श्रीराम झा शतरंज
 अभिषेक झा गोल्फ	 कुमार मनीष अरविन्द 1964-	 मधुकर भारद्वाज
 बदरी नारायण बर्मा	 राजेन्द्र किशोर,	 सुनील कुमार

नेपाल

मल्लिक, गायक, जनकपुर, नेपाल 1968-

मैथिलीक गायक-सग्डीतकारक रूपमे प्रसिद्ध छथि । मैथिली भाषाक गीतसभमे मौलिक तथा सार्थक सग्डीतक सृजनमे हिनक सक्रियता प्रशंसनीय छनि । सुनीलक गायन तथा सग्डीतमे कैसेट एलबमसभ सेहो बाहर भेल अछि ।लेखनदिस हिनक सक्रियता परिमाणात्मक रूपमे कम रहितहुँ गुणात्मक दृष्टिएँ

हृदयस्पर्शी मानल जाइत अछि।पेशासँ विज्ञान-शिक्षक छथि ।



धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सिरहा, नेपाल 1967-

वि.सं.२०२४ साल भादब १८ गते सिरहा जिलाक गोविन्दपुर-१, बस्तीपुर गाममे जन्म लेनिहार प्रेमर्षिक पूर्ण नाम धीरेन्द्र झा छियनि।कान्तिपुरसँ हेल्लो मिथिला



अमलेन्दु शेखर पाठक



श्याम सुन्दर शशि, नेपाल

श्याम सुन्दर शशि, जनकपुरधाम, नेपाल। पेशा- पत्रकारिता। शिक्षा: त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ,एम.ए. मैथिली, प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान। मैथिलीक प्रायः सभ विधामे रचनारत।

कार्यक्रम प्रस्तुत कर्ता जोड़ी रूपा- धीरेन्द्रक धीरेन्द्रक अबाज गामक बच्चा-बच्चा चिन्हैत अछि। “पल्लव” मैथिली साहित्यिक पत्रिका आ “समाज” मैथिली सामाजिक पत्रिकाक सम्पादन।

बहुत रास रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित। हिन्दी, नेपाली आऽ अंग्रेजी भाषामे सेहो रचनारत आऽ बहुतरास रचना प्रकाशित। सम्प्रति- कान्तिपुर प्रवासक अरब ब्यूरोमे कार्यरत।

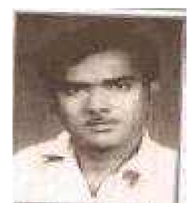


हिमांशु चौधरी, नेपाल

पिता : स्वर्गीय कामेश्र्वर चौधरी,माताः श्रीमती चन्द्रावती चौधरी,जन्मः



सत्यनारायण मेहता



भुवनेश्वर पाथेय

वि स २०२०/६/५ लहान्, सिरहा,शिक्षाः स्नातकोत्तर(नेपाली),पेशाः पत्रकारिता (सम्प्रति : राष्ट्रिय समाचार समिति),कृति : की भार सांढू ? (मैथिली कविता संग्रह),विगत दू दशकसं नेपाली आ मैथिली लेखन तथा अभियानमे निरन्तर क्रियाशील आ विभिन्न संघ संस्थासं आबद्ध ।



राजेन्द्र झा, धनुषा



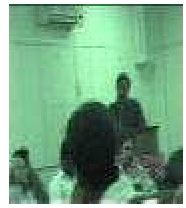
अखिल आनन्द



विनोद कुमार झा



अशोक कुमार मेहता



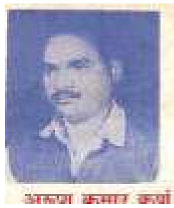
संजीव तमन्ना



धर्मेन्द्र विह्वल, सिरहा, नेपाल 1967-

रस्ता तकैत जिन्गी, एक सृष्टि एक कविता, एक समयक बात, धुअनाएल आकृति सभ (मैथिली कविता संग्रह), भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरु, गोनूझाका कथाहरु (मैथिलीसँ नेपाली अनुवाद), मैथिलीक कक्षा 1 सँ 5 आ बाल-साहित्य संदर्भक

		तीनटा पोथीक सह-लेखक। पत्रकारिताक मूल सिद्धांत (मैथिली, प्रेसमे), दलित रिपोर्टिंग मैनुअल (नेपाली, प्रेसमे)।
 भवप्रीतानन्द	 रघुनाथ मुखिया	 धीरेन्द्र कुमार झा
 गिरिजानन्दन सिंह	 प्रेमचन्द्र पंकज	 सच्चिदानन्द सच्चू



अरुण कुमार कर्ण 1961-



निमिष झा, नेपाल



अनलकांत (गौरीनाथ) 1969-

भारतीय भाषा परिषद, कोलकाताक युवा पुरस्कार (2009-10) मैथिली लेल प्राप्त।



रमण कुमार सिंह 1969-



आशुतोष झा



नीरज कर्ण, धनुषा, नेपाल 1970-

समाजशास्त्रक छात्र

आ गणित तथा विज्ञानक शिक्षक छथि, मुदा मैथिली साहित्य आ संगठनक क्षेत्रमे सेहो निरन्तर सक्रिय छथि । भाषा, व्याकरण आदिक मेंही पक्षसभपर सेहो ई पूर्ण अधिकार रखैत छथि । जन्म धनुषा जिलाक कुर्था गाममे भेल छनि । विभिन्न पत्रपत्रिकामे हिनक कथा, कविता, लेख-रचनासभ मैथिली, नेपाली आ अग्ङरेजी भाषामे प्रकाशित होइत रहैत छनि । अनुवादक क्षेत्रमे सेहो हिनक नीक अधिकार छनि

।

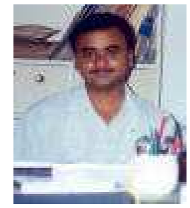


उपेन्द्र भगत नागवंशी, नेपाल

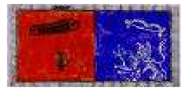


दमन कुमार झा 1969-

एम.ए.पी.एच.डी. (मैथिली), प्रकाशन: मैथिली बाल साहित्य(शोध-ग्रंथ)-2002 आ नेबोक चाह (कथा संग्रह) 2009. सम्प्रति जे.एन.क~ओलेज मधुबनीमे व्याख्याता।



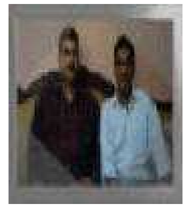
श्रीधरम 1974-

ISSN 2229-547X VIDEHA



शंकरदेव झा

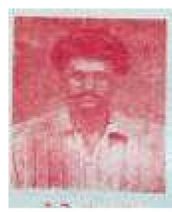


अंशुमन पाण्डेय



आनन्द कुमार झा 1977-

जन्म स्थान: मेंहथ, झंझारपुर; पिता स्व. अभयकांत झा, माता श्रीमती इन्द्रकाली देवी, प्रकाशन- "धधाइत नवकी कनियाँक लहास", "हठात् परिवर्तन", "बदलैत समाज", "टाकाक मोल", "कलह" (पाँचू मैथिली नाटक) प्रकाशित। विदेह सम्पादकक

		समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (कलह, नाटक)
 कमल मोहन चुन्नू	 कुमार राहुल	 अंशुमान सत्यकेतु
 शुभेन्दु शेखर	 वनदेवीपुत्र भवनाथ, नाटककार	 अमरेन्द्र यादव, नेपाल

ISSN 2229-547X VIDEHA



मिथिलेश कुमार झा 1970-

पिता- श्री विश्वनाथ झा, जन्म-12-01-1970 कँ मनपौर(मातृक) मे पैतृक-ग्राम-जगति, पो*-बेनीपट्टी,जिला-मधुबनी, मिथिला, पिन*- 847223 शिक्षा :प्राथमिक धरि- गामहिक विद्यालय मे। मध्य विद्यालय धरि- मध्य विद्यालय, बेनीपट्टी सँ। माध्यमिक धरि-



अनमोल झा 1970-

गाम नरुआर, जिला मधुबनी। एक दर्जनसँ बेशी कथा, लगभग सए लघुकथा, तीन दर्जनसँ बेशी कविता, किछु गीत, बाल गीत आ रिपोर्ताज आदि विभिन्न पत्रिका, स्मारिका आ विभिन्न संग्रह यथा- ‘‘कथा-दिशा’’-महाविशेषांक, ‘‘श्वेतपत्र’’, आ ‘‘एक्कैसम शताब्दीक



मनोज मुक्ति, नेपाल

श्री लीलाधर उच्च विद्यालय,बेनीपट्टीसँ इतिहास-प्रतिष्ठाक संग स्नातक- कालिदास विद्यापति साइंस काँलेज उच्चैठ सँ, पत्रकारिता मे डिप्लोमा-पत्रकारिता महाविद्यालय(पत्राचार माध्यम) दिल्ली सँ, कम्प्युटर मे डी.टी.पी ओ बेसिक ज्ञान। रचना: हिन्दी ओ मैथिली मे कविता, गजल, बाल कविता, बाल कथा,साहित्यिक ओ गैर-साहित्यिक निबंध, ललित निबंध, साक्षात्कार, रिपोर्ताज, फीचर

घोषणापत्र'' (दुनू संग्रह कथागोष्ठीमे पठित कथाक संग्रह), ''प्रभात''- अंक २ (विराटनगरसँ प्रकाशित कथा विशेषांक) आदिमे संग्रहित।

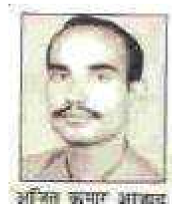
ISSN 2229-547X VIDEHA

आदि।



सत्येन्द्र कुमार झा 1969-

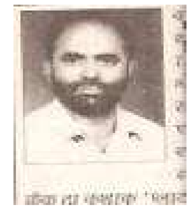
जन्म ०१.०१.१९६९ संकटमोचन नगर, मधुबनी। कवि, कथाकार, अभिनेता। पोथी- अहींकेँ कहै छी (लघु कथा संग्रह), मैथिली फिल्म पिरितिया, दुलरूआ बाबू आ श्यामा दर्शन आ सौभाग्य मिथिलाक सीरियल डॉ. टोप्पीवाला मे

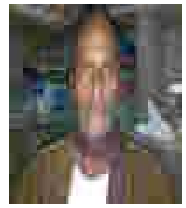


अजित कुमार आजाद



सुधीर कुमार झा 1970-

अभिनय। आकाशवाणीमे कार्यरत।		
 अशोक सिंह तोमर	 चन्द्रेश	 राम सेवक सिंह
 संतोष मिश्र, नेपाल	 सतीश चन्द्र झा	 आशीष अनचिन्हार
		

अभय लाल दास	शहीद दुर्गानन्द झा, नेपाल	सुन्दरम
		
उदयनाथ झा "अशोक"	कपिलेश्वर राउत	कपिलेश्वर साहू
		
अभय कुमार यादव, मैथिली रंगमंच	डॉ. शम्भु कुमार सिंह जन्म: 18 अप्रील 1965 सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर	बच्चा यादव 1958-

गाममे। आरंभिक शिक्षा, गामहिसँ, आइ.ए., बी.ए. (मैथिली सम्मान) एम.ए. मैथिली (स्वर्णपदक प्राप्त) तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। BET [बिहार पात्रता परीक्षा (NET क समतुल्य) व्याख्याता हेतु उत्तीर्ण, 1995] “मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्त्तन” विषय पर पी-एच.डी. वर्ष 2008, तिलका माँ. भा.विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। मैथिलीक

कतोक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे कविता, कथा, निबंध आदि समय-समय पर प्रकाशित। वर्तमानमे शैक्षिक सलाहकार (मैथिली) राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर-6 मे कार्यरत।



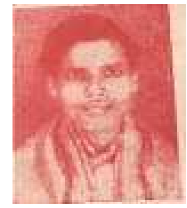
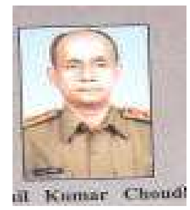
जितेन्द्रनारायण झा

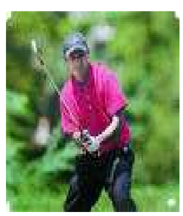


कैलाश कुमार मिश्र



कृष्णचन्द्र यादव, नेपाल

 नवलकिशोर प्रसाद श्रीवास्तव	 प्रेमकान्त चौधरी, पूर्वोत्तर मैथिल	 शिवकान्त ठाकुर
 शोभाकान्त झा	 उमाकान्त झा आ प्रियंका, मैथिली रंगमंच	 अनिल कुमार चौधरी 1962-
 देवीनाथ मिश्र		 श्यामानन्द ठाकुर

	फणीकान्त मिश्र पुरातत्वविद।	
 नन्द कुमार मिश्र	 भुवन भूषण	 अशोक कुमार झा
 चन्द्र किशोर लाल, पत्रकार, नेपाल	 हरिकांत लाल दास, नेपाल	 शशिनाथ ठाकुर, नेपाल
		

अशोक कुमार

1981-

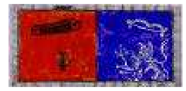
साधारण काष्ठकारक परिवारमे समस्तीपुर जिलाक मोखियारपुर सखलानी गाममे जनमल अशोक कुमार कहियो स्कूल नहि गेलाह। दिनमे पचास टाका कमेनिहार दिल्लीक एकटा गोल्फ क्लबक एहि कैडीकेँ 1994 ई. मे चोरिक मिथ्यारोप लगा कए गोल्फ कोर्ससँ बाहर कए देल गेल। वैह कैडी दस सालक भीतर भारतक नम्बर एक गोल्फर बनि गेल।

डॉ. अजीत मिश्र

जन्म स्थान- नबटोल(मात्रिक), पैत्रिक- 'आदित्य वास', पाहीटोल, सरिसब-पाही, मधुबनी। ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दड़िभङ्गासँ स्नातकोत्तर(मैथिली) कएलाह बाद 1994 सँ 2006 धरि आकाशवाणी, दड़िभङ्गामे आकस्मिक मैथिली अन्तरवार्ताकार ओ समाचार-वाचक रुपमे कार्य। पछाति भारत सरकारक अन्तर्गत भारतीय भाषा

भवनाथ झा

संस्थान, मैसूरमे मैथिलीक प्रवेशक उपरान्त मैथिलीक पहिल प्रतिनिधिक रुपमे पूर्वी प्रादेशिक केन्द्र, भुवनेश्वरमे पाहुन प्राध्यापक भए 10 जूलाइ, 2006सँ कार्य प्रारम्भ। एतए लगातार तीन वर्ष धरि कार्य सम्पादनक बाद भारत सरकारक राष्ट्रीय ज्ञान आयोगक अनुशंसा पर राष्ट्रीय अनुवाद मिशनकेर गठनक उपरान्त मैथिलीक मुख्य शैक्षिक सलाहकारक रुपमे मइ, 2009सँ भारतीय भाषा केन्द्र,

मैसूरमे कार्यरत।



मुन्नाजी

मुन्नाजी (उपनाम, एहि नामे मैथिलीमे लेखन), मूलनाम मनोज कुमार कर्ण, जन्म 27 जनवरी 1971 (हटाढ़ रूपौली, मधुबनी), शिक्षा स्नातक प्रतिष्ठा, मैथिली साहित्य। वृत अभिकर्त्ता, भारतीय जीवन बीमा निगम। पहिल लघुकथा



विनीत उत्पल
1978-

आनंदपुरा, मधेपुरा। प्रारंभिक शिक्षासँ इंटर धरि मुंगेर जिला अंतर्गत रणगांव आ तारापुरमे। तिलकामांझी भागलपुर, विश्वविद्यालयसँ गणितमे बीएससी (आनर्स)। गुरू जम्भेश्वर



उमेश मंडल

प्रकाशित कृति: निश्तुकी- कविता संग्रह (2009)।

'काँट' भारती मण्डनमे 1995 पकाशित। पहिल कथा कुकुर आ हम, 'भरि रात भोर'मे 1997मे प्रकाशित। एखन धरि दर्जनो लघुकथा, कथा, क्षणिका आ लघुकथा सम्बन्धी किछु आलेख प्रकाशित। विशेषः- मुख्यतः मैथिली लघुकथाकेँ स्वतंत्र विधा रूपेँ स्थापित करवाक दिशामे संघर्षरत।

विश्वविद्यालयसँ जनसंचारमे मास्टर डिग्री। भारतीय विद्या भवन, नई दिल्लीसँ अंगरेजी पत्रकारितामे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्लीसँ जनसंचार आ रचनात्मक लेखनमे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। नेल्सन मंडेला सेंटर फॉर पीस एंड कनफ्लिक्ट रिजोल्यूशन, जामिया मिलिया इस्लामियाक पहिल बैचक छात्र भS सर्टिफिकेट प्राप्त। भारतीय विद्या भवनक फ्रेंच

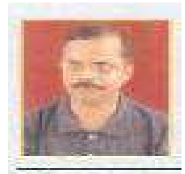
कोर्सक छात्र। आकाशवाणी भागलपुरसँ कविता पाठ, परिचर्चा आदि प्रसारित। देशक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे विभिन्न विषयपर स्वतंत्र लेखन। पत्रकारिता कैरियर- दैनिक भास्कर, इंदौर, रायपुर, दिल्ली प्रेस, दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली, फरीदाबाद, अकिंचन भारत, आगरा, देशबंधु, दिल्ली मे। एखन राष्ट्रीय सहारा, नोएडा मे वरिष्ट उपसंपादक। "हम पुछैत छी" कविता संग्रह

	प्रकाशित।	
 रत्नेश्वर प्रसाद सिंह	 अनिल पतंग 1951-	 ओमप्रकाश भारती 1968-
 संजय कुन्दन 1969-	 चक्रधर ठाकुर 1978-	 मदन ठाकुर चर्चित रंगकर्मी, जनकपुरक चर्चित संस्था मिथिला नाट्यकला परिषदक संस्थापक । तीन दशकसँ बेसी

समयसँ रंगक्षेत्रमे सक्रिय। करीब ३० ४० गोट मंचीय नाटकक सयो प्रस्तुति , २० २५ गोट सड़क नाटकक हजारसँ बेसी प्रदर्शनमे अभिनय ।२० गोट टेली-सीरियल आ आधा दर्जन मैथिली फीचर फिल्ममे अभिनय । पुरस्कार: सप्तम अन्तर्राष्ट्रिय महोत्सवमे सर्वश्रेष्ठ अभिनेता २०४९ वि.स., क्षेत्रीय प्रतिभा पुरस्कार (नेपाल सरकार) २०६३ वि.स.।



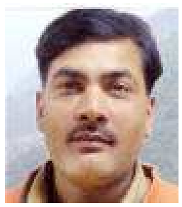
बिन्देश्वर पाठक



कुमार गगन, मैथिली रंगमंच

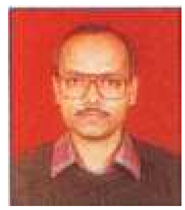


श्रीकान्त मण्डल, मैथिली रंगमंच



रवीन्द्र कुमार दास

चित्रकला।



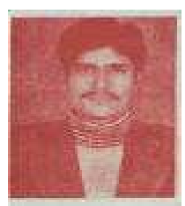
रवीन्द्र लाल दास



संजय कुमार चौधरी, मैथिली रंगमंच



दुर्गानन्द मंडल



अनिल कुमार मिश्र



कुमार सौरभ



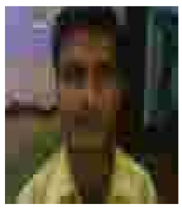
कौशल किशोर मिश्र



अमोद कुमार झा

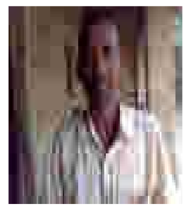


आशीष चमन



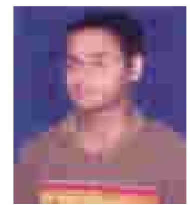
आशीष चौधरी

गाम-चरैया, अररिया।



बेचन ठाकुर

गाम: चनौरागंज, मधुबनी। प्रकाशित कृति: बेटीक अपमान आ छीनरदेवी (नाटक); एक दर्जनसँ बेशी नाटक प्रकाशनक प्रतीक्षामे।



देवांशु वत्स

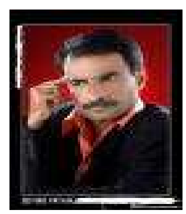
जन्म- तुलापट्टी, सुपौल। मास कम्युनिकेशनमे एम.ए., हिन्दी, अंग्रेजी आ मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे कथा, लघुकथा, विज्ञान-कथा, चित्र-

कथा, कार्टून, चित्र-प्रहेलिका इत्यादिक प्रकाशन। विशेष: गुजरात राज्य शाला पाठ्य-पुस्तक मंडल द्वारा आठम कक्षाक लेल विज्ञान कथा “जंग” प्रकाशित (2004 ई.), नताशा: मैथिलीक पहिल-चित्र-श्रृंखला (कॉमिक्स) प्रकाशित।



शिव कुमार झा 1973-

शिव कुमार झा

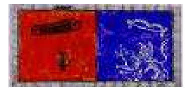


गोविन्द पाठक 1973-

गाम- करियन



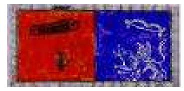
विपिन कुमार झा

''टिल्लू'',पिताक नामः स्व. काली कान्त झा ''बूच'', माताक नामः स्व. चन्द्रकला देवी,जन्म तिथिः 11-12-1973,शिक्षाः स्नातक (प्रतिष्ठा),जन्म स्थानः मातृक- मालीपुर मोड़तर, जि. - बेगूसराय, मूलग्रामः ग्राम- पत्रालय - करियन, जिला - समस्तीपुर, पिन: 848101,संप्रतिः प्रबंधक, संग्रहण,जे. एम. ए. स्टोर्स लि.,मेन रोड, बिस्टुपुर जमशेदपुर - 831 001, अन्य (समस्तीपुर), मातृक- जलसैन (अन्धा- ठाढ़ी, मधुबनी)।

दस बर्खसँ बेशीसँ हिन्दी आ मैथिली थियेटरमे सक्रिय। मैथिली दूरदर्शन सीरियल "नैन न तिरपित भेल" लेल अभिनय, स्टार प्लसक ग्रेट इण्डियन लाफ्टर चैलेंज-IV आ महुआ चैनलक हँसीक अखाड़ामे सहभागिता। सोनी टी.वी. आ दूरदर्शन इत्यादि लेल काज।सम्प्रति मुम्बइमे।





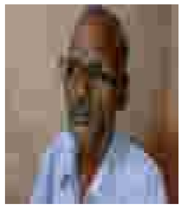
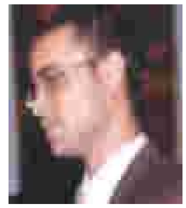
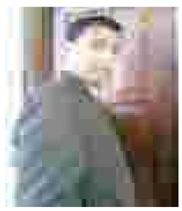
ISSN 2229-547X VIDEHA

गतिविधिः वर्ष 1996 सँ वर्ष 2002 धरि विद्यापति परिषद समस्तीपुरक सांस्कृतिक ,गतिवधि एवं मैथिलीक प्रचार-प्रसार हेतु डॉ. नरेश कुमार विकल आ श्री उदय नारायण चौधरी (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक) क नेतृत्वमे संलग्न। **प्रकाशित कृतिः** क्षणप्रभा-कविता-संग्रह, अंशु-समालोचना।







मो. गुल हसन	जयप्रकाश मंडल	श्यामल सुमन
 राम बिलास साहू	 कृपानन्द झा अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषद	 महाकान्त ठाकुर
 सरोज खिलाड़ी नेपालक पहिल मैथिली रेडियो नाटक संचालक	 विजय हरीश	 नबोनारायण मिश्र 1955- पिता-श्री गोबिन्द मिश्र, माता- श्रीमति अद्गूला देवी। गाम-

ISSN 2229-547X VIDEHA

कुशमौल,पो.नागदह-बलाइन्, भाया-अरेड़हाट, जिला-मधुबनी। मैथिली रंगमंचसँ सम्बद्ध "कोकिल मंच" संस्थाक माध्यमसँ।



बचेश्वर झा, निर्मली



धीरेन्द्र कुमार, निर्मली



चन्द्रशेखर कामति 1959-

मैथिली कवि। शिक्षा- एम.ए. (राजनीतिशास्त्र), पिता- स्व. योगेन्द्र कामति, गाम-पोस्ट-करियन, भाया-इलमास नगर,

थाना- रोसड़ा, जिला- समस्तीपुर, बिहार। संप्रति- प्रखण्ड सहकारिता प्रसार पदाधिकारी (बेनीपट्टी)।



कुमार मनोज कश्यप

जन्म मधुबनी जिलांतर्गत सलेमपुर गाम मे। बाल्य काले सँ लेखन मे आभरुचि। कैक गोट रचना आकाशवानी सँ प्रसारित आ विभिन्न

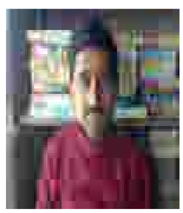
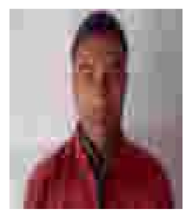


सुजीत कुमार झा, नेपाल



नन्द विलास राय

ISSN 2229-547X VIDEHA

पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित। सम्प्रति केंद्रीय सचिवालय मे अनुभाग आधकारी पद पर पदस्थापित।		
 खड़ानन्द यादव	 गिरीश चन्द्र	 सच्चिदानन्द सौरभ
 मनोज कुमार मंडल	 राधाकान्त मंडल	 विवेकानन्द झा



प्रशान्त मिश्र



ऋषि वशिष्ठ



विनय भूषण



राजेश रंजन, मैथिली फेडोरा प्रोजेक्ट



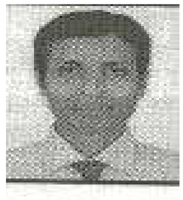
सुधाकर झा, महोत्तरी , नेपाल

सएसँ बेशी सड़क नाटकमे मंचन।

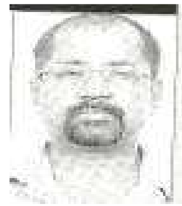


जितमोहन झा

बाबूजीक नाम: श्री बैद्यनाथ झा,ज्येष्ठभ्राता: श्री पिताम्बर झा (पिंटू),ग्राम/पोस्ट- बनगाँव, पूबाइ टोला (खौंआरे),जिला - सहरसा, (बिहार), पिन - ८५२२१२



कुमार किसलय



प्रभात प्रभाकर



राजेश मोहन झा 1981-

उपनाम- गुंजन, जन्मस्थान- गाम+पत्रालय- करियन, जिला- समस्तीपुर, हास्य कविताक माध्यमसँ समाजक विगलित दशाक वर्णन। बाल साहित्यमे विशेष रुचि।



किशन कारीगर



वीरेन्द्र यादव



आतिश कुमार मिश्र, नेपाल



अकलेश कुमार मंडल



जितेन्द्र झा, जनकपुर



नवेन्दु कुमार झा, पत्रकार



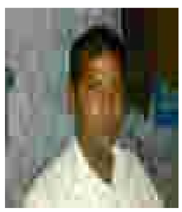
सुमित आनन्द



नवनीत कुमार झा

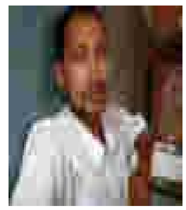
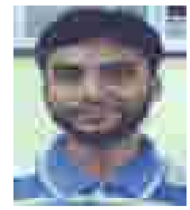


आशुतोष यादव

१९९२- गाम- हटाढ़ रुपौली (मधुबनी)।		अभिज्ञ मैथिली रंगमंच
 प्रवीण कश्यप	 मनीष कुमार झा	 पंकज प्रियांशु
 भारत भूषण झा	 इन्द्रभूषण कुमार	 प्रकाश प्रेमी
		

रवि भूषण पाठक	अरुणाभ सौरभ सम्पादक- नवतुरिया।	सदरे आलम "गौहर" गाम-पुरसौलिया, भाया- जयनगर, जिला मधुबनी।
 मो. जाहिद हुसैन सिमरिया कुम्हिया, अररिया।	 हारुण रशीद "गाफिल" 1965- ककोड़वा बसंतपुर, अररिया।	 मो. जोहेब आलम अररिया।
 डॉ. नवल किशोर	 डॉ. सुशील कुमार	 डॉ. भुवन किशोर

ISSN 2229-547X VIDEHA

दास "नवल"	श्रीवास्तव सम्पादक कोशी-कात।	मिश्र "भुवनेश" मैथिली कथा संग्रह-गोबरछत्ता।
 पंकज कुमार झा पिता-श्री महेंद्र मोहन झा, माता-श्रीमती अम्बी देवी झा : माड़र, जितबारपुर, मधुबनी, पंकज जी एच.सी.एल.मे सोफ्टवेयर इंजिनीयर छथि।	 नागेन्द्र कर्ण, नेपाल	 रूपेश कुमार झा 'त्योंथ' ग्राम+पत्रालय-त्योंथा, भाया-खिरहर, थाना-बेनीपट्टी, जिला-मधुबनी, सम्प्रति कोलकातामे अध्यनरत, साहित्यिक गतिविधि मे सेहो सक्रिय, ढेर रचना पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित।



नवीन कुमार "आशा" 1987-

पिता श्री गंगानाथ झा, माता श्रीमति विनीता झा। गाम- धानेरामपुर, पोस्ट- लोहना रोड, जिला- दरभंगा।



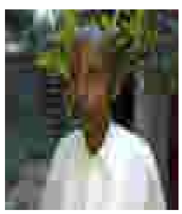
सुबोध ठाकुर

गाम-हैंठी बाली, जिला-मधुबनी, साहित्यक अतिरिक्त चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट प्रैक्टिशनर छथि।

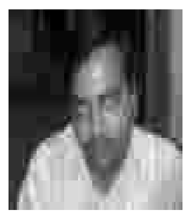


संजय कुमार मंडल

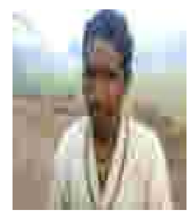
गाम- गोधनपुर, मधुबनी।



रामप्रवेश मंडल

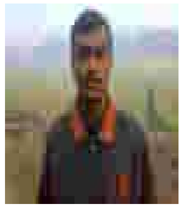


सुमन झा "सृजन"



लक्ष्मी दास

ISSN 2229-547X VIDEHA



मिथिलेश मंडल



रामाज्ञा शशिधर



दिनेश कुमार मिश्र

मिथिला प्रेमी। मिथिलाक मोटा-मोटी सभ धारपर किताब प्रकाशित।



संजय झा

सुल्तानगंज, भागलपुर। मोटोरोलाक सी.ई.ओ.।

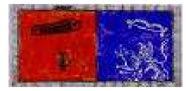


दिनकर कुमार



डॉ. विनय विश्वबन्धु





मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA



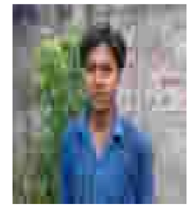
राम बहादुर रेणु

मैथिली रंगमंचकर्मी।

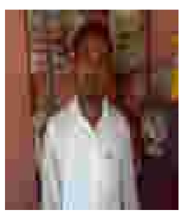


रामदेव प्रसाद मण्डल झारूदार,

मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क किछु गीत आ झारु प्रस्तुत अछि।

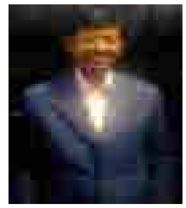
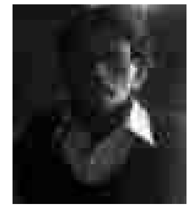


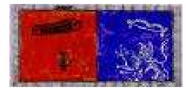
रामकृष्ण मंडल "छोटू"







उमेश पासवान	अतुलेश्वर झा	शशिधर कुमार
		
सुबोध झा १९६६- पिता श्री त्रिलोकनथ झा।	शिवशंकर सिंह ठाकुर	अंजनी कुमार वर्मा "दाऊजी"
		
बिनोद मिश्र डॉ. बिनोद मिश्र सम्प्रति आई आई टी रूडकी, उत्तराखंडमे अंग्रेजी पढ़बैत छथि	अक्षय कुमार चौधरी पिता राजनारायण चौधरी, ग्राम+पोस्ट: महिषी (पुनर्वास आरापट्टी), जिला:	जवाहर लाल कश्यप (१९८१-) पिता श्री-हेमनारायण मिश्र , गाम फुलकाही-

आ हिनक रचनाb अंग्रेजी आ हिंदी मे प्रकाशित भेल छन्हि। अहि वर्ष हिनक कविता संग्रह Silent Steps and Other Poems प्रकाशित भेल छन्हि। एकर अतिरिक्त ई अंग्रेजीमे आलोचनाक क्षेत्रमे आठ टा पोथी संपादित केने छथि। हिनक पोथी Communication Skills for Engineers and Scientists बहुतो इंजीनियरिंग संस्थानमे पाठ्य पुस्तक रूपमे पढ़ाओल जाइत

सहरसा. संप्रति दिल्ली स्कुल आफ इकोनोमिक्स मे अन्वेषक आ समाजशास्त्री छथि. हिनक "Dowary among the Maithil Brahmins: aspects of Change and contituity" बिषय पर पी. एच. डी. आओर "Marriage among the Maithil Brahmins" बिषय पर एम. फ़ील. केर अन्वेषन काज छैन्हि. अन्य बिषय पर प्रकाशित आ अप्रकाशित सेमिनार

दरभंगा।

अछि।

पेपर के अतिरिक्त वर्ष २००९ मे जापानक क्योटो विश्वविद्यालय केर 1st Next Generation Glowal Workshop मे हिनका द्वारा प्रस्तुत कैल आ छपल लेख "Gender and Heterosexsual Relationship in Intimate and Public Sphere: Ethnography of Maithil Brahmin Community" विषय पर लिखल गेल अछि।

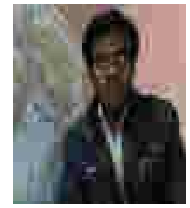


आनन्द झा



ओमप्रकाश झा

डेओढ़, घोघरडीहा।



अमित मोहन झा

ग्राम-भंडारिसम (वाणेश्वरी स्थान), मनीगाछी, दरभंगा, बिहार, भारत।



सुनील कुमार झा



कैलाश कुमार कामत

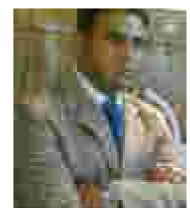


प्रवीण कुमार ठाकुर

जन्म तिथि -31 दिसम्बर 1977; जन्म स्थान - कन्हौली , सकरी ,

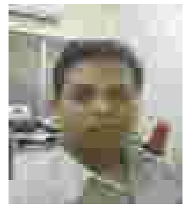
ISSN 2229-547X VIDEHA

मधुबनी ; शिक्षा- सूर्य नारायण हाई स्कूल - नरपतिनगर , बी . एस . सी - मेमोरिअल कॉलेज - दरभंगा , डिप्लोमा इन फैशन डिजाईन (नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ फैशन डिजाईन - नयी दिल्ली) , चित्रकला आओर फैशन पूर्वानुमानमे विशेष योग्यता, निवास स्थान- दिल्ली , इंडिया; पिता- श्री सत्य नारायण ठाकुर , सकरी - कन्हौली ; माता- श्रीमती मालती ठाकुर , सकरी - कन्हौली । वर्तमानमे

		अपन एक्सपोर्ट बिज़नस एस्थेट) क नामसँ शुरुआत , पूर्वमे प्रोडक्ट डेवेलोप्मेंट आओर मर्चेंटक रूपमे कार्यरत।
 अरविन्द रंजन दास	 कौशल कुमार	 मिहिर झा
 चन्द्रमणि गीतकार, गायक।	 विकास झा रंजन	 प्रभात राय भट्ट पिता श्री गंगेश्वर

ISSN 2229-547X VIDEHA

विद्यापतिक अनेक पदक अंग्रेजी अनुवादक सम्पादन प्रकाशित।		राय, माता श्रीमती गायत्री देवी, गाम-धिरापुर, महोतरी, अस्थाइ बसोबास-जनकपुरधाम - नेपाल।
 अरुण कुमार सिंह	 जीबू कुमार झा	 पञ्जीकार कृष्णानन्द झा
 प्रेमचन्द्र मिश्र	 संजीव कुमार, मैथिली रंगमंच	 किशोर केशव, मैथिली रंगमंच

 संजीव कुमार शमा	 नवीन ठाकुर	 जगदानन्द झा मनु
 झा हेमन्त बापी	 सत्यनारायण झा	 अच्छेलाल शास्त्री
 राहुल राही	 रवि मिश्र	 अनिल मल्लिक

मैथिली आ मिथिलासँ संबंधित किछु मुख्य साइट:- आन लिंकक विषयमे सूचना ggajendra@videha.com **केँ ई मेलसँ पठाबी।**

http://www.videha.co.in/ **("विदेह" प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका)**

http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html **(इंटरनेटपर मैथिली भाषाक प्रथम उपस्थिति/ मैथिलीक पहिल ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर, ५ जुलाइ २००४)**

http://www.videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (इंटरनेटपर मैथिली भाषाक प्रथम उपस्थिति/ मैथिलीक पहिल ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर, ५ जुलाइ २००४)

http://videha-aggregator.blogspot.com/ (मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर)

http://prakarantar.blogspot.com/ **(प्रकारांतर मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, फरबरी २००५)**

http://vidyapati.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, अगस्त २००५)

http://www.vidyapati.org/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, अगस्त २००५)

http://hellomithila.blogspot.com/ **(हेलो मिथिला- धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सम्पादक-प्रकाशक, रूपा झा, सम्पादन सहयोग, पल्लव, मैथिली साहित्यिक, ३ मइ २००६)**

http://pallav.blogsome.com/ (हेलो मिथिला- धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सम्पादक-प्रकाशक, रूपा झा, सम्पादन सहयोग, पल्लव, मैथिली साहित्यिक, १७ मइ २००६)

http://premarshi.wordpress.com/ (धीरेन्द्र प्रेमर्षि,)

http://brikhesh.blogspot.com/ (बृषेश चन्द्र लाल)

http://www.chetnasamiti.org/ (चेतना समिति, पटनाक वेबसाइट)

http://mithilakbat.blogspot.com/

http://maithilitimesonline.blogspot.com/

http://mithilavidehavajjitirhut.blogspot.com/

http://samadiya.blogspot.com/

http://jitumaithili.blogspot.com/

http://pratipadamaithili.blogspot.com/

http://bhatsimar.blogspot.com/

http://maithilirangmanch.blogspot.com/

http://www.mithilavaani.blogspot.com/

http://www.maithilisongsjagat.co.in/

http://mithilablog.com/

http://www.lahakchahak.com/

ISSN 2229-547X VIDEHA

http://www.jaimithila.com/

http://www.dahejmuktmithila.org/

http://mithilavaani.blogspot.com/

http://www.chamundanagarpachahi.com/

http://kisunsankalplok.wordpress.com/

http://www.kisunsankalplok.co.nr/

http://maithilisongshub.blogspot.com/

http://www.rajnipallavi.com/

http://www.samaysaal.com/

http://maithilputramanu.blogspot.com/

http://www.premkumarmallik.com

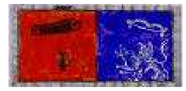
http://bramhanews.blogspot.com/ (मैथिली समाचार)

http://www.mithilakhabar.com/ (नेपालक मैथिली ई पत्रिका)

http://esamaad.blogspot.com/ (पूनम मंडल आ प्रियंका झाक मैथिली न्यूज पोर्टल, ९ अगस्त २००४ सँ)

http://hellomithilaa.blogspot.com/ **(मैथिली न्यूज पोर्टल, सितम्बर २००७)**

http://www.hellomithilaa.com/ **(मैथिली न्यूज पोर्टल, सितम्बर २००७)**

ISSN 2229-547X VIDEHA

http://www.maithilinews.blogspot.com/ **(मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)**

http://www.hamargam.in/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://mithiladotcom.blogspot.com/ **(मैथिली राष्ट्रीय दैनिक)**

http://mithilasamad.blogspot.com/ (मिथिला समाद, मैथिली दैनिक)

http://janakpurnews.blogspot.com/ **(मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)**

http://shampadak.wordpress.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, जनवरी-फरबरी २००८)

http://www.esamaad.com/ **(मैथिली न्यूज पोर्टल, जनवरी-फरबरी २००८)**

http://www.mithilalok.com/ **(मैथिली न्यूज पोर्टल)**

http://apandalan.wordpress.com/

http://www.mithilaworld.tk/

http://www.mithilachowk.com/

http://maithilisongsgeet.blogspot.com/

http://rayprabhatbhatt.blogspot.com/

http://amitmohanjha83.blogspot.com/

http://maithili-darpan.blogspot.com/ **(मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)**

http://mithilatol.blogspot.com **(मिथिलाटोल मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)**

http://maithilicinema.blogspot.com/ (मैथिली फिल्म्स)

http://maithilifilms.blogspot.com/ (मैथिली फिल्म्स)

http://maithili-drama.blogspot.com/ (विदेह मैथिली नाट्य उत्सव- बेचन ठाकुरक ब्लॉग)

http://mjnk.co.cc/ **(ई जनकपुर न्यूज़, तराई मॉडल, मिथिला इन्फोर्मेशन)**

http://www.TeraiNepal.co.cc/ **(तराई नेपाल मिथिला जनकपुर मधेश हालचाल Anytime Anywhere see)**

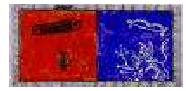
http://maithilaurmithila.blogspot.com/ **(मैथिलक आ मिथिलाक लोकप्रिय ब्लॉग)**

http://www.mithilaamanch.blogspot.com (मिथिला मंच)

http://maithilisong.blogspot.com/ **(मिथिला आ मैथिलीक समाचारक ब्लॉग)**

http://maithilifoundation.blogspot.com/ (मैथिली फाउन्डेशन)

http://maithilibhasha.blogspot.com/ (काश्यप कमलक ब्लॉग)

http://rkjteoth.blogspot.com/ **(रूपेश कुमार झा "त्योंथ"क ब्लॉग)**

http://paraati.blogspot.com/ **(मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)**

http://singarhaar.blogspot.com/ **(मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)**

http://anchinharakharkolkata.blogspot.com/ **(मैथिलीक लोकप्रिय गजलक ब्लॉग)**

http://vaachik.wordpress.com/ **(मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)**

http://mithilainfo.blogspot.com **(मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)**

http://mithlasamachaar.blogspot.com **(मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)**

http://pilakhwar.blogspot.com/ **(मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)**

http://desilbayna.blogspot.com/ **(मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)**

http://maithilynjha.blogspot.com/ **(मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)**

http://gaam-ghar.blogspot.com/ **(मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)**

ISSN 2229-547X VIDEHA

http://mithila-mihir.blogspot.com/ **(मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)**

http://www.videha.com/ **(इंटरनेटपर मैथिली भाषाक प्रथम उपस्थिति/ लोकप्रिय ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर)**

http://www.maithililekhaksangh.com/ (मैथिली लेखक संघक जालस्थल)

http://www.maithili.co.uk/ (मिथिला कल्चरल ऑर्गेनाइजेशन, यू.के.)

http://minapjanakpur.org/ (मिनाप, जनकपुर)

http://www.airdarbhanga.org/ **(आकाशवाणी दरभंगाक साइट)**

http://mithilangan.org/ **(मिथिलांगनक साइट)**

http://www.vmym.in/ **(विद्यापति मैथिल युवा मंच)**

http://www.tirhutalipi.4t.com/ **(देवनागरी-तिरहुता फॉन्ट कन्वर्टर)**

http://www.anujha.co.cc/ (**यूनीकोड तिरहुता फॉन्ट-मिथिला)**

http://www.jaimithila.com/ **(मिथिलाक सभ्यता, संस्कृति, विभूति, गीत-संगीत आ बहुत रास जानकारीक लेल)**

http://sobhagyamithilatv.com/ **(सौभाग्य मिथिला- पहिल मैथिली चैनल)**

http://kashyap-mithila.blogspot.com/

http://mithilapaintingtraining.blogspot.com/

http://dularuababumaithilifilm.blogspot.com/

http://senuraklaajmaithilifilm.blogspot.com/

http://maithlivideosongs.blogspot.com/

http://kalikantjhabuch.org/ (काली कांत झा "बूच")

http://saketanands.blogspot.com/

(साकेतानन्दजीक जालवृत्त)

http://gunjang.blogspot.com/ **(गुंजनजीक जालवृत्त)**

http://darihare.blogspot.com/ **(श्याम दरिहरेक जालवृत्त)**

http://deoshankarnavin.blogspot.com/ **(देवशंकर नवीनक जालवृत्त)**

http://www.udayanarayana.com/ **(नचिकेताक साइट)**

http://www.indianembassy.org.np/ **(भारतीय दूतावास नेपाल)**

http://www.purvottarmaithil.org/ **(मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक त्रैमासिक पत्रिका)**

http://apanmithiladhaam.blogspot.com/

ISSN 2229-547X VIDEHA

http://maithilikavita.blogspot.com/

http://pankajjha23.blogspot.com/

http://maithili-haiku.blogspot.com/

http://manak-maithili.blogspot.com/

http://mithilauday.org/

http://www.facebook.com/home.php?sk=group_104458109632326 (videha facebook group)

http://groups.google.com/group/videha (videha googlegroups)

http://dsal.uchicago.edu/lsi/ (Linguistic Survey of India, Gramophone recordings)

http://dsal.uchicago.edu/lsi/taxonomy/term/1718 (Linguistic Survey of India, Gramophone recordings, Maithili)

http://maithiliacademy.org/

http://maithili.sourceforge.net/

http://ansiss.org/

http://fedoraproject.org/

https://fedorahosted.org/fuel/wiki/fuel-maithili

http://l10n.gnome.org/teams/mai

http://translate.fedoraproject.org/languages/mai

http://www.biharlokmanch.org**/ (मिथिला-मैथिली पोथी ऑनलाइन कीनू)**

http://shivpustakbhandar.blogspot.com/
(मैथिली पोथी कीनू)

http://www.biharlokmanch.org/mithila_products_online.php **(Buy Mithila-Maithili books online)**

http://mithila-haat.com/ (Buy Mithila-Maithili books/ other materials online)

http://www.antika-prakashan.com/ **(अंतिका प्रकाशनक साइट- मैथिली प्रकाशक)**

http://www.shruti-publication.com **(श्रुति प्रकाशनक साइट- मैथिली प्रकाशक)**

http://www.gorkhapatra.org.np/

http://www.sajha.org.np/

http://www.kantipuronline.com/

http://mithilahyd.org/

http://www.jyoticonsultant.com/ **(मैथिलक नौकरी डॉट कॉम)**

http://www.mithilamanthan.com/

http://www.brandbihar.com/

http://www.biharbrains.org/

http://www.kfm961.com/ **(हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रत्येक शनिकेँ नेपाली समयानुसार राति ९.३० बजेसँ ११ बजेधरि आ राजनीतिक विषयवस्तुपर केन्द्रित चौबटिया कार्यक्रम प्रत्येक सोमकेँ राति १० सँ ११ बजेधरि प्रसारण)**

http://www.jumptv.com/en/channel/nepal1/ **(नेपाल1 टी.वी.-जम्प टी.वी. मैथिली कार्यक्रम सूचना)**

http://janakifm.org.np/ **(जानकी एफ.एम., मैथिली समाचार रेडियो)**

http://www.mithilaradio.com/ (मैथिली रेडियो)

http://www.youtube.com/user/Janakifm (जानकी एफ.एम., मैथिली समाचार रेडियो Youtube channel)

http://www.radiomithila.org/ **(मैथिली रेडियो)**

http://www.appanmithila.org/ (रेडियो अप्पन मिथिला ९४.४ MHZ)

http://www.janakpurtoday.com.np/

http://madanpuraskar.org/

http://www.madheshuk.org/ **(एसोशिएशन ऑफ नेपाली मधेसीज इन यू.के.)**

http://www.mithilaart.com/ **(श्रीमति प्रभा झाक साइट)**

http://www.mithilavihar.com/

http://www.sugatisopan.com/

http://www.maithilsamaj.com/

http://www.janakpurcity.com/

http://www.janakpur.com.np/

http://home.att.net/~maithils/

http://shyamprakashjha.com/

http://ramanathjha.com/

http://www.ramajha.com/

http://sudhakar.co.in/maithili

http://www.maithils.net/

http://www.getpredictiononline.com/

http://www.bihartimes.com/

http://www.bihar.ws/

http://www.patnadaily.com/

http://www.adi-maithili-kavita.blogspot.com/

http://www.mithilasevasamiti.blogspot.com/

http://www.jankitoday.blogspot.com/

http://opjha.blogspot.com/

ISSN 2229-547X VIDEHA

http://chitthajagat.in/ **(देवनागरी लिपिक ब्लॉगक एग्रीगेटर)**

http://mailorang.blogspot.com/ **(मैलोरंग नाट्य संस्थाक ब्लॉग)**

http://mailorang.in/ (मैलोरंग)

http://vandanasgeet.blogspot.com/

http://www.darbhangaraj.blogspot.com/

http://mithila_samachar.tripod.com/mithilasamachar/ **(मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)**

http://www.pustakalaya.org/list.php?lang=en&collection_pid=Pustakalaya:171

http://www.ciilcorpora.net/maisam.htm

http://ignca.nic.in/coilnet/mithila.htm

http://tdil.mit.gov.in/CoilNet/IGNCA/mithila.htm

http://www.mithilaarts.com/

http://www.mithilapainting.org/

http://www.maithili.net/ **(मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)**

http://www.mithilaonline.com/ **(मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)**

http://www.onlinemithila.in/ **(मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)**

http://www.nnl.gov.np/

http://www.nepalacademy.org.np/

http://www.karnagoshthi.org/

http://surmasti.com**/**

http://www.maithiliworld.com**/**

http://www.mithila-museum.com/aboutMM/Eindex.html

http://www.tribhuvan-university.edu.np/

http://www.swastifoundation.com/ **(स्वस्ति फाउन्डेशनक साइट)**

http://foundationsaarcwriters.com/

http://www.opmcm.gov.np/

http://www.moe.gov.np/ **(नेपाल सरकारक साइट)**

http://lnmu.bih.nic.in**/**

http://gov.bih.nic.in**/ (बिहार सरकारक साइट)**

http://www.india.gov.in/

http://rajbhasha.nic.in/

http://www.hindinideshalaya.nic.in/

http://themithila.tripod.com/

http://www.mithilaconnect.com/

http://www.esabha.net/ **(मैथिल विवाहक साइट)**

http://www.maithilvivah.com/ **(मैथिल विवाहक साइट)**

http://www.kanyadan.net/ **(मैथिल विवाहक साइट)**

http://www.mithilashaadi.com/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.kalyanifoundation.org/

http://www.madhubani.com/

http://www.janakpur.org/

http://www.darbhanga-friends.com/

http://www.hindisansthan.org/

http://www.biharassociation.net/

http://www.nationallibrary.gov.in/ **(नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता)**

http://dpl.gov.in/ **(दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी)**

http://www.connemarapubliclibrarychennai.com/ **(कोनेमारा पब्लिक लाइब्रेरी)**

http://rrrlf.nic.in/ **(राजा राम मोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन)**

http://www.sahitya-akademi.gov.in/**(साहित्य अकादमीक साइट)**

http://www.nbtindia.org.in/ **(नेशनल बुक ट्रस्टक साइट)**
http://www.csuchico.edu/anth/mithila/
http://web.mac.com/nadjagrimm/iWeb/JWDC/Mithila%20Art%20.html
http://www.southasianist.info/india/mithila/index.html
http://www.mithilalive.com/
http://www.ethnologue.com/show_language.asp?code=mai
http://linguistlist.org/forms/langs/LLDescription.cfm?code=mai
http://www.languageshome.com/English-Maithili.htm
http://www.rosettaproject.org/archive/mai
http://www.nepalgov.gov.np/
http://maithili-mp3-songs.folkmusicindia.com/
http://www.ciil.org/ **(भारतीय भाषा संस्थानक साइट)**
http://www.ciillibrary.org/
http://www.lisindia.net/Maithili/Maithili.html
http://www.ntm.org.in/languages/maithili/default_maithili.asp **(राष्ट्रीय अनुवाद मिशन)**

http://jnanpith.net/ **(भारतीय ज्ञानपीठक साइट)**

http://bparishad.in/ **(भारतीय भाषा परिषद, कोलकाताक साइट)**

http://www.bharatiyabhashaparishad.com/ (भारतीय भाषा परिषद, कोलकाताक वागर्थ)

http://www.themanbookerprize.com/ **(मैन-बुकर पुरस्कारक साइट)**

http://www.commonwealthfoundation.com/ **(कॉमनवेल्थ फाउन्डेशनक साइट)**

http://www.crossword.in/ **(वोडाफोन-क्रॉसवर्डक साइट)**

http://www.pulitzer.org/ **(पुलित्जर पुरस्कारक साइट)**

http://nobelprize.org/ **(नोबेल पुरस्कारक साइट)**

http://www.goakonkaniakademi.org/akademi/aims.htm **(गोवा कोंकणी अकादमीक साइट)**

http://www.museindia.com/

http://jaipurliteraturefestival.org/

http://dscprize.com/

http://southasianlitfest.com/

http://www.varnamala.org/

http://india.poetryinternationalweb.org/

http://madhubani-art.blogspot.com/ **(Maithili Literature in English)**

http://www.fortunecity.com/victorian/charcoal/49/

http://www.tarainews.com.np/

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

अंतिम पाँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि। एहि लिंक सभ पर जा कय प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढ़ाऊ।

किछु नीक यू ट्यूब मैथिली चैनल

http://www.youtube.com/user/Janakifm (जानकी एफ.एम., मैथिली समाचार रेडियो Youtube channel)

http://www.youtube.com/user/jitumaithil (जितेन्द्र झा,

जनकपुर)

http://www.youtube.com/user/sobhagya8 (सौभाग्य मिथिला)

http://www.youtube.com/user/rajnipallavi (रजनी पल्लवी)

http://www.youtube.com/user/bhaskaranjha (भाष्कर झा)

http://www.youtube.com/user/mahakalijha

http://www.youtube.com/user/karia1885

http://www.youtube.com/user/omuniv

http://www.youtube.com/user/sumankumar137

http://www.youtube.com/user/gyansjha

http://www.youtube.com/user/bclalan

http://www.youtube.com/user/gareri1986

http://www.youtube.com/user/avinashjha84

http://www.youtube.com/user/chandankumarjha1

http://www.youtube.com/user/mailorang

http://www.youtube.com/user/chandanmishra2010

http://www.youtube.com/user/nirmaana

http://www.youtube.com/user/Janakifm1

http://www.youtube.com/watch?v=XpSuVHtbaQ8&feature=mfu_in_order&list=UL

http://www.youtube.com/user/gxcng

http://www.youtube.com/user/gautamkrishna85

http://youtu.be/3i3OG5Nf3y8

http://youtu.be/sJnxSe-ckmo

http://www.youtube.com/user/jitmohanjha

http://www.youtube.com/user/MiTJnPNN

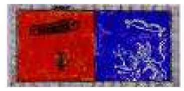
http://www.youtube.com/watch?v=-9KaC8ji9t4

http://www.youtube.com/user/luvvivek2k7

http://www.youtube.com/user/bindassatyandra

http://www.youtube.com/user/rustymind1





ISSN 2229-547X VIDEHA

http://www.youtube.com/user/MrDeveshKarna

http://www.youtube.com/user/rambabushah

http://www.youtube.com/user/mukeshjha84

http://www.youtube.com/user/Mauahi

www.youtube.com/user/MrBasantjha

http://www.youtube.com/user/themadan

http://www.youtube.com/user/sentukhu

http://www.youtube.com/user/yarowjha

http://www.youtube.com/user/mkoxp

http://www.youtube.com/user/luvvick21

http://www.youtube.com/user/njyclubashok

http://www.youtube.com/user/MrRamkisor

http://www.youtube.com/user/hellomithilaa

http://www.youtube.com/user/Dhipre (धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

http://www.youtube.com/user/pawanks6102

http://www.youtube.com/user/sahayogee

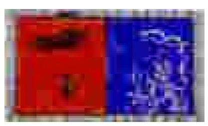
http://www.youtube.com/user/ggajendra71(विदेह)

आ दूटा आर साइट

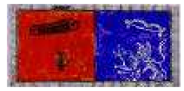
http://www.dailymotion.com/video/xjophq_documentary-kosi-katha_shortfilms#from=embed

http://blackbuddhas.com/

विदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

 विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: शिव कुमार झा आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। भाषा-सम्पादन: नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा। कला-सम्पादन: ज्योति सुनीत चौधरी आ रश्मि रेखा सिन्हा। सम्पादक-शोध-अन्वेषण: डॉ. जया वर्मा आ डॉ. राजीव कुमार वर्मा। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक-सूचना-सम्पर्क-समाद पूनम मंडल आ प्रियंका झा।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) ggajendra@videha.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका अछि आ एहिमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ संबंधित रचना

प्रकाशित कएल जाइत अछि। एहि ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

सिद्धिरस्तु